CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्र.सं. 56

ऋग्वेद संहिता

(वैदिकजीवनभाष्ययुता)

पदपाठ, शब्दार्थ, संस्कृत और
भाषा अनुवाद टिप्पणी और मन्त्रों के
आशय पर व्याख्यान से युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्र.सं. ५८

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY 1986 A.D.
पुस्तकालय

R.

रत्न पुस्तक भण्डार
"ग्रीन हाउस"
२७१, माईतीघर
काठमाडौं, नेपाल
फोन : ४-२४०८५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९५-६३६

ऋग्वेद संहिता

(वैदिकजीवनभाष्ययुता)

पदपाठ, शब्दार्थ, संस्कृत और भाषा अनुवाद टिप्पणी और मन्त्रों के आशय पर व्याख्यान से युक्त

प्रथम मण्डल : द्वितीय खण्ड

सम्पादक
शिवनाथ आहिताग्नि
पं० शंकरदत्त शास्त्री

NAG PUBLISHERS
नाग प्रकाशक
११ए/यूए, जवाहर नगर, दिल्ली-७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाग प्रकाशक
(१) ११ए/यू. ए. जवाहरनगर, दिल्ली-७
(२) ८ ए/यू. ए. ३ जवाहर नगर, दिल्ली-७
(३) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ० प्र०

ISBN 81-7081-246-1(SET)

प्रथम संस्करण १९०४
द्वितीय संस्करण १९९१

R
Acc. 25046/29054
NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY पुस्तकालय

मूल्य: रु०

श्री नागशरण सिंह द्वारा नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित ज्ञान आफसेट, शहजादा बाग, दिल्ली से मुद्रित ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेद- ६३६

अथ चतुर्विंशं सूक्तम्॥

२४ वें और अगले छः सूक्तों के ऋषि शुनःशेप हैं इन की अद्भुत कथा ऐतरेय ब्राह्मण में लिखी है, यह कथा राजसूय यज्ञ में राजाका अभिषेक किये पीछे होता ऋत्विज् सोनेके तारों से बने हुए आसन पर बैठकर राजा को सुनाता है। इस कथाका परिणाम बहुत अच्छा है क्योंकि इस में एक अपुत्र राजा को पुत्र मिल गया, रोहित के छः वर्ष बन में फिरने के श्रम से उस के अपने और पिता के पूर्व संचित पाप क्षय होकर उस को प्राणरक्षा होगई और पिताकी प्रतिज्ञा पूरी होगई, अजीगर्त को जो बन में भूखा मरता था तीन सौ गौएं मिल गईं, शुनःशेप के बन्धन छूट गए और राजा को आरोग्यता मिल गई। इसलिये यह कथा सब आपत्तियों के नाश करने वाली यशके देने वाली और पाप को नाश करनेवाली है जिन को पुत्रकी इच्छा है वे इस के सुनने से पुत्रको प्राप्त कर सकते हैं (१)।

ऐतरेय ब्राह्मण में यह कथा इस प्रकार लिखी है (देखो ऐ० ब्रा० पं० ७ खं० १३—१८)।

इक्ष्वाकुवंशी वेधस के पुत्र हरिश्चन्द्र एक पुत्र हीन राजा थे उनके एकसौ स्त्रियां थीं (२)परन्तु उनमेंसे किसीको पुत्र नहीं होता

---

(१) इस कथा के ये फल ऐतरेय ब्राह्मण में लिखे हैं। इस का आशय यह नहीं है कि एक वार के श्रवण मात्र से ये फल हो जाते हैं। किन्तु श्रद्धा से वारंवार श्रवण और चिन्तन करने से ऐसे संस्कार मनुष्य के मन पर पड़जाते हैं कि साधारण यत्न करने पर वह २ कर्म शीघ्र फल युक्त होजाता है।

(२) पुत्र उत्पादन करके स्वजाति की वृद्धि करना आर्य का धर्म हैं। यदि एक स्त्री में पुत्र न हो, तो दो तीन वा १०० स्त्री भी रखना अधर्म नहीं है, यदि विषयभोगके लिये ये विवाह न किये जाएं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था उन के घर में पर्वत और नारद ऋषि रहतेथे। राजाने नारद से पछा, कि हे नारद! ज्ञानी और अज्ञानी सभी पुत्र की इच्छा करते हैं। पुत्र से क्या लाभ है यह मुझे आप कहें इस एक श्लोक में पूछे हुए प्रश्न का नारद ने इन दस श्लोकोंमें उत्तर दिया॥

१ यदि अपने से उत्पन्न हुए जीते पुत्रका मुख पिता देखता है तो वह अपने ऋणको चुकाता है और अमर होजाता है (३) २ जितने पृथिवी में भोग हैं और जितने सुख अग्नि और जल द्वारा मनुष्य को प्राप्त होते हैं इन सब से अधिक सुख पिता को पुत्र में है। ३ पुत्र के द्वारा पिता बड़े संकट के भी पार लंघ जाता है क्योंकि वह पुत्र रूपमें अपनेसे आप उत्पन्न होताहै(४) पुत्र अन्नवस्त्रादि सामग्री से युक्त नौका की तरह समुद्र के पार लंघाने वाला है। ४ नित्य का ब्रह्मचर्य धारण करके मल रखने से क्या लाभ है। मृगचर्म से,डाढ़ी रखने से और तप से क्या लाभ है। हे ब्राह्मणो गृहस्थी बन कर पुत्र की इच्छा करो। क्योंकि पुत्र के द्वारा जीवन दोषरहित बन जाता है (५)। ५ इस लोक में अन्न प्राण की स्थिति का हेतु है घर शीतादि से रक्षा करता है। सुवर्ण रूप को बढाताहै, पशु वाहन के हेतु हैं। स्त्री सच्ची मित्र है। पुत्री दया का पात्र है परन्तु पुत्र

(३) पुत्र उत्पादन किये विना मनुष्य पितृ ऋण से मुक्त नहींहो सकता। पुत्र द्वारा मनुष्य अमर कैसे होताहैइसके लियेदेखो श्लोक७

(४) पुत्र अपनी ही आत्मा होने से मनुष्य एक से दो बन जाता है। और संकट का सामना करने के लिये उस का बल द्वि-गुण होजाता है।

(५) गृहस्थी बन कर स्त्री पुत्र और अन्य मनुष्यों के सम्बन्ध से जो अनुभव मनुष्य को होते हैं, वे नित्य ब्रह्मचारी को कदापि नहीं हो सकते। और उस के जीवन से वह दोष दूर नहीं हो सकते जो गृहस्थाश्रम रूपी अग्निमें से निकलने से ही हो सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्कृष्ट आकाश में ज्योति की समान प्रकाशको देनेवाला है ६ पति स्त्री में प्रविष्ट होता है और गर्भ रूपमें रखने से वह उस की माता बन जाती है। उसमें फिर नया बनकर दसवें महीनेमें उत्पन्न होता है ७ इसलिये स्त्री को जाया कहते हैं क्योंकि वह उस में फिर (जायते) जन्म लेता है। यह (स्त्री) निरन्तर जीवित रहने का हेतु है। क्योंकि जीवन रूप बीज इसमें बोया जाता है और यह उस जीवनको फिर प्रगट करके निरंतर रखती है ८ देवता और ऋषियों ने स्त्री में बडा तेज स्थापन किया और फिर देवताओंने मनुष्यों से कहा कि यह तुम्हारी फिर माता बनेगी (६)। ९ यह बात सबपशुभी जानते हैं कि पुत्रहीन के लिये दुनियां कुछ नहीं................... ....१० यह रस्ता जिस पर पुत्रवान शोक रहित होकर चलते हैं महापुरुषों से स्तुति किया गया है और सुख से सेवन करने योग्य है इस बात को पशु पक्षी भी जानते हैं (७) ... ...

इस प्रकार उसकोउत्तर देकर नारदने कहा कि हे राजन् वरुण राजा के पास जाकर प्रार्थना करो कि मेरे पुत्र हो, और यह भी कहो कि ऐसा होनेपर मैं उससे आपका यज्ञ करूंगा (८) यह सुन

---

(६) यह श्लोक अलंकार रूप में स्त्रीके तेज और उच्च पदवी को दर्शाता है, स्त्री पुरुष की माता है। इसलिये सर्वदा माता के तुल्य आदर के योग्य है।

(७) नवें और दसवें श्लोक के अन्तिम कुछ पद छोड़ दिये हैं। क्योंकि आज कल की गिरी हुई सभ्यता प्राचीन आर्यों के सरल और मुंह फट वाक्यों को सहन नहीं कर सकती॥

(८) यह नारद का उपदेश हमें बड़ा विचित्र प्रतीत होता है परन्तु इस कथा के परिणाम को देख कर हम नारद को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते। स्यात् वह जानते थे, कि राजा का यह प्रण भूखे मरते ब्राह्मण की भूखी सन्तान में से एक को मंत्र द्रष्टा ऋषि बनाएगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर राजा हरिश्चद्र ने कहा ऐसा ही करूंगा और राजा वरुण के पास जाकर (९) कहा कि मेरे पुत्रहो मैं उससे आपका यज्ञ करूंगा वरुणने वरदिया (९) कि ऐसाही हो और उसके पुत्र उत्पन्न होगया जिस का नाम रोहित रखा गया। पुत्र उत्पन्न होने पर वरुण ने हरिश्चन्द्र से कहा, कि तेरे पुत्र होगया, इससे मेरा यज्ञ कर (जैसे प्रतिज्ञाकी थी) (१०) उसने उत्तर दिया(११)कि जब पशु दस दिनसे बडा होता है तब यज्ञके योग्य होता है। इसलिये यह भी दस दिन से बड़ा होलेवे फिर मैं इस से आप का यज्ञ करूंगा यह बात वरुण ने स्वीकार की और जब वह दस दिन का होगया तो वरुण ने कहा यह दस दिन का होगया अब इस से मेरा यज्ञ कर । हरिश्चन्द्र ने कहा कि जब पशु को दांत निकल आते हैं। तब यज्ञ के योग्य होता है इस लिये इस के दांत निकल आने दो। पीछे मैं इस से आपका यज्ञ करूंगा। वरुण ने मान लिया, और जब उस को दांत निकल आए तब कहा कि इस के दांत निकल आए अब इस से मेरा यज्ञ कर। राजा ने कहा जब पशु के पहले दांत गिरते हैं, तब वह यज्ञ के

(९) पास जाकर कहा, अर्थात् उपासना करके कहा देवता का वर देना या तो प्रत्यक्ष में हो सकता है या यह आशय भी हो सकता है कि उपास्य देव की उपासना तुष्टि पूर्वक हो चुकने पर उपासक को निश्चय हो जाता है कि देवता ने मेरी प्रार्थना को सुन लिया है। और अब मेरे प्रयोजन की सिद्धि हो जायगी ।

(१०) इस का आशय दो तरह हो सकता है, एक तो यह कि वरुण ने प्रत्यक्ष होकर कहा दूसरा यह कि राजा के आत्मा (conscience) ने उसको प्रेरण किया कि प्रतिज्ञा पूरी करनीचाहिये।

(११) अर्थात् प्रत्यक्ष में उत्तर दिया वा यह कह कर अपनी मन समझोती करली। जैसे आत्मा (conscience) के विरुद्ध कर्म करके हम सदा करलेते हैं। देवता से प्रत्यक्षमें वार्तालापकी सम्भावना ऋ०१।२५।१७से स्पष्ट प्रतीत होती है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग्य होता है। इस लिये इस के दांत गिर लेवें तब मैं इस से आप का यज्ञ करूंगा। जब उस के दांत गिर गए तब वरुण ने कहा इस के दांत गिर गए अब इस से मेरा यज्ञ कर। राजाने उत्तर दिया जब पशु के दांत दूसरी बार निकलते हैं। तब वह यज्ञ के योग्य होता है इस लिये इस के दांत फिर निकल आवें तब मैं इससे आपका यज्ञ करूंगा। वरुण ने मान लिया और जब उसके दांत दूसरी बार निकल आए तब कहा कि इस के दूसरी बार दांत निकल आए अब इससे मेरा यज्ञ कर, राजाने कहा जब क्षत्रिय शस्त्र और कवच पहनने की अवस्थाको प्राप्त होता है तब यह यज्ञके योग्य (१२) होता है इसलिये यह शस्त्र और कवचधारी होलेवे तब मैं इससे आपका यज्ञ करूंगा। वरुण ने मान लिया (१३) और जब वह शस्त्र और कवच धारी हुआ तब राजा से कहा अब यह शस्त्र और कवच धारी हो गया इस से मेरा यज्ञ कर। राजा ने कहा अच्छा और पुत्र को बुला कर कहा। हे तात इस वरुण ने तुझे मेरे ताईं दिया है इस लिये मैं तुझ से इनका यज्ञ करूंगा। रोहितने कहा नहीं (१४)और ऐसा कह कर धनुष को लेकर वन में चला गया वह एक बरस बनमें फिरता

---

(१२) यहां यज्ञ से रण यज्ञ तात्पर्य हो सकता है। क्योंकि पुरुष यज्ञ की तो आर्यों में चाल ही नहीं थी देखो (१९)

(१३) इस से प्रतीत होता है कि राजा वरुण मनुष्य के प्रतिज्ञा वा नियम भंग की बारबार उपेक्षा करते हैं, परन्तु अन्त में दण्ड दिये बिना नहीं रहते फिर प्रतिज्ञा वा नियम को पालन करलेने से दण्ड को हटा लेते हैं, जैसे राजा को जलोदर होने और अन्त में हट जाने से प्रतीत होता है (देखो ऐ० ब्रा० पं० ७ खं० १६ का अन्त)

(१४) रोहित का पिता की आज्ञा को न मानना जितलाता है कि उस को पिता की पुरुष बलि की प्रतिज्ञा अनोखी जान पड़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहा। इस अन्तर में हरिश्चन्द्र को राजा वरुणने पकड लिया और उसको जलोदर होगया यह बात रोहित ने सुनी और बन से पिता के पास आने के लिये लौटा (१४)उसको रस्तेमें मनुष्य रूपमें इन्द्र मिले और कहा "हे रोहित हम सुनते आए हैं कि परिश्रम करके थके बिना लक्ष्मी नहीं प्राप्त होती श्रेष्ठ पुरुष भी घर में बैठा रहने से पापी होजाता है और फिरने वाले का इन्द्र सखा है इस लिये फिर"(१५)रोहित यह विचार कर कि मुझे ब्राह्मणने फिरने का उपदेश किया है दूसरे बरस फिर वन में फिरता रहा दूसरे बरस की समाप्ति पर नगर को लौटा तो उस को फिर पुरुष रूप में इन्द्र मिले और कहने लगे "फिरने वाले की जंघा फूलों वाली (शाखा की न्याईं सुन्दर) होती हैं, और उसका शरीर बढनेवाले फल युक्त वृक्ष (के समान परोपयोगी) होता है। उसके सब पाप लम्बी यात्रा के श्रम से नष्ट होकर मरदे की तरह सोजाते हैं, इस लिये फिर"। रोहित यह सोच कर कि मुझे ब्राह्मण ने फिरने का उपदेश दिया है तीसरे बरस फिर वन में फिरता रहा समाप्तिपर लौटते समय उस को फिर पुरुष रूप में इन्द्र मिले और कहने लगे "बैठने वाले का भाग्य बैठ जाता है, खडे होनेवाले का खड़ा होजाता है, सोनेवालेका सोजाता है फिरने वालेका भाग्य गतियुक्त होता है इस लिये फिर"।(१५)रोहित यह विचार कर कि मुझे ब्राह्मणने फिरनेका

और वह इस से बचने के लिये वन में चलागया, परन्तु जब उसने सुना कि प्रतिज्ञा भंग से पिता को जलोदर होगया तो अपने को बलिदान करने के लिये वन से नगर को लौटा ॥

(१५) पुरुष बलिका होना देवताओंकोभी अभीष्ट न था इस लिये इन्द्र ने पुरुष रूप धारण करके रोहित को नगर में जाने से रोका। और ऐसा हित कर उपदेश दिया जो सदा के लिये सब को ग्रहण करने योग्य है। आर्य जातिकी वर्तमान अवस्थामें यह विशेषता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपदेश दिया है, चौथे बरस फिर बन में फिरता रहा जब समाप्ति पर नगर को लौटा तो उस को पुरुष रूप में इन्द्र मिले और कहा सोया हुआ मनुष्य कलि रूप होता है। जागा हुआ द्वापररूप खडा हुआ त्रेता रूप और चलता फिरता हुआ (सर्वोत्तम) कृत को प्राप्त होता है इस लिये फिर"। रोहित यह बिचार कर कि मुझे ब्राह्मणने फिरने का उपदेश किया है पांचवें साल फिर वन में फिरता रहा जब समाप्ति पर नगर को लौटा तो पुरुष रूप में इन्द्र ने मिल कर कहा "फिरने वाला मधु प्राप्त करता है। फिरने वाला स्वादु उदुम्बर को प्राप्त करता है, सूर्य के श्रम को देख जो फिरता हुआ कभी नहीं आलस्य करता। इसलिये फिर" (१५)रोहित यह सोच कर कि मुझे ब्राह्मण ने फिरने का उपदेश किया है छठे बरस फिर बन में फिरता रहा। इस काल में उसको सूयवस का पुत्र अजीगर्त ऋषि भूख से मरता हुआ उस वन में मिला (१६)। उसके तीन पुत्र थे शुनः पुच्छ शुनःशेप और शुनो लांगूल। उस को रोहितने कहा "हे ऋषि मैं आप को सौ गौ दूंगा। इन में से एक पुत्र को मुझे दो। जिस से मैं अपने को छुडा सकूं। ऋषि ने बडे बेटे को पकड़ कर कहा इस को तो मैं न दूंगा इसी तरह माता ने सब से छोटे बेटे को पकड़ कर कहा इस को मैं न दूंगी तब उन्हों ने

से उपयोगी है। वास्तव में आलस्य ही हमारे दुःखों का मूल है। हम अधिक विश्राम की इच्छा करते हैं। घरसे बाहर नहीं निकलना चाहते। देश देशान्तरमें भ्रमण और परिश्रम करके अपने भाग्य को गति युक्त नहीं करना चाहते। इसीलिये हमारा भाग्य सोया हुआहै॥

(१६) इन्द्र का आशय रोहित को छः वर्ष तक फिराने का यह था कि देवताओंने जिस भक्त को तपाकर ऋषि बनाना था वह अभी बालक अवस्था में थे। जब वह कुमार अवस्था को प्राप्त होगए, तो रोहित से अजीगर्त की भेट हुई॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीच के बेटे शुनःशेप को देना स्वीकार किया (१७)। रोहित ऋषि को सौ गौ देकर और शुनःशेप को साथ लेकर बनसे नगर में लौट आया। और पिता के पास जाकर कहा, हे पिता मैं इस के द्वारा अपने को छुड़ाऊंगा। राजा ने वरुण के पास जाकर कहा कि मैं शुनःशेप से आपका यज्ञ करूंगा। वरुण ने स्वीकार किया और कहा कि ब्राह्मण क्षत्रियसे श्रेष्ठ है (१८) फिर वरुणने राजाहरिश्चन्द्र को राजसूय यज्ञ करने का उपदेश किया। हरिश्चन्द्र ने राजसूय यज्ञ प्रारम्भ किया और उसके अभिषेचनीय नाम दिन में पशु की जगह शुनःशेप को ग्रहण किया। इस राजसूय यज्ञ में विश्वामित्र होता जमदग्नि अध्वर्यु वसिष्ठ ब्रह्मा और अयास्य ऋषि उद्गाता थे। (पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि पुरुष से यज्ञ किया जाय इस लिये) जब शुनःशेप का कुशा से युक्त प्लक्ष शाखा से उपाकरण संस्कार हो चुका तब राजा को यूप में बांधने वाला कोई नहीं मिला (१९) तब सूयवसका पुत्र अजीगर्त बोला कि मुझे सौ गौ और दो सौ मैं इस को यप में बांध दूंगा। उस को राजा ने सौ गौ और दीं और उसने उसको यूप में बांध दिया जब शुनःशेप को इस प्रकार उपाकरण करके बांध दिया गया, आप्रीसूक्त के मंत्रों से

---

(१७) अजीगर्त का वृत्तान्त सिद्ध करता है कि भूख मनुष्य के उच्च भावों को नष्ट कर देती है। और नीच भाव प्रबल होजाते हैं इसलिये अपने को ऐसी अवस्था में कभी नहीं गिरने देना चाहिये कि खाने को अन्न भी न मिल सके ॥

(१८) क्योंकि ब्राह्मणमें ही वह तेज है जिसके द्वारा ऐसी अवस्था में जहां बल और शस्त्र कुछ काम नहीं आते उसके प्राणों की रक्षा होसक्ती है ॥

(१९) इससेस्पष्ट प्रतीत होता है, कि राजाका यह कर्म अपूर्व और विलक्षण था। और आर्य जाति में पुरुष बलि नहीं होती थी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रयाज कर्म होकर पर्यग्निकरण संस्कार होचुका तब राजा को शुनःशेपका मारने वाला कोई नहीं मिला, (१९) तब सूयवस के पुत्र अजीगर्तने कहा मुझे सौ गौ और दो मैं इसका वधकरूंगा (२०) उस को राजा ने सौ गौ और दीं। और वह खड्गको पैना कर शुनःशेप की ओर चला। शुनःशेप ने विचार किया कि यह तौ मुझे पशु की तरह मारने लगे हैं मैं देवताओंकी शरण लूं (२१)। ऐसा सोच कर वह पहले देवताओं में मुख्य प्रजापति के पास गया (अर्थात् मन से चिन्तन किया) और २४ वें सूक्त के पहले मंत्र से प्रजापति को सम्बोधन किया। (ऐ० ब्रा० पं०७ खं० १३—१६)

इन मंत्रों में केवल अपने छुटकारे के लिये प्रार्थना नहीं हैं इसी लिये शुनःशेप इन के द्रष्टा कहे जाते हैं अर्थात् मनुष्य मात्र के हित के लिये उन्होंने इन मंत्रों को देवताओं के अनुग्रह से देखा (अन्तःकरण में भान किया) और उच्चारण करके यह दाय हमारे लिये छोड़ गए। इस लिये इन्हीं मंत्रों से हम सब प्रार्थना करसकते हैं। और अनेक कर्मों में इन का विनियोग कर सकते हैं, जैसा आगे विनियोगों के देखने से प्रतीत होगा॥

---

(२०) जब नीच भाव प्रबल होजाते हैं तो मनुष्य परमात्मा का भी शत्रु बन जाता है और ऐसे कर्म करने को उद्यत होजाता है जिस को क्रूर से क्रूर पशु भी नहीं करते मनुष्य का मनुष्यत्व इसी में है कि उस की नीच चेष्टाएं सर्वदा उच्च भावों द्वारा दबती रहें॥

(२१) यदि हम भी विपत्ति के समय घबराने वा निराश होने की जगह देवताओं की शरण लें तो वह विपत्ति देवताओं के साथ हमारा सम्बन्ध होने का साधन बन कर हम को उच्च बना सकती है विपत्ति में देवताओं की शरण लेने से शुनःशेप और कवष मंत्र द्रष्टा ऋषि बने॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं० १ सू०२४ मं०१

प्रजापतिर्देवता आजीगर्तिःशुनःशेपःकृत्रिमो वैश्वा मित्रो देवरातिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः॥११।११।११।११॥

कस्यनूनंकतमस्यामृतानां मना-

महेचारुदेवस्यनाम। कोनोमह्या

अदितयेपुनर्दात्पितरंचदृशेयंमात-

रंच ॥१॥

कस्य	कस्य	किस का
नूनम्	इदानीम्(आ०को)	अब
कतमस्य	बहूनां मध्ये कस्य	बहुतों में से किस का
अमृतानाम्	अमरणधर्मणाम्	अमरण धर्मियों में से
मनामहे	चिन्तयेम	हम चिन्तन करें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चारु॑	शोभनम्	सुन्दर को
दे॒वस्य॑	देवस्य	देवता के
नाम॑	नाम	नाम को
कः	कः	कौन
नः॒	अस्मान्	हम को
म॒ह्यै	महत्यै	महान् के लिये
अदि॑तये	अदितये	अदिति के लिये
पुन॑ः	पुनः	फिर
दा॒त्	दद्यात्	देवे
पि॒त॑रम्	पितरम्	पिता को
च॒	च	और
दृ॒शेय॑म्	पश्येयम	देखूं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मातरम्	मातरम्	माता को
च	च	और

संस्कृतार्थः।

(वयं) इदानीं कस्य, (बहूनाम्) अमृतानां मध्ये कतमस्य देवस्य, शोभनं नाम चिन्तयेम कोऽस्मान्पुनःमहत्या अदितये दद्यात्(येन) पितरञ्च मातरञ्च पश्येयम् ॥ १ ॥

भाषार्थः।

हम किस का, बहुत अमरण धर्मियों में से किस देवता का, सुन्दर नाम चिन्तन करें कौन हम को महती अदति के ताईं फिर देंगे और मैं पिता और माता को देखूंगा ॥ १ ॥

अदिति (Nature) आकाश और पृथिवी और अन्य सब देवताओं की माता प्रकृति का परिणाम रूप यह दृष्ट जगत् है।

मंत्र का आशय यह है कि कौन देवता हम को फिर इस बड़े दृष्ट जगत् में विचरने का अधिकार देंगे। जिस अधिकार को पाकर मैं शुनःशेप द्यौष्पिता और पृथिवी माता का स्वतन्त्रता पूर्वक देख सकूंगा। यूप में बंधा हुआ वा कारागृह (Jail) में पड़ा हुआ, वा बध के लिये पकड़ा हुआ मनुष्य सभी इस मंत्र द्वारा मोक्षण के लिये प्रार्थना कर सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११॥

अग्नेर्वयंप्रथमस्यामृतानां मनामहे
चारुदेवस्यनाम । सनोमह्या अदित
येपुनर्दा त्पितरंचदृशेयंमातरंच॥२॥

अग्नेः	अग्नेः	अग्नि का
वयम्	वयम्	हम
प्रथमस्य	प्रथमस्य	प्रथम का
अमृतानाम्	अमरणधर्मणाम्	अमरणधर्मियों के
मनामहे	चिन्तयेम	चिन्तन करें
चारु	शोभनम्	सुन्दर को
देवस्य	देवस्य	देवता के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

नाम	नाम	नाम को
सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हम को
मह्यै	महत्यै	महान् के ताईं
अदितये	अदितये	अदिति के ताईं
पुनः	पुनः	फिर
दात्	दद्यात्	देवे
पितरम्	पितरम	पिता को
च	च	और
दृशेयम्	पश्येयम्	देखूं
मातरम्	मातरम्	माता को
च	च	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(वयं) अमृतानां प्रथमस्याग्नेर्देवस्य शोभनं नाम चिन्तयेम सोऽस्मान्पुनर्महत्या अदितये दद्यात् (येन) पितरञ्च मातरञ्च पश्येयम् ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(हम) अमर रहने वालों में सब से पहले देवता अग्नि का सुन्दर नाम चिन्तन करें वह हम को फिर महती अदिति के ताईं देवें (जिस से) मैं पिता और माता को देखूं ॥ २ ॥

पहले मंत्र से प्रार्थित होने पर प्रजापति ने शुनःशेप से कहा अर्थात् प्रत्यक्ष में कहा, क्योंकि देवताओं से वार्तालाप करने का अधिकार मंत्र द्रष्टा ऋषियों को है (देखो १।२५।१७।) अथवा शुनःशेप के मन में यह भान हुआ, कि अग्नि सब देवताओं की अपेक्षा प्रथम है। उनका ध्यान करो । इस लिये शुनःशेप ने इस मंत्र से अग्नि का ध्यान किया ॥

इस मंत्र से प्रार्थित होने पर अग्नि ने शुनःशेप से कहा कि सविता सब कार्य्यों में प्रेरणाकरने वाले हैं (तुझे भी इस महान् कार्य्य में अपने भर्ग से प्रेरण करेंगे) उनके पास जा। अग्नि के उपदेश से शुनःशेप ने अगले तीन मंत्रों से सविता से प्रार्थना की ॥ (ऐ० ब्रा० पं० ७ खं० १६)

सविता देवता निचृद्गायत्री छन्दः । ८ । ७ । ८ ।

अभित्वादेवसवित रीशानंवार्य्याणाम् । सदावन्भागमीमहे । ३ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	अभि+	--
त्वा	त्वाम्	आप को
देव	हे देव	हे देव
सवितः	हे सवितः	हे सविता
ईशानम्	स्वामिनम्	स्वामी को
वार्याणाम्	वरणीयानाम् (धनानाम्)	वरने योग्य (धनों) के
सदा	सर्वदा	सदा
अवन्	रक्षक	रक्षक
भागम्	ऐश्वर्यम्	ऐश्वर्य को
ईमहे	अभि + ईमहे सर्वतो याचामहे	सब ओर से मांगते हैं

संस्कृतार्थः

सर्वदा रक्षक हे देव हे सवितर्वरणीयानाम् (धनानाम्) स्वामिनं त्वाम् (वयम्) ऐश्वर्यं सर्वतो याचामहे ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

सदा रक्षा करनेवाले हेदेव हे सविता वरने योग्य (धनों)के स्वामी आप से(हम)सब ओर से ऐश्वर्य को मांगते हैं ॥ ३ ॥

विनियोग–यह मंत्र वैश्वदेव यागके अग्निमन्थन में (आ० श्रौ० सू० २।१६।२) प्रवर्ग्य में (आ० श्रौ० सू० ४।७।१) और प्राव स्तोत्र में (आ० श्रौ०सू० ५।१२।६) पढा जाता है।

यह मंत्र और अगले २ मंत्र प्रथम छन्दोम के वैश्व देव शस्त्र में पढ़े जाते हैं (आ० श्रौ० सू० उ० २।९।५)

वास्तव में सूर्य्य ही सब वरने योग्य धन और ऐश्वर्य के स्वामी हैं। इसलिये सविता नाम से हम उन्हीं से ऐश्वर्य की प्रार्थना करते हैं। वह ऐश्वर्य कैसा हो यह अगले मंत्रमें कहते हैं ॥

सविता देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

यश्चिद्धितइत्थाभगः शशमानः पुरानिदः। अद्वेषोहस्तयोर्दधे ॥४॥

यः	यः	जो (कुछ)
चित्	अपि	भी
हि	खलु	निश्चय करके
ते	तव	आप के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्था	सत्यः	सच्चा
भगः	भजनीयोऽर्थः	सेवने योग्य धन
शशमानः	स्तूयमानः	स्तुति किया जाने वाला
पुरा	पूर्वम्	पूर्व
निदः	निन्दायाः	निन्दा से
अद्वेषः	द्वेषरहितः	द्वेष रहित
हस्तयोः	हस्तयोः	दोनों हाथों में
दधे	धृतः	धारण किया गया

संस्कृतार्थः ।

(हे सवितः) योऽपि खलु सत्यो निन्दायाः पूर्वं स्तूयमानो द्वेषरहितो भजनीयोऽर्थस्तवहस्तयोर्धृतः (तं याचामहे) ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

(हे सविता) जो कुछ भी निश्चय करके सच्चा, निन्दा से पूर्वं स्तुति किया गया, और द्वेषरहित, सेवने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग्य धन आप के हाथ में धारण किया हुआ है (उस को हम मांगते हैं) ॥ ४ ॥

हम ऐसा ऐश्वर्य मांगते हैं जो सच्चा हो जो निन्दा के पूर्व होने से स्तुति के योग्य हो (जब किसी ऐश्वर्य भोग में निन्दा होने लगती है, तो वह स्तुति के योग्य नहीं रहता) जो ऐश्वर्य द्वेष रहित हो हम ऐश्वर्यवान् भी हों और इतने महानुभाव भी हों कि हमारा ऐश्वर्य किसी को बुरा न लगे। जो ऐश्वर्य सविता ने अपने हाथ में धारण किया हुआ है, हम केवल उसी को मांगते हैं। झूठे बनावटी, निन्दा युक्त, द्वेष उत्पन्न करने वाले ऐश्वर्य को नहीं मांगते।

सविता देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८।

भगभक्तस्यतेवय मुदशेमतवावसा।

मूर्धानंरायआरभे ॥ ५ ॥

भगऽभक्तस्य	ऐश्वर्यं विभागं कृतवतः	ऐश्वर्यके बांटने वालेके
ते	त्वदीयाः	आप क
वयम्	वयम्	हम
उत	अतिशयेन	अत्यन्त करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्याम	व्याप्नुयाम	व्याप्त हों
तव	तव	आप की
अवसा	रक्षणेन	रक्षा से
मूर्धानम्	शीर्षम्	शिखर को
रायः	ऐश्वर्यस्य	ऐश्वर्य के
आरभे	आरब्धुम्	आरम्भ करने को

संस्कृतार्थः ।

(हे सवितः) त्वदीया वयमैश्वर्य्यस्य शीर्षमारब्धुमैश्वर्यं विभागं कृतवतस्तव रक्षणेनातिशयेन व्याप्नुयाम ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

(हे सविता) ऐश्वर्य्य के शिखरको आरम्भ करने को आपके (सेवक) हम लोग ऐश्वर्य बांटने वाले आपकी रक्षासे अत्यन्त करके व्याप्त हों ॥५॥

हम थोडे ऐश्वर्य से तृप्त नहीं होते किन्तु ऐश्वर्य के शिखर पर चढने का व्यवसाय करने लगे हैं—इस व्यवसाय में हम विघ्नों से पराजित न हो जावें इस लिये हमारी प्रार्थना है कि हम सविता देव की रक्षा से अत्यन्त करके व्याप्त हों ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरुणोदेवता त्रिष्टुप् छन्दः । ११ । ११ । ११ । ११ ।

नहितेक्षत्रंनसहोनमन्युं वयश्च
नामीपतयन्तआपुः । नेमाआपो
अनिमिषंचरन्ती र्नयेवातस्यप्रमि-
नन्त्यभ्वम् ॥ ६ ॥

नहि	नहि	नहीं
ते	तव	आप के
क्षत्रम्	अखण्डराज्यम्	अखण्ड राज्य को
न	न	न
सहः	बलम्	बल को
न	न	न
मन्युम्	कोपम्	कोप को
१ वयः	पक्षिणः	पक्षी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च॒न	अपि	भी
अ॒मी	अमी	ये
पत॑यन्तः	उत्पतन्तः	उडते हुए
आ॒पुः	प्राप्ताः	पहुंचे
न	न	न
इ॒माः	इमाः	ये
आप॑ः	आपः	जल
अ॒नि॒मि॒षम्	निमेषरहितम्	पलक झांपने के तुल्य भी विश्राम के विना
चर॑न्तीः	चरन्त्यः	चलते हुए
न	न	न
ये	ये	जो
वात॑स्य	वातस्य	पवन के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रऽमिनन्ति	ह्रासयन्ति (आ० को)	कम करते हैं
अभ्वम्	माहद्बलम्	बडे बल को

संस्कृतार्थः।

(हे वरुण) नहि तव क्षत्रं न बलं न कोपमुत्पतन्तोऽमी पक्षिणोऽपि प्राप्ताः न निमेषरहितं चरन्त्य इमा आपः न ये वातस्य महद्बलं ह्रासयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

(हे वरुण) न आप के अखण्ड राज्य को न बल कोऔर न कोप को ये उड़ते हुए पक्षी भी पहुंचे हैं न तनिक भी विश्राम के बिना चलते हुए ये जल और न (ये पर्वत) जो पवन के बडे बलको (रोक कर) कम कर देते हैं ॥ ६ ॥

जब पिछले तीन मंत्रों से शुनः शेप सविता की स्तुति कर चुके तौ सविता ने कहा कि तुम वरुण राजा के लिये नियुक्त हुए हो उनकी शरण लो। इस पर शुनःशेप ने इस सूक्त के शेष मंत्र और अगले (२५वें) सूक्तसे वरुणकी स्तुतिकी (ऐ०ब्रा०पं०७खं०१६)

(१) पक्षियों की गति मनुष्य से अधिक है आकाश में भी वह उड कर चले जाते हैं। परन्तु वह भी वरुण के अखण्ड राज्य की सीमा को नहीं पहुंच सकते। न उन के बल और कोप की थाह लगा सकते हैं। जल पलक झांपने के तुल्य विश्राम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किये विना निरन्तर चलते रहते हैं। पर्वत यद्यपि वायु के भी महान् बल को रोक कर कम कर देते हैं परन्तु ये भी वरुण के राज्य बल और कोप का अन्त नहीं पाते। कोप से यह आशय है कि वरुण का नियम भंग करके समुद्र पर्वत वा आकाशमें चले जाने से भी कोई उन के दण्ड से नहीं बच सकता ॥

वरुणा देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

अबुध्ने राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते पूतदक्षः। नीचीनाः स्थुरुपरि बुध्न एषामस्मे अन्तर्निहिताः केतवः स्युः ॥ ७ ॥

अबुध्ने	प्रतिष्ठारहिते	निराधार में
राजा	राजा	राजा
वरुणः	वरुणः	वरुण
वनस्य	वनस्य	बन के
ऊर्ध्वम्	ऊर्द्धम्	ऊपर
स्तूपम्	सङ्घम्	समूह को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ददते	स्थापयति	स्थापनकरता है
पतऽदक्षः	पवित्रबलः	पवित्रबल वाला
नीचीनाः	अधोमुखाः	नीचे मुख वाले
स्थुः	तिष्ठन्ति	स्थित हैं
उपरि	उपरि	ऊपर
बुध्नः	मूलम्	जड़
एषाम्	एषाम्	इन की
अस्मे	अस्मासु	हम में
अन्तः	अन्तः	अन्दर
निऽहिताः	निहिताः	स्थापित होकर
केतवः	प्रज्ञा (रूपाः)	प्रज्ञा (रूप)
स्युः	भवन्तु	हों

संस्कृतार्थः ।

पवित्रबलो वरुणो राजा प्रतिष्ठारहित आकाशे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वनस्य सङ्घमूर्ध्वं स्थापयति (ते वृक्षाः) अधोमुखा स्तिष्ठन्ति एषां मूलमुपरि (वर्तते)(एते) अस्मास्वन्त निहिताः प्रज्ञारूपाः भवन्तु ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

पवित्र बल वाले वरुण राजा निराधार(आकाश) में ऊपर की ओर बन के समूह को स्थापन करते हैं (ये वृक्ष) नीचे मुख किये हुए हं और इन की जड़ ऊपर है। (ये) हमारे भीतर स्थित होकर प्रज्ञा रूप बनें ॥ ७ ॥

किरणें एक वन के समान हैं जिस तरह वन में चारों ओर शाखा फैली हुई होती हैं। इसी तरह किरणें सब ओर फैली हुई हैं। इन किरण रूपो बन को राजा वरुग निराधार आकाश में स्थापन करते हैं। इन की जड़ ऊपर सूर्य्य में है। और मुख नीचे की ओर। यही किरणें हमारे भीतर प्रवेश करके प्रज्ञा रूप बनें अर्थात् प्रज्ञा में बदल जावें। शक्ति एकरस होने से नष्ट वा उत्पन्न नहीं हो सकती। किन्तु एक शक्ति का दूसरी शक्ति में परिवर्तन हो सकता है। प्रकाश का पाचक शक्ति, तेज, प्रज्ञा इत्यादि अनेक शक्तियों में परिवर्तन होना सम्भव है। हमारी प्रार्थना है कि हमारे भीतर प्रकाश का प्रज्ञा में ही परिवर्तन हो ॥

वरुणोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

उरुंहिराजावरुणश्चकार सूर्या-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यपन्थामन्वेतवाउ । अपदे पादा

प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविध-

श्चित् ॥ ८ ॥

उरुम्	विस्तीर्णम्	विस्तृत
हि	निश्चयेन	निश्चय करके
राजा	राजा	राजा ने
वरुणः	वरुणः	वरुण ने
चकार	चकार	किया
सूर्याय	सूर्याय	सूर्य के लिये
पन्थाम्	मार्गम्	रस्ते को
अनुऽएतवै	अनुगन्तुम्	चलने के लिये
ऊम्	इति प्रसिद्धम्	यह प्रसिद्ध है
अपदे	निराश्रये	बिना टिकाववाले में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पादा	पादौ	पाओं को
प्रतिऽधातवे	प्रक्षेप्तुम्	रखने को
अकः	कृतवान्	किया
उत	अपिच	और
अपऽवक्ता	निराकर्त्ता	दूर करने वाला
हृदयऽविधः	हृदयस्य वेद्धः	हृदय को पीडा देने वाले के
चित्	अपि	भी

संस्कृतार्थः ।

वरुणो राजा सूर्यायानुगमनार्थं निश्चयेन विस्तीर्णं मार्गं चकारेति प्रसिद्धम्, निराश्रये (आकाशे) पादौ प्रक्षेप्तुम् (उपायम्) कृतवान् (इत्यपि प्रसिद्धम्), अपिच (स एव वरुणः) हृदयस्य वेद्धुरपि निराकर्ता (आस्त) ॥८॥

भाषार्थः ।

राजा वरुण ने सूर्य के गमन करन के लिये निश्चय करके चौड़ा, रस्ता बनाया है, यह प्रसिद्ध है । और बिना टिकाव वाले आकाश में पाओं रखने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(उपाय) बनाया है (यह भी प्रसिद्ध है)। किन्तु वह हृदय को पीड़ा देने वाले के हटाने वाले भी हैं ॥८॥

यह बात तो सब देखते हैं कि वरुण ने निराधार आकाशमें सूर्यके गमन के लिये मार्ग बनाया है। परन्तु यह बात सबकोविदित नहीं है कि वही हमारे हृदयको पीड़ा देनेवाले शत्रुके भी हटानेवाले हैं। राजा वरुण जिस प्रकार सृष्टि नियम (cosmic law)के शासन कर्ता हैं। वैसे ही धार्मिक (moral) और सामाजिक नियमों (social laws) के नियन्ता भी हैं ॥

वरुणो देवता त्रिष्टुप् छन्दः ।११।११।११।११।

शतं ते राजन्भिषजः सहस्रमुर्वी-
गभीरा सुमतिष्टे अस्तु। बाधस्व दूरे
निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमु-
ग्ध्यस्मत् ॥ ९ ॥

शतम्	शतम्	सौ
ते	तव	आप के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजन्	हे राजन्	हे राजा
१ भिषजः	भेषजानि	रोगादि दुःखों की निवृत्ति के उपाय
सहस्रम्	सहस्रसंख्याकानि	सहस्रों
उर्वी	विस्तीर्णा	दूर तक पहुंचने वाली
गभीरा	गम्भीरा	गहरी
सुऽमतिः	कल्याणमतिः	कल्याण बुद्धि
ते	तव	आप की
अस्तु	अस्तु	हो
बाधस्व	बाधस्व	विनाश करो
दूरे	दूरे	दूर
२ निःऽऋतिम्	पापदेवताम	पाप की शक्ति को
पराचैः	पराङ्मुखाम् (कृत्वा)	परे लौटा कर
कृतम्	कृतम	किये हुए को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्	अपि	भी
एनः	पापम्	पाप को
प्र	प्र +	–
मुमुग्धि	प्र+मुमुग्धि प्रकर्षेण मुक्तं कुरु	अतिशय करके छुडाओ
अस्मत्	अस्मत्तः	हम से

संस्कृतार्थः।

हे राजन्(वरुण)तव शतसहस्रसंख्याकानि भेषजानि (सन्ति) तव कल्याणमतिर्विस्तीर्णा गम्भीरा (च) अस्तु, (त्वम्) पापदेवतां पराङ्मुखाम् (कृत्वा) दूरे बाधस्व (अपि च)कृतमपि पापमस्मत्तः प्रकर्षेण मुक्तं कुरु ॥९॥

भाषार्थः।

हे राजा (वरुण) आपके पास (रोगादि दुःखों की निवृत्ति के) सैंकड़ों हजारों उपाय हैं। आपकी कल्याण बुद्धि गहरी और दूर तक पहुंचने वाली हो। (आप) पाप की शक्ति को लौटा कर (हम से) दूर (लेजाकर) विनाश करो। और जो किया हुआ भी(हमारा पाप है) उसको हम से पूर्णतया छुड़ा दो ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) राजा वरुण के पास हमारे रोगादि दुःखों के सैंकड़ों हजारों भेषज (इलाज) हैं वह चाहें तौ क्षण भर में उन को शमन कर सकते हैं। उनकी कल्याण बुद्धि गहरी और दूर तक पहुंचने वाली हो जो हम तक भी पहुंच जाव॥

(२) निर्ऋति से तात्पर्य्य वह शक्ति है जो हमें पाप की ओर प्रवृत्त करती है, वरुण देवता उस को हम से परे लौटा कर ले जावें और दूर जाकर उस का विनाश करें, हम उस से प्रेम नहीं करते॥

वरुणो देवता त्रिष्टुप् छन्दः।११।११।११।११।

अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृश्रे कुह चिद्दिवेयुः। अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति॥ १०॥

अमी	अमी	ये
ये	ये	जो
ऋक्षाः	सप्तर्षयः	सप्तर्षि तारे
नि ऽ हितासः	स्थापिताः	स्थापन किये गए
उच्चाः	उच्चाः	ऊंचे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्तम्	रात्रौ	रात्रि में
ददृश्रे	दृष्टाः	देखे गये
कुह	कुह + चित्, क्वापि	कहीं भी
चित्	+चित्	–
दिवा	दिवसे	दिन में
ईयुः	गताः	गए
२ अदब्धानि	हिंसितुमशक्यानि	जिनको कोई हिंसा न कर सके अर्थात् बिगाड़ न सके
२ वरुणस्य	वरुणस्य	वरुण के
२ व्रतानि	व्रतानि	नियम
विऽचाकशत्	विशेषेण दीप्यमानः	विशेषकरके प्रकाशमान
चन्द्रमाः	चन्द्रमाः	चन्द्रमा
नक्तम्	रात्रौ	रात्रि में
एति	गच्छति	चलता है

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अमी ये सप्तर्षय उच्चा स्थापिता रात्रौ दृष्टाः ते दिवसे क्वापि गताः, वरुणस्य व्रतानि हिंसितुमशक्यानि, चन्द्रमा रात्रौ दीप्यमानः (सन्) गच्छति ॥१०॥

भावार्थः ।

ये जो सप्तर्षि तारे ऊंचे स्थापन किये हुए रात्रि में दीखते थे, वह दिन में कहीं चले गये। वरुण के नियम बिगाड़े नहीं जा सकते। चन्द्रमा रात्रि में प्रकाशमान हुआ २ चलता है ॥१०॥

सप्तर्षि तारे उत्तर देशों में इतने ऊंचे रहते हैं कि दिन में वा रात्रि में कभी भी अस्त नहीं होते यद्यपि दिन में विना नलिका के दिखाई नहीं देते॥

(२) वरुण के नियम वह हैं जो इस सृष्टि को सब ओर से शासन करते हैं, जो नियम अटल हैं और जिनको कोई बिगाड नहीं सकता, जैसे सप्तर्षि तारे रात्रि में दीखते हैं और दिन में नहीं दीखते इस से किसी को यह शंका नहीं होती कि वे नष्ट हो गए हैं अब रात्रि में फिर नहीं आयेंगे वा चन्द्रमा जो आज रात्रि में विशेष प्रकाशमान हुआ हुआ चलता है वह अगली पूर्णिमा को फिर इसी तरह जगमगाता हुआ नहीं चलेगा। ऐसे ही जगत् की सब घटनाएं नियम से बद्ध हैं किसी अवस्था में भी यह शंका नहीं होनी चाहिये कि अमुक अवस्था जो आगे नियम से होती आई है अब नहीं होगी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरुणो देवता त्रिष्टुप् छन्दः । ११ । ११ । ११ । ११ ।

तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमान-
स्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः । अ-
हेळःमानोवरुणेहबोध्यु रुशंसमान
आयुःप्रमोषीः । ११ ।

तत्	तत्	यह
त्वा	त्वाम्	आप को
यामि	याचे(निघं०३,१९)	मैं मांगता हूं
ब्रह्मणा	मंत्ररूपवाण्या	मंत्ररूप वाणी से
वन्दमानः	अभिवादयन्	प्रणाम करता हुआ
तत्	तत्	यह
आ	आ +	–
शास्ते	आ + शास्ते प्रार्थयते	प्रार्थना करता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यज॑मानः	यजमानः	यजमान
ह॒विःऽभि॑ः	हविर्भिः	हवि से
अ॒हे॑ळमानः	अक्रुध्यन्	क्रोध न करता हुआ
व॒रु॒ण॒	हे वरुण	हे वरुण
इ॒ह	इह	यहां
बो॒धि॒	विदितो भव	जाने जाओ
उरु॑ऽशंस	हे विस्तीर्णप्रशंसोपेत	हे अतिप्रशंसनीय
मा	मा	मत
नः॒	अस्मदीयम्	हमारी
आयु॑ः	आयुः	आयु को
प्र	प्र +	–
मो॒षीः॒	प्र + मोषीः अपहर	हरणकरो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वरुण मंत्ररूपवाण्याभिवादयन् (अहम्) त्वां तद्याचे (तव) यजमानो हविर्भिः (त्वां पूजयन्) तत्प्रार्थयते यत्त्वम् इहाऽक्रुध्यन्सन् विदितो भव हे विस्तीर्ण प्रशंसोपेत अस्मदीयमायुर्माऽपहर ॥११॥

भाषार्थः ।

हे वरुण मंत्र रूप बाणी से प्रणाम करता हुआ मैं आप से यह मांगता हूं (आपका) यजमान हवि से (आपको पूजकर) यह प्रार्थना करता है कि आप क्रोध न करते हुए यहां जाने जाएं हे अतिप्रशंसनीय हमारी आयु को मत हरण करो ॥ ११ ॥

विनयोग—यह मंत्र एकादशिन में वरुणका याज्या है (आ० श्रौ० ३।७।१५) और वरुणप्रघास कर्म में वरुण की हवि का याज्या है (आ० श्रौ। २।१७।१५)

मंत्र रूपवाणी से प्रणाम करके और हवि से पूज कर हम वरुण से यह मांगते हैं। कि वह हमें क्रोधरहित जान पड़ें। हमें इस बात का निश्चय होजावे कि वरुणहमसे नाराज नहीं हैं। जिनकी स्तुति बहुत दूर दूर तक की जाती है ऐसे वरुण हमारी आयु को हरण न करें ॥

वरुणोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ११ ११।११।११

तदिन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहु स्त-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दयं केतो हृदआविचष्टे । शुनःशेपो-
यमह्वद्गृभीतः सोअस्मन्राजाव-
रुणोमुमोक्तु ॥१२॥

तत्	तत्	यह (बात)
इत्	एव	ही
नक्तम्	रात्रौ	रात्रि में
तत्	तत्	यह
दिवा	दिवसे	दिन में
मह्यम्	मह्यम्	मेरे ताईं
आहुः	आहुः	कहते हैं
तत्	तत्	यह (बात)
अयम्	अयम्	यह
केतः	बोधः	बोध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हृदः	हृदयस्य	हृदय का
आ	सर्वतः	सब ओर से
वि	वि+	–
चष्टे	वि + चष्ट–स्पष्टं कथयात	स्पष्ट कहता है
शुनःशेपः	शुनःशेपः	शुनःशेप ने
यम्	यम्	जिस को
अह्वत्	आहूतवान्	बुलाया है
गृभीतः	(यूपे) बद्धः	(थम्भमें) बंधेहुए ने
सः	सः	वह
अस्मान	अस्मान्	हम को
राजा	राजा	राजा
वरुणः	वरुणः	वरुण
मुमोक्तु	मुक्तान्करोतु	छुडावे

संस्कृतार्थः ।

तदेव रात्रौ तद्दिवा मह्यं (कवयः) आहुः अयं हृद-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यस्य बोधः (अपि)तदेव सर्वतः स्पष्टं कथयति,(यूपे) बद्धःशुनःशेपोयमाहूतवान् स वरुणोराजाऽस्मान् (बन्धनात्) मुक्तान्करोतु ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

यही (बात) रात्रि में यही दिन में मेरे ताईं (विद्वान्) कहते हैं, यह हृदय का बोध भी स्पष्ट यही कहता है। (यूप में) बान्धेहुए शुनःशेप ने जिस को बुलाया था वह वरुण राजा हम को भी (बन्धन से) छुडावें ॥ १२ ॥

विपत्ति में विद्वान् लोग दिन रात यही उपदेश करते हैं और हृदय से भी स्पष्ट यही शब्द निकलता है, कि वरुण की शरण लेनी चाहिये। जिस वरुण को शुनःशेप ने बुलाया वही हमें भी पाप के बन्धन से छुडावें ॥ यह प्रार्थना हमारे लिये शुनःशेप छोड़ गए हैं। यह और अगला मंत्र इस बातको सिद्ध करते हैं कि शुनःसेप की स्तुति केवल अपने लिये नहीं है, किन्तु उनसे दृष्ट मंत्र ऐसे हैं जिनसे सब स्तुति कर सकते हैं ॥

वरुणो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११

शुनःशेपो ह्यह्वद् गृभीतस्त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः। अवैनं राजा वरुणः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सस॒ज्या ह्वि॒ह्वाँ॑श्च॒दृ॑ग्धो॑ वि॒मु॑मो॒क्तपा॑-
श्या॑न् ॥ १३ ॥

शु॒नः॒शेप॑ः	शुनःशेपः	शुनःशेप ने
ह्वि	प्रसिद्धम्	यह प्रसिद्ध है
अह्व॑त्	आहूतवान्	बुलाया
गृ॒भी॒तः	गृहीतः	पकड़ा हुआ
त्रि॒षु	त्रिषु	तीनों में
आ॒दि॒त्यम्	अदितेःपुत्रम्(वरुणम्,	अदिति के पत्र (वरुण) को
द्रु॒ऽप॒देषु॑	काष्ठस्तम्भेषु	काठ के थंभों में
ब॒द्धः	बद्धः	बन्धा हुआ
अव॑	अव +	–
१ ए॒न॒म्	एनम्	इस को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

राजा	राजा	राजा
वरुणः	वरुणः	वरुण
ससृज्यात्	अव+ससृज्यात् विमुक्तं करोतु	छुडावे
विद्वान्	विद्वान्	विद्वान
अदब्धः	वञ्चितमशक्यः	जिसे कोई धोखा नहीं दे सकता
वि	वि+	–
मुमोक्तु	वि+मुमोक्तु वि-च्छिन्द्यात्	काटे
पाशान्	पाशान्	पाशों को

संस्कृतार्थः ।

गृहीतःत्रिषु काष्ठस्तम्भेषु बद्धः शुनःशेपोऽदितेः पुत्रम् (वरुणम्) आहूतवानिति प्रसिद्धम् (स एव) राजा वरुण एनम् (माम्) विमुक्तं करोतु । (सः) विद्वान् वञ्चितुमशक्यः (वरुणः) पाशान् विच्छिद्यनात् ॥१३॥

भाषार्थः ।

पकड़े हुए (और) तीन काठ के थंभों में बंधे हुए शुनःशेप ने अदिति के पुत्र (वरुण) को बुलाया था

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह प्रसिद्ध है। (वही) राजा वरुण (इसमुझ) को छुडावें। (वह) विद्वान और धोखा न दिये जाने वाले (वरुण) पाशों को काटें ॥ १३ ॥

(१) एनम् से तात्पर्य प्रार्थना करने वाला है। राजा वरुण विद्वान् हैं, यद्यपि हमें दीखते नहीं तौभी यदि प्रत्यक्ष विद्वान् की अपेक्षा हम उनका कम आदर न करें वा किसी मिषसे उनके आदेश को टालना न चाहें तौ वह हमें अवश्य पाप और दुःख के सब बन्धन काट कर निर्मुक्त कर देंगे ॥

वरुणोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

अव॑ ते॒ हेळो॑ वरुण॒ नमो॑भि॒रव॑ य॒ज्ञेभि॑रीमहे ह॒विर्भिः॑। क्षय॑न्न॒स्मभ्य॑मसुर प्रचेता॒ राज॒न्नेनां॑सि शिश्रथः कृ॒तानि॑ ॥१४॥

अव॑	अव (ईमहे) अपनयामः	निवारण करते हैं
ते॒	तव	आप के
हेळः॑	क्रोधम्	क्रोध को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरुण	हे वरुण	हे वरुण
नमःऽभिः	नमस्कारैः	नमस्कारा से
अव	अव +	–
यज्ञेभिः	यज्ञैः	पूजाओं से
ईमहे	अव + ईमहे अपनयामः	दूर करते हैं
हविःऽभिः	हविर्भिः	हवियों से
क्षयन्	निवसन्	निवास करते हुए
अस्मभ्यम्	अस्मदर्थम्	हमारे लिये
असुर	हे प्राणवन् (नि० ३।२।२)	हे प्राणवान
प्रऽचेतः	हे प्रकृष्टप्रज्ञा युक्त	हे बड़ी बुद्धि वाले
राजन्	हे राजन्	हे राजा
एनांसि	पापानि	पापों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिश्रथः	शिथिलानि कुरु	शिथिल करो
कृतानि	कृतानि	किये हुओं को

संस्कृतार्थः।

हे वरुण तव क्रोधं नमस्कारैरपनयामः यज्ञैर्हविर्भिः(च) अपनयामः, हे प्राणवन् प्रकृष्टप्रज्ञायुक्त राजन् (वरुण अस्मदर्थम्(इह) निवसन् (अस्माभिः) कृतानि पापानि शिथिलानि कुरु॥ १४॥

भाषार्थः।

हे वरुण आपके क्रोध को (हम) नमस्कारों से निवारण करते हैं पूजा और हविओं से निवारण करते हैं हे प्राणवान प्रकृष्ट बुद्धियुक्त राजा (वरुण आप) हमारे लिये (यहां) निवास करते हुए (हम से) किये हुए पापों को शिथिल कीजिये॥ १४॥

विनियोग–यह और अगला मंत्र अवभृथ इष्टि में वरुण की याज्या और अनुवाक्या हैं (आ०श्रौ० सू० ६। १३। ७)

जो हमारे किये हुए भी पाप हैं। वे नमस्कार पूजा और हवि देने से छीज जाते हैं। पिछले पापों के छीजने के लिये वही लोग वरुण को प्रसन्न करना चाहते हैं, जो पूरे आस्तिक हैं और आगे के लिये ऐसे पाप कदापि न करने का संकल्प रखते हैं क्यों कि वरुण प्राणवान और बडी बुद्धि वाले हैं जड नहीं हैं जैसे अज्ञान के कारण हमें आकाश रूप में प्रतीत होते हैं वह यजमान के हृदय से भेद हैं। मन में कपट रख कर उनको नमस्कार पूजा और हविसे प्रसन्न करना असम्भव है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरुण देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं

विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य

व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥१५॥

उत्	उत् (अव्यय) उन्मोचय	ऊपर खेंच कर खोलो
उत्ऽतमम्	उपरिष्ठम्	ऊपर वाले को
वरुण	हे वरुण।	हे वरुण
पाशम्	पाशम्	पाश को
अस्मत्	अस्मत्तः	हम से
अव	अव (अव्यय) अवमोचय	नीचे खेंच कर खोलो
अधमम्	अधस्थम्	नीचे वाले को
वि	वि +	–
मध्यमम्	मध्यमम्	बीच वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथय	वि+अथ विमोचय	काट कर खोलो
अथ	अनन्तरम्	इस के पीछे
वयम्	वयम्	हम
आदित्य	हे अदितिपुत्र (वरुण)	हे अदिति के पुत्र (वरुण)
व्रते	व्रते	नियम में
तव	तव	आप के
अनागसः	अपराधरहिताः	अपराध रहित
अदितये	अदितये	अदिति के लिये
स्याम	स्याम	होवें

संस्कृतार्थः।

हे वरुणोपरिष्ठं पाशमस्मत्त उन्मोचय अधस्थं पाशम् वमोचय मध्यमम् (पाशम्) विमोचय अनन्तरं हेअदितिपुत्र (वरुण) वयं तव व्रते (स्थित्वा) अदितये अपराधरहिताःस्याम ॥ १५॥

भाषार्थः।

हे वरुण ऊपर के(पाश)को हम से ऊपर की ओर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खैंच कर छुडाओ नीचे के (पाश) को नीचे खैंच कर छुडाओ बीच के (पाश) को काट कर छुडाओ इस से पीछे हे अदिति के पुत्र हम आपके नियम में स्थित रह कर अदिति के सामने निरपराध होवें ॥ १५ ॥

जिस प्रकार कोई सिर कमर और पाओं से बंधा हुआ हो और कोई दयालु पुरुष उस के सिर के पाश को ऊपर से खैंच कर बीच के पाश को काट कर और नीचे के पाश को नीचे खैंच कर निकाल ले तो वह सब पाशों से मुक्त होकर इस जगत में स्वतन्त्रता पूर्वक भ्रमण करता है । इसी प्रकार हम भी जो सर्वत्र पाप रूपी पाश से जकड़े हुए हैं वरुण से प्रार्थना करते हैं—कि हमारे पापको छुड़ा कर हमको अपने नियम पर चलने की सामर्थ्य दें । जिस से हम अदिति माता अर्थात् इस सृष्टि के सामने निरपराध हों ।

ऋ० मं० १ सू० २५ ।

वरुणो देवता शुनःशेपऋषिर्गायत्रीछन्दः ८।८।८।

यच्चिद्धिते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम् । मिनीमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥

यत्	यत् + चित्	यद्यपि
चित्	+ चित्	—
हि	खलु	निश्चय करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ते	तव	आप के
विशः	प्रजाः	साधारण मनुष्य
यथा	यथा	जैसे
प्र	प्र+	–
देव	हे देव	हेदेव
वरुण	हे वरुण	हेवरुण
व्रतम्	व्रतम्	नियम को
मिनीमसि	प्र+मिनीमसि उल्लंघयामः	उल्लंघन करते हैं
द्यविऽद्यवि	प्रतिदिनम्	प्रतिदिन

संस्कृतार्थः ।

हे देव वरुण (वयम्) प्रजा इव यद्यपि खलु तव व्रतं प्रतिदिनमुल्लङ्घयामः (तेनापराधेन) ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे देव वरुण (हम) मनुष्यों की तरह यद्यपि आपका नियम प्रतिदिन उल्लंघन करते हैं (उस के लिये) ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग—सत्र के अभिप्लव पृष्ठ्या के दिनों में होत्रकों के प्रातः सवन सम्बन्धी शस्त्रों में इस सूक्त का पाठ है (आ० श्रौ०स० उ० १।५।९)

इस मंत्र का अगले मंत्र के साथ सम्बन्ध है :—

एक थोड़ी सी सीमा में मनुष्य को स्वतन्त्रता दी गई है। जिस से वह अनुभव द्वारा सीख सके कि वरुण के नियम पालना ही श्रेय का हेतु है। और उन को उल्लंघन करना सर्वथा हानि कारक है। परन्तु इस बात को जानने वाला भी साधारण मनुष्यों की तरह प्रतिदिन नियमों का उल्लंघन करता रहता है। इसमें कारण उस की दुर्बलता है। इसलिये अगले मंत्र में प्रार्थना है।

वरुणोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

मानो॑व॒धाय॑ह॒त्नवे॑ जिहीळा॒नस्य॑

रीरधः। मा॑हृणा॒नस्य॑म॒न्यवे॑ ॥२॥

मा	मा	मत
नः	अस्मान्	हमको
वधाय	वधाय	वध के लिये
हत्नवे	मृत्युसाधनाय	मृत्यु साधन के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिह्वीळानस्य	अनादरं कृतवतः	अनादर करने वाले की
रीरधः	समर्पय	सौंपो
मा	मा	मत
हृणानस्य	क्रुद्धस्य	क्रुद्ध हुए के
मन्यवे	क्रोधाय	क्रोध के लिये

संस्कृतार्थः।

(हे वरुण) अनादरं कृतवतः (जनस्य) मृत्युसाधनवधायास्मान्मा समर्पय क्रुद्धस्य (तव) क्रोधाय (अस्मान्) मा (समर्पय)॥ २॥

भाषार्थः।

(हे वरुण) अनादर करने वाले (पुरुष) की मृत्यु का साधन जो वध है, उसके लिये हम को मत सौंपो क्रुद्ध हुए (आपके) क्रोध के लिये (हम को) मत (सौंपो) ॥२॥

जो वरुण के नियमों का अनादर करता है उसकी मृत्यु का साधन जो बध है उस बध के लिये हमें वरुण न सौंपें अर्थात् हम अनादर करने वाले की मौत न मरें, किन्तु हम वरुण के नियमों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को आदर करने वालों की गणना में हों, वरुण हम से क्रुद्ध होकर अपने क्रोध के वशीभूत हम को न करें, किन्तु हम पर कृपा करके ऐसा आत्मिक बल प्रदान करें जिस से हम उनके नियमों को उल्लंघन न करते हुए उन के क्रोध के पात्र न बनें ॥

वरुणोदेवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

विमृळीकायतेमनो रथीरश्वंन-
सन्दितम् । गीर्भिर्वरुणसीमहि ॥३॥

वि	वि+	-
मृळीकाय	कृपायै	कृपा के लिये
ते	तव	आप के
मनः	मनः	मन को
रथीः	रथस्वामी	रथ का स्वामी
अश्वम्	अश्वम्	घोडे को
न	इव	न्याईं
सम्ऽदितम्	सम्यक् खण्डितम्	सम्यक् कटे हुए को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गी:ऽभि:	स्तुतिभि:	स्तुतियों से
वरुण	हे वरुण	हे वरुण
सीमहि	वि+सीमहि विबध्नीम:	बांधते हैं

संस्कृतार्थः।

(हे वरुण) कृपायै तव मन स्स्तुतिभिर्वि बध्नीमः, यथारथस्वामी सम्यक् खण्डितमश्वम् (उपनाहैनर्बध्नाति) ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

हे वरुण कृपा के लिये हम आप के मन को स्तुतिओं द्वारा बांधते हैं जैसे रथ का स्वामी सम्यक् कटे हुए घोड़े को (पट्टियों से) बांधता है ॥ ३ ॥

वरुण का मन हमारे पापों के कारण युद्ध में कटे हुए घोडे की तरह घायल है जिस तरह रथवान् कटे हुए घोडे को पट्टियों से बांधता है उसी तरह हम वरुण के मन को स्तुतियों से बांधते हैं। स्तुतियों से वरुण के मन को ऐसा ही संतोष होता है जैसे कटे हुए घोड़े को मल्लम पट्टी से। ऐसा करने से संतुष्ट होकर वरुण हम पर कृपा करेंगे और हमें पाप से छुडावेंगे॥

किसी देवता की मनुष्य जितनी स्तुति करता है उतना ही वह उस देवता के गुणों को धारण करता है इस लिये दृढ व्रत वाले वरुण की स्तुति से हम भी दृढ व्रत होकर निष्पाप बन सकते हैं॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

परा॒हि॒मे॒विमन्यव॒: पतन्ति॒वस्य

इष्टये । वयो॒नव॒स॒तीरुप ॥४॥

परा	पराङ्मुखाः (भूताः)	हटी हुई
हि	हि	निश्चय करके
मे॒	मम	मेरी
विऽमन्यवः	क्रोधरहिताः (बुद्धयः)	क्रोध रहित (बुद्धियां)
पतन्ति	पतन्ति	गिरती हैं
वस्यःऽइष्टये	अतिशयेन धनवतः प्राप्तये (वसुमत् + ईयसुन् + इष्टये)	अतिशय करके धनवान की प्राप्ति केलिये
वयः	पक्षिणः	पक्षी
न	इव	तरह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वसतीः	नीडान्	घोंसलों को
उप	प्रति	ओर

संस्कृतार्थः

मम क्रोधरहिताः (बुद्धयः) (क्रोधाश्रयेभ्यः)पराङ्मुखाः (भूताः)अतिशयेन धनवतः प्राप्तये नीडान्प्रति पक्षिणइव पतन्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

मेरी क्रोध रहित (बुद्धियां)क्रोध के स्थानों से हटी हुई धन वाले की अतिशय करके प्राप्ति के लिये गिरती हैं जैसे घोंसलों की ओर पक्षी ॥ ४ ॥

साधारण मनुष्य प्रायः मन में किसी न किसी पर क्रुद्ध किसी न किसी से असंतुष्ट किसी न किसी को कोसता रहता है और उसके क्रोध के भाजन प्रायः उसके स्त्री पुत्र भृत्य इत्यादि आत्मीयवर्ग ही होते हैं। इस अनुचित क्रोध की अवस्थामें वरुण में मन लगना असम्भव है, परन्तु जब मन की वृत्तियां क्रोध रहित हो जाती हैं तो जो क्रोध के भाजन थे उन से हट कर अतिशय करके धनवान जो वरुण हैं उनकी ओर गिरती हैं, जैसे पक्षी स्वभाव से ही अपने घोंसलों की ओर गिरते हैं कुछ पुरुषार्थ की अपेक्षा नहीं रखते, इसी तरह क्रोध रहित होने से वृत्तियां स्वयं वरुण में जा लगती हैं ॥

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

कदाक्षत्रश्रियंनर मावरुणंकरामहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृळीकायोरुचक्षसम् ॥ ५ ॥

कदा	कदा	कब
क्षत्रश्रियम्	अखण्डराज्यंसम्पत्तर्यस्य तम्	अखंडराज्य सम्पत्ति वाले को
१ नरम्	नरम्	नर को
आ	आ+	—
वरुणम्	वरुणम्	वरुण को
करामहे	आ+करामहे आगतं करवाम	आगमनकरावें
मृळीकाय	कृपायै	कृपा के लिये
उरुचक्षसम्	विस्तीर्णदृष्टयुपेतम्	बहुत दूर तक देखने वालो को

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) अखण्डराज्यसम्पत्तियुक्तं विस्तीर्णं दृष्टयुपेतं नरं वरुणं कृपायै कदाऽऽगतं करवाम ॥५॥

भाषार्थः ।

अखण्डराज्य सम्पत्ति वाले बहुतदूर तक देखने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले नर वरुण का कृपा करने के लिये हम कब आगमन करावेंगे ॥५॥

(१, नर से तात्पर्य्य नेतावीर है जो अनुगमन करने के योग्य हो। वरुण के आने के लिये ऐसी तीव्र उत्कण्ठा होने से ही वरुण आते हैं॥

वरुणोदेवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

तदित्समानमाशाते वेनन्ता न
प्रयुच्छतः । धृतव्रताय दाशुषे ॥ ६ ॥

तत्	प्रसिद्धम् (हविः)	हवि को
इत्	एव	ही
समानम्	समानम्	एक को
आशाते	अश्नीतः	खाते हैं
वेनन्ता	कामयमानौ (वेनतिः कान्तिकर्मा, (निघं०२।६)	कामना करते हुए
न	न	नहीं
प्र	प्र+	--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युच्छतः	प्र+युच्छतःप्रमादं कुरुतः	प्रमाद करते हैं
धृतऽव्रताय	धृतव्रताय	दृढ नियम वाले के लिये
दाशुषे	हविर्दत्तवते (भक्ताय)	हविदेने वाले (भक्त) के लिये

संस्कृतार्थ ।

(हविः) कामयमानौ (मित्रा वरुणौ) धृतव्रताय (भक्ताय) समानमेव (हविः) अश्नीतः, प्रमादं न कुरुतः ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

(हविकी) कामना करने वाले (मित्र और वरुण) दृढ़ नियम वाले (भक्त) के लिये एक ही (हवि) को खाते हैं (कभी) प्रमाद नहीं करते ॥ ६ ॥

जो भक्त वरुण के नियमों पर दृढता से स्थित है, उस की दी हुई एक ही हवि को मित्र और वरुण दोनों प्रेम से खा लेते हैं और कभी प्रमाद नहीं करते अर्थात् कभी नहीं चूकते, देवताओं की मित्रता चाहने वाले को वरुण के नियमों पर दृढ रहना अत्यावश्यक है ॥

वरुणो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ७।८।८।

वेदायोवीनांपद मन्तरिक्षेणपत-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताम् । वेदनावः समुद्रियः ॥ ७॥

वेद	वेत्ति	जानता है
यः	यः	जो
वीनाम्	पक्षिणाम्	पक्षिओं के
पदम्	मार्गम्	खोज को
अन्तरिक्षेण	अन्तरिक्षेण	अन्तरिक्ष से
पतताम्	उद्गच्छताम्	उड़ते हुओं के
वेद	वेत्ति	जानता है
नावः	नावः	नावों को
समुद्रियः	समुद्रेभवः	समुद्र में होने वाला (वरुण)

संस्कृतार्थः।

योऽन्तरिक्षेणोद्गच्छतां पक्षिणां मार्गं वेत्ति(यश्च) समुद्रेभवः (वरुणः) नावः (मार्गम्) वेत्ति ॥ ७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

जो आकाश मार्ग से चलते हुए पक्षियों के खोज को जानते हैं और जा समुद्र में होने वाले (वरुण) नावों (के खोज) को जानते हैं ॥ ७ ॥

उड़ते हुए पक्षिओं का आकाश में जो खोज है, वह हमारे लिये तत्कालनष्ट होजाता है। परन्तु वरुण उस को सदा जानते हैं क्योंकि वह आकाश की प्रत्येक दिशा में विद्यमान है, इसी तरहसमुद्र में नावों (जहाजों) के खोज को वरुण जानते हैं क्योंकि वह समुद्र में सर्वत्र रहते हैं।

वरुणो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः।
वेदाय उपजायते ॥८॥

वेद	वेत्ति	जानता है
मासः	मासान्	महीनों को
धृतऽव्रतः	धृतनियमः	दृढ़ नियम वाला
द्वादश	द्वादश	बारहों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रजाऽवतः	प्रजायुक्तान्	प्रजा सहितों को
वेद	वेत्ति	जानता है
यः	यः	जो
उपऽजायते	उत्पद्यते	उपजता है

संस्कृतार्थः ।

धृतनियमः (वरुणः) प्रजायुक्तान्द्वादश मासान्वेत्ति यः(च त्रयोदशोमासः)उत्पद्यते(तमपि वेत्ति)॥८

भाषार्थः ।

दृढ़ नियम वाले (वरुण) प्रजा सहित बारहों महीनों को जानते हैं और जो (तेरहवां महीना) उपजता ह (उस को भी) जानते हैं ॥८॥

साल के बारह महीने और महीनों की प्रजा अर्थात् दिन, घड़ी, पल, विपल इन सब को वरुण जानते हैं। किसी साल में १३ महीने भी होते है क्योंकि चन्द्रमास अर्थात् अमावस्या से अमावस्या तक का समय २९ दिन ३१ घड़ी ५० पल (29 *d*, 12 *h*, 44 *m*) का होता है इस को बारह गुणा करनेसे साल ३५४ दिन २२ घड़ी (354 *d*, 8 *h*, 48 *m*) का हुआ। परन्तु सौर वर्ष (सूर्य के सायनमेष से चल कर पुनः सायनमेष में आने तक का काल) ३६५ दिन, १४ घड़ी, ३२ पल (365 *d*, 5 *h*, 48 *m*, 48 *s*) का होता है। इस से प्रति वर्ष १० दिन ५२ घड़ी का अन्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पड़ता है। इसलिये ३ वर्ष में एक मास बढ़ा कर चन्द्र और सौर वर्ष का मेल करलेते हैं। यही तेरहवां महीना है जिस को वरुण जानते हैं।

मनुष्य भी वरुण के नियमों को देखते रहने से इन महीनों को जान गया है।

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ॥८।८।८।

वेद॒वात॑स्यवर्त॒निमु॒रोर्ऋ॒ष्वस्य॑-
बृ॒ह॒तः। वेदा॒येअ॒ध्यास॑ते ॥ ९ ॥

वेद॑	वेत्ति	जानता है
वात॑स्य	वायोः	वायु के
व॒र्त॒निम्	मार्गम्	मार्ग को
उ॒रोः	विस्तीर्णस्य	विस्तीर्ण के
ऋ॒ष्वस्य॑	उच्चस्य	ऊंचे के
बृ॒ह॒तः	महतः	महान के
वेद॑	वेत्ति	जानता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये	ये	जो
अधिऽआ-सते	उपरितिष्ठन्ति	ऊपर स्थित हैं

संस्कृतार्थः ।

विस्तीर्णस्योच्चस्य महते वायोर्मार्गम् (वरुणः) वेत्ति य उपरितिष्ठन्ति (तानपि वेत्ति) ॥ ९ ॥

भावार्थः ।

विस्तीर्ण ऊंचे (और) महान वायु के मार्ग को (वरुण) जानते हैं और जो ऊपर स्थित हैं (उनको भी जानते हैं) ॥ ९ ॥

विस्तीर्ण उच्च और महान वायु के मार्ग को वरुण जानते हैं। वायु उंचाई में पृथिवो से ४५ मील तक (और सूक्ष्म रूप में २१२ मील तक) है। यह वरुण के नियम देखने से मनुष्यों ने निश्चय किया है। वायु से ऊपर रहने वाले जो गन्धर्वादि हैं। उनको वरुण हो जानते हैं अभो तक मनुष्य नहीं जानते ॥

वरुणो देवता गयत्री छन्दः। ८। ८। ८।

निषसादधृतव्रतो वरुणः पस्त्या३स्वा। साम्राज्यायसुक्रतुः॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नि +	–
स॒सा॒द॒	आ+नि+ससाद सर्वतो निषण्ण वान्	सब ओर बैठा हैं
धृ॒तऽव्र॑तः	दृढनियमः	दृढ़ नियम वाला
वरु॑णः	वरुणः	वरुण
प॒स्त्या॑सु	प्रजासु	प्रजाओं में
आ	आ+	–
साम्ऽरा॑ज्याय	साम्राज्याय	चक्रवर्ती राज्य के लिये
सु॒ऽक्रतु॑ः	शोभनप्रज्ञः	सुन्दर बुद्धि वाला

संस्कृतार्थः।

दृढ नियमः शोभनप्रज्ञो वरुणः साम्राज्याय प्रजासु सर्वतो निषण्णवान् ॥१०॥

भाषार्थः।

दृढ़ नियमवाले सुन्दर बुद्धिवाले वरुण चक्रवर्ती राज्य के लिये प्रजाओं में सब ओर बैठे हैं ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे बीच में अदृश्य रूप में बैठे हुए वरुण प्रजा का न्याय पूर्वक अखंड राज्यकर रहे हैं, यह विश्वास मनुष्यके हृदय से लौकिक राजा से होने वाले अत्यचार के भय को उठा देता है ॥

वरुणो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ-

अभिपश्यति। कृतानिया चकर्त्वा॥११॥

अतः	अस्मात् (स्थानात्)	यहां से
विश्वानि	सर्वाणि	सब को
अद्भुता	अद्भुतानि	घटनाओं को
चिकित्वान्	प्रज्ञावान्	बुद्धिमान
अभि	अभि+	–
पश्यति	अभि+पश्यति	सब ओर से देखता है
कृतानि	कृतानि	की गई हैं
या	यानि	जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और
कर्त्वा	कर्तव्यानि	करनी हैं

संस्कृतार्थः।

प्रज्ञावान् (वरुणः) अस्मात् (स्थानात्) सर्वाण्य द्भुतान्यभिपश्यति यानि कृतानि (यानि) च कर्त्त-व्यानि ॥ ११ ॥

भाषार्थः।

बुद्धिमान (वरुण) इस (स्थान) से सब घटनाओं को देखते हैं जो की गईं हैं और जो करनी हैं ॥११॥

इस सृष्टि में जो आलोक होचुके हैं और जो आगे होने वाले हैं। उन सब को वरुण ऐसे देखते हैं जैसे हम वर्तमान किसी आलोक को देख रहे हों। भूत भविष्यत वर्तमान केवल हमारी अल्प दृष्टि के लिये हैं वरुण की दृष्टि में सब काल एक रस है ॥

वरुणो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८

स नो॑ वि॒श्वाहा॑ सु॒क्रतु॑रादि॒त्यः

सु॒पथा॑ कर॒त्। प्र॒ण॒ आयूं॑षि तारिषत्॥१२

सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हमको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्ववाहा	सर्वेष्वहस्सु	सब दिनों में
सुऽक्रतुः	शोभनप्रज्ञः	सुन्दर बुद्धि वाला
आदित्यः	अदितिपुत्रः (वरुण)	अदिति का पुत्र (वरुण)
सुऽपथा	शोभनमार्गेण	सुन्दर मार्ग से
करत्	करोतु	करें
प्र	प्र+	–
नः	अस्माकम्	हमारी
आयूंषि	आयूंषि	आयुओं को
तारिषत्	प्र+तारिषत् प्रवर्धयतु	बढ़ाए

संस्कृतार्थः ।

शोभनप्रज्ञः स अदि तिपुत्रः (वरुणः)सर्वेष्वहस्सु अस्माञ्छोभनमार्गेण (सहितान्) करोतु अस्माक मायूंषि (च) प्रवर्धयतु ॥ १२॥

भाषार्थः

सुन्दर बुद्धिवाले वह अदिते के पुत्र (वरुण) सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिनों में हमको सुन्दर मार्ग से युक्त करें (और) हमारी आयु को बढावें ॥ १२ ॥

जो अपनी इच्छा को त्याग कर वरुण की इच्छा पर चलने को उद्यत है उस को वरुण अवश्य उत्तम मार्गसे चलाते हैं और सुमार्ग पर चलने से आयु का दीर्घहोना नियमित है ॥

वरुणो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

बिभ्रद्द्रापिंहिरण्ययं वरुणोवस्त-
निर्णिजम्। परिस्पशोनिषेदिरे ॥१३॥

बिभ्रत्	धारयन्	धारण करता हुआ
द्रापिम्	कवचम्	कवच को
हिरण्ययम्	सुवर्णमयम्	सुवर्ण वाले को
वरुणः	वरुणः	वरुण
वस्त	आच्छदयत्	ढका है
निःऽनिजम्	रूपम् (निघं० ३।७)	रूप को
परि	अभितः	चारों ओर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्पशः	गुप्तचराः	गुप्तचर(जासूस)
नि	नि +	–
सेदिरे	नि + सेदिरे निषण्णा	बैठे हैं

संस्कृतार्थः ।

सुवर्णमयं कवचं धारयन्वरुणः (स्व) रूपमाच्छादयत् (तम्) अभितो गुप्तचरा निषेदिरे ॥ १३ ॥

भाषार्थः ।

सुवर्ण के कवच को धारण करते हुए वरुण (अपने) रूप को ढके हुए हैं (और उनके) चारों ओर गुप्तचर बैठे हैं ॥ १३ ॥

राजावरुण प्रकाश रूपी सुवर्ण की कवच पहन कर अपने रूप को ढापे हुए हैं इसी लिये हमें नहीं दिखाई देते । और उनके चारों ओर मनुष्यों के पाप पुण्य का समाचार लाने वाले गुप्तचर बैठे हुए हैं, जो काम मनुष्य मन वाणी वा कर्म द्वारा करता है उस से उठी हुई तरंगे आकाश द्वारा सर्वत्र फैल जाती हैं यह आकाश के परमाणु हो जिनके द्वारा तरंगे फैलती हैं कदाचित् वरुण के गुप्तचर हों ॥

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

न यं दिप्सन्ति दिप्सवो न द्रुह्वाणो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनानाम् । नदेवमभिमातयः ॥१४॥

न	न	नहीं
यम्	यम्	जिस को
दिप्सन्ति	दम्भुमिच्छन्ति	धोखा देने की इच्छा करते हैं
दिप्सवः	दम्भुमिच्छवः	धोखादेने की इच्छा करने वाले
न	न	नहीं
द्रुह्वाणः	द्रोग्धारः	द्रोहकरनेवाले
जनानाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों के
न	न	नहीं
देवम्	देवम्	देव को
अभिऽमातयः	शत्रवः (आ०को)	शत्रु

संस्कृतार्थ ।

दम्भुमिच्छवोयं न दम्भुमिच्छन्ति मनुष्याणां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्रोग्धारयम् न द्रुह्यन्तिशत्रवः(यम्)देवं न(भीषयन्ते)१४

भावार्थः।

धोखा देने की इच्छा करने वाले जिस को धोखा देने की इच्छा नहीं करते हैं मनुष्यों से द्रोह करने वाले जिन के प्रति द्रोह नहीं करते हैं (और शत्रु जिन को नहीं डराते हें ॥ १४ ॥

मनुष्यों को धोखा देने वाले और उनसे द्रोह करने वाले बहुत हैं। परन्तु ये वरुण के साथ यह लीला नहीं करना चाहते, क्योंकि यहा ये अपने व्यवसाय को व्यर्थ जानते हैं। शत्रु भी मनुष्य को डरा लेते हैं वरुण को डराने का व्यवसाय नहीं करते। जो वरुण के नियमों पर दृढ हैं उस को भी न कोई धोखा दे सकता है न कोई उससे द्रोह कर सकता है और न कोई उन्हें डरा सकता है।

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

उतयोमानुषेष्वा यशश्चक्रे असा-म्या। अस्माकमुदरेष्वा ॥१५॥

उत	अपि	और
यः	यः (वरुणः)	जिस (वरुण) ने
मानुषेषु	मनुष्येषु	मनुष्यों में
आ	मध्ये (आ०को)	बीच में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यशः	अन्नम् (निघं० २। ७।)	अन्न को
चक्रे	कृतवान्	स्थापन किया है
असामि	पूर्णतया	पूर्णता से
आ	(अतिशयार्थः) (आ०को)	अतिशय करके
अस्माकम्	अस्माकम्	हमारे
उदरेषु	उदरेषु	उदरों में
आ	मध्ये (अ० को)	बीच में

संस्कृतार्थः ।

अपि च यः (वरुणः) मनुष्येषु मध्येऽतिपूर्णतया ऽन्नं कृतवान् (स एव) अस्माकमुदरेषु मध्ये (कृतवान्) १५

भाषार्थः ।

और जिस (वरुण) ने मनुष्यों के बीच में अन्नको अति पूर्णता से स्थापन किया है (उसीने) हमारे उदरों में (अन्नको स्थापन किया है) ॥ १५ ॥

जिस वरुण ने सब मनुष्यों के लिये पर्य्याप्त (काफी) अन्न बनाया है। वही हमारे उदर में भी अन्न पहुंचाते हैं, हम समझते हैं कि वह काम हमारी स्वतन्त्र इच्छा से होता है वास्तव में यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्म कला की न्याईं वरुण के नियम से हमारे हाथ मुख मस्तिष्क स्वयं कर लेते हैं ॥

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूती रनु । इच्छन्तीरुरुचक्षसम् ॥ १६ ॥

परा	पराङ्मुखाः	निवृत्त होकर
मे	मम	मेरी
यन्ति	गच्छन्ति	जाती हैं
धीतयः	मनोवृत्तयः	मनकी वृत्तियां
गावः	गावः	गौएं
न	इव	न्याईं
गव्यूतीः	गोप्रचरान् (आ०को०)	गौओं के चरने के स्थानों को
अनु	अनु (लक्ष्य)	लक्ष्य रख कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

इच्छन्तीः	इच्छन्त्यः	इच्छा करती हुईं
उरुऽचक्षसम्	विस्तीर्णदृष्ट्युपेतम्	बहुत दूर तक देखने वाले को

संस्कृतार्थः।

विस्तीर्णदृष्ट्युपेतम् (वरुणम्) इच्छन्त्यो मम मनोवृत्तयः (लोकात्) पराङ्मुखाः (भूत्वा) गोप्रचरान् नुलक्ष्य गावइव (सम्प्रति) गच्छन्ति॥१६॥

भाषार्थः।

बहुत दूरतक देखने वाले (वरुण) को इच्छा करती हुईं मेरी मनकी बृत्तियां (लोक से) निवृत्त होकर (उनकी ओर) जाती हैं जैसे चरने के स्थानों को लक्ष्य रख कर गौएं जाती हैं॥१६॥

जब भक्त के चित्त में वरुण की चाह प्रगट होजाती है, तो उसके मनकी वृत्तियां व्यर्थ चिन्तन से निवृत्त होकर स्वयं वरुण की ओर चली जाती हैं, जैसे गौएं चरने के स्थानों को बिना हांकने के स्वयं चली जाती हैं॥

वरुणो देवता गायत्री छन्दः।८।८।८।

संनुवोचावहैपुनर्यतोमेमध्वाभृतम्।

होतेवक्षदसेप्रियम्॥१७॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्	सम्+	--
नु	अवश्यम्	अवश्य
वोचावहै	सम्+वोचावहै सम्भूय वार्तां करवावहै	हम दोनों मिलकर बातें करें
पुनः	पुनः	फिर
यतः	यतः	जिस से
मे	मया (तृतीयार्थे षष्ठी)	मुझ से
मधु	मधुरम् (हविः)	मीठी हवि
आऽभृतम्	सम्पादितम्	सम्पादन की गई है
होताऽइव	अग्निरिव (अग्निर्देवानांहोता)	अग्नि की तरह
क्षदसे	अश्नासि	आप खाते हैं
प्रियम्	प्रियम्	प्रीति पूर्वक

संस्कृतार्थः ।

यतो मया सम्पादितं मधुरम् (हविः) त्वं अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रिव प्रियमश्नासि (अतः) पुनरवश्यं सम्भूय वार्ता करवावहै ॥ १७ ॥ भाषार्थः।

जिससे मुझसे सम्पादन की हुई मीठी (हवि) को आप अग्नि की तरह प्रीतिपूर्वक खाते हैं (इससे) फिर अवश्य हम दोनों मिलकर बातें करेंगे ॥१७॥

जिस प्रकार देवताओं के होता अग्नि प्रत्यक्ष हमारी हवि को खाते हैं उसी प्रकार जब भक्त को निश्चय होजाता है, कि वरुण ने मेरी हविको खा लिया और वह मुझसे प्रसन्न हैं तो वह वरुण सेवार्तालाप करने की भी आशा रखता है,वास्तवमें हमारा देवताओं से वार्तालाप करनेमें असमर्थ होनेका कारण यहीहै किहमउनसेपरे२ रहते हैं। और उनकी प्रसन्नता सम्पादनकरनेकायत्न नहीं करते ॥

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि

एता जुषत मे गिरः ॥ १८ ॥

दर्शम्	दृष्टवान्	देखा है
नु	खलु	निश्चय करके
विश्वऽदर्शतम्	सर्वैर्दर्शनीयम्	सबसे देखने योग्य को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दर्शम्	दृष्टवान्	देखा है
रथम्	रथम्	रथ को
अधि	उपरि	ऊपर
क्षमि	भूमौ	पृथिवी पर
एताः	एताः	ये
जुषत	स्वीकृतवान्	अङ्गीकार किया है
मे	मम	मेरी
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को

संस्कृतार्थः ।

सर्वैर्दर्शनीयम् (वरुणम्) (अहम्) दृष्टवान् खलु (तस्य) रथम् (अहम्) भूमावुपरि (स्थितम्) दृष्टवान् (सः) एता मम स्तुतीः स्वीकृतवान् ॥१८॥

भाषार्थः ।

सब से देखने योग्य (वरुण) को मैंने निश्चय ही देखा है (उन के) रथ को मैंने भूमिपर (टिका हुआ) देखा है (उन्होंने) मेरी स्तुतियों को अङ्गीकार करलिया है ॥१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब देवता हवि और स्तुति स्वीकार कर लेते हैं तो उनका स्तुति प्रति पादित रूप में साक्षात् दर्शन भी सम्भव है, ऋषि अपना अनुभव कहते है, कि मैंने पृथिवी पर टिका हुआ वरुण का रथ देखा, और उनके दर्शन किये ॥

वरुणो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय

त्वामवस्युरा चके ॥१९॥

इमम्	इमम्	इस को
मे	मदीयम्	मेरी
वरुण	हे वरुण	हे वरुण
श्रुधि	शृणु	सुनो
हवम्	आह्वानम्	पुकार को
अद्य	अद्य	आज
च	च	और
मृळय	कृपां कुरु	कृपा करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वाम्	त्वाम्	आप को
अवस्युः	रक्षणेच्छुः	रक्षाकी इच्छा वाला
आ	आ+	--
चके	आ+चक्रे, आहूतवान	मैंने पुकारा है

संस्कृतार्थः ।

हे वरुण मदीयमिदमाह्वानं शृणु अद्य च कृपां कुरु रक्षणेच्छुरहम् (त्वाम्) आहूतवान् (अस्मि) १९ ॥

भावार्थः ।

हे वरुण मेरीइस पुकार को सुनो और आज कृपा करो रक्षा की इच्छावाले मैंने (आप को) पुकारा है ॥ १९ ॥

जब रक्षाकी इच्छासे भक्त वरुणको पुकारता है तो वह अवश्य उसकी पुकार सुनते हैं, और उस पर कृपा करते हैं ॥

वरुणो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

त्वंविश्वस्यमेधिर दिवश्चग्मश्च

राजसि । सयामनिप्रतिश्रुधि ॥२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	आप
विश्वस्य	सर्वम् (द्वितीयार्थे षष्टी)	सब को
मेधिर	हे मेधाविन्	हे मेधावी
दिवः	द्युलोकम् (द्वितीयार्थेषष्ठी)	द्युलोक को
च	च	और
ग्मः	भूलोकम् (द्वितीयार्थेषष्टी)	भूलोक को
च	च	और
राजसि	प्रशास्सि	राज्य करता है
सः	सः	वह
यामनि	आह्वाने	बुलाने पर
प्रति	प्रति +	—
श्रुधि	प्रति+श्रुधि (उत्तरम्)श्रावय	प्रत्युत्तर दो

संस्कृतार्थः ।

हे मेधाविन् (वरुण) त्वं सर्वं द्युलोकं भूलोकं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च प्रशास्सि, स त्वम् (अस्मदीये) आह्वाने (सति) प्रत्युत्तरं देहि ॥ २० ॥

भाषार्थ ।

हे मेधावी (वरुण) आप सब द्युलोक और भूलोक का राज्य करते हं वह आप(हमारे)बुलाने पर प्रत्युत्तर देवें ॥ २० ॥

इस से प्रतीत होता है कि वरुण बुलाए जाने पर अपने भक्त को उत्तर भी देते हैं ॥

वरुणोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

उदुत्तमंमुमुग्धिनो विपाशंमध्यमं-चृत। अवाधमानिजीवसे ॥ २१ ॥

उत्	उत् +	--
उत्ऽतमम्	उपरिष्ठम्	ऊपर वाले को
मुमुग्धि	उत् + मुमुग्धि उन्मोचय	ऊपर खैंच कर छुड़ाओ
नः	अस्माकम्	हमारे
वि	वि +	--
पाशम्	पाशम्	पाश को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यमम्	मध्यमम्	बीच वाले को
चृत	वि + चृत वियुज्य नाशय	काट कर नाश करो
अव	अव (चृत) अव कृष्य नाशय	नीचे खैंच कर नाश करो
अधमानि	अधमान्	नीचे वालों को
जीवसे	जीवितुम्	जीने के लिये

संस्कृतार्थः ।

(हे वरुण) जीवनार्थमस्माकमुपरिष्ठं पाश मुत्कृष्य मोचय मध्यमम् (पाशम्) वियुज्य नाशय अध मान् (पाशान्) अवकृष्य नाशय ॥२१॥

भाषार्थः ।

हे वरुण जीवन के लिये आप हमारे ऊपर के पाश को ऊपर खैंचकर छुड़ादो बीच के (पाश) को काट कर नाश करो (और) नीचे के (पाशों) को नीचे खैंचकर नाश करो ॥ २१ ॥

जब तक मनुष्य किसी प्रकार के पाशों से बंधा हुआ है, तब तक उसका जीवन जीवन नहीं है, जीवन स्वतंत्रतामें ही है, इसलिये सच्चे जीवन के लिये सब प्रकार के पाशों से छूटने के लिये सदा वरुण से प्रार्थना करते रहना चाहिये ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० २६ ।

जब शुनः शेप वरुण की स्तुति कर चुके, तो वरुणने कहा, अग्नि देवताओं के मुख हैं, और सबसे अधिककोमल हृदय वाले (दयालु) हैं, उनकी स्तुति करो, फिर हम तुझे छोड़ देंगे, यह सुनकर शुनः शेप ने २६ वें सूक्त के १० मंत्र और २७ वें सूक्त के १२ मंत्रों से अग्नि को प्रसन्न किया ॥

अग्निर्देवता शुनःशेपऋषिः निचृद्गायत्रीछन्दः ८।७।८

वसिष्वा हि मियेध्य वस्त्राण्यूर्जां पते ।

सेमं नो अध्वरं यज ॥ १ ॥

वसिष्व	परिधत्स्व	पहनो
हि	खलु	निश्चय करके
मियेध्य	हे यष्टव्य	हेपूजाकरनेयोग्य
वस्त्राणि	वस्त्राणि	वस्त्रों को
ऊर्जाम्	बलानाम्	बलों का
पते	पते	हे पति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः (त्वम्)	वह (आप)
इमम्	इमम्	इसको
नः	अस्मदीयम्	हमारे
अध्वरम्	यज्ञम्	यज्ञ को
यज	यज	करो

संस्कृतार्थः ।

हे यष्टव्य बलानांपते (अग्ने)वस्त्राणि परिधत्स्व खलु (परिधायच) सः (त्वम्) अस्मदीयमिमं यज्ञं यज ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे पूजा करने योग्य और बलोंके पति(अग्निदेव) आप अवश्य वस्त्रों को पहनो (और) हमारे इस यज्ञ को सम्पादन करो ॥१॥

विनियोग—यह और अगला सूक्त आग्नेय क्रतु के प्रातरनुवाक में पढ़े जाते हैं, देखो (आ० श्रौ० सू० ४ । १३ । ७)

बलों के स्वामी अग्निदेव ज्वालारूपी वस्त्रों को पहन कर हमारे लिये देवपूजन करें ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

नि नो होता वरेण्यः सदा यविष्ठ म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्मभिः । अग्ने दिवित्मता वचः ॥२॥

नि	नितराम्	निपट
नः	अस्माकम्	हमारा
होता	होता	होता
वरेण्यः	वरणीयः	बरने योग्य
सदा	सर्वदा	सदा
यविष्ठ	हे युवतम	हे पूरे जवान
मन्मऽभिः	मंत्रैः (मन्यन्तेयैः, करणे मनिन्प्रत्ययः)	मंत्रों से
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्निदेव
दिवित्मता	दीप्तिमता	दीप्तिवाले से
वचः	वचसा(तृतीयार्थे प्रथमा)	बचन से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हेयुवतम(अग्ने)वरणीयः (त्वम्)मंत्रैः(अस्मदीयेन) दीप्तिमता वचसा (च) सदा (अस्माकम्) होता (भवसि) ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे पूरे जवान (अग्निदेव) बरने योग्य (आप) मंत्रों से (और) दीप्ति वाले (हमारे) बचन से सदा (हमारे) होता बनते हो ॥२॥

अग्निदेव जो पूरे जवान हैं और बरने के योग्य ऋत्विक् हैं सदा हमारे होता बन कर देवयज्ञ करते हैं, और उनके होता बनकर हमारे लिये देवपूजन करने में कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि (देखो अगला मंत्र)

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

आ हि ष्मा सूनवे पिता पिर्यजत्या-पये। सखा सख्ये वरेण्यः ॥३॥

आ	सत्यम् (आ०को)	सचमुच
हि	एव	ही
स्म	(पूरणः)	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूनवे	पुत्राय	पुत्र के ताईं
पिता	पिता	पिता
आपिः	बन्धुः	बन्धु
यजति	यजति	यज्ञ करता है
आपये	बन्धवे	बन्धु के लिये
सखा	सखा	मित्र
सख्ये	सख्ये	मित्र के लिये
वरेण्यः	वरणीयः	बरने योग्य

संस्कृतार्थः ।

सत्यमेव वरणीयः (अग्निः) पिता पुत्राय, बन्धु बन्धवे, सखा सख्ये (देवान्) यजति ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

सचमुच ही बरने योग्य (अग्नि देव) पिता पुत्र के लिये बन्धु बन्धु के लिये (और) मित्र मित्र के लिये (देवताओंका) पूजन करते हैं ॥३॥

वह हमारे पिता हैं, हम उनके पुत्र हैं, वह हमारे बन्धु हैं हम उनके बन्धु हैं वह हमारे मित्र हैं, हम उनके मित्र हैं, इसलिये हमारे लिये उन के देव पूजन करने में क्या आश्चर्य्य है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

आनोबर्हीरिशादसो वरुणोमित्रो

अर्यमा। सीदन्तुमनुषोयथा ॥ ४ ॥

आ	समन्तात्	चारों ओर
नः	अस्माकम्	हमारी
बर्हिः	बर्हिषि(सप्तम्यर्थे द्वितीया)	कुशा पर
रिशादसः	हिंसकानामत्तारः	सताने वालों के भक्षण करनेवाले
वरुणः	वरुणः	वरुण
मित्रः	मित्रः	मित्र
अर्यमा	अर्यमा	अर्यमा
सीदन्तु	सीदन्तु	बैठें
मनुषः	मनुष्याः (ऋ०२।२।५)	मनुष्य
यथा	यथा	जैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हिंसकानामत्तारो वरुणो मित्रो ऽर्यमा अस्माकम्बर्हिषि समन्तात्सीदन्तु यथा मनुष्याः (सीदन्ति)॥४॥

भाषार्थः ।

(हमको) सताने वाला के भक्षण करने वाले वरुण मित्र और अर्यमा हमारी कुशा पर चारों ओर बैठें जैसे मनुष्य (बैठते हैं) ॥४॥

(१) अर्यमा भी मित्र और वरुण के सदृश आकाश के अधिष्ठाता हैं, जिस प्रकार मित्र दिन के आकाश, वरुण आकाश मात्र और विशेष करके रात्रि के आकाश को द्योतन करते हैं, इसी प्रकार अर्य्यमा सायं और प्रातः की दो सन्ध्या काल के आकाश को द्योतन करते हैं ॥

यह तीनों देवता हमारे यज्ञ में बिछाई हुई कुशा पर इस प्रकार आकर बैठें, जैसे मनुष्य किसी के घर में आकर आसन पर बैठते हैं, (अदृश्य देवताओं में इसी प्रकार चिन्तन करने से भावना दृढ़ होसकती है, जिस भावना के दृढ़ होने से देवता का दर्शन भी सम्भव होजाता है)॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः॥८।८।८।

पूर्व्य॑ होतरस्य नो॒ मन्द॑स्व स॒ख्यस्य॑ च । इ॒मा उ॒ षु श्रु॑धी॒ गिरः॑ ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्व्य	हे पुरातन (निघं० ३।२७)	हे प्राचीन
होतः	हे होतः	हे होता
अस्य	अस्मिन् (सप्तम्यर्थे षष्ठी)	इस में
नः	अस्माकम् (यज्ञे)	हमारे (यज्ञ में)
मन्दस्व	हृष्टोभव	हर्षित हो
सख्यस्य	सख्ये(सप्तम्यर्थे षष्ठी)	मित्रता में
च	च	और
इमाः	इमाः	इन को
ऊम्	खलु	निश्चय करके
सु	सुष्ठु	भली प्रकार से
श्रुधि	शृणु	सुनो
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे पुरातन होतः (त्वम्) अस्मिन्नस्मदीये (यज्ञे) (अस्माकम्) सख्ये च हृष्टोभव इमाः स्तुतीः (च) खलु सुशृणु ॥ ५ ॥

भावार्थः ।

हे प्राचीन होता आप इस (यज्ञ) और (हमारी) मित्रता में हर्षित हों (और) इन स्तुतियों को अवश्य भलीप्रकार से सुनें ॥ ५ ॥

(१)अग्निदेव हमारे बड़ों के भी होता थे ।जो उनके मनुष्य होता होते थे, वे तो अब नहीं रहे, परन्तु अग्नि अब तक विद्यमान हैं इस तरह अग्नि के द्वारा हमारा मंत्र द्रष्टा ऋषियों के साथ संबन्ध चला आया है । इसी लिये हम अभिमान के साथ अग्नि को] पूर्व होता कहते हैं ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः॥८।८।८।

यच्चिद्धिशश्वतातना देवंदेवं

यजामहे। त्वेइद्धूयतेहविः॥ ६ ॥

यत्	यत्+चित्	यद्यपि
चित्	+चित्	--

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह्वि	खलु	सचमुच
शश्वता	नित्यम्	नित्य
तना	अपि(ऋ० १।३।४)	भी
देवम्ऽदेवम्	प्रत्येकं देवम्	प्रत्येक देवता को
यजामहे	यजामहे	हम पूजते हैं
त्वे०	त्वयि	तुझ में
इत्	एव	ही
हूयते	हूयते	हवन किया जाता है
हविः	हविः	हवि को

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने) यद्यपि खलु (वयम्) नित्यमपि प्रत्येकं देवं यजामहे (तथापि) हविस्त्वय्येव हूयते ॥६॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) सचमुच यद्यपि (हम) नित्यप्रति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्येक देवता को पूजते हैं (फिर भी) हवि आप ही में दी जाती है ॥ ६ ॥

जो कुछ देवपूजन नित्यप्रति होता है, उसके लिये अग्नि में ही हवि दी जाती है, इसीलिये कहते हैं, कि अग्नि हमारे लिये देव पूजन करते हैं, हम तो वास्तव में अग्नि का ही पूजन करते हैं ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

प्रियोनोअस्तुविश्पति र्होतामन्द्रो-

वरेण्यः । प्रियाःस्वग्नयोवयम् ॥७॥

प्रियः	प्रियः	प्यारा
नः	अस्माकम्	हमारा
अस्तु	अस्तु	हो
विश्पतिः	प्रजानां पालकः	प्रजाओंके पालने वाला
होता	होता	होता
१ मन्द्रः	हृष्टः	प्रसन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरेण्यः	वरणीयः	बरने योग्य
प्रियाः	प्रियाः	प्यारे
२ सुऽअग्नयः	शोभनाग्नियुक्ताः	सुन्दर अग्नियों से युक्त
वयम्	वयम्	हम

संस्कृतार्थः ।

प्रजानां पालको होता हृष्टो वरणीयः (अग्निः) अस्माकं प्रियोऽस्तु शोभनाग्नियुक्ता वयम् (तस्य) प्रियाः (भूयास्म) ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

प्रजाओं के पालने वाले होता प्रसन्नबदन (और) बरने योग्य (अग्निदेव) हमारे प्यारे हों (और) शोभन अग्नियों से युक्त हम (उनके) प्यारे हों ॥७॥

(१) अग्नि प्रसन्न बदन हैं जैसे प्रज्वलितरूप में हमें प्रतीत भी होतेहैं, देवगुण होनेसे मनुष्यको भी सदा प्रसन्नबदन रहना उचितहै।

(२) "सुन्दर अग्नियों से युक्त" अर्थात् आहवनीय दक्षिणाग्नि और गार्हपत्य अग्नियोंका आधान करके हम अग्नि के प्यारे बनें ॥

हम इन अग्नियों का आधान क्यों करें इसका एक और भी कारण अगले मन्त्र में दिया है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

स्वग्नयो॒हिवार्यं॑ दे॒वासो॑दधि॒रे च॑

नः। स्वग्नयो॑मनामहे ॥८॥

१ सु॒ऽअ॒ग्नयः॑	शोभनाग्नियुक्ताः	सुन्दरअग्नियों से युक्त
हि	यस्मात्	जिस से
वार्य॑म्	वरणीयम्(धनम्)	बरने योग्य (धन) को
दे॒वासः॑	देवाः	देवताओं ने
द॒धि॒रे	धृतवन्तः	धारण किया
च॒	अपिच	और
नः॒	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
सु॒ऽअ॒ग्नयः॑	शोभनाग्नियुक्ताः	सुन्दर अग्नियोंसे युक्त
म॒ना॒म॒हे॒	पूजयामः(आ.को.)	हम पूजन करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

अपिच यस्मात् शोभनाग्नियुक्ता देवा अस्मदर्थं वरणीयम् (धनम्) धृतवन्तः (तस्मात्) वयं शोभनाग्नियुक्ताः (सन्तस्त्वाम्) पूजयामः ॥८॥

भाषार्थः।

और जिस कारण से सुन्दर अग्नियों से युक्त देवताओंने हमारे लिये बरने योग्य (धन को) धारण किया है (तिससे) हम सुन्दर अग्नियों से युक्त (हुए २ आपका) पूजन करते हैं ॥ ८ ॥

(१) देवता हमें अन्न वस्त्र, पशु, हिरण्य इत्यादिरूप में जो कुछ धन देते हैं, वह द्युलोकस्थ अग्नि सूर्य, अन्तरिक्षस्थ अग्नि विद्युत् और इसलोक की अग्निसे युक्त होकर ही देते हैं, समष्टियज्ञ की यही आहवनीय, दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि हैं इस लिये हम भी इनसे युक्त होकर ही देवताओं को कुछ देसकते हैं, जैसे बिना सूर्य, विद्युत् और अग्नि के माध्यस्थ के देवता हमें कुछ नहीं देसकते, इसी तरह बिना आहवनीय दक्षिणाग्नि और गार्हपत्य अग्नि की माध्यस्थ के हम देवताओंको कुछ नहीं देसकते, इस लिये देवपूजन के लिये इन अग्नियों का आधान अत्यावश्यक है।

अग्निर्देवता विराड्गायत्री छन्दः ।७। ७ ।८॥

अथान उभयेषा ममृतमर्त्यानाम्।
मिथः सन्तु प्रशस्तयः ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ	अनन्तरम्	पीछे
नः	अस्माकम्	हमारे
उभयेषाम्	उभयेषाम्	दोनों के
अमृत	हे मरणधर्म रहित	हे मरण धर्म रहित
मर्त्यानाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों की
मिथः	परस्परम्	आपस में
सन्तु	सन्तु	हों
प्रशस्तयः	प्रशंसारूपा वाचः	प्रशंसा रूप वाणियां

संस्कृतार्थः ।

हे मरणधर्मरहित (अग्ने) अनन्तरं मनुष्याणां प्रशंसारूपा वाचः परस्परमस्माकमुभयेषां सन्तु ॥९॥

भाषार्थः ।

हे मरणधर्म रहित (अग्निदेव) तिस से पीछे मनुष्यों की प्रशंसारूप वाणियां आपस में हम दोनों की हों ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिससे पीछे अर्थात् जब हम तीनों अग्नियों द्वारा देव पूजन करचुकें तो जो कुछ प्रशंसा मनुष्य अग्नि की करें उसमें हमारा भी सांझा हो, अर्थात् हम भी अग्निदेव के सत्संग द्वारा उनके गुणोंसे भूषितहोकर प्रशंसा के योग्य बनें ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

विश्वेभिरग्ने अग्निभि रिमंयज्ञ-
मिदंवचः । चनोधाःसहसोयहो॥१०॥

१ विश्वेभिः	सर्वैः	सब से
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
२ अग्निऽभिः	अग्निभिः	अग्नियों से
इमम्	अस्मिन् (सप्तम्यर्थे द्वितीया)	इस में
यज्ञम्	यज्ञे ,,	यज्ञ में
इदम्	अस्मिन् ,,	इस में
वचः	वचसि ,,	वचन में
चनः	हर्षम्(ऋ०१।३।६)	हर्ष को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धाः	धारय	धारण करो
१ सहसः	बलस्य	बल के
१ यह्वो०	हेपुत्र (निघं२।२)	हे पुत्र

संस्कृतार्थः।

हेबलस्य पुत्र अग्ने सर्वैः (आहवनीयादिभिः) अग्निभिः (युक्तः) (त्वम्) अस्मिन्यज्ञेऽस्मिन्वचसि (च) हर्षं धारय ॥ १० ॥

भाषार्थः।

हे बल के पुत्र अग्निदेव सब (आहवनीयादि) अग्नियों से (युक्त आप) इस यज्ञ (और) इस वचन में हर्ष को धारण करो ॥१०॥

(१) अग्निदेव बल के पुत्र हैं, हमारे शरीर का बल जो अरणियों से अग्नि उत्पन्न करने में लगता है, बदल कर अग्नि बन जाता है, जैसे पिता का आत्मा ही पुत्र बन जाता है, वैसे ही बल के पुत्र अग्नि भी बल के ही रूपान्तर हैं। यह मथित अग्नि

(२) स्थापित की हुई सब अग्नियों के साथ हमारे यज्ञ में और हमारे स्तुतिरूप बचन में हर्ष को धारण करें (सोमादि यज्ञों में अरणि मथन द्वारा अग्नि को निकाल कर आहवनीय के साथ युक्त किया जाता है) ॥

इति षड्विंशं सूक्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू० २७।

अग्निर्देवता शुनःशेपऋषिः गायत्री छन्दः ।८।८।८।

अश्वंनत्वावारवन्तं वन्दध्याअ-
ग्निंनमोभिः । सम्राजन्तमध्वरा-
णाम् ॥ १ ॥

१ अश्वम्	अश्वम्	घोड़े को
न	इव	जैसे
त्वा	त्वाम्	आप को
२ वारऽवन्तम्	बालवन्तम्	बालों वाले को
वन्दध्यै	वन्दितुम्	पूजन करने को
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
नमःऽभिः	नमस्कारैः	नमस्कारों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्ऽराज-न्तम्	सम्राड्रूपम्	सम्राट्स्वरूप को
अध्वराणाम्	यज्ञानाम्	यज्ञों के

संस्कृतार्थः ।

बालवन्तमश्वमिव (स्थितम्) यज्ञानां सम्राड्रूपमग्निं त्वां नमस्कारैर्वन्दितुम् (आगतोऽस्मि) ॥१॥

भाषार्थः ।

बालों वाले घोडे की तरह (स्थित) यज्ञों के सम्राट्रूप आप अग्नि को नमस्कारों से पूजन करने के लिये (मैं आया हूं) ॥ १ ॥

अग्नि को घोडे के साथ अनेक मंत्रों में उपमा दी गई है, इस का कारण यह है कि घोडे में अग्नि जैसे गुण विशेषता से पाए जाते हैं, जैसे (देखो ऋ० मं० १ । ११७ । ९ । १ । ११८ । ९ । १ । १६३ ७ । १० । ३९ । १०) शीघ्रगति, बल, शत्रुओं के धन को जीतना न रुकना, कीर्तियुक्त होना, जयशाली होना, उग्र होना, वृषत्व, सुन्दर रूप, हिन, हिनाना बहुत खाना, प्रचण्ड होना, सेवन करने वालेको आनन्द देना इत्यादि। जिस घोडे की ग्रीवा में लम्बे बाल हों वह शुभ होता है इस लिये अग्नि को बालों वाले घोडे से उपमादी है॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ॥२॥

सः	सः	वह
घ	एव	ही
नः	अस्माकम्	हमारा
सूनुः	पुत्रः	पुत्र
शवसा	बलेन	बल से
पृथुऽप्रगामा	पृथुऽप्रगमनः	विस्तृत गमन शक्तिवाला
सुऽशेवः	शोभनंसुखंयस्मात्सः (शेवमिति सुखनाम निघं३।६)	सुन्दर सुखके देने वाला
मीढ्वान्	(कामानाम्) वर्षयिता	(कामनाओं) की वर्षा करने वाला
अस्माकम्	अस्माकम्	हमारा
बभूयात्	भूयात्	हो

संस्कृतार्थः ।

स एव बलेनास्माकं पुत्रः पृथुप्रगमनः शोभनसुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्य दाता (कामानाम्) वर्षयिता (अग्निः) अस्माकं भूयात् ॥ २ ॥

भाषार्थः।

वह ही बल से हमारे पुत्र विस्तीर्ण गमन शक्ति वाले सुन्दर सुख के देने वाले कामनाओं की वर्षा करने वाले (अग्निदेव) हमारे हों ॥ २ ॥

अग्नि बल से हमारे पुत्र इस लिये हैं कि मथन द्वारा हमारे बल से उत्पन्न होते हैं। विस्तृत गमन शक्ति वाले हैं (अग्नि की गति का वेग भी प्रकाश और विद्युत की तरह एक पलमें ४,९१,८३२ योजन वा एक सेकण्ड में १,८६,२०० मील है)। सुन्दर सुख के देने वाले और सब कामनाओं के पूर्ण करने वाले हैं। यह अग्नि का गुण प्रत्यक्ष नहीं है, वेद से ही जाना जाता है. एक तरह से प्रत्यक्ष भी कह सकते हैं क्योंकि जो जातियां अग्नि का कला कौशल द्वारा प्रयोग करती हैं वे सुखी हैं और उन की सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। हम न तो देव भाव से पूजन करते हैं न कला कौशल द्वारा प्रयोग करते हैं इसलिये दुःखी हैं। अग्नि हमारे तभी होसकते हैं जब हम उक्त दोनों प्रकार से उन का सेवन करें॥

अग्निर्देवता निचृद्गायत्री छन्दः। ८। ७। ८।

सनोदूराच्चासाच्च निमर्त्यादघायोः। पाहिसदमिद्विश्वायुः ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हम को
दूरात्	दूरात्	दूर से
च	च	और
आसात्	समीपात्	समीप से
च	अपि	भी
नि	नि +	–
मर्त्यात्	मर्त्यात्	मनुष्य से
अघऽयोः	पापंकुर्त्तुमिच्छोः	पाप करने की इच्छा वाले से
पाहि	नि + पाहि नितरां पाहि	पूर्ण रीति से रक्षा करो।
सदम्	सर्वदा	सदा
इत्	एव	ही
विश्वऽआयुः	सर्वत्र गमनशीलः	सब जगह जाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

सर्वत्र गमनशीलः सः (त्वम्) अस्मान् दूराच्च-समीपाच्च पापं कुर्त्तुमिच्छोर्मनुष्यात्सर्वदैव नितरां पाहि ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

सर्वत्र जाने वाले वह(आप)हम को दूर से और समीप से भी पाप करने की इच्छा वाले मनुष्य से सदैव पूर्ण रीति से रक्षा करो ॥ ३ ॥

जो समीप से और जो दूर से हमारे साथ पाप का व्यवहार करने की इच्छा करता है, अग्नि उन दोनों से हमारी रक्षाकर सकते हैं। क्योंकि वह सर्वत्र गमन शील हैं ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

इममू षुत्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्रवोचः ॥४॥

इमम्	इमम्	इस को
ऊम्	(सम्बोधनार्थः) (आ०को)	हे
सु	सुष्ठु	सुन्दर रीति से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
अस्माकम्	अस्माकम्	हमारे
सनिम्	(हविषः) दानम्	(हवि) दान को
गायत्रम्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
१ नव्यांसम्	नवतरम्	अतिनवीन को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्निदेव
देवेषु	देवानामग्रे	देवताओंके आगे
प्र	प्र +	–
वोचः	प्र + वोचः प्रब्रूहि	कहो

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वमिदमस्माकम् (हविषः) दानं नवतरं स्तोत्रं (च) देवानामग्रे सुष्ठु प्रब्रूहि ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्निदेव आप इस हमारे (हवि) दान को (और) अतिनवीन स्तोत्र को देवताओं के आगे सुन्दर रीति से कहो ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) "अति नवीन स्तोत्र" इसके लिये देखो पृ० २६९। हम देवताओं को नहीं देख सकते हैं इस लिये अग्नि से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे हवि और स्तोत्र को देवताओं के आगे सुन्दर रीति से निवेदन करें, जिस से वे उन को ग्रहण करलेवें ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

आ नो॑ भज पर॒मेष्वा वाजे॑षु मध्य॒मेषु॑।
शिक्षा॒ वस्वो॒ अन्त॑मस्य ॥ ५ ॥

आ	आ +	--
नः	अस्मान्	हम को
भज	आ+भज, भागिनः कुरु	भागा बनाओ
परमेषु	उत्कृष्टेषु(लोकेषु)	उत्तम (लोकों) में
आ	आ (भज) भागिनः कुरु	भागी बनाओ
वाजेषु	अन्नेषु	अन्नों में
मध्यमेषु	मध्यमेषु	मध्यम (लोक) में होने वालों में
शिक्ष	देहि	दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वस्वः	धनम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	धन को
अन्तमस्य	अन्तिकतमम् (द्वितीयार्थेषष्ठी)	अति समीप वाले को

संस्कृतार्थः ।

(हेअग्ने) उत्कृष्टेषु (लोकेषु) अस्मान्भागिनःकुरु मध्यमेष्वन्नेषु (अस्मान्) भागिनःकुरु अन्तिकतमम् धनम् (अस्मभ्यम्) देहि ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

(हे अग्निदेव) उत्तम (लोकों) में हम को भागी बनाओ मध्यम (अन्तरिक्ष) लोक में होने वाले अन्नों में हम को भागी बनाओ अतिसमीप (भूलोक के) धन को हमें दो ॥ ५ ॥

जो सूर्य्यादि उत्तम लोक हैं उन में हमारा सांझा हो, जिस पयोरूपी अन्न का अन्तरिक्ष में गन्धर्व आस्वादन करते हैं (देखो पृष्ठ४४२) उस में हमारा भाग हो। पृथिवी के जो धन हैं वह भी हमें मिलें ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

विभक्तासिचित्रभानो सिन्धोरूर्मा

उपाकआ । सद्योदाशुषेक्षरसि ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि॒ऽभ॒क्ता	विभक्ता	बांटने वाला
अ॒सि॒	असि	तू है
[1] चि॒त्र॒ऽभा॒नो॒	हे चित्ररश्मियुक्त	हे अनेक प्रकार की किरणों वाले
सिन्धो॑:	समुद्रस्य	समुद्र की
ऊ॒र्मौ	ऊर्मौ	लहर में
उ॒पा॒के	समीपे (निघं०२।१६)	समीप में
आ	यथा (निघं ३ ।१३)	जैसे
स॒द्यः	सद्यः	तत्काल
दा॒शुषे॑	हविर्दत्तवते (भक्ताय)	भक्त के लिये
[2] क्ष॒र॒सि॒	स्यंदसे	बहते हो

संस्कृतार्थः ।

हे चित्ररश्मियुक्त (अग्ने) त्वं (धनस्य) विभक्ताऽसि (त्वं) हविर्दत्तवते (भक्ताय) सद्यःस्यंदसे यथा समुद्रस्योर्मौ समीपे (स्थिते जलं सद्यः स्यंदते) ॥६॥

भाषार्थः ।

हे अनेक प्रकार की किरणों वाले आप धन के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बांटने वाले हो, आप भक्त के लिये तत्काल बहते हो, जैसे समुद्र की लहर में समीप (ठहरे हुए के लिये जल तत्काल बहते हैं) ॥ ६ ॥

(१) अग्नि और सूर्य्य का नाम चित्रभानु इस लिये है कि वे अनेक प्रकार की किरणों वाले हैं। जैसे प्रकाश की किरणें (light rays) गरमी की किरणें (heat rays) और रसायनिक किरणें (chemical rays) ॥

(२) समुद्र स्नान के लिये जो किनारे पर लहर के समीप बैठता है उस को जल तत्काल पहुंच जाता है। इसी तरह जो हवि लेकर अग्नि के समीप बैठता है, उसको अग्नि देव तुरन्त धनरूपी जल से सिंचन कर देते हैं। क्योंकि धन को बांट कर देने वाले वही हैं, पहले पास वाले को ही देते हैं ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः ॥ ७ ॥

यम्	यम्	जिस को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
पृत्ऽसु	सङ्ग्रामेषु	युद्धों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मर्त्यम्	मर्त्यम्	मनुष्य को
अवाः	अरक्षः	तू ने रक्षा की है
वाजेषु	युद्धेषु	युद्धों में
यम्	यम्	जिस को
जुनाः	प्रैरयः	तूने प्रेरण किया है
सः	सः	वह
यन्ता	ईशितुं समर्थः	स्वाधीन करने वाला
शश्वतीः	अविच्छिन्नाः	सदा होने वालियों को
इषः	समृद्धीः(आ.को.)	समृद्धियों को

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने (त्वम्) यं मर्त्यं संग्रामेष्वरक्षः यम् (च) युद्धेषु प्रैरयः सोऽविच्छिन्नाः समृद्धीरीशितुं समर्थो (भवति)॥ ७॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप ने जिस मनुष्य की संग्रामों में रक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की है (और) जिस को युद्धों में प्रेरण किया है वह अटल समृद्धियों को स्वाधीन करने वाला होता है॥ ७॥

ऐसे पुरुष की समृद्धियां दासी हैं और कभी विच्छिन्न नहीं होतीं जिस को अग्नि देव संग्राम में प्रेरण करके रक्षा करते हैं। इस लिये जीवन के संग्रामों से, चाहे वे बाहर के शत्रुओं से हों, चाहे काम क्रोधादि भीतर के शत्रुओं से, हटने का प्रयत्न करना वीर पुरुष का काम नहीं है। हां उन में सुरक्षित रहना और जीतके निकलना इस बात का प्रयत्न करना चाहिये। जो जीवन के संग्रामों से हटने का यत्न करता है वह सदा दास रहने के योग्य है॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः।८।८।८।

नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य-
चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः॥ ८॥

नकिः	न	न
अस्य	अस्य	इस का
सहन्त्य	हे अभिभवनशील	हे जयशील
परिऽएता	आक्रामता	,, दबाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कयस्य	कस्य	किस का
चित्	अपि	भी
वाजः	बलम्	बल
अस्ति	अस्ति	है
श्रवाय्यः	श्रवणीयः	सुनने के योग्य

संस्कृतार्थः ।

हे अभिभवनशील कस्याप्यस्य (पूर्वोक्तस्य मनुष्यस्य) आक्रमिता न (अस्ति) (अस्य) बलम् (च) श्रवणीयं भवति ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे जयशील किसी भी इस (पूर्वोक्त मनुष्य) का (कोई) दबाने वाला नहीं (है और उसका) बल सुनने के योग्य होता है ॥ ८ ॥

जो अग्नि की प्रेरणा से संग्राम में युक्त होता है, वह चाहे कोई भी हो बलिष्ट हो चाहे निर्बल हो, परन्तु कोई भी उसका दबाने वाला नहीं है। और वह इतना बल से युक्त हो जाता है कि लोग उस के बल की चर्चा सुनते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

सवाजंविश्ववचर्षणि रर्वद्भिरस्तुत-
रुता । विप्रेभिरस्तुसनिता ॥ ९ ॥

सः	सः	वह
वाजम्	सङ्ग्रामम्	युद्ध को
विश्वऽच-र्षणिः	विश्वे मनुष्या यस्य सः	सब मनुष्यों का स्वामी
अर्वत्ऽभिः	अश्वैः	घोड़ों से
अस्तु	अस्तु	हो
तरुता	तारयिता	पार लंघाने वाला
विप्रेभिः	मेधाविभिः	विद्वानों से
अस्तु	अस्तु	हो
सनिता	दाता	देने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

स विश्वेषां मनुष्याणामीशः (अस्मान्) अश्वैस्संग्रामं तारयिताऽस्तु मेधाविभिः (च धनस्य) दाताऽस्तु ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

वह सब मनुष्यों के स्वामी (हमको) घोडों द्वारा युद्ध के पार लंघाने वाले हों (और) विद्वानों द्वारा (धनके) देने वाले हों ॥ ९ ॥

घोडे युद्ध में परमोपयोगी होते हैं हम बहुत घोडों वाले हों जिस से हम युद्ध के पार लंघ सकें (देखो पृ० १७८)

विद्वान् देश की धन बृद्धि का हेतु होते हैं (यूरोप की धन वृद्धि का हेतु साएंस के विद्वान ही हैं) इस लिये हमारी जाति में बहुत विद्वान हों जिस से हमारे धन की वृद्धि हो ॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

जराबोधतद्विविड्ढि विशेविशेयज्ञियाय । स्तोमंरुद्रायदृशीकम् ।१०।

१ जराऽबोध	हे स्तुतिबोध (निरु०१०।८)	हे स्तुति को जानने वाले
तत्	तत्	वह
विविड्ढि	कुरु(नि०१०।८)	करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वेऽविश्वे	मनुष्यस्य मनुष्यस्य (नि०१०।८)	मनुष्य मनुष्य के
यज्ञियाय	पूज्याय	पूज्य के लिये
स्तोमम्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
२ रुद्राय	रुद्राय	रुद्र के लिये
दृशीकम्	दर्शनीयम् (नि० १०।८)	सुन्दर

संस्कृतार्थः।

हे स्तुतिबोध तत्कुरु, (यत्) मनुष्यस्य मनुष्यस्य पूज्याय रुद्राय दर्शनीयं स्तोत्रम् (वयमुच्चारयेम)॥ १०॥

भाषार्थः।

हे स्तुति को जानने वाले ऐसा करो कि प्रत्येक मनुष्यके पूज्य रुद्र के लिये सुन्दर स्तोत्र को(हम सब उच्चारण करें)॥ १०॥

(१) स्तुति को जानने वाले अग्निदेव ही हैं वह ही ऐसी कृपा करें कि हम सब उनके स्तोता हों।

(२) यहां रुद्र अग्नि का ही नाम है देखो श०ब्रा० ६।१।३।१०-१७,जहां पर रुद्र, सर्व, पशुपति, उग्र, अशनि भव, महादेव, और ईशान ये आठ अग्नि के नाम लिखे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

सनोमहाँअनिमानो धूमकेतुःपुरु-

श्चन्द्रः । धियेवाजायहिन्वतु ॥११॥

सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हम को
महान्	महान्	महान
१ अनिऽमानः	परिमाणरहितः	परिमाण रहित
धूमऽकेतुः	धूमध्वजः	धूमकी ध्वजा वाला
पुरुऽचन्द्रः	बहुदीप्तिः	बहुतदीप्ति वाला
२ धिये	बुद्धये	बुद्धि के लिये
२ वाजाय	बलाय	बल के लिये
२ हिन्वतु	प्रेरयतु (आ०को)	प्रेरण करे

संस्कृतार्थः ।

स परिमाणरहितो धूमध्वजो बहुदीप्तिर्महान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(अग्निः) अस्मान् बुद्धये बलाय (च) प्रेरयतु ॥ ११ ॥

भाषार्थः।

वह परिमाण रहित धूएं की ध्वजा वाले बहुत दीप्त वाले महान (अग्नि) हम को बुद्धि (और) बल के लिये प्रेरण करें ॥ ११ ॥

(१) अग्नि परिमाण रहित हैं। क्योंकि वह इस सौर ब्रह्माण्ड से अतिरिक्त अन्य असंख्य ब्रह्माण्डों में भी विराजमान हैं ॥

(२) हम अग्नि देव के प्रेरण से ही बुद्धि और बल से युक्त हो सकते हैं। हमारी इच्छा होनी चाहिये। फिर तो अग्नि की प्रेरणा से नित्य प्रति हमारी बुद्धि और हमारा बल बढता जायगा।

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

सरेवाँइवविश्पतिर्दैव्यःकेतुःशृणोतुनः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥१२॥

सः	सः	वह
रेवान्ऽइव	धनवानिव	धनी पुरुष की न्याईं
विश्पतिः	प्रजानाथः	प्रजा का स्वामी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैव्यः	देवसम्बन्धी	देवताओंसेसम्ब-न्ध रखने वाला
केतुः	ज्ञापकः	ज्ञानकराने वाला
शृणोतु	शृणोतु	सुने
नः	अस्मान्	हम को
उक्थैः	स्तोत्रैः	स्तोत्रों से
अग्निः	अग्निः	अग्नि
बृहत्ऽभानुः	बृहत्प्रकाशः	बडे प्रकाश वाला

संस्कृतार्थः ।

प्रजानाथो देवसम्बन्धी,ज्ञापको,बृहत्प्रकाशः सोऽग्निस्स्तोत्रैरस्मान् धनवानिव शृणोतु॥ १२॥

भाषार्थः ।

प्रजा के स्वामी देवताओं से सम्बन्ध रखने वाले, ज्ञान कराने वाले (और) बडे प्रकाश वाले वह अग्नि देव हमको स्तोत्रों द्वारा धनी पुरुष की न्याईं सुनें ॥ १२ ॥

जब हम अग्नि की स्तुति करें, तो हमें ऐसा समझना चाहिये कि हम किसी बडे धनवान के सामने हैं, जो स्तोत्रों द्वारा हमारी सुनाई करते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वेदेवा देवता स्त्रिष्टुप्छन्दः ।

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः । यजाम देवान्यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः ॥ १३ ॥

नमः	नमः	नमस्कार
महत्ऽभ्यः	महद्भ्यः	बड़ों के ताईं
नमः	नमः	नमस्कार
अर्भकेभ्यः	अल्पेभ्यः	छोटों के ताईं
नमः	नमः	नमस्कार
युवऽभ्यः	युवभ्यः	जवानों के ताईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमः	नमः	नमस्कार
आर्भकेभ्यः	वृद्धेभ्यः	वृद्धों के ताईं
यजाम	यजाम	हम पूजें
देवान्	देवान्	देवताओं को
यदि	यदि	जो
शक्नवाम	शक्नवाम	हम समर्थ हों
मा	मा	नहीं
ज्यायसः	ज्येष्ठस्य	बडे की
शंसम्	स्तोत्रम्	स्तुति को
आ	खलु (आ०को०)	निश्चय करके
वृक्षि	वर्जयेयम्	त्याग करूं
देवाः	हे देवाः	हे देवताओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

महद्भ्यः (देवेभ्यः) नमोऽल्पकेभ्यो नमो युवभ्यो नमो वृद्धेभ्योनमः (अस्तु) यदि वयं शक्नवाम देवान्यजाम, हेदेवाः (अहम्) ज्येष्ठस्य स्तोत्रं मा वर्जयेयं खलु॥१३॥

भाषार्थः।

बड़े (देवताओं) के ताईं नमस्कार (हो) छोटों के ताईं नमस्कार (हो) जवानों के ताईं नमस्कार (हो) वृद्धों के ताईं नमस्कार (हो) जो हम समर्थ होवें (तौ) देवताओं को पूजें, हे देवो मैं बड़े की स्तुतिको (कभी) भी त्याग न करूं॥ १३॥

जब शुनःशेप अग्नि को स्तुति करचुके तो अग्नि ने कहा विश्वे देवों की स्तुति करो। फिर हम तुझे छोडेंगे। यह सुनकर शुनःशेप ने इस एक मंत्रसे विश्वदेवों को प्रसन्न किया॥

देवता कोई बडे हैं। कोई छोटे। जैसे सूर्य बड़े हैं। पृथिवी उन की अपेक्षा बहुत छोटी है। कोई जवान है जैसे अग्नि, कोई वृद्ध हैं जैसे राजा वरुण। इनसब को यथा शक्ति पूजन करना चाहिये (इस की आवश्यकता के लिये देखो पृ० १६ और २७) देवता चाहे एक दूसरे की अपेक्षा छोटे बडे हों परन्तु हमारे लिये सब बडे हैं। हम बडे की स्तुति को न छोड़ें॥

इतिसप्तविंशं सूक्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब शुनःशेप विश्वेदेवों की स्तुति कर चुके, तो उन्होंने कहा कि देवताओं में इन्द्र सब से अधिक दीप्ति वाले, सब से बलिष्ठ, सब से अधिक साहस वाले, बडे सज्जन और आरम्भ किये हुए कर्म को सब से शीघ्र समाप्त कराने वाले हैं, उन की स्तुति करो, फिर हम तुम को छोडेंगे। यह सुनकर शुनःशेप ने २९ वें सूक्त के ७ मंत्र और ३० वें सूक्त के प्रथम १५ मंत्रों से इन्द्र की स्तुति की। ऋषिकी स्तुति से प्रसन्न होकर इन्द्रने उनको मनसे सोने का रथ दिया (१) शुनःशेपने उस रथ को ३० वें सूक्त के १६ वें मंत्र से ग्रहण किया (१) फिर इन्द्रने उस को कहा । अश्वि देवताओं की स्तुति करो। तब हम तुम को छोडेंगे। यह सुनकर शुनःशेप ने ३० वें सूक्त के १७। १८, १९ इन तीन मंत्रों से अश्वि देवों की स्तुति की। अश्वि देवोंने कहा, उषा की स्तुति करो फिर हम तुम को छोडेंगे। तब शुनःशेप ने २०,२१,२२ इन तीन मंत्रों से उषा की स्तुति की। ज्यूं ज्यूं वह इन ऋचाओं का उच्चारण करते गये त्यूं त्यूं उन के बन्ध खुलते गए और हरिश्चन्द्र का पेट छोटा होता गया। जब अन्तिम ऋचा बोल चुके, तो उन के सारे बन्धन छूट गए और राजा हरिश्चन्द्र नीरोग होगए (२) (ऐ० ब्रा० पं० ७ खं० १६)॥

---

(१) प्रत्यक्ष में रथ नहीं दिया, किन्तु मन से दिया और उस को शुनःशेप ने मन से ग्रहण किया। जैसे सायणाचार्य लिखते हैं "तंरथं प्रतीयाय, मनसैव प्रतिजगाम"॥

(२) २४ वें सूक्त से ३० वें सूक्तक ९७ मंत्र हैं जिन को शुनःशेपने देखा है इन में २८ वें सूक्त के ९ मंत्र (जिन के विनियोग के लिये देखो पृ० १२४) निकाल कर ८८ शेष रहते हैं इन में प्रजापति की १ मंत्र से स्तुति है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नि की २३ मंत्रों से स्तुति है ,,
सविता की ३ ,,
वरुण की ३१ ,,
विश्वे देवों की १ ,,
इन्द्र की २३ ,,
अश्विनी की ३ ,,
और उषा की ३ ,,

शुनःशेप के एक देवता की स्तुति से बन्धन न छूटना और प्रत्येक देवता का उन को दूसरे देवता के पास भेजना इस बात को सिद्ध करता है कि मनुष्य को अपने सारे दोष छुडाने के लिये अनेक देवताओं की उपासना की आवश्यकता है (देखो पृ० २६, २७)। यदि हम शुनःशेप के देखे हुए इन ६ सूक्तों को सारे वेद का सार कहें तो कुछ अनुचित न होगा। इन में अधिक स्तुति वरुण की है जो मनुष्य को पाप से छुड़ा कर ऋत के मार्ग पर चलाते हैं। फिर अग्नि और इन्द्र की है, जो मनुष्य के ब्रह्म और क्षत्र भावों को बलवान करके उसे अजेय बनाते हैं। जो मनुष्य निष्पाप है जो विद्वान् है और जिस को कोई अवस्था वा कोई मनुष्य किसी प्रकार से भी कातर नहीं बना सकते, वही पुरुष मनुष्य जाति में बहुत बड़ा और आदर्श के योग्य समझा जाता है, फिर जिस की बुद्धि सविता से प्रेरित होकर सब कार्यों में सदा ठीक रहे, जिस के मन में सुन्दर उषा के चिन्तन द्वारा सौंदर्य का स्थिर राज्य होकर मलिनता का कदापि आवेश न हो, जिस का शरीर आपण अश्विदेव वैद्यों की कृपा से नीरोग और प्रभाव (रौब) वाला हो, और विश्वेदेवों की कृपा से जिस के अनेक अल्प दोष जो महा पुरुषों में भी देखे जाते हैं छूट गए हों, वह मनुष्य तो इस लोक में साक्षात देवता ही है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० २८ ।

इन्द्रो देवता शुनःशेप ऋषिर्निचृदनुष्टुप्छन्दः ।८।८।७।८।

यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे । उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ॥ १ ॥

यत्र	यत्र	जहां पर
ग्रावा	पाषाणः (पाषाणसदृशो मुसलः)	पत्थर (जैसा दृढ़ मूसल)
पृथुऽबुध्नः	स्थूलमूलः	मोटे मूल वाला
ऊर्ध्वः	उन्नतः	ऊंचा
भवति	भवति	होता है
सोतवे	अभिषवार्थम्	निष्पीडन के लिये
उलूखलऽसुतानाम्	उलूखलेनाभिषुतान् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	ऊखल से निष्पीडन किये हुओंको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अव	अव+	—
इत्	एव	ही
ऊम्	(सम्बोधने) (आ० को०)	हे
इन्द्र	हे इन्द्र	इन्द्र
जल्गुलः	अव + जल्गुलः पुनः पुनर्भक्षय (गल् भक्षणे लोडर्थे लेट्)	बारंबार भक्षण करो

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र यत्राभिषवार्थं स्थूलमूलः पाषाणसदृशो मुसल उन्नतो भवति तत्रोलूखलेनाभिषुतान् (सोमान्) पुनःपुनर्भक्षयैव ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र जहां पर निष्पीडन के लिये मोटे मूल वाला पत्थरजैसा दृढ़ मूसल ऊंचा किया जाता है वहां ऊखल से निष्पीडन किये हुए (सोमों को)अवश्य बारं बार भक्षण करो ।। १ ।।

विनियोग–जब शुनःशेप के पाश छूट गए, तो ऋत्विजोंने उन से कहा कि तुम ही इस अभिषेचनीय कर्म की समाप्ति कराओ। तब शुनःशेपने अञ्जःसव अर्थात् शीघ्रता से सोम रस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकालने की विधि को देखा * और इस सूक्त के ५,६,७,८ इन मंत्रों से सोम रस को निकाला फिर ९ वें मंत्र से उस रसको द्रोण कलश में डाला । फिर हरिश्चन्द्र से अन्वारब्ध होकर १,२,३,४ इन मंत्रों से सोमरस की आहुति दीं (ऐ०ब्रा०पं०७खं०१७)॥

इस सूक्त से उपदेश मिलता है, कि जैसे ऋषियों के लिये उलूखल मुसल जैसी साधारण वस्तु भी उन के प्यारे इन्द्र के प्रिय पान सोमरस के निकालने में उपयोगी होने से एक स्तोत्र के योग्य समझी गई । इसी तरह हमें भी पूजा का स्थान, पूजा का सब सामान प्रेम और संमान की दृष्टि से देखना चाहिये ॥

(१) मूसल का ऊंचा होना ऊखल में गिरने के लिये है ॥

इस सूक्त से उस समय सोम निकालनेकी यह विधि प्रतीत होती है कि पहले अधिषवण फलक (काठ के दो तख़्ते) बिछाकर (देखो मं० २) उन पर बैल का चमडा बिछाया जाता था (देखो मंत्र ९) उस पर काष्ठ का ऊखल रखकर काठ के मूसल से सोम वल्ली को कूटकर उसका रस दशा पवित्र अर्थात् ऊनी बस्त्र की आंचल में निचोडकर छाना जाता था (देखो मं० ९) आजकल अधिषवण फलक पर चर्म बिछाकर उस पर पत्थर रखकर सोमवल्ली पत्थर से कूटी जाती है ।।

---

* इस से विदित होता है कि यज्ञों की विधि भी ऋषियों ने देखी हैं अपने मन से नहीं चलाईं । शुनःशेप ने जिस अंजःसव विधि का प्रयोग किया वह विधि बूढ़े विश्वामित्रादि ऋत्विजों को भी ज्ञात न थी । इस बात के प्रमाण के लिये कि शुनःशेप कुमार थे देखो ऐ० ब्रा० पं०७ खं० १७ जिस में लिखा है कि यज्ञ के समाप्त होनेपर शुनःशेप विश्वामित्र की गोद में जा बैठा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता निचृदनुष्टुप्छन्दः ।८।८।७।८॥

यत्र द्वाविव जघना धिषवण्या कृता।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ॥ २ ॥

यत्र	यत्र	जहां पर
द्वौऽइव	द्वे इव	दोनों की तरह
जघना	जघने	जांघें
अधिऽसवन्या	अधिषवणफलके	अधिषवणफलक
कृता	कृते	किये गए

संस्कृतार्थः ।

यत्राधिषवण फलके द्वेजघने इव कृते (तत्र)....॥ २॥

भाषार्थः ।

जहां पर अधिषवण फलक दो जांघों की सदृश बनाए गए हैं, (वहां) .... ॥ २॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधिषवण्या लकडो के दो फलक (तख्ते) होते हैं, जो एक हाथ लम्बे और आगे की अपेक्षा पीछे से कुछ चौडे होते हैं इसी लिये उन को जंघा से उपमादी गई है उन को उपरवों (१० अंगुल चौडे चार कूप खोदकर उन) पर इस तरह रखा जाता है कि एक दूसरे के दक्षिण की ओर रहे और उनके बीचमें दो अंगुल जगह रहे जो मिट्टीसे भरदी जाती है। इन फलकों पर चर्म बिछाकर पत्थर रखकर सोमवल्ली कूटी जाती है ॥

इन्द्रोदेवता निचृदनुष्टुप्छन्दः ।८।८।७।८॥

यत्र॒ नार्य॑पच्य॒वमु॑पच्य॒वं च॒ शिक्ष॑ते ।
उ॒लूख॑लसुताना॒मवेद्वि॑न्द्र जल्गुलः ॥ ३ ॥

यत्र॑	यत्र	जहां पर
नारी॑	नारी	स्त्री
अ॒प॒ऽच्य॒वम्	निर्गमनम्	बाहर निकलनेको
उ॒प॒ऽच्य॒वम्	आगमनम्	अन्दर आने को
च॒	च	और
शिक्ष॑ते	अभ्यस्यति	अभ्यास करती है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

यत्र नारी (मुसलस्य) निर्गमनमागमनं चाभ्यस्यति (तत्र) … ॥ ३॥

भाषार्थः।

जहां पर स्त्री (मूसलको) बाहर निकालने और भीतर डालने का अभ्यास करती है … ॥ ३ ॥

इस से प्रतीत होता है कि पूर्व काल में यजमान पत्नी सोमवल्ली को ऊखल मूसल से कूटती थी आज कल अध्वर्यु पत्थर पर कूटता है॥

इन्द्रोदेवता निचृदनुष्टुप्छन्दः।८।८।७।८॥

यत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन्यमितवाइव। उलूखलसुतानामवेदिन्द्रजल्गुलः॥ ४॥

यत्र	यत्र	जहां पर
मन्थाम्	मन्थानम्	मथनी को
वि॒ऽबध्नते	विबध्नन्ति	बान्धते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रश्मीन्	प्रग्रहान्	रासों को
यमितवै	नियन्तुमिव	रोकने की तरह
ऽइव		

संस्कृतार्थः ।

यत्र मन्थानं प्रग्रहान्नियन्तुमिव विबध्नन्ति (तत्र) .... ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

जहां पर मथनी को (घोडेकी) रासों को रोकने की न्याईं बान्धते हैं (वहां) .... ॥ ४ ॥

जब अग्नि मन्थनके लिये उत्तरारणिको चात्र (वरमा)की जड़ में लगा कर चात्र के चारों ओर रज्जु लपेटी जाती है वह मानों रथ में जुड़े हुए वीर्यबान घोड़े को रोकने के लिये रासें है ॥

प्रत्येक कर्म में वीर्य कर्म की भावना करने से मनुष्य वीर्यवान होता है ॥

ऊलूखलंदेवताऽनुष्टुपछन्दः ।८।८।८।८॥

यच्चिद्धित्वंगृहेगृह उलूखलकयु-ज्यसे। इह द्युमत्तमंवद जयतामिव दुन्दुभिः ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यत्+चित्,यद्यपि	यद्यपि
चित्	+चित्	—
हि	एव	ही
त्वम्	त्वम्	तू
गृहेऽगृहे	गृहे गृहे	घर घर में
उलूखलक	हे उलूखल	हे ऊखल
युज्यसे	युज्यसे	काममें लगाया जाता है ;
इह	इह	यहां
द्युमत्ऽतमम्	अतिशयेन दीप्तं यथा स्यात्तथा	बड़ी दीप्ति से
वद	वद	बोल
जयताम्ऽइव	जयंप्राप्नुवता मिव	जीतने वालों की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुन्दुभिः	दुन्दभिः	दुन्दुभी

संस्कृतार्थः।

हे उलूखल यद्यपि त्वं गृहे गृहे युज्यस एव (तथापि) इह जयं प्राप्नुवतां दुन्दभिरिवातिशयेन दीप्तं यथा स्यात्तथा वद ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

हे ऊखल यद्यपि तुम घर घर में काम में लगाए ही जाते हो (परन्तु) यहां पर बड़ी दीप्ति से युक्त की न्याईं बोलो जैसे जीतने वालों की दुन्दुभी (बोलती है) ॥ ५ ॥

जैसा मनुष्य चिन्तन करता रहता है, शनैः शनैः वैसा ही बनता जाता है। महत्व चिन्तन के लिये उलूखल जैसी साधारण वस्तु भी साधन बन सकती है। धर्म वीर पुरुष में ही ठहर सकता है, इस लिये सदैव प्रत्येक कर्म में वीर्य कर्म का ही चिन्तन करना चाहिये। ऐसे चिन्तन का यह मंत्र एक उदाहरण रूप है ॥

उलूखलं देवता अनुष्टुप्छन्दः।८।८।८।८।

उतस्मतेवनस्पते वातोविवात्यग्रमित्। अथोइन्द्रायपातवे सनुसोममुलूखल ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत	अपि च	और
स्म	(पूरणः)	--
ते	तव	तेरे
वनस्पते	हे वनस्पते	हे वनस्पति
वातः	वायुः	पवन
वि	वि +	--
वाति	वि+वाति विशेषण चलति	विशेष रीति से चलती है
अग्रम्	पुरतः	आगे से
इत्	एव	ही
अथो०	अथ	अब
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
पातवे	पातुम्	पीने को
सुनु	अभिषवं कुरु	निष्पीड़न कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमम्	सोमम्	सोम को
उलूखल	हे उलूखल	हे ऊखल

संस्कृतार्थः।

अपिच हे वनस्पते तव पुरतोवायुर्विशेषेण चलति खलु अथ हे उलूखल इन्द्राय पातुं सोमं सुनु ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

और हे वनस्पति तुम्हारे आगे पवन विशेष रीति से चलती है। हे ऊखल अब इन्द्र के पान के लिये सोम को निष्पीडन करो ॥ ६ ॥

जब ऊखल में मूसल चलता है, तो उसके आघात से वायु में विशेष प्रकार की गति उत्पन्न होती है। वह वायु क्रम से आकुंचन और प्रसारण युक्त तरंगों में चलती है। और इन तरंगोंका कान पर आघात होने से शब्द सुनाई देता है ॥

उलूखल मुसले देवते भुरिग्गायत्रीछन्दः।८।८।९॥

आयजीवाजसातमा ता ह्यू१च्चा विजर्भृतः। हरीइवान्धांसिबप्सता ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आऽयजी०	आयष्टव्ये (निरु० ९।३६)	पूजने योग्य
वाजऽसातमा	अतिशयेनबलप्रदे (वाज+सन्-क्विप-तमप्)	अतिशय करके बल को देने वाले
ता	ते	वे
हि	खलु	निश्चय करके
उच्चा	उच्चैः	ऊंचे
विऽजर्भृतः	विह्रियेते (निरु०९।३६ हृ–यङ् लुक्)	क्रीड़ा करते हैं
हरीऽइव०	अश्वाविव	द घोड़ों की तरह
अन्धांसि	अन्नानि	अन्नों को
बप्सता	भक्षयन्तौ (भस्भक्षणे-शतृ०)	खाते हुए

संस्कृतार्थः।

आयष्टव्ये (ये उलूखल मुसले) अतिशयेन बलप्रदे (स्तः) ते अन्नानिभक्षयन्तावश्वाविवोच्चैर्विह्रियेते ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(जो) पूजने योग्य (ऊखल और मुसल) अतिशय करके बल के देने वाले (हैं) वे अन्नों को खाते हुए दो घोडों की न्याईं ऊंचे (शब्द से) क्रीडा करते हैं ॥ ७ ॥

जैसे दाना खाते समय युद्ध के घोडे आनन्द से फूत्कार शब्द करते हैं । वैसे ही ऊखल और मूसल सोम कूटते समय ऊंचे शब्द से क्रीडा करते हैं ॥

उलूखलमुसले देवते गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

ता नो॑ अ॒द्य व॑न॒स्पती॑ ऋ॒ष्वावृ॒ष्वेभिः॑ सो॒तृभिः॑ । इन्द्रा॑य॒ मधु॑मत्सुतम् ॥८॥

ता	तौ	वे
नः	अस्मदर्थम्	हमारे निमित्त
अद्य	अद्य	आज
वनस्पती	हे वनस्पती	हे वनस्पती (ऊखलमुसल रूप)
ऋष्वौ	महान्तौ (निघं० ३।३),	बड़े

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋष्वेभिः	महद्भिस्सह	बडों के साथ
सोतृऽभिः	अभिषवकर्त्तृभि-स्सह	निष्पीडन करने वालों के साथ
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
मधुऽमत्	माधुर्योपेतम् (सोमद्रव्यम्)	मीठे (सोम को)
सुतम्	अभिषुणुतम्	निष्पीडन करो

संस्कृतार्थः ।

हे (ऊलूखल मुसलरूपौ) वनस्पती महान्तौ तौ (युवाम्) अद्य महद्भिरभिषवकर्तृभिस्सहास्मदर्थं माधुर्योपेतम् (सोमद्रव्यम्) इन्द्रायाभिषुणुतम् ।।८।।

भाषार्थः ।

हे (ऊखल मुसल रूप) बनस्पती महान वे आप महत्व से सम्पन्न निष्पीडन करने वालों के साथ आज हमारे निमित्त मीठे (सोम) को इन्द्र के लिये निष्पीडन करो ।। ८ ।।

बनस्पतो से तात्पर्य लकड़ी के बने हुए ऊखल और मूसल से है। ये दोनों महान हैं। सोमको निष्पीड़न करने वाले हमारे ऋत्विज भी महान हैं। (जिनसे हमारा सम्बन्ध है वे सब महान हैं)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमो देवता गायत्रीछन्दः ॥८।८।८।

उच्छिष्टंचम्वोर्भर सोमंपवित्रआ-
सृज। निधेहिगोरधित्वचि ॥९॥

उत्	उत् +	–
शिष्टम्	उत्+शिष्टम् – उच्छिष्टम्	उच्छिष्ट को
चम्वोः	भक्षकयोः	खाने वालों के
भर	हर	ले जाओ
सोमम्	सोमम्	सोम को
पवित्रे	(दशायाः) पवित्रे	(ऊन के आंचल रूप) पवित्रे में
आ	आ+	–
सृज	आ+सृज, आ-सिञ्च	सींचो
नि	नि +	–
धेहि	नि+धेहि स्थापय	स्थापन कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोः	गोः	बैल के
अधि	उपरि	ऊपर
त्वचि	चर्मणि	चर्म पर

संस्कृतार्थः ।

भक्षकयोः (उलूखलमुसलयोः) उच्छिष्टं हर सोमम् (दशायाः) पवित्र आसिञ्च (शेषम्) गोस्त्वगुपरि स्थापय ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

भक्षण करने वाले (ऊखल मुसल) के उच्छिष्ट को लेजाओ, सोम को (ऊनके आंचल रूप) पवित्रे में सींचो और (शेष को) बैल के चर्म पर रक्खो ॥ ९ ॥

"चम्वौ" शब्द अनेक मंत्रों में ऊखल मूसल के अर्थ में आया है (जैसे देखो ऋ० ४ । १८ । ३ । ९ । ३६ । १) कारण यह है कि वह सोम को खाते हैं, और उनकी उच्छिष्ट (झूठ) को ऊन के वस्त्र की आंचल में से निचोड़ा जाता है जिससे छन कर सोमरस द्रोण कलश में गिरता है, शेष (छूछ) को चमड़े पर डालते जाते हैं ।

इत्यष्टाविंशं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं०१ सू० २९।

इन्द्रो देवता शुनःशेपऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः
८।८।८।८।८।

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता
इव स्मसि। आ तू न इन्द्र शंसय गोष्व
श्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ।१।

यत्	यत् + चित्	यद्यपि
चित्	+ चित्	--
हि	खल	निश्चय करके
सत्य	हे सत्य (स्वरूप)	हे सदा सच्चे
सोमऽपाः	हे सोमपाः	हे सोम के पीने वाले
अनाश-स्ताःऽइव	आशाहीना इव	आशा हीनों को न्याइ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मसि	स्मः	हम हैं
आ	आ+	–
तु	तथापि(आ०को०)	तौ भी
नः	अस्मान्	हम को
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
शंसय	आ+शंसय आश्वासय	आश्वासन करो
गोषु	गोभिः (तृतीयार्थे सप्तमी)	गौओं द्वारा
अश्वेषु	अश्वैः (,, ,,)	घोड़ों द्वारा
शुभ्रिषु	शोभनैः (,, ,,)	सुन्दरों द्वारा
सहस्रेषु	सहस्रैः (,, ,,)	हज़ारों द्वारा
तुविऽमघ	हे बहुधन(तुवीति बहुनाम(निघ०।३।१)	हे बहुत धन वाले

संस्कृतार्थः

हे सत्य (स्वरूप) सोमपाः (इन्द्र) यद्यपि वय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माशाहीना इव स्मः तथापि हे बहुधन त्वं शोभनै स्सहस्रैर्गोभिरश्वैः (च) अस्मानाश्वासय ॥ १ ॥

भाषार्थः।

हे सदासच्चे, सोम के पीने हारे (इन्द्र) यद्यपि हम आशा हीनों की न्याईं हुए हुए हैं । तौ भी हे बहुत धनवाले आप सुन्दर सहस्रों गौएं (और) घोडों के द्वारा हमारा आश्वासन करो ॥ १ ॥

विनियोग--पृष्ठचषडह के पांचवें दिन होने वाले माध्यन्दिन सवन में होत्रक इस सूक्त की तीन २ ऋचाओं को अपने २ शास्त्रों में मिलाकर पाठ करते हैं (आ० श्रौ० सू० उ० १ । ११ । ३९)

यह एक अनुभव की बात है, कि किसी २ समय हम अत्यन्त निराश होजाते हैं। और यह समझने लगते हैं कि अब हम नहीं बचेंगे। ऐसे समय में एक मात्र इन्द्र ही हमारा आश्वासन करने में समर्थ हैं--वह अवश्य हमें सहस्रों गौ और घोड़ों से युक्त करके पुनः समृद्ध बनावेंगे ॥

इन्द्रो देवता निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः॥७।८।८।८।८॥

शिप्रिन्वाजानांपते शचीवस्तव-

दंसना। आतूनइन्द्रशंसय गोष्व-

श्वेषुशुभ्रिषु सहस्रेषुतुवीमघ ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिप्रिन्	हे हनूमन्	हे जबडे वाले
वाजानाम्	बलानाम्	बलों के
पते	पते	स्वामी
शचीऽवः	हे कर्मोद्युक्त (शची इति कर्म नाम निघं०२।१)	हे सदा काम करने वाले
तव	तव	तेरा
दंसना	कर्म (दंसइतिकर्म नाम निघं०१।२)	कर्म

संस्कृतार्थः ।

हे हनूमन् बलानांपते हे कर्मोद्युक्त (इदंसर्वम्) तव कर्म ... ... ॥२॥

भाषार्थः ।

हे जबडे वाले, बलों के स्वामी हे सदा काम करने वाले, (यह सब) आपका काम है .... ॥२॥

" शिप्री " के लिये देखो पृ० १९६, इसी का पर्याय वाची हनमान है जो रामायण के एक प्रसिद्ध बीर का नाम है ॥

यह सब अत्यन्त महान् और वीर्य युक्त कर्म जो इस सृष्टिमें हो रहा है, इन्हीं कर्मोद्युक्त इन्द्र का है। वह चाहें तो हमें इस निराशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की अवस्था से निकाल कर शीघ्र ही सहस्रों गौ और घोड़ों से युक्त कर सकते हैं ॥

इन्द्रो देवता पङ्क्तिश्छन्दः ८।८।८।८।८।

निष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने। आतून इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥३॥

नि	नि +	–
स्वापय	नि+स्वापय, नितरां सुप्ते कुरु	निपट सुलाओ
मिथुऽदृशा	परस्परंपश्यन्त्यौ	आपस में देखने वाली दोनों को
सस्ताम्	स्वपिताम् (सस् स्वप्ने)	सोवें
अबुध्यमाने०	अबुध्यमाने	न जागती हुई

संस्कृतार्थः

(हेइन्द्र) परस्परं पश्यन्त्यौ (विपदौ) नितरां सुप्तेकुरु, तेअबुध्यमाने स्वपिताम् .... ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे इन्द्र आपस में देखने वाली दोनों (विपत्तियों) को निपट सुला दो वे (कदापि) न जागती हुईं सोती रहें .... ॥ ३ ॥

आपस में एक दूसरेका देखने वाली जो वर्तमान और आगे आने वाली विपत्ति वा अलक्ष्मी हैं। इन्द्र उनको सलादें और ऐसे सुलावें कि वे फिर कदापि न जागें। जिससे हम सहस्रों घोड़े और गौओं से युक्त हों॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८॥

स॒सन्तु॒त्या अरा॑तयो॒ बोध॑न्तुशूर-रा॒तयः। आतू॑नइन्द्रशंसय॒ गोष्वश्वे॑षुशु॒भ्रिषु॒ स॒हस्रेषुतुवीमघ॥ ४ ॥

स॒सन्तु॑	स्वपन्तु	सोवें
त्याः	ते (लिङ्गव्यत्ययः)	वे
अरा॑तयः	शत्रवः	शत्रू
बोध॑न्तु	बोधन्तु	जागें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शूर	हे शूर	हे वीर
रातयः	मित्राणि	मित्र

संस्कृतार्थः ।

हे वीर ते शत्रवस्स्वपन्तु मित्राणि (च) बोधन्तु ... ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे वीर वे शत्रु सोवें (और) मित्र जागें....॥ ४॥

हे इन्द्र वे (अर्थात् जिनको आप जानते हैं) हमारे शत्रु सोवें और हमारे मित्र जागें। जिससे हम शत्रुओं को जीत कर सहस्रों गौ और घोड़ों से युक्त हों ॥

इन्द्रो देवता पङ्क्तिश्छन्दः ८।८।८।८। ८

समिन्द्रगर्दभंमृण नुवन्तंपापयामुया। आतूनइन्द्रशंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषुतुवीमघ॥ ५॥

सम्	सम्+	—
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्दभम्	गर्दभसमानम् (शत्रुम्)	गधे के समान (शत्रु) को
मृण	सम्+मृण सम्यङ्मारय	मार के नाश करो
नुवन्तम्	स्तुवन्तम्	स्तुति करने वाले को
पापया	पापया (वाचा)	पाप वाली (वाणी) से
अमुया	अनया	इस से

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र अनया पापया (वाचा) स्तुवन्तं गर्दभसमानम् (शत्रुम्) सम्यङ्मारय .... ॥५॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र इस पापवाली (वाणी) से स्तुति करने वाले गधे के समान (हमारे शत्रु) को मारके नाश करो .... ॥ ५ ॥

हे इन्द्र शत्रु हमारे साथ तो पाप का व्यवहार करके हमारा सर्वस्व नाश कर रहा है और इसी पाप की वाणी से आप (अर्थात् परमेश्वर) को स्तुति कर रहा है। इस गधे को मारकर नाश करो और हमें सहस्रों गौ और घोड़ों से युक्त करो ॥

इन्द्रो देवता पङ्क्तिश्छन्दः ८।८।८।८।८॥

पतातिकुण्डृणाच्या दूरंवातीव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नादधि। आतूनइन्द्रशंसय गोष्व श्वेषुशुभ्रिषु सहस्रेषुतुवीमघ ॥६॥

पताति	पततु	पड़े
कुषड्गा-च्या	कुटिलगत्या (सा०भा०)	कुटिल गति से
दूरम्	दूरम्	दूर
वातः	वायुः	पवन
वनात्	वनात्	बन से
अधि	अधिकम्	अधिक

संस्कृतार्थः ।

कुटिलगत्या (आगच्छन्) वायुर्वनादधिकं दूरं पततु......... ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

कुटिल गति से (आने वाली) वायु बन से परे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधिरू दूर पड़े.......... ॥ ६ ॥

जो वायु कुटिल गति से भंभूलिए बनाती हुई चलती है वह हमारे वनों से बहुत दूर परे शत्रु के देश में पडे। और हम सहस्रों गौ और घोड़ोंसे युक्त हों ॥

इन्द्रो देवता निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः ।८।७।८।८।८।

सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् । आतू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥७॥

सर्वम्	सर्वम्	सब को
परिऽक्रोशम्	परितआक्रोश कर्त्तारम्	सब ओर से बुरा चींतने वाले को
जहि	मारय	मार
जम्भय	नाशय	नाश कर
कृकदाश्वम्	हिंसाप्रदम् (कृकं हिंसां दाशति प्रयच्छति)	हिंसा देने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र परितआक्रोशकर्त्तारं सर्वं मारय हिंसाप्रदं (च) नाशय ... ... ॥७॥

भाषार्थः ।

(हे इन्द्र) सब ओर से (हमारा) बुरा चींतने वाले सब को मारो (और) हिंसा देने वालों को नाश करो ... ... ॥७॥

जो सब ओर से हमारा बुरा चींतते हैं वा हमें दुःख देते हैं उनके नाश होनेसेही हम सहस्रों गौ और घोड़ोंसे युक्त होसकते हैं।

इत्येकोनत्रिंशं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० ३०।

इन्द्रो देवता शुनःशेप ऋषिर्गायत्रीछन्दः ८।८।८।

आ व॒ इन्द्रं॒ क्रिविं॑ यथा वाज॒यन्तः॑

श॒तक्र॑तुम्। मंहि॑ष्ठं सिञ्च॒ इन्दु॑भिः

॥१॥

आ	आ+	—
व॒ः	युष्मदर्थम्	तुम्हारे लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
क्रिविम्	अवटम (निघं० ३।२३)	गढे को
यथा	यथा	जैसे
वाजऽयन्तः	बलमिच्छन्तः	बल की इच्छा करते हुए
शतऽक्रतुम्	बहुबलोपेतम्	बहुत बल वाले को
मंहिष्ठम्	अतिशयेन प्रवृद्धम्	अतिशय करके बढ़े हुए को
सिञ्चे	आ+सिञ्चे,सर्वतः सिञ्चामहे	चारों ओर सींचते हैं
इन्दुभिः	सोमैः	सोमों से

संस्कृतार्थः।

(हे आर्यगण) युष्मदर्थं बलमिच्छन्तो (वयम्) बहुबलोपेतमतिशयेनप्रवृद्धमिन्द्रमवटमिव सोमैः स-सर्वतः सिञ्चामहे ॥ १ ॥

भाषार्थः।

(हे आर्यगण) आप के लिये बल की इच्छा करते हुए हम बहुत बल वाले और अतिशय करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बढे हुए इन्द्र को गढे की न्याईं चारों ओर सोमों से सींचते हैं ॥ १ ॥

हम केवल अपने लिये नहीं किन्तु तुम्हारे अर्थात् आर्य जाति के लिये बल की इच्छा करते हुए इन्द्र को सोमरस अर्पण करते हैं। और आशा करते हैं कि हमारा सोम इन्द्र ऐसी उत्कण्ठा से पान करेंगे जैसे गढे में सींचा हुआ जल, जो तत्काल लय होजाता है॥

इन्द्रोदेवता निचृद्गायत्री छन्दः ७।८।८।

शतंवायः शुचीनां सहस्रंवासमा

शिराम्। एदुनिम्नंनरीयते ॥ २ ॥

शतम्	शतम्	सौ
वा	वा	वा
यः	यः	जो
शुचीनाम्	शुद्धानाम् (सोमानाम्)	पवित्र(सोमों) के
सहस्रम्	सहस्रम्	हजार को
वा	वा	वा।

नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय पुस्तकालय
NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्ऽआशि राम्	सम्यग्मिश्रणद्र-व्याणाम्(दधिपय आदीनाम्)	सोम में मिलाए जाने वाले (दूध वा दही) का
आ	आ +	–
इत्	एव	ही
ऊम्	(पूरणः)	–
निम्नम्	निम्नप्रदेशम्	निवान को
न	इव	तरह
रीयते	आ+रीयते,प्राप्नोति (रीयतिर्गतिकर्मा, निघं० २।१४)	प्राप्त होता है

संस्कृतार्थः ।

यः (इन्द्रः) शुद्धानाम् (सोमानाम्) शतम् मिश्रणद्रव्याणां सहस्रम् (च) निम्नप्रदेशम्(आपः) इव प्राप्नोत्येव ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

जो (इन्द्र) सैंकडों (कलश) पवित्र (सोमों) को और हजारों (कलश) (सोम में)मिलाएजाने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(दूध वा दही) को निवान में (जल) की न्याईं निश्चय करके प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥

इन्द्र को सैंकडों द्रोण कलश भरे सोमरस और हजारों कलश भरे (सोम में मिलाए जाने वाले) दूध वा दही इस तरह पहुंचते हैं जैसे निवान में जल। अर्थात् इन्द्र की सोम से कभी तृप्ति नहीं होती, चाहे जितना सोम पिलाओ, फिरभी और कामना बनी रहती है ॥

इन्द्रादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

संयन्मदायशुष्मिण एनाह्यस्योदरे। समुद्रोनव्यचोदधे ॥ ३ ॥

सम्	सम्+	-
यत्	यत्	जो
मदाय	मदाय	मद के लिये
शुष्मिणे	बलवते	बल वाले के लिये
एना	एनेन (इन्द्रेण)	इस (इन्द्र) से
हि	एव	ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्य	अस्य (इन्द्रस्य)	इस (इन्द्र) के
उदरे	उदरे	पेट में
समुद्रः	समुद्रः	समुद्र ने
न	इव	जैसे
व्यचः	विस्तारः(आ०को०)	विस्तार को
दधे	सम् + दधे सम्यग् धृतः	पूर्ण रीति से धारण कियागयाहै

संस्कृतार्थः

यदेनेन (इन्द्रेण) बलवते मदाय स्वोदरे बिस्तारो धृतः,यथा समुद्रः (जलाय स्वोदरे विस्तारं धारयति) ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

जो बल कारक मद के लिये इस इन्द्र ने अपने पेटमें विस्तार को धारण किया है जैसे समुद्र (जल के लिये अपने पेटमें विस्तार को धारण करता है) ॥३॥

जैसे समुद्र ने इतने विस्तार को धारण किया हुआ है कि जितना जल नदियों वा वृष्टि द्वारा गिरता है, सब उसमें समा जाता है। इसी प्रकार इन्द्र ने हमारे अर्पण किए हुए सोम के लिये अपने उदर में समुद्र जैसे विस्तार को धारणकिया हुआ है। सोम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पान से कभी उनका पेट नहीं भरता। और वह सोम के लिये कभी नांह नहीं करते।

इन्द्रोदेवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

अयमुतेसमतसि कपोतइवगर्भ-
धिम्। वचस्तच्चिन्नओहसे ॥४॥

अयम्	अयम्	यह
उम्	खलु	निश्चय करके
ते	त्वदर्थम्	तेरे लिये
सम्	सम्+	–
अतसि	सम्+अतसि सम्यक् प्राप्नोषि	तूसम्यक् प्राप्त होता है
कपोतःऽइव	कपोतइव	कबूतर की तरह
गर्भऽधिम्	गर्भधारणसमर्थाम् (कपोतीम्)	गर्भ धारणकरने के योग्य (कबूतरी) को
वचः	वचः	बचन को
तत्	तत्	उस को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चि॒त्	अपि	भी
न॒:	अस्माकम्	हमारे
ग्रो॒ह॒से॒	प्राप्नोषि	तू प्राप्त होता है

संस्कृतार्थः ।

(हे इन्द्र) अयम् (सोमः) त्वदर्थं खलु (त्वमेनम्)गर्भ धारण समर्थाम्,(कपोतीम्) कपोतइव सम्यक् प्राप्नोषि अस्माकं तद्वचोऽपि प्राप्नोषि ॥४॥

भाषार्थः ।

(हे इन्द्र) यह (सोम) निश्चय करके आपके लिये (है) आप इस को ऐसे प्राप्त होते हो जैसे ऋतु मती (कबूतरी) को कबूतर (और) हमारे उस वचन को भी प्राप्त होते हो ॥ ४ ॥

इन्द्र हमारे सोम को ऐसे प्रेम से प्राप्त होते हैं, जैसे ऋतु मती कबूतरी को कबूतर । और हमारे वचन को भी प्रेम से सुनते हैं । इन्द्र से मित्रता सम्पादन करने का सोमरस एक साधन है । इस के द्वारा मित्रता होने पर इन्द्र हमारी सब बात मित्र की न्याईं प्रेमसे सुनते हैं ॥

इन्द्रोदेवता निचृद्गायत्रीछन्दः ।७।८।८॥

स्तो॒त्रंरा॑धानांपते॒ गिर्वा॑होवीर॒य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्यते विभूतिरस्तुसूनृता ॥ ५ ॥

स्तोत्रम्	स्तोत्रम्	स्तुति
राधानाम्	धनानाम्	धनों के
पते	पते	हे स्वामी
गिर्वाहः	हे गीर्भिरुह्यमान	हे स्तुतियों से प्राप्त होने वाले
वीर	हे वीर	हे वीर
यस्य	यस्य	जिस का
ते	तव	तेरा
विऽभूतिः	विभूतिः	ऐश्वर्य
अस्तु	अस्तु	हो
सूनृता	सूनृता	प्यारी और सच्ची वाणी

संस्कृतार्थः ।

हे धनानांपते गीर्भिरुह्यमान वीर यस्य (मुखे)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तव स्तोत्रम् (तस्य) विभूतिः सूनृता (च) अस्तु ॥५॥

भाषार्थः ।

हे धनोंके स्वामी स्तुतियों से प्राप्त होने वाले वीर जिस के (मुख में) आप की स्तुति है उसी के (घर में) ऐश्वर्य और उसी की प्यारी और सच्ची वाणी हो ॥ ५ ॥

जिन की जिह्वा पर इन्द्र की स्तुति है, उन के घर में ऐश्वर्य स्थिर है और मीठी और सच्ची वाणी जो बडी कठिनता से प्राप्त होती है, उन के लिये स्वभाव सिद्ध हो जाती है ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

ऊर्ध्वस्तिष्ठान ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो । सम॒न्येषु ब्रवावहै ॥६॥

ऊर्ध्वः	उन्नतः	ऊंचा
तिष्ठ	तिष्ठ	खड़ा हो
नः	अस्माकम्	हमारी
ऊतये	रक्षायै	रक्षा के लिये
अस्मिन्	अस्मिन्	इस में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाजे	संग्रामे	युद्ध में
शतक्रतो	हे बहुबल	हे बहुत बलवाले
सम्	सम् +	--
अन्येषु	अन्येषु (कार्यान्तरेषु)	अन्य (कार्यों) में
ब्रवावहै	सम्+ब्रवावहै	भलीप्रकार हम दोनों बातें करें

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबल (इन्द्र) अस्मिन्सङ्ग्रामेऽस्माकं रक्षायै उन्नतस्तिष्ठ आवामन्येषु (कार्यान्तरेषु) सम्यक् ब्रवावहै ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे बहुत बल वाले (इन्द्र) इस युद्ध में हमारी रक्षा के लिये ऊंचे खड़े हूजिए, हम दोनों (अन्य कार्यों) में भली प्रकार बातें करें ॥ ६ ॥

युद्ध में इन्द्र को रक्षा के लिये बुलाने से युद्ध इन्द्र से मिलनेका एक साधन बन जाता है-फिर तो हम प्रत्येक कर्म में मित्र को न्याईं उन से सम्भाषण कर सकते हैं। हमारी आवश्यकताएं और विशेष करके प्राण संकट का अवसर इन्द्र से सम्बन्ध करने के सहज साधन हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

योगेयोगेतवस्तरं वाजेवाजेहवामहे। सखायइन्द्रमूतये ॥७॥

योगेऽयोगे	प्रत्येककर्मोपक्रमे	प्रत्येक कार्यारंभ में
तवःऽतरम्	बलवत्तरम् (तवइति बलनाम निघं० २।६)	अतिशय करके बली को
वाजेऽवाजे	संग्रामे संग्रामे	प्रत्येक युद्ध में
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
सखायः	सखायः	मित्र
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
ऊतये	रक्षायै	रक्षा के लिये

संस्कृतार्थः।

सखायो वयं प्रत्येककर्मोपक्रमे संग्रामे संग्रामे (च) बलवत्तरमिन्द्रं रक्षायै आह्वयामः ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

मित्र हम प्रत्येक कार्य्यारम्भ में (और) प्रत्येक युद्ध में अति बल वाले इन्द्र को रक्षा के लिये बुलाते हैं ॥ ७ ॥

जिन में हम रहते हैं वे हमारे मित्र हैं हम सब एक मन होकर प्रत्येक कार्यारम्भ में और प्रत्येक संग्राम में इन्द्र को रक्षा के लिये बुलाया करें ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

आ घा गमद्यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥८॥

आ	आ+	–
घ	एव	ही
गमत्	आ+गमत् आगच्छेत्(लिङर्थेलेट्)	आवेगा
यदि	यदि	जो
श्रवत्	शृणुयात् (लिङर्थे लेट्)	सुनेगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहस्रिणी-भिः	सहस्रसंख्याव-तीभिः	हज़ारों से
ऊतिऽभिः	रक्षाभिस्सह	रक्षाओं के साथ
वाजेभिः	बलैस्सह	बलों के साथ
उप	प्रति	प्रति
नः	अस्मदीयम्	हमारे
हवम्	आह्वानम्	पुकार को

संस्कृतार्थः।

यदि (इन्द्रः) शृणुयात् (तदा) सहस्रसंख्यावतीभीरक्षाभिर्बलैः (च) सह अस्मदाह्वानं प्रत्यागच्छेदेव ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

जो (इन्द्र) सुनेंगे (तो) हज़ारों रक्षाओं (और) बलों के सहित हमारी पुकार के प्रति अवश्य आवेंगे ॥ ८ ॥

इसमें कुछ भी संदेह नहीं है और यह पक्की बात है, कि जो इन्द्र हमारी पुकार को सुनपावेंगे तो सहस्रों रक्षाओं और बलों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को साथ लेकर हमारी सहायता के लिये तुरन्त पहुंचेंगे। इस लिये सब को एक मन होकर इन्द्र को बुलाना चाहिये ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः॥८।८।८।

अनुप्रत्नस्यौकसो हुवेतुविप्रतिं
नरम् । यंतेपूर्वंपिताहुवे ॥ ९ ॥

अनु	अनु+	–
१ प्रत्नस्य	पुरातनस्य	पुराने के
१ ओकसः	गृहस्य	घर के
हुवे	अनु+हुवे अन्वा-ह्वयामि	पूर्वजों की न्याईं बुलाता हूं
२ तुविऽप्रतिम्	बलस्य प्रतिरूपम्	बल के प्रतिरूप को
१ नरम्	नेतारम्	नेता को
यम्	यम्	जिस को
ते	त्वाम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	तुझ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वम्	पूर्वम्	पहले
पिता	पिता	पिता ने
हुवे	आहूतवान्	बुलाया था

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) पुरातनस्य (अस्मत्) गृहस्य नेतारम् बलस्य प्रतिरूपम् (इन्द्रं) अन्वाह्वयामि यं त्वाम् (अस्मदीयः) पिता पूर्वमाहूतवान् ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

मैं पुराने(हमारे)घरयाने के नेता, बलके प्रतिरूप (इन्द्र) को पूर्वजों की न्याई बुलाता हूं जिन आपको (हमारे) पिता पहले बुलाया करते थे ॥ ९ ॥

(१)इन्द्र आर्य्योंके पुराने घरयाने के नेता वीर हैं। आर्य्य सदासे उन को बुलाते आए हैं । हमारे पिता भी उन को बुलाते थे इस लिये हमें भी उन की रक्षा का त्याग नहीं करना चाहिये। किन्तु अवश्य बुलाना चाहिये ॥

(२) बलके प्रतिरूप से यह तात्पर्य है कि इन्द्र बल के साक्षात् रूप हैं ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

तंत्वावयंविश्ववारा शास्महेपुरुहूत ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सखे॑वसोजरि॒तृभ्यः॑ ॥ १० ॥

तम्	तम्	उस को
त्वा	त्वाम्	तुझ को
वयम्	वयम्	हम
विश्वऽवार	हे सर्वैर्वरणीय	हे सब से बरने योग्य
आ	आ +	--
शास्महे	आ + शास्महे, कामयामहे	चाहते हैं
पुरुऽहूत	बहुभिराहूत	हे बहुतों से बुलाये जाने वाले
सखे	सखे	हे मित्र
वसो०	निवासहेतो	हे आश्रय भूत
जरितृऽभ्यः	स्तोतृभ्यः	स्तोताओं के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे सर्वैर्वरणीय बहुभिराहूत स्तोतृभ्यो निवास हेतो सखे (इन्द्र) तंत्वां वयं कामयामहे ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे सब से बरने योग्य बहुतों से बुलाए जाने वाले स्तोताओं के लिये आश्रयभूत सखा (इन्द्र) उस आप को हम इच्छा करते हैं ॥ १० ॥

इन्द्र सब से बरने के योग्य हैं और बहुत जन उन को (कोई इन्द्र नाम से कोई ईश्वरादि नामान्तर से) बुलाते हैं वह स्तुति करने वालों के परम आश्रय भूत हैं इस लिये हमें उन की अवश्य कामना करनी चाहिये ॥

इन्द्रो देवता पादनिचृच्छन्दः ।७।७।७।

अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सो-
मपाव्नाम्। सखे वज्रिन्त्सखीनाम्॥११

अस्माकम्	अस्माकम्	हमारे
शिप्रिणीनाम्	हनूमताम् (व्यत्ययेन स्त्रीत्वम्)	जबडे वालों का
सोमऽपाः	हे सोमपाः	हे सोम के पीने वाले
सोमऽपाव्नाम्	सोमस्य पातॄणाम्	सोम के पीने वालों क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सखे	सखे	मित्र
वज्रिन्	वज्रिन्	वज्रधारी
सखीनाम्	मित्राणाम्	मित्रों के

संस्कृतार्थः ।

हे सोमपावज्रिन् हनूमतां सोमस्य पातॄणामस्माकं मित्राणां सखे ॥ ११ ॥

भाषार्थः ।

हे सोम के पीने वाले, वज्रधारी, हमारे जबडे वाले सोम के पीने वाले मित्रों के सखा (इन्द्र) ।११।

वज्र धारी सोमपा इन्द्र हमारे सोम पीने वाले बड़े जबड़ों वाले अर्थात् बलवान मित्रों के सखा हैं। इस (लिये हमारे मित्र अजेय हैं ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ॥८।८।८॥

तथातदस्तुसोमपाः सखेवज्रिन्त-
थाकृणु । यथातउश्मसीष्टये ॥१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा	तथा	वैसे
तत्	तत्	वह
अस्तु	अस्तु	हो
सोमऽपाः	हे सोमपाः	हे सोम के पीने वाले
सखे	सखे	मित्र
वज्रिन्	वज्रिन्	वज्रधारी
तथा	तथा	वैसे
कृणु	कुरु	कर
यथा	यथा	जैसे
ते	त्वाम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	तुझ को
उश्मसि	कामयेमहि (लिङ्थ लट्)	हम कामना करें
इष्टये	इष्टसिद्धये	इष्ट सिद्धि के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे सोमपास्तत्तथास्तु हे सखे वज्रिन् तथा कुरु यथा (वयम्) इष्टसिद्धये त्वां कामयेमहि ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

हे सोम के पीने वाले यह ऐसे हो । हे वज्रधारी सखा ऐसा करो कि हम इष्ट साधन के लिये आप की कामना (किया) करें ॥ १२ ॥

हे इन्द्र ऐसा हो और आपके करने से ही ऐसा होगा कि हम अपने इष्ट साधन के लिये आप की कामना किया करें। हम अपने इष्ट साधन के लिये और सैंकडों उपाय करते हैं परन्तु इन्द्र की कामना नहीं करते यदि इन्द्र की कामना किया करें तो हमारी आवश्यकताएं इन्द्र के साथ मित्रता सम्पादन करने का साधन बन सकती हैं ॥

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः॥८।८।८॥

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १३ ॥

रेवतीः	गावः	गौएं
नः	अस्माकम	हमारीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सधऽमादे	सहहर्षयुक्ते(सह-मादि-अच्)	साथ हर्षित होने पर
इन्द्रे	इन्द्रे	इन्द्र के होने पर
सन्तु	सन्तु	होवें
[1]तुविऽवाजाः	प्रभूतान्नयुक्ताः (बहुदुग्धवत्यः)	बहुत दूध वालीं
क्षुऽमन्तः	अन्नवन्तः(क्षु-इत्यन्ननाम निघ०२।७)	अन्न युक्त
याभिः	याभिस्सह	जिन के द्वारा
मदेम	हृष्येम	हम मोद को प्राप्त हों

संस्कृतार्थः।

इन्द्रे (अस्माभिः) सहहर्षयुक्तेअस्माकंगावः प्रभूत दुग्धवत्यस्सन्तुयाभिः(वयम्)अन्नवन्तो हृष्येम॥१३॥

भाषार्थः।

इन्द्र के (हमारे) साथ हर्षित होने पर हमारी गौएं बहुत दूध वाली हों, जिन के द्वारा हम अन्न युक्त हो कर मोद को प्राप्त हों॥ १३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गौएं सोम में मिलाने के लिये "आशिर" को देने वाली होने से हमारे इन्द्र के साथ मिलकर मोद करने में सहायक हैं इस लिये

(१) वे प्रभूत अन्न युक्त हों अर्थात् बहुत दुग्ध वाली हों और गौओं के बहुत दुग्ध युक्त होने से हम भी अन्न वान हो कर मोद करें ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

आ घ॒ त्वावा॒न्त्मना॒प्तः स्तो॒तृभ्यो॑ धृष्णविया॒नः। ऋ॒णोरक्षं॒ न च॒क्र्योः॥१४

आ	आ +	---
घ॒	एव	ही
त्वाऽवा॑न्	त्वत्सदृशः	तेरे जैसा
त्मना॑	आत्मना	आप से
आ॒प्तः	निपुणः(आ०को०)	निपुण
स्तो॒तृऽभ्यः॑	स्तोतृभ्यः	स्तोताओं के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धृष्णो॒	हे धार्ष्टर्चयुक्त	हे प्रगल्भ
हूया॒ना॒:	याच्यमानः	प्रार्थित हुआ २
आट॒णो:	आ + ऋणोः प्राप्तोऽसि	तू प्राप्त हुआ है
अक्षम्	अक्षम्	धुरी को
न	इव	न्याईं
च॒क्र्योः	चक्रयोः	दोनों पहियोंमें

संस्कृतार्थः।

हे धार्ष्टर्चयुक्त (इन्द्र) त्वत्सदृश आत्मनैव निपुणः (त्वम्) याच्यमानः (सन्) स्तोतृभ्यश्चक्रयो रक्षमिव प्राप्तोसि ॥ १४ ॥

भावार्थः।

हे प्रगल्भ (इन्द्र) अपने जैसे स्वयमेव निपुण आप प्रार्थित होने पर स्तोताओं के लिये पहियों में धुरी की न्याईं प्राप्त हुए हैं॥ १४ ॥

जैसे रथ की धुरी जो बहुत दृढ बनी हुई हो रथ के पहियों में प्राप्त होकर (लगाई जाकर) रथ को बेधडक चलने में समर्थ करती है, वैसे ही स्तोताओं के जीवन रूपी रथ को दृढ धुरी इन्द्र बन गए हैं। उन जैसा (दूसरे की आकांक्षा न रखता हुआ)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने आप से निपुण दूसरा कोई नहीं है। ऐसी निपुण (Efficient) धुरी होने से इन्द्र के स्तोता निःशंक अपनी जीवन यात्रा पूरी कर लेते हैं। रस्ते में टूट कर जीवन का उद्देश पूरा न होने का भय उनको नहीं है ॥

अग्निर्देवता निचृद्गायत्री छन्दः ।८।७।८।

आ यद्दुवः शतक्रत वा कामं जरितॄणाम् । ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥१५॥

आ	पर्यन्तम्	तक
यत्	यत्	जो
दुवः	परिचर्या	सेवा
शतऽक्रतो	हे बहुबल	हे बहुत बल वाले
आ	पर्यन्तम्	तक
कामम	कामना	इच्छा
जरितॄणाम्	स्तोतॄणाम् (निघं०३। १६)	स्तोताओं की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ॒णोः	प्राप्तोऽसि	प्राप्त हुए हो
अ॒क्षम्	अक्षम्	धुरी को
न	इव	न्याईं
शची॑भिः	कर्मभिः(निघं० २।१)	कर्मों द्वारा

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबल यज्जरितणांदुवः(तत्)पर्य्यन्तं कामना पर्य्यन्तम् (च तान्) कर्मभिरक्षमिव प्राप्तोऽसि ॥ १५ ॥

भावार्थः ।

हे इन्द्र जितनी (स्तोताओं की) सेवा है और जितनी (उन की) कामना है आप उतना(उनको) प्राप्त हुएहैं जैसे कर्म से धुरी (रथ को प्राप्त हुई है)॥ १५॥

जैसे रथ की धुरी पर लुहारने जितना अधिक परिश्रम किया है उतनी ही वह अधिक दृढ हो गई है—इसी तरह जितनी जिस स्तोता ने इन्द्र की सेवा की है और जितनी इन्द्र की कामना की है--उतनी ही दृढता से इन्द्र उन स्तोताओं को प्राप्त हुए हैं ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः ११ । ११ । ११ । ११ ।

प्र॒पू॒वदिन्द्रः॒पोप्रु॑थ॒ञ्जिर्जि॑गाय॒ नान॑

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दद्भिः॒ श्वाप्रवसद्भिर्धनानि। सनोहिर-ण्यरथंदंसनावा॒न्त्सनःसनितास-नये॒सनोदात्॥ १६ ॥

ध्रप्रवत्	सदा	सदा
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
पोप्रुथत्-ऽभिः	फूत्कुर्द्भिः (अश्वः)	(होठों से)फुरराने वाले(घोड़ों)से
जिगाय	जितवान्	जीता है
नानदत्-ऽभिः	हेषमाणैः	हिनहिनाते हुओं से
श्वाप्रवसत्-ऽभिः	पुनःपुनःश्वसद्भिः	बार २ श्वास लेते हुओं से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धनानि	धनानि	धनों को
सः	सः	उस ने
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
१ हिरण्यऽ-रथम्	सुवर्णरथम्	सुवर्ण के रथ को
दंसनाऽवान्	कर्मवान्(निघं० २।१)	काम करने वाले ने
सः	सः	वह
नः	अस्माकम्	हमारा
सनिता	प्रियः(आ०को०)	प्यारा
सनये	प्रेमार्थम्	प्रेम के लिये
सः	सः	उस ने
नः	अस्मभ्यम्	हम को
अदात्	दत्तवान्	दिया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

इन्द्रः सदा (वैरिसम्बन्धीनि) धनानि फूत्कृद्भिर्हेषमाणैः पुनःपुनः श्वसद्भिः (अश्वैः) जितवान्, सः कर्मवान् अस्मभ्यं सुवर्णरथम् (दत्तवान्) सोऽस्माकं प्रियः (अस्ति) प्रेमार्थंसोऽस्मभ्यम् (सुवर्णं रथम्) अदात् ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

इन्द्र ने सदा (शत्रुओं के) धनों को (होठों से) फुरराने वाले हिनहिनाने वाले और बारम्बार श्वास लेने वाले घोडों द्वारा जीता है, उस कर्मवान ने हम को सोने का रथ (दिया है) वह हमारा प्यारा (है) उस ने हम को प्रेम के लिये (सोने का रथ) दिया है ॥१६॥

इन्द्र शत्रुओं का धन अपने उपासकों के लिये जीतते हैं । और अधिक भक्ति होने पर अपना प्रेम भी प्रगट करते हैं जैसे शुनःशेप की मन से सुवर्ण का रथ देकर अपना प्रेम प्रगट किया था (देखो पृ० ६२१)

अश्विनौदेवते गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

आश्विनावश्वावत्येषा यातंशवीरया। गोमद्दस्राहिरण्यवत् ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ +	––
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्वि देवताओ
१ अश्वऽवत्या	अश्ववता	घोड़ों वाले से
इषा	बलेन सह	बल के साथ
यातम्	आ + यातम्, आगच्छतम्	दोनों आओ
१ शवीरया	गतिमता (शु, गतौ)	गति युक्त से
गोऽमत्	गोमद्यथास्यात्तथा	गौओं से युक्त की न्याईं
दस्रा	हे भीषणौ (आ० को)	हे भयानक (देवो)
हिरण्यऽवत्	सुवर्णवद्यथास्यात्तथा	सुवर्ण से यक्त की न्याईं

संस्कृतार्थः।

हे भीषणावश्विनावश्ववता गतिमता (च) बलेन सह गोमत् सुवर्णवत् (च) यथा स्यात्तथाऽऽगच्छतम् ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे भयानक अश्वि (देवताओ) घोड़ों वाले और गतियुक्त बल के सहित गौ (और) सुवर्ण से युक्त होकर आओ ॥ १७ ॥

विनियोग—यह मंत्र और आगे के दोनों मंत्र प्रातरनुवाक के आश्विन क्रतु में पढे जाते हैं (आ०श्रौ० सू०४ । १५ । २) ॥

अश्वि.देव घोडों और गति युक्त बल के साथ हमारे पास आवें। अर्थात् हम घोडों वाले हों और गति युक्त बल वाले हों। वे गौ और सुवर्ण से युक्त होकर आवें अर्थात् हम बहुत गौओं और सुवर्ण वाले हों। गौ घोडे सुवर्ण और गतियुक्त बल (kinetic energy) इन्हीं के होने से मनुष्य जाति बडी समझी जाती है ॥

अश्विनौ देवते गायत्री छन्दः ।८।८।८।

समानयोजनो हि वां रथो दस्राव-

मर्त्यः । समुद्रे अश्विनेयते ॥१८॥

समान-ऽयोजनः	(उभयार्थम्)समानं योजनं यस्य सः	दोनों के लिये एकही जुड़ने वाला
हि	खलु	निश्चय करक
वाम्	युवयोः	तुम दोनों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रथः	रथः	रथ
दस्रौ	हे भीषणौ	हे भयानक (देवताओ)
अमर्त्यः	विनाशरहितः	न नाश होने वाला
समुद्रे	आकाशे (निघं० १।३)	आकाश में
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्वि देवताओ
ईयते	गच्छति	चलता है

संस्कृतार्थः।

हे भीषणावश्विनौ युवयोस्समान योजनो विनाश रहितो रथः खलुआकाशे गच्छति ॥ १८ ॥

भाषार्थः।

हे भयानक अश्वि देवताओ आप दोनों के लिये एक ही जुडने वाला विनाश रहित रथ अवश्य आकाश में चलता है ॥१८॥

अश्वि देव दोनों एकही रथ में बैठते हैं । जो उत्तर मेरु के समीप आकाश में चलता हुआ प्रतीत होता है और ६० घडी में आकाश की एक परिक्रमा करता है (देखो पृ० ४२०)॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विनौ देवते गायत्री छन्दः ॥८।८।८॥

न्य१ घ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं रथस्य-
येमथुः । परि द्यामन्यदीयते ॥१९॥

नि	नि+	––
अघ्न्यस्य	वृषस्य	बैल के
मूर्धनि	मूर्धनि	सिर पर
चक्रम्	चक्रम्	पहिये को
रथस्य	रथस्य	रथ के
येमथुः	नि+येमथुः, नियमितवन्तौ	ठैराया है;
परि	परितः	चारों ओर
द्याम्	द्युलोकम्	द्युलोक को
अन्यत्	अन्यत्	दूसरा
ईयते	गच्छति	चलता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

(हे अश्विनौ युवां) रथस्य (एकम्) चक्रं वृषस्य मूर्धनि नियमितवन्तौ, अन्यत् द्युलोकस्य परितो गच्छति॥ १९॥

भाषार्थः।

(हे अश्विदेवताओ) आप ने रथ के (एक) पहिये को बैल के सिर पर ठहराया है दूसरा (पहिया) द्युलोक के चारों ओर चलता है॥ १९॥

उत्तर मेरु पर अश्वि देवताओंके रथकी न्याईं सूर्यभी आकाश में क्षितिज के नीचे साथ२ घूमता रहता है (उदय होने के पीछे भी इसी प्रकार क्षितिज के साथ २ ऊपर चारों ओर घूमता रहता है) यही कामनाओं की वर्षा करने वाला "वृष" वा बैल है जिस के सिरपर अश्विनी देवताओं के रथ का एक पहिया ठहरा हुआ है यह पहिया क्षितिज के नीचे होने से दीख नहीं सकता। परन्तु दूसरा पहिया क्षितिजके ऊपर होने से आकाश में चारों ओर घूमता हुआ दीखता है॥

उषोदेवता गायत्री छन्दः।८।८।८।

कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये। कं नक्षसे विभावरि॥२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ कः	कः	कौन
ते	तव	तेरे
१ उषः	हे उषः	हे उषा
२ कधऽप्रिये	हे कथाप्रिये	हे कथा को प्यार करने वाली
भुजे	भोगाय	भोग के लिये
२ मर्त्तः	मर्त्यः	मनुष्य
अमर्त्ये	हे मरण रहिते	हे मृत्यु रहित
२ कं	कम्	किस को
२ नक्षसे	गच्छसि (निघं०२।१४)	तू जाती है
विभाऽवरि	हे विशेषदीप्ति युक्ते	हे विषेश दीप्ति वाली

संस्कृतार्थ ।

हे कथा प्रिये, मरणरहित उषः तव भोगाय को मनुष्यः, हे विशेषदीप्तियुक्ते(त्वम्) कं गच्छसि ॥२०॥

भाषार्थः

हे कथा को प्यार करने वाली मृत्यु रहित उषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपके भोग के लिये कौन कनुष्य (है) हे विशेष दीप्ति वाली आप किसके पास जाती हो॥ २० ॥

विनियोग—यह मन्त्र और आगे के दोनों मन्त्र प्रातरनुवाक के उषाक्रतु में पढे जाते हैं (आ० श्रौ० सू० ४।१४।१) ॥

(१) उषा प्रत्यक्ष देवता है जो सूर्योदय से पहले आकाश की लाली के रूप में दीखती है ॥

(२) उषा को सुन्दर स्त्रीसे उपमा दीगई है। जैसे स्त्रियां बातों से विशेष प्रेम रखती हैं। बहुत बातें करती हैं और बहुत बातें सुनना चाहती हैं, वैसे ही उषा भी। देवताओं से बातें करने का उत्सुक होने वालों के लिये उषा बहुत योग्य हैं परन्तु हर एक मनुष्य उन से नहीं बात कर सकता इसी लिये।

(३) भक्त पूछता है कि हे उषा इस समय कौन भाग्यवान् पुरुष आप से बातें करने का आनन्द भोग रहा है। जो हम से नहीं बोलतीं आप हमें छोड कर किस अनुरागी पुरुष के पास जाती हैं॥

अधिक प्रेम होने से ही उषा से बातें करना सम्भव हो सकता है॥

उषोदेवता निचृद्गायत्री छन्दः। ८। ७। ८।

वयंहितेअमन्मह्या न्तादापराकात्।

अश्वेनचित्रेअरुषि ॥१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वयम्	वयम्	हम ने
हि	खलु	निश्चय करके
ते	त्वाम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	तुझ को
४ अमन्महि	चिन्तितवन्तः	चिन्तन किया है
आ	आ +	–
४ अन्तात्	आ + अन्तात् आसमीपात्	समीप तक
आ	आ +	–
४ पराकात्	आ + पराकात् आदूरात् (निघं०२।२६)	दूर तक
१ अश्वे	अश्वे + न हे अश्व इवगमन शीले	हे घोडे की न्याईं गमन शील
न	+ न	–
२ चित्रे	हे स्वच्छे (आ० को०)	हे स्वच्छ (रूप-वाली)
१ अरुषि	हे क्रोधरहिते	हे क्रोधरहित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अश्व इव गमन शीले स्वच्छे क्रोध रहिते (उषः) वयमा समापादादूरात्त्वा मेवचिन्तितवन्तः ॥ २१ ॥

भाषार्थः ।

हे घोडे की न्याईं गमनशील, स्वच्छ रूपवाली क्रोध रहित (उषा) हमने समीप तक (और) दूर तक आप का ही चिन्तन किया है ॥ २१ ॥

(१) उत्तर मेरु के समीप अश्वि देवताओं की न्याईं उषा भी बहुत दिनों तक आकाश में चारों ओर घूमती हुई दिखाई देती हैं। इसी लिये उन को अश्व से उपमा दीगई है ॥

(२) उषा देवी स्वच्छ रूप वाली हैं जो रूप आरोग्यवती स्त्रियों का होता है ॥

(३) वह क्रोध रहित हैं। साधारण स्त्रियों की न्याईं क्रोध युक्त नहीं हैं ॥

(४) ऐसी सुन्दर देवी को हम बराबर चिन्तन करते रहे हैं अर्थात जब तक वहसमीप(हमारे क्षितिज पर)पहुंची और जब तक कि सूर्य के उदय होने पर अदृश्य होकर दूर न चली गईं ॥

उषोदेवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

त्वंत्येभिरागहि वाजेभिर्दुहित र्दिवः । अस्मेरयिंनिधारय । २२ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
त्येभिः	तैः	उन से
आ	आ+	–
गहि	आ + गहि आगच्छ	आ
वाजेभिः	बलैस्सह	बलों के साथ
दुहितः	हे पुत्रि	हे पुत्री
दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक की
अस्मे०	अस्मासु	हम में
रयिम्	धनम्	धन को
नि	नि+	–
धारय	नि+धारय नितरां स्थापय	अच्छी प्रकार स्थापन कर

संस्कृतार्थः ।

हे द्युलोकस्य पुत्रि त्वं तैर्बलैस्सहागच्छ (अपि च) अस्मासु धनं नितरां स्थापय ॥ २२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे द्युलोक की पुत्री आप उन बलों के साथ आओ (और) हम में धन को अच्छी प्रकार स्थापन करो ॥ २२ ॥

उषा देवी आकाश की पुत्री हैं। आकाश में रहती हैं। परन्तु भक्त के पास प्रार्थना करने से चली आती हैं । हमारे पास वह देवी बलों के सहित आवें और हममें अच्छी प्रकार से धनों को स्थापन करें जिस से वे फिर न नष्ट होजावें ॥

यह शुनः शेप की देखी हुई अन्तिम ऋचा है । इस के उच्चारण हो चुकने पर उनके सब बन्धन छूट गए !(देखो पृ० ६२१) और उन्होंने राजा हरीश्चन्द्र का यज्ञ समाप्त कराया । फिर किस तरह इनको विश्वामित्र ऋषिने अपना कृत्रिम पुत्र बनाकर इन का नाम देवरात रखा (इसी लिये २४ वें सूक्त को आदि में शुनः शेप को कृत्रिमोवैश्वामित्रो देवरातऋषिः, लिखा है, देखो पृ० ५०८),और अपने सब पुत्रों से ज्येष्ठ बनाकर एक महान उदारता का उदाहरण हमारे लियेछोड गए । यह सब ऐ०ब्रा०पं०७ खं १७ । १८ में विस्तार पूर्वक लिखा है ॥

इतित्रिंशं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ३१ मं० १

अग्निर्देवता आङ्गिरसो हिरण्यस्तूप ऋषिः

जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा । तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ १ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
प्रथमः	आद्यः	आदि
१ अङ्गिराः	अङ्गिराः	अङ्गिरा
१ ऋषिः	ऋषिः	ऋषि
देवः	देवः	देव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवानाम्	देवानाम्	देवताओं का
अभवः	अभवः	हुआ है
शिवः	मङ्गलमयः	मङ्गलरूप
सखा	सखा	मित्र
तव	तव	तेरे
व्रते	व्रते	नियम में
कवयः	मेधाविनः	मेधावी
२ विद्मना-ऽपसः	ज्ञानवत्कर्माणः (विद्मनानि ज्ञानवन्ति अपांसि कर्माणि येषां ते)	ज्ञानयुक्तकर्मों वाले
अजायन्त	अजायन्त	उत्पन्न हुए
मरुतः	मरुतः	मरुत
भ्राजत्ऽऋष्टयः	दीप्यमानायुधाः	प्रकाशमान शस्त्रों वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वमाद्योऽङ्गिरा ऋषिः(आसीः)देवानांमध्ये देवः (त्वमस्माकम्) मङ्गलमयः सखाऽभवः, मेधाविनो ज्ञानवत्कर्माणोदीप्यमानायुधा मरुतस्तव व्रतेऽजायन्त ॥१॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप आदि अङ्गिरा ऋषि (हुए हैं) देवताओं में देवता(आप हमारे) मंगलमय मित्र हुए हैं(और) मेधावी ज्ञान युक्त कर्मोंवाले दीप्यमान शस्त्रों वाले मरुत आप के नियम में उत्पन्न हुए हैं ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतुमें पढ़ा जाता है (आ० श्रौ० ४।१३।७।) और अभिप्लव षडह के तीसरे दिन में और वाजपेय में आग्निमारुत शस्त्र में इस का पाठ है (आ०श्रौ० उ० १।७।२)॥

(१) अङ्गिरा ने सबसे पहिले अग्नि को मथन द्वारा उत्पादन करके मनुष्यों को इसका प्रयोग सिखाया, यह अग्नि के पिता होने से स्वयं अग्नि रूप थे॥

(२) मरुद्गण ज्ञान युक्त कर्म करने वाले हैं। कर्म तभी प्रभाव युक्त होता है जब ज्ञान पूर्वक किया जाय, इस लिये सब कर्म ज्ञान पूर्वक करने चाहियें।

यह मरुद्गण अग्नि के नियम में उत्पन्न हुए हैं। वह नियम यह है कि पृथिवी के जिस स्थल पर सूर्य रूपी अग्नि की किरणें सीधी पड़ती हैं, वह उनसे तप्त होकर उस वायु को जो उस से स्पर्श करती है तपाकर हलका कर देता है। हलकी होने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से वायु ऊपर उठती है और उस की जगह पास के देशों से जहां सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं वा जो किसी और कारण से ठंडे हैं वायु वेग से बहकर आता है। यही वेगयुक्त पवन मरुद्गण हैं। स्थल की अपेक्षा समुद्र का जल कम तप्त होने से समुद्र की ओर से आने वाले मरुत बादलों को भी लाते हैं (देखो पृ० ३८९)। इनके दीप्यमान आयुध बिजली की दमक के रूप में तभी दीख पड़ते हैं॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः १२। १२। १२। १२।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः कवि-
र्देवानां परि भूषसि व्रतम्। विभुर्विश्व-
स्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः
कतिधा चिदायवे॥ २॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
प्रथमः	प्रथमः	प्रथम
अङ्गिरःऽतमः	अङ्गिरश्श्रेष्ठः	अङ्गिराओं में श्रेष्ठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ कविः	कविः	ऋषि
देवानाम्	देवानाम्	देवताओं के
परि	परि +	–
भूषसि	परि + भूषसि शोभयसि (आ०को)	शोभायमान करते हो
१ व्रतम्	व्रतम्	नियम को
२ विऽभुः	व्यापकः	व्यापक
विश्वस्मै	सर्वस्मै	सब के लिये
भुवनाय	लोकाय	लोक के लिये
मेधिरः	मेधावी	बुद्धिमान
३ द्विऽमाता	द्वे मातरौ यस्य	दो माताओं वाला
शयुः	शयानः	शयनकरनेवाला
कतिधा	कतिधा + चित् कतिभिःप्रकारैः	कितने ही प्रकारों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्	+चित्	—
आयवे	मनुष्याय (निघ० २।३)	मनुष्य के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वं प्रथमोऽङ्गिरःश्रेष्ठः कविर्देवानां व्रतं शोभयसि सर्वस्मै लोकाय व्यापको मेधावी द्विमाता (त्वम्)मनुष्याय कतिभिः प्रकारैः शयानः(तिष्ठसि)।२।

भाषार्थः ।

हे अग्नि प्रथम, अङ्गिराओं में श्रेष्ठ (और) ऋषि आप देवताओं के नियम को शोभायमान करते हैं (और) सब लोक के लिये व्यापक, दो माताओं वाले, बुद्धिमान (आप) मनुष्य के लिये कई प्रकार से शयन करने वाले (हैं) ॥ २ ॥

(१) जो देवताओं के नियमों को जानकर उनका आदर करता है वह ऋषि तुल्य है अग्नि यद्यपि स्वयं देवता हैं परन्तु देवताओं के नियमों को आदर करके शोभायमान करते हैं। इस लिये उन के ऋषि होने में क्या सन्देह है ॥

(२) अग्नि के सर्व व्यापक होने से ही सब लोकों की स्थिति है। इस पृथिवी पर भी उसी समय तक जीवों के उत्पन्न होने की सम्भावना है; जबतक इस को सूर्य से किरण रूप में विपुल अग्नि मिलती है और इस के गर्भ की अग्नि जिस का आविर्भाव ज्वाला मुखियों द्वारा होता है, शान्त नहीं होती ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) मनुष्य के उपकार के लिये दो माताओं वाले (अर्थात् अग्निरूप से पृथिवीके गर्भ में रहने वाले और सूर्य्य रूप से द्युलोक के गर्भ में रहने वाले) अग्नि ही इस जगत में अनेक रूप से शयन कर रहे हैं, ब्रह्माण्ड में सारी विभूति अग्निकी ही है ॥

अग्निर्देवता जगती छन्दः १२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव सुक्रतूया विवस्वते । अरेजेतां रोदसी होतृवूर्येऽसघ्नोर्भारमयजो महो वसो ॥ ३ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
प्रथमः	प्रथमः	आदि
१ मातरिश्वने	मातरिश्वने (मातर्याकाशेश्वसितीति)	मातरिश्वा के लिये
२ आविः	प्रकटः	प्रकट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ भव	अभवः (लङर्थेलोट्)	हुआ
सुक्रतुऽया	शोभनकर्मेच्छया	सुन्दर कर्म की इच्छा से
३ विवस्वते	मनुष्याय (निघं०२।३	मनुष्य के लिये
४ अरेजेताम्	कम्पितवत्यौ (नि०३।२१)	कांपती थीं
५ रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	आकाश और पृथिवी
६ होतृऽवूर्ये	होतरि व्रियमाणे	होता के वरे जाने पर
६ असघ्नोः	ऊढवान् (आ०को०)	उठाया
६ भारम्	भारम्	भार को
७ अयजः	इष्टवान्	पूजा की
७ महः	पूज्यान्	पूजने योग्यों को
वसो०	हे निवास हेतो	हे निवास के हेतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने प्रथमस्त्वं शोभनकर्मेच्छया मनुष्यार्थं मातरिश्वने प्रकटोऽभवः होतरि व्रियमाणे द्यावापृथिव्यो कम्पितवत्यौ हे निवासहेतो त्वं भारमूढवान् पूज्यान् (देवांश्च) इष्टवान् ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आदि में होने वाले आप सुन्दर कर्म की इच्छा से मनुष्य के लिये मातरिश्वा को प्रकट हुए। होता के वरे जाने पर द्युलोक और पृथिवी कांपती थीं, हे निवास के हेतु आप ने भार को उठाया (और) पूजने योग्य (देवताओं) की पूजा की ॥ ३ ॥

(१) ऋ० १।१४३।२ में लिखा है कि अग्नि जन्मते ही परम व्योम में मातरिश्वा को प्रगट हुए, इससे मातरिश्वा इस प्रसिद्ध वायु का नाम नहीं होसकता, क्योंकि यह तो पृथिवी के समीप अन्तरिक्ष में है, परम व्योम में नहीं। परम व्योम में एक अन्य प्रज्वलित वायु (gas) है, जिस के सहस्रों पुञ्ज देखे गए हैं, और जिनके चित्र भी उतारे गए हैं, इन्हीं के प्रथम प्रसारण और फिर आकुञ्चनसे आकाश गंगाएं (milky ways) नक्षत्रों के गुच्छे (star clusters) दो तीन वा अधिक जुड़ेहुए युक्ततारे (double, triple or multiple stars) और विभिन्न तारे जो एक २ सौर ब्रह्मांड हैं बनते हैं ॥

(२) सृष्टि रचना में सब से पहले अग्निका प्रादुर्भाव इन्हीं में देखा जाता है, इसलिये यही मातरिश्वा होसकते हैं ।

(३) हमारे ब्रह्मांडकी सृष्टि भी एक ग्रहकी आकृति वाले छोटे से मातरिश्वा (planetary nebula) से हुई है इसी सुन्दर कर्म के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए अग्नि मातरिश्वा को प्रकट हुए कि सूर्य्य और पृथिव्यादि लोक बन कर मनुष्य की उत्पत्ति सम्भव हो॥

(५) सौर ब्रह्माण्ड की रचना देवताओं का एक छोटासा समष्टि यज्ञ है इस यज्ञ में जब पृथिवी को सूर्य से अलग करके वेदि बनाया गया, और अन्तरिक्ष में धातु रस और जलों के सप्त मेघ हवि रूप बनकर तय्यार होगए, तब अग्नि होता वरे गए॥

इस समय पृथिवी पिघली हुई धातु की न्याईं द्रव अवस्था में थी, ऊपर किंचित स्थूल पपड़ी बनती थी और फिर अग्नि समुद्र में डूबजाती थी, स्थूल पृथिवी को ठहरने के लिये कोई सहारा न था, इसीलिये वह कांपती थी, अन्तरिक्ष में भी ऐसी हल चल थी, जैसे सूर्य के समीपस्थ अन्तरिक्ष में इस समय भी है, इस लिये आकाश भी कांपता था॥

(६) अन्त में जब पृथिवी बहुत ठंडी होकर ऊपर से अधिक स्थूल होगई। तो इसकी मोटी पपडी और पर्वत(जो पपडी के सुकड़ने से उत्पन्न हुए थे) इन सब का भार पृथिवी के भीतर रहने वाले अग्नि समुद्र ने सहार लिया। तब धातु रस और जलों के मेघ बरसकर जल और स्थल के बिभाग बने॥

(७) और होता अग्निने देवताओं का जो अबभिन्न २ रूप से स्थिर होगए थे पूजन करके यज्ञ को समाप्त किया॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२।

त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः। श्वात्रेण यत्पि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्यामुच्चयस्सेपर्या त्वापूर्वमनयन्नाप-

रंपुनः ॥ ४ ॥

त्वम्	त्वम्	तू ने
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ मनवे	मनवे	मनु के लिये
१ द्याम्	द्युलोकम्	द्युलोक को
३ अवाशयः	शब्दितवानसि (वाश शब्दे)	गर्जाया है
२ पुरूरवसे	पुरुरवसे	पुरुरव राजा के लिये
सुकृते	शोभनकर्मणे	सुन्दर कर्म वाले के लिये
सुकृत्तरः	अतिशयेन शोभन कर्मा	अति सुन्दर कर्म करने वाला
श्वात्रेण	क्षिप्रतरेण (निघं ४।२)	अति शीघ्रता से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यदा	जब
पित्रोः	मातापितृभ्याम् (पञ्चम्यर्थे षष्ठी)	माता पिता से
मुच्यसे	परि + मुच्यसे मुक्ता भवसि	छूटते हो
परि	परि+	--
आ	आ+	--
त्वा	त्वाम्	तुझ को
४ पूर्वम्	पूर्वम्	पूर्व की ओर
अनयन्	आ + अनयन्, आनयन्ति (लडर्थेलङ्)	लाते हैं
आ	आ (नयन्ति)	लाते हैं
अपरम्	पश्चिमम्	पश्चिम को
पुनः०	पुनः	फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्नेऽतिशयेन शोभनकर्मा त्वं मनवे शोभनकर्मणे पुरूरवसे (च) दिवं शब्दितवानसि यदा मातापितृभ्यां क्षिप्रतरेण परिमुक्तो भवसि (तदानीम्) त्वां पूर्वमानयन्ति पुनः पश्चिममा(नयन्ति)॥ ४॥

भाषार्थः ।

हेअग्नि अति सुन्दरकर्माआपनेमनुके लिये(और) सुन्दर कर्म वाले पुरूरव राजाके लिये आकाश को गर्जाया है जब आप अति शीघ्रता से माता पिता से छूटते हैं (तब) आप को पूर्व की ओर लाते हैं फिर पश्चिम की ओर लाते हैं ॥ ४ ॥

(१) मनु आर्यजातिके प्रथम पुरुषाओंमें एक श्रद्धावान और देव भक्त पुरुष थे (देखो श०ब्रा०१।१।४।१५) यह यज्ञ के प्रथम कर्ताओं में गिने जाते हैं। और इतने प्राचीन हैं कि इधर इनकी पीढ़ी हमारे साथ मिलती है और उधर देवताओंके साथ (देखोऋ०१। १३९।९)॥

(२) पुरूरवा को कथा का ऋ०१०।९५ में और श०ब्रा०११।५।१ में वर्णन है। इन्होंने अश्वत्थ की अधरारणि और शमी की उत्तरारणि से अग्निको मथन करके स्थापन किया था। और इस अग्नि में यज्ञ करने से उन को गन्धर्वयोनि प्राप्त हुई थी (श० ब्रा० ११।५।१।१७)॥

(३) द्युलोक को गर्जाने से यह आशय है कि जैसे आकाश के गर्जन से वर्षा होती है। वैसे ही उन के लिये सब कामनाओं को बरसाया॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) अरणि से मथने पर जब अग्नि प्रकट होती थी तब उसको प्रथम पूर्ववर्ती आहवनीय खरमें स्थापन किया जाता था, और फिर पश्चिमवर्ती गार्हपत्य खरमें। आजकल पहले गार्हपत्य में स्थापन करके उस से उद्धृत अग्नि को आहवनीय खरमें स्थापन करते हैं॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यत-
स्रुचे भवसि श्रवाय्यः । य आहुतिं प-
रि वेदा वषट्कृतिमेकायुरग्रे विश आ-
विवाससि ॥ ५ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
वृषभः	वृषभः	नर
पुष्टिऽवर्धनः	पुष्टेर्वर्धकः	पुष्टि के बढ़ाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ उद्यतऽस्रुचे	उद्यतया स्रुचा युक्ताय	स्रुक् हाथ में लिये हुएके लिए
भवसि	भवसि	है
श्रवाय्यः	श्रवणीयः	सुनने योग्य
यः	यः	जो
आऽहुतिम्	आहुतिम्	आहुति को
परि	परि +	--
वेद	परि + वेद परितो जानाति	अच्छी प्रकार जानता ह
२ वषट्ऽकृतिम्	वषट्कारयुक्ताम्	वषट्कार सहित को
एकऽआयुः	प्रधानपुरुषः (आयुरिति मनुष्य नाम निघं० २।३)	प्रधान पुरुष
अग्रे	प्रथमम्	पहले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विप्रः	(आर्य्य) जनान् (ऋ १।७७।३)	(आर्य्य) लोगों को
ऽऽविवासि	सर्वतःप्रकाशयसि	सब ओर से प्रकाशित करता है

संस्कृतार्थः।

हेअग्ने वृषभः पुष्टिवर्धकस्त्वमुद्यतस्रुचे श्रवणीयो भवसि यो वषट्कारयुक्तामाहुतिं परितो जानाति (सः) प्रधानपुरुषस्त्वं (आर्य) जनान् प्रथमं सर्वतः प्रकाशयसि ॥ ५॥

भाषार्थः।

हेअग्नि पुष्टि के बढ़ाने वाले नर आप स्रुक् हाथ में लिये हुए (भक्त) के लिये सुनने के योग्य होते हैं, जो वषट्कार सहित आहुति को अच्छी प्रकार जानते हैं ऐसे प्रधानपुरुष आप (आर्य) लोगों को पहले सब ओर से प्रकाशित करते हैं ॥ ५॥

(१) जो स्रुक् हाथ में उठाकर अग्निमें हवि डालता है अग्निदेव उसी की सुनाई करते हैं, वही उनको प्रिय है॥

(२) वषट्कार * युक्त आहुति को अच्छी प्रकार जानने वाले अग्नि देव ही हैं। क्योंकि वही देवताओं को जानते हैं और उन को आहुति पहुंचाते हैं। ऐसे अग्निदेव सब से पहले अपने उपासक आर्य लोगों को विद्यादि से प्रकाशित करते हैं। अन्य जातियां उन से शिक्षा पाकर पीछे प्रकाशित हुई हैं॥

* वषट्कार के अर्थ के लिये देखो पृष्ठ ३०७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता जगतीछन्दः॥१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं नरं सक्मन्पिपर्षि विदथे विचर्षणे। यः शूरसाता परितक्म्ये धने दभ्रेभिश्चित्समृता हंसि भूयसः॥६॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ वृजिनऽ-वर्तनिम्	कुटिलमार्गिणम्	कुटिलमार्ग में जाने वाले को
नरम्	नरम्	पुरुष को
सक्मन्	समवेते (षच् समवाये)	गूढ सम्बन्ध होने पर
१ पिपर्षि	पालयसि	पालता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि॒दथे॑	यज्ञे (निघं०३। १७)	यज्ञ में
वि॒ऽच॒र्ष॒णे॒	हे विशेषद्रष्टः	हे विशेष देखने वाले
यः	यः	जो
२ शूर॑ऽसाता	शूरैःसंभजनीये	शूरों से सेवने योग्य में
२ परि॑ऽतक्म्ये	परितःप्राप्तव्ये (तकतिर्गतिकर्मा निघं० ३।१४)	चारों ओर प्राप्त होने योग्य में
२ धने॑	धने	धन में
२ द॒भ्रेभि॑ः	अल्पैः (निघं३।२)	थोडों से
चि॒त्	अपि	भी
सम॑ऽऋता	सङ्गते (सप्तम्याडादेशः)	अवसर होने पर
हंसि॑	घातयसि (अन्तर्भावितण्यर्थः)	मरवाता है
भूयसः	बहून्	बहुतों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने त्वमाद्योऽङ्गिरा ऋषिः(आसीः)देवानांमध्ये देवः (त्वमस्माकम्) मङ्गलमयः सखाऽभवः, मेधाविनो ज्ञानवत्कर्माणोदीप्यमानायुधा मरुतस्तव व्रतेऽजायन्त ॥१॥

भाषार्थः।

हे अग्नि आप आदि अङ्गिरा ऋषि (हुए हैं) देवाताओं में देवता(आप हमारे) मंगलमय मित्र हुए हैं(और) मेधावी ज्ञान युक्त कर्मोंवाले दीप्यमान शस्त्रों वाले मरुत आप के नियम में उत्पन्न हुए हैं ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतुमें पढ़ा जाता है (आ० श्रौ० ४ । १३ । ७ ।) और अभिप्लव षडह के तीसरे दिन में और वाजपेय में आग्निमारुत शस्त्र में इस का पाठ है (आ०श्रौ० उ० १ । ७ । २) ॥

(१) अङ्गिरा ने सबसे पहिले अग्नि को मथन द्वारा उत्पादन करके मनुष्यों को इसका प्रयोग सिखाया, यह अग्नि के पिता होने से स्वयं अग्नि रूप थे॥

(२) मरुद्गण ज्ञान युक्त कर्म करने वाले हैं। कर्म तभी प्रभाव युक्त होता है जब ज्ञान पूर्वक किया जाय, इस लिये सब कर्म ज्ञान पूर्वक करने चाहियें।

यह मरुद्गण अग्नि के नियम में उत्पन्न हुए हैं। वह नियम यह है कि पृथिवी के जिस स्थल पर सूर्य रूपी अग्नि की किरणें सीधी पड़ती है, वह उनसे तप्त होकर उस वायु को जो उस से स्पर्श करती है तपाकर हलका कर देता है। हलकी होने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से वायु ऊपर उठती है और उस की जगह पास के देशों से जहां सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं वा जो किसी और कारण से ठंडे हैं वायु वेग से बहकर आता है। यही वेगयुक्त पवन मरुद्गण हैं। स्थल की अपेक्षा समुद्र का जल कम तप्त होने से समुद्र की ओर से आने वाले मरुत बादलों को भी लाते हैं (देखो पृ० ३८९)। इनके दीप्यमान आयुध बिजली की दमक के रूप में तभी दीख पड़ते हैं॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः १२। १२। १२। १२।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः कविर्देवानां परिभूषसि व्रतम्। विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे॥ २॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
प्रथमः	प्रथमः	प्रथम
अङ्गिरःऽतमः	अङ्गिरश्श्रेष्ठः	अङ्गिराओं में श्रेष्ठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ कविः	कविः	ऋषि
देवानाम्	देवानाम्	देवताओं के
परि	परि +	–
भूषसि	परि + भूषसि शोभयसि (आ०को)	शोभायमान करते हो
१ व्रतम्	व्रतम्	नियम को
२ विऽभुः	व्यापकः	व्यापक
विश्वस्मै	सर्वस्मै	सब के लिये
भुवनाय	लोकाय	लोक के लिये
मेधिरः	मेधावी	बुद्धिमान
३ द्विऽमाता	द्वे मातरौ यस्य	दो माताओं वाला
शयुः	शयानः	शयनकरनेवाला
कतिधा	कतिधा + चित् कतिभिःप्रकारैः	कितने ही प्रकारों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित् आयवे	+ चित् मनुष्याय (निघं० २।३)	– मनुष्य के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वं प्रथमोऽङ्गिरश्श्रेष्ठः कविर्देवानां व्रतं शोभयसि सर्वस्मै लोकाय व्यापको मेधावी द्विमाता (त्वम्)मनुष्याय कतिभिः प्रकारैः शयानः(तिष्ठसि)।२।

भाषार्थः ।

हे अग्नि प्रथम, अङ्गिराओं में श्रेष्ठ (और) ऋषि आप देवताओं के नियम को शोभायमान करते हैं (और)सब लोक के लिये व्यापक, दो माताओं वाले, बुद्धिमान (आप) मनुष्य के लिये कई प्रकार से शयन करने वाले (हैं) ॥ २ ॥

(१) जो देवताओं के नियमों को जानकर उनका आदर करता है वह ऋषि तुल्य है अग्नि यद्यपि स्वयं देवता हैं परन्तु देवताओं के नियमों को आदर करके शोभायमान करते हैं। इस लिये उन के ऋषि होने में क्या सन्देह है ॥

(२) अग्निके सर्व-व्यापक होने से ही सब लोकों की स्थिति है। इस पृथिवी पर भी उसी समय तक जीवों के उत्पन्न होने की सम्भावना है; जबतक इस को सूर्य से किरण रूप में विपुल अग्नि मिलती है और इस के गर्भ की अग्नि जिस का आविर्भाव ज्वाला मुखियों द्वारा होता है, शान्त नहीं होती ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) मनुष्य के उपकार के लिये दो माताओं वाले (अर्थात् अग्निरूप से पृथिवीके गर्भ में रहने वाले और सूर्य्य रूप से द्युलोक के गर्भ में रहने वाले) अग्नि ही इस जगत में अनेक रूप से शयन कर रहे हैं, ब्रह्माण्ड में सारी विभूति अग्निकी ही है ॥

अग्निर्देवता जगती छन्दः १२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव सुक्रतूया विवस्वते । अरेजेतां रोदसी होतृवूर्येऽसघ्नोर्भारमयजो महो वसो ॥ ३ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
प्रथमः	प्रथमः	आदि
१ मातरिश्वने	मातरिश्वने (मातर्याकाशेश्वसितीति)	मातरिश्वा के लिये
२ आविः	प्रकटः	प्रकट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ भव	अभव: (लङर्थेलोट्)	हुआ
सुक्रतुऽया	शोभनकर्मेच्छया	सुन्दर कर्म की इच्छा स
३ विवस्वते	मनुष्याय (निघं०२।३	मनुष्य के लिये
५ अरेजेताम्	कम्पितवत्यौ (नि०३।२१)	कांपती थीं
५ रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	आकाश और पृथिवी
८ होतृऽवूर्ये	होतरि व्रियमाणे	होता के वरे जाने पर
६ असहनोः	ऊढवान् (आ०को०)	उठाया
६ भारम्	भारम्	भार को
७ अयजः	इष्टवान्	पूजा की
७ महः	पूज्यान्	पूजने योग्यों को
वसो०	हे निवास हेतो	हे निवास के हेतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने प्रथमस्त्वं शोभनकर्मेच्छया मनुष्यार्थं मातरिश्वने प्रकटोऽभवः होतरि व्रियमाण द्यावापृथिव्यौ कम्पितवत्यौ हे निवासहेतो त्वं भारमूढवान् पूज्यान् (देवांश्च) इष्टवान् ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आदि में होने वाले आप सुन्दर कर्म की इच्छा से मनुष्य के लिये मातरिश्वा को प्रकट हुए। होता के वरे जाने पर द्युलोक और पृथिवी कांपती थीं, हे निवास के हेतु आप ने भार को उठाया (और) पूजने योग्य (देवताओं) की पूजाकी ॥ ३ ॥

(१) ऋ० १।१४३।२में लिखाहैकि अग्नि जन्मते ही परम व्योम में मातरिश्वा को प्रगट हुए, इससे मातरिश्वा इस प्रसिद्ध वायु का नाम नहीं होसकता, क्योंकि यह तो पृथिवो के समीप अन्तरिक्ष में है, परम व्योम में नहीं। परम व्योम में एक अन्य प्रज्वलित वायु (gas) है, जिस के सहस्रों पुञ्ज देखे गए हैं, और जिनके चित्र भी उतारे गए हैं, इन्हीं के प्रथम प्रसारण और फिर आकुञ्चनसे आकाश गंगाएं (milky ways) नक्षत्रों के गुच्छे (star clusters) दो तीन वा अधिक जुड़ेहुए युक्ततारे (double, triple or multiple stars) और विभिन्न तारे जो एक २ सौर ब्रह्मांड हैं बनते हैं ॥

(२) सृष्टि रचना में सब से पहले अग्निका प्रादुर्भाव इन्हीं में देखा जाता है, इसलिये यही मातरिश्वा होसकते हैं ।

(३) हमारे ब्रह्मांडकी सृष्टि भी एक ग्रहकी आकृति वाले छोटे से मातरिश्वा (planetary nebula) से हुई है इसी सुन्दर कर्म के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए अग्नि मातरिश्वा को प्रकट हुए कि सूर्य्य और पृथिव्यादि लोक बन कर मनुष्य की उत्पत्ति सम्भव हो॥

(४) सौर ब्रह्माण्ड की रचना देवताओं का एक छोटासा समष्टि यज्ञ है इस यज्ञ में जब पृथिवी को सूर्य से अलग करके वेदि बनाया गया, और अन्तरिक्ष में धातु रस और जलों के तप्त मेघ हवि रूप बनकर तय्यार होगए, तब अग्नि होता वरे गए॥

इस समय पृथिवी पिघली हुई धातु की न्याई द्रव अवस्था में थी, ऊपर किंचित स्थूल पपड़ी बनती थी और फिर अग्नि समुद्र में डूबजाती थी, स्थूल पृथिवी को ठहरने के लिये कोई सहारा न था, इसीलिये वह कांपती थी, अन्तरिक्ष में भी ऐसी हल चल थी, जैसे सूर्य के समीपस्थ अन्तरिक्ष में इस समय भी है, इस लिये आकाश भी कांपता था॥

(६) अन्त में जब पृथिवी बहुत ठंडी होकर ऊपर से अधिक स्थूल होगई। तो इसकी मोटी पपडी और पर्वत(जो पपडी के सुकड़ने से उत्पन्न हुए थे) इन सब का भार पृथिवी के भीतर रहने वाले अग्नि समुद्र ने सहार लिया। तब धातु रस ओर जलों के मेघ बरसकर जल और स्थल के विभाग बने॥

(७) और होता अग्निने देवताओं का जो अवभिन्न २ रूप से स्थिर होगए थे पूजन करके यज्ञ को समाप्त किया॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२।

त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः। श्वात्रेण यत्पि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्योर्मुच्चयसेपर्या त्वापूर्वमनयन्नाप-

रंपुनः ॥ ४ ॥

त्वम्	त्वम्	तू ने
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ मनवे	मनवे	मनु के लिये
१ द्याम्	द्युलोकम्	द्युलोक को
३ अवाशयः	शब्दितवानसि (वाश् शब्दे)	गर्जाया है
२ पुरूरवसे	पुरुरवसे	पुरुरव राजा के लिये
सुऽकृते	शोभनकर्मणे	सुन्दर कर्म वाले के लिये
सुकृत्ऽतरः	अतिशयेन शोभन कर्मा	अति सुन्दर कर्म करने वाला
श्वात्रेण	क्षिप्रतरेण (निघं ४।२)	अति शीघ्रता से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यदा	जब
पित्रोः	मातापितृभ्याम् (पञ्चम्यर्थे षष्ठी)	माता पिता से
मुच्यसे	परि + मुच्यसे मुक्ता भवसि	छूटते हो
परि	परि+	--
आ	आ+	--
त्वा	त्वाम्	तुझ को
४ पूर्वम्	पूर्वम्	पूर्व की ओर
अनयन्	आ + अनयन्, आनयन्ति (लडर्थेलङ)	लाते हैं
आ	आ (नयन्ति)	लाते हैं
अपरम्	पश्चिमम्	पश्चिम को
पुनः०	पुनः	फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्नेऽतिशयेन शोभनकर्मा त्वं मनवे शोभन कर्मणे पुरूरवसे (च) दिवं शब्दितवानसि यदा मातापितृभ्यां क्षिप्रतरेण परिमुक्तो भवसि (तदानीम्) त्वां पूर्वमानयन्ति पुनः पश्चिममा(नयन्ति)॥ ४॥

भाषार्थः ।

हेअग्नि अति सुन्दरकर्माआपनेमनुके लिये(और) सुन्दर कर्म वाले पुरूरव राजाके लिये आकाश को गर्जाया है जब आप अति शीघ्रता से माता पिता से छूटते हैं (तब) आप को पूर्व की ओर लाते हैं फिर पश्चिम की ओर लाते हैं ॥ ४ ॥

(१) मनु आर्यजातिके प्रथम पुरुषाओंमें एक श्रद्धावान और देव भक्त पुरुष थे (देखो श०ब्रा०१।१।४।१५) यह यज्ञ के प्रथम कर्ताओं में गिने जाते हैं। और इतने प्राचीन हैं कि इधर इनकी पीढ़ी हमारे साथ मिलती है और उधर देवताओंके साथ (देखोऋ०१। १३९।९)॥

(२) पुरूरवा को कथा का ऋ०१०।९५ में और श०ब्रा०११। ५।१ में वर्णन है। इन्होंने अश्वत्थ की अधरारणि और उसी की उत्तरारणि से अग्निको मथन करके स्थापन किया था। और इस अग्नि में यज्ञ करने से उन को गन्धर्वयोनि प्राप्त हुई थी (श० ब्रा० ११।५।१।१७)॥

(३) द्युलोक को गर्जाने से यह आशय है कि जैसे आकाश के गर्जन से वर्षा होती है। वैसे ही उन के लिये सब कामनाओं को बरसाया।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) अरणि से मथने पर जब अग्नि प्रकट होती थी तब उसको प्रथम पूर्ववर्ती आहवनीय खरमें स्थापन किया जाता था, और फिर पश्चिमवर्ती गार्हपत्य खरमें। आजकल पहले गार्हपत्य में स्थापन करके उस से उद्धृत अग्नि को आहवनीय खरमें स्थापन करते हैं॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतस्रुचे भवसि श्रवाय्यः । य आहुतिं परि वेदा वषट्कृति मेकायुरग्रे विश आविवाससि ॥ ५ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
वृषभः	वृषभः	नर
पुष्टिऽवर्धनः	पुष्टेर्वर्धकः	पुष्टि के बढ़ाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१उद्यतऽस्रुचे	उद्यतया स्रुचा युक्ताय	स्रुक् हाथ में लिये हुएके लिए
भवसि	भवसि	है
श्रवाय्यः	श्रवणीयः	सुनने योग्य
यः	यः	जो
आऽहुतिम्	आहुतिम्	आहुति को
परि	परि +	--
वेद	परि + वेद परितो जानाति	अच्छी प्रकार जानता ह
२वषट्ऽकृतिम्	वषट्कारयुक्ताम्	वषट्कार सहित को
एकऽआयुः	प्रधानपुरुषः (आयुरिति मनुष्य नाम निघं० २।३)	प्रधान पुरुष
अग्रे	प्रथमम्	पहले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वः	(आर्य्य) जनान् (ऋ १।७।३)	(आर्य्य) लोगों को
आऽविवासिस	सर्वतःप्रकाशयसि	सब ओर से प्रकाशित करता है

संस्कृतार्थः।

हेअग्ने वृषभः पुष्टेर्वर्धकस्त्वमुद्यतस्रुचे श्रवणीयो भवसि यो वषट्कारयुक्तामाहुतिं परितो जानाति (सः) प्रधानपुरुषस्त्वं (आर्य) जनान् प्रथमं सर्वतः प्रकाशयसि ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

हेअग्नि पुष्टि के बढ़ाने वाले नर आप स्रुक् हाथ में लिये हुए (भक्त) के लिये सुनने के योग्य होते हैं, जो वषट्कार सहित आहुति को अच्छी प्रकार जानते हैं ऐसे प्रधानपुरुष आप (आर्य) लोगों को पहले सब ओर से प्रकाशित करते हैं ॥ ५ ॥

(१) जो स्रुक् हाथ में उठाकर अग्निमें हवि डालता है अग्निदेव उसी की सुनाई करते हैं, वही उनको प्रिय है ॥

(२) वषट्कार * युक्त आहुति को अच्छी प्रकार जानने वाले अग्नि देव ही हैं। क्योंकि वही देवताओं को जानते हैं और उन को आहुति पहुंचाते हैं। ऐसे अग्निदेव सब से पहले अपने उपासक आर्य लोगों को विद्यादि से प्रकाशित करते हैं। अन्य जातियां उन से शिक्षा पा कर पीछे प्रकाशित हुई हैं ॥

---

* वषट्कार के अर्थ के लिये देखो पृष्ठ ३०७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता जगतीछन्दः॥१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं नरं सक्मन्पिपर्षि विदथे विचर्षणे । यः शूरसाता परितक्म्ये धने दभ्रेभिश्चित्समृता हंसि भूयसः ॥६॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ वृजिनऽ-वर्तनिम्	कुटिलमार्गिणम्	कुटिलमार्ग में जाने वाले को
नरम्	नरम्	पुरुष को
सक्मन्	समवेते (षच् समवाये)	गूढ़ सम्बन्ध होने पर
१ पिपर्षि	पालयसि	पालता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि॒दथे॑	यज्ञे (निघं०३। १७)	यज्ञ में
वि॒ऽच॒र्ष॒णे॒	हे विशेषद्रष्टः	हे विशेष देखने वाले
यः	यः	जो
२ शू॒र॑ऽसाता	शूरैःसंभजनीये	शूरों से सेवने योग्य में
२ परि॑ऽतक्म्ये	परितःप्राप्तव्ये (तकतिर्गतिकर्मा निघं० ३।१४)	चारों ओर प्राप्त होने योग्य में
२ धने॑	धने	धन में
२ द॒भ्रेभिः॑	अल्पैः (निघं३।२)	थोडों से
चि॒त्	अपि	भी
सम्ऽऋ॑ता	सङ्गते (सप्तम्याडादेशः)	अवसर होने पर
हं॑सि	घातयसि (अन्तर्भावितण्यर्थः)	मरवाता है
भूयसः	बहून्	बहुतों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हेविशेषद्रष्टरग्ने त्वं कुटिलमार्गिणं नरम् (अपि) समवेते (सति) यज्ञे पालयसि यस्त्वं शूरैस्सम्भजनीये परितः प्राप्तव्ये धने संगते (सति) अल्पैरपि बहून् घातयसि ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हेविशेष देखने वाले अग्नि आप कुटिल मार्ग गामी पुरुषको (भी) गूढ़ सम्बन्ध होने पर यज्ञ में पालन करते हो जो आप शूरों से सेवने योग्य सब ओर से प्राप्त होने वाले धनके अवसर पर थोडों से भी बहुतों को मरवाते हो ॥ ६ ॥

(१) कुटिल मार्ग पर चलने वाला मनुष्य नाशको प्राप्त होता है। परन्तु अग्नि के साथ गूढ़ सम्बन्ध करलेने से वह उसको यज्ञ में पालन करते हैं। अर्थात् उस को यज्ञ कर्म में प्रवृत्त करके उस की रक्षा करते हैं और वह नाश को नहीं प्राप्त होता॥

(२) जहां शूरवीरों से सेवने योग्य शत्रु के धनको लूटने का अवसर होता है, वहां पर अग्निदेव थोडों से भी बहुतों को मरवा डालते हैं। क्योंकि अग्निके उपासकों के मन बढे हुए होते हैं और वे शत्रु को तुच्छ समझ कर उन पर बिजली की न्याईं गिरते हैं। और थोडे भी बहुतों को मारकर विजय को प्राप्त करते हैं॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आग्नर्देवता जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२॥

त्वंतमग्नेअमृतत्वउत्तमे मर्त्तंद-
धासिश्रवसेदिवेदिवे । यस्तातृषाण
उभयायजन्मने मयःकृणोषिप्रयआ-
चसूरये ॥७॥

त्वम्	त्वम्	तू
तम्	तम्	उसको
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
अमृतऽत्वे	मरणरहिते	मरण रहित में
उत्ऽतमे	उत्तमे	उत्तम में
मर्त्तम्	मनुष्यम्	मनुष्य को
दधासि	धारयसि	धारण करता है
श्रवसे	यशोऽर्थम्	यश के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

दिवेऽदिवे	प्रतिदिनम्	प्रतिदिन
यः	यः	जो
२ ततृषाणः	अतिशयेन तृष्णा युक्तः	अति तृष्णा युक्त
१ उभयाय	उभयाय	दोनों के लिये
२ जन्मने	जातये	जाति के लिये
मयः	सुखम् (निघं० ३।६)	सुख को
कृणोषि	करोषि	तू करता है
प्रयः	अन्नम् (आ०का०)	अन्न को
आ	समन्तात्	पूर्ण रीति से
च	च	और
१ सूरये	स्तोत्रे (निघं० ३।१६)	स्तोता के लिये

संस्कृतार्थः ।

हेअग्ने त्वं तं मनुष्यं प्रतिदिनं यशोऽर्थं मरण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहित उत्तमे (पदे) धारयसि, य उभयस्यै (देवमनुष्य-) जातये ऽतिशयेन तृष्णांयुक्तः (स त्वम्) स्तोत्रे सुखमन्नंच समन्तात् करोषि ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप उस मनुष्य को प्रति दिन यज्ञ के लिये मरण रहित उत्तम (पदवी) में स्थापन करते हैं, जो (देव और मनुष्य) दोनों जाति के लिये अति तृष्णा युक्त है (ऐसे आप) स्तोता को पूर्ण रूप से सुख और अन्न प्रदान करते हैं ॥ ७ ॥

(१) उस मनुष्य से तात्पर्य अग्नि के उपासक से है अग्नि उस को अमर बनाते हैं और, उस का यश प्रति दिन बढ़ता है ॥

(२) अग्निदेव देवजाति और मनुष्य जाति दोनों के लिये अत्यन्त तृष्णा युक्त हैं। इसी लिये वह देव और मनुष्यों के बीच में दूत का काम करते हैं। मनुष्य की दी हुई हवि को देवताओं को पहुंचाते हैं। और देवताओं के दिए हुए प्राण अन्न, धन, इत्यादि दान को मनुष्य तक पहुंचाते हैं ॥

(३) यह प्रार्थना ऋषि अपने लिये करते हैं ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११॥

त्वं नो॑ अग्ने स॒नये॑ धना॑नां य॒शसं॑

का॒रुं कृ॑णुहि॒ स्तवा॑नः। ऋ॒ध्याम॒ क-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मापसानवेन द्वैद्यावापृथिवीप्राव-
तंनः ॥ ८ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
नः	अस्मान्	हम को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
सनये	प्राप्तये	प्राप्ति के लिये
धनानाम्	धनानाम्	धनों की
यशसम्	यशस्विनम् (अर्श आदित्वादच्)	यशस्वी को
कारुम्	स्तोतारम् (निघं० ३।१६)	स्तुति करने वाले को
कृणुहि	कुरु	कर
स्तवानः	स्तूयमानः	स्तुतिकिया हुआ
ऋध्याम	वर्धयेम (अन्तर्भावितण्यर्थः)	बढ़ावें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्म॑	कर्म	कर्म को
अ॒पसा॑	कर्मणा (निघं०२।१)	कर्म से
नवी॑न	नूतनेन	नवीन से
दे॒वैः	देवैस्सह	देवताओंकेसाथ
द्या॒वा॒ पृ॒थि॒वी॒	द्यावापृथिव्यौ (वचनव्यत्ययः)	आकाश और पृथिवी
प्र	प्र +	–
अ॒व॒त॒म्	प्र + अवतं प्रकर्षेण रक्षतम्	खूब रक्षा करें
नः॒	अस्मान्	हम को

संस्कृतार्थः ।

हेअग्ने स्तूयमानस्त्वमस्मान् धनानां प्राप्तये (योग्यान्कुरु) स्तोतारम् (च) यशस्विनं कुरु, वयं नूतनेन कर्मणा (यागादि) कर्म वर्धयेम, देवैस्सह द्यावापृथिव्यौ अस्मान्प्रकर्षेण रक्षतम् ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि स्तुति किये हुए आप हमको धन की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राप्ति के लिये (योग्य बनावें) (और) स्तोता को यश वाला करें। हम नवीन कर्म से (यागादि) कर्म को बढावें। देवताओं के सहित द्यावापृथिवी हमारी खूब रक्षा करें ॥ ८ ॥

मंत्र के पहले पाद में सारी जाति के लिये प्रार्थना है। कि अग्नि देव हम सब को धन की प्राप्ति के लिये योग्य बनावें। और दूसरे पाद में ऋषि अपने लिये यश की प्रार्थना करते हैं। तीसरे पाद में यह प्रार्थना है कि हम नए कर्म से यज्ञादि को बढावें। नए कर्मों द्वारा बढ़ाने से ही हमारे लिये इतना बड़ा कर्मकाण्ड का भण्डार शतपथादि ब्राह्मणों में ऋषि छोड गए हैं जिस से हम इस लोक में चक्रवर्ती राज्य और पर लोक में देव पदवी तक पहुंच सकते हैं।

अग्निर्देवता निचृज्जगतीछन्दः ११।१२।१२।१२॥

त्वंनो॑ अग्ने पि॒त्रोरु॒पस्थ॒ आ दे॒वो दे॒वेष्व॑नवद्य जागृ॑विः। त॒नू॒कृद्बो॑धि॒ प्रम॑तिश्च का॒रवे॒ त्वंक॑ल्याण॒ वसु॒ वि॒श्वमोपि॑षे ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
नः	अस्मान्	हम को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
२ पित्रोः	मातापित्रोः	माता पिता की
२ उपऽस्थे	अङ्के	गोद में
आ	(अवधारणार्थः)	--
देवः	देवः	देवता
देवेषु	देवेषु	देवताओं में
अनवद्य	हे दोषरहित	हे दोष रहित
जागृविः	जागरूकः	जागरणशील
१ तनूऽकृत्	शरीरकारी	शरीर के बनाने वाला
२ बोधि	बुध्यस्व	जानो
२ प्रऽमतिः	अनुग्रहकर्ता (ऋ० १।३१।१४)	अनुग्रह करने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और
१ कारवे	स्तोत्रे	स्तोता के लिये
त्वम्	त्वम्	तू
कल्याण	हे मङ्गलरूप	हे मङ्गल रूप
४ वसु	धनम्	धन को
विश्वम्	सर्वम्	सब को
आ	आ +	--
४ ऊपिषे	आ + ऊपिषे अभित उप्तवानसि	चारों ओर बोया है

संस्कृतार्थः ।

हे दोषरहिताग्ने, देवेषु देवो जागरूकः शरीरकारी मातापित्रोरङ्के (वर्तमानः) त्वमस्मान् बुद्धयस्व स्तोत्रेऽनुग्रहकर्ता च (भव) हेमङ्गलरूप त्वम् (एव) सर्वं धनमभित उप्तवानसि ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

हे दोषरहित अग्नि, देवताओं में देवता, जागरणशील, शरीर के बनानेवाले, माता पिता की गोद में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(विराजमान) आप हमको जानें, और स्तोता के लिये अनुग्रह करने वाले हों, हे मंगलरूप आप ने (ही) सब धन चारों ओर बोया है ॥ ९ ॥

(१) माताके गर्भाशय में अग्नि ही शरीर को बनाते हैं, पक्षी अंडों को अपनी देहको गरमी पहुंचाकर ही शरीर युक्त करते हैं। इस लिये अग्नि तनूकृत् हैं ॥

(२) सब देवताओं के, एवं अग्निके भी माता पिता द्यावा पृथिवी हैं। इन की गोदमें अग्निदेव सूर्य रश्मि रूप में सारे दिन खेलते हैं। ऐसे अग्निदेव हम को जानें। अग्निके साथ जान पहचान होने से ही हम को उनसे धनादिकके मिलनेकी आशा होसकतीहै ॥

(३) यह प्रार्थना ऋषि अपने लिये करते हैं ॥

(४) सब धन कल्याण रूप अग्नि ने ही बोया है ॥ इस पृथिवी की सारी विभूति का कारण सूर्य्य का किरणें, वा भूगर्भ में रहने वाली अग्नि है ॥

आग्नेर्देवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि न स्त्वं वयस्कृत्तव जामयो वयम्। सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
प्रऽमतिः	अनुग्रहकर्ता	अनुग्रह करने वाला
त्वम्	त्वम्	तू
पिता	पिता	पिता
असि	असि	है
नः	अस्माकम्	हमारा
त्वम्	त्वम्	तू
१ वयःऽकृत्	आयुःकर्ता	आयू का कर्ता
तव	तव	तेरे
२ जामयः	बन्धवः	बन्धु
वयम्	वयम्	हम
सम्	सम् (यन्ति) सम्यक्प्राप्नुवन्ति	सम्यक् प्राप्त होते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वा	त्वाम्	तुझ को
रायः	धनानि	धन
शतिनः	शतसंख्याकानि	सैकड़ों
सम्	सम् +	-
सहस्रिणः	सहस्रसंख्याकानि	सहस्रों
१ सुऽवीरम्	शोभनवीरोपेतम्	सुन्दर वीरों से युक्त को
यन्ति	सम् + यन्ति-सम्प्राप्नुवन्ति	सम्यक् प्राप्त होते हैं
व्रतऽपाम्	नियमपालकम्	नियम के पालने वाले को
अदाभ्य	हे अवञ्चनीय	हे न धोखा दिये जाने योग्य

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वमनुग्रहकर्ता (असि) त्वमस्माकं पिताऽसि त्वमायुःकर्ता (असि) वयं तव बन्धवः (स्मः) हे अवञ्चनीय शोभनवीरोपेतं नियमपालकं त्वां शतसंख्याकानि सहस्रसंख्याकानि (च) धनानि सम्प्राप्नुवन्ति ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे अग्नि आप अनुग्रह करने वाले (हैं) आप हमारे पिता हैं आप आयु के कर्ता (हैं) हम आप के बन्धु (हैं) हे न धोखा दिये जाने योग्य सुन्दर वीरों से युक्त (और) नियम के पालने वाले आप को सैंकडों और सहस्रों (धन) सम्यक् प्राप्त होते हैं ॥ १० ॥

(१) अग्नि आयु के करने वाले हैं। अग्नि से रहित लोक में आयु के होने की सम्भावना नहीं हैं ॥

(२) हिरण्य स्तूप ऋषि की न्याईं जो अङ्गिरा गोती हैं वे सभी अग्नि के बन्धु हैं। और अङ्गिरा ऋषि आर्यजाति के प्रथम पुरुषाओं में से हैं, इस लिये अग्निदेव के हम सभी बन्धु हैं ॥

(३) अग्नि जैसे धनसे युक्त हैं वैसे सुन्दर वीरों से भी युक्त हैं हमें धन के साथ उसकी रक्षा करने वाले वीरों को भी देते हैं ॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२।

त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अ-
कृण्वन्नहुषस्य विश्पतिम्। इळा-
मकृण्वन्मनुषस्य शासनीं पितुर्यत्पु
त्रो ममकस्य जायते ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ःप्रथमम्	प्रथमम्	सब से पहला
१ आयुम्	मनुष्यम् (निघं० २।३)	मनुष्य को
आयवे	मनुष्याय	मनुष्य के लिये
देवाः	देवाः	देवताओं ने
अकृण्वन्	कृतवन्तः	किया है
१ नहुषस्य	मनुष्यस्य (निघं० २।३)	मनुष्य के
१ विश्पतिम्	पालकम् (आ०को०)	राजा को
२ इळाम्	इडाम्	इडा को
अकृण्वन्	कृतवन्तः	किया है
मनुषस्य	मनुष्यस्य	मनुष्य के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ शासनीम्	शासनीम्	शिक्षा देने वाली को
२ पितुः	पितुः	पिता के
यत्	यदा	जब
२ पुत्रः	पुत्रः	पुत्र
ममकस्य	मदीयस्य (कुलस्य)	मेरे (कुल) के
२ जायते	अजायत (लङर्थेलट्)	उत्पन्न हुआ

संस्कृतार्थः ।

हेअग्ने त्वां देवा मनुष्य-(हिताय) प्रथमं मनुष्य-(रूपम्) मनुष्यस्य राजानं कृतवन्तः, यदा मदीयस्य (कुलस्य) पितुः पुत्रोऽजायत (तदा देवाः) मनुष्यस्य शासनीमिडां कृतवन्तः ॥११॥

भाषार्थः ।

हेअग्नि आप को देवताओं ने मनुष्य के हित के लिये प्रथम मनुष्य (रूपमें) मनुष्य का राजा बनाया जब मेरे (कुलके) पिता के हां पुत्र उत्पन्न हुआ (तब देवताओंने) मनुष्य को शिक्षा करने वाली इडा को बनाया ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) मनुष्य के प्रथम राजा (मनु!) भी अग्नि के परम भक्त होनेसे अग्निरूप थे मनु अंगिरा, दध्यङ् अथर्वा इत्यादि आर्य जाति के प्रथम पुरुषा ही अग्नि के प्रयोग और उपासना द्वारा मनुष्यों में सभ्यता फैलाने वाले थे। इनसे पहले जो मनुष्य थे वे असभ्य और पशु तुल्य थे॥

(२) जब प्रथम अंगिराने जो इस सूक्त के द्रष्टा हिरण्यस्तूप ऋषिके कुलके पिता थे, काष्ठ से मथन करके अग्नि रूप पुत्र को उत्पन्न किया॥

(४) तभी मनुष्य को शिक्षा करने वाली इडा अर्थात् देवताओं को स्तुतिरूप वाणी प्रगट हुई। यह वाणी (ऋच्, स्तुतौ) ऋचा रूप में ऋषियोंने देखी तभी से शिक्षित और सभ्य मनुष्य सृष्टि का आरम्भ हुआ॥

अग्निर्देवता जगती छन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वं नो॑ अग्ने तव॑ देव पा॒युभि॑र्म॒घोनो॑ रक्ष त॒न्व॑श्च वन्द्य। त्रा॒ता तो॒कस्य॒ तन॑ये॒ गवा॑म॒स्यनि॑मेषं॒ रक्ष॑माण॒स्तव॑ व्र॒ते ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
नः	अस्माकम्	हमारे
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
तव	तव	तेरे
देव	हे देव	देव
पायुऽभिः	पालनैः	रक्षाओं से
१ मघोनः	धनिनः	धनियों को
रक्ष	रक्ष	पालन करो
तन्वः	शरीराणि	शरीरों को
च	च	और
वन्द्य	हे वन्दनीय	हे स्तुति के योग्य
त्राता	रक्षकः	रक्षा करने वाला
तोकस्य	पुत्रस्य	पुत्र का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तनये	सन्तानस्य (षष्ठ्यर्थे सप्तमी)	सन्तान का
गवाम्	गवाम्	गौओं का
असि	भवसि	होते हो
अनिऽमेषम्	अनिमेषम्	बिना पलक झांपने के
रक्षमाणः	पालयन्	पालना करता हुआ
तव	तव	तेरे
व्रते	व्रते	नियम में

संस्कृतार्थः ।

हे वन्दनीयाग्ने हे देव त्वमस्माकं धनिनः शरीराणि च त्वदीयैः पालनैरक्ष, (त्वम्) अनिमेषं तव व्रते पालयन् (सन् अस्माकम्) पुत्रस्य सन्तानस्य गवाम् (च) रक्षको भवसि ॥ १२ ॥

भावार्थः ।

हे स्तुतिके योग्य अग्नि (देव) आप हमारे धनियों को और शरीरों को अपनी रक्षाओं से पालन करें आप बिना पलक झांपने के अपने नियम में पालन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करते हुए हमारे पुत्र, सन्तान और गौओं की रक्षा करते हैं ॥ १२ ॥

(१) अपनी जाति के धनियों की रक्षा के लिये सदा प्रार्थना करनी चाहिये, क्योंकि वे जाति के बल रूप हैं और आपत् काल में जाति को रक्षा करते हैं और जाति की रक्षा बिना स्वधर्म की रक्षा असम्भव है ॥

(२) अग्नि देव बिना पलक झांपे अपने नियम में रखकर हमारी और हमारे पुत्रों को, हमारी सन्तान और हमारी गौओं की रक्षा करते हैं। इसी लिये मह बचे हुए हैं। नहीं तो अन्य पुरानी जातियों की तरह अब तक कभी के नष्ट होजाते ॥

अग्निर्देवता जगती छन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरोऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे। यो रातहव्योऽवृकाय धायसे कीरेश्चिन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम् ॥ १३ ॥

त्वम्	त्वम्	त
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यज्यवे	यजनशीलाय	पूजा शील के लिये
पायुः	पालकः	पालक
अन्तरः	समीपवर्ती	समीप वर्ती
१ अनिषङ्गाय	तूणीररहिताय (ऋ० १०।१०३।३)	तरकश हीन के लिये
चतुःऽअक्षः	चतुर्नेत्रः	चार नेत्रों वाला
इध्यसे	दीप्यसे	तू दीप्यमान है
यः	यः	जो
रातऽहव्यः	दत्तहविष्कः	जिसने हवि दी है
अवृकाय	अहिंसकाय	न हिंसा करने वाले के लिये
धायसे	पोषकाय	पोषण करने वाले के लिये
२ कीरेः	स्तोतुः (निघं ३।१६)	स्तुति करने वाले के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्	अपि	भी
मन्त्रम्	मन्त्रम्	मन्त्र को
मनसा	मनसा	मन से
वनोषि	कामयसे	तू कामना करता है
तम्	तम्	उस को

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वं यजनशीलाय समीपवर्ती पालकः (असि) योऽहिंसकाय (तुभ्यम्) दत्तहविष्कः (वर्तते तस्मै) तूणीररहिताय चतुर्नेत्रः (सन्) दीप्यसे, स्तोतुराप मन्त्रं तम् (च) मनसा कामय से ॥ १३ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप पूजा शील के लिये समीपवर्ती पालक (हैं)। जिसने हिंसा से शून्य (और) पोषण करने वाले आप के लिये हवि दी है और जिसके पास तरकश नहीं है उस के लिये आप चारों आंखें खोले हुए दीप्यमान हैं। आप स्तोता की भी स्तुति को (और) उस को मन से कामना करते हैं ॥ १३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जो अग्नि को हवि देता है, चाहे उसके पास तीरों से भरी हुई तरकश न भी हो तो भी उसको शत्रु से भय नहीं है। क्योंकि अग्निदेव चारों आंखें खोले हुए उसकी चौकसाई करते हैं ॥

(२) जो केवल स्तुति भी करता है उस की स्तुति को और उसको भी अग्निदेव प्यार करते हैं, यह ऋषि का कथन अपने उद्देश्य से है ॥

अग्निर्देवता जगती छन्दः। १२।१२।१२।१२॥

त्वमग्नउरुशंसायवाघते स्पार्हंय-

द्रेक्णःपरमंवनोषितत् । आध्रस्य-

चित्प्रमतिरुच्यसेपिता प्रपाकंशा-

स्सिप्रदिशोविदुष्टरः ॥१४॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
[2] उरुऽशंसाय	उरुस्तोत्र	विस्तीर्ण स्तुति करनेवालेके लिये

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ वाघते	ऋत्विजे निघं(३।१८)	ऋत्विज के लिये
स्पार्हम्	स्पृहणीयम्	इच्छाकरने योग्य
यत्	यत्	जो
२ रेक्णः	धनम् (निघं० २।१०)	धन
परमम्	उत्तमम्	उत्तम
३ वनोषि	कामयसे	तू चाहता है
तत्	तत्	उसको
४ आध्रस्य	दुर्बलस्य (आ०को०)	दुर्बल का
चित्	अपि	भी
प्रऽमतिः	अनुग्रहकर्ता	कृपा करने वाला
उच्यसे	उच्यसे	कहा जाता है
५ पिता	पिता	पिता
प्र	प्र+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ पाकम्	बालिशम् (आ० को)	मूर्ख को
शासि	प्र + शास्सि प्रकर्षेणानुशिष्टं किरोषि	सुशिक्षित करता है
प्र	प्र+(शास्सि) प्रज्ञपयसि	ज्ञान कराता है
६ दिशः	दिशः	दिशाओं को
विदुःऽतरः	अतिशयेनाभिज्ञः	अति विद्वान्

संस्कृतार्थः ।

हेअग्ने यत्स्पृहणीयमुत्तमं धनम् (अस्ति) तत्त्व मुरुस्तोत्रे ऋत्विजे कामयसे (त्वम्) दुर्बलस्याप्यनुग्रह-कर्ता पिता उच्यसे, अतिशयेनाभिज्ञः (त्वम्) बालि-शम् (अपि) प्रकर्षेणानुशिष्टं करोषि (तथा सर्वान् मनुष्यान्) दिशः प्रज्ञपयसि ॥ १४ ॥

भाषार्थः ।

हेअग्नि जो इच्छा करने योग्य उत्तम धन (है) उस को आप विस्तीर्ण स्तुति करने वाले ऋत्विज के लिये चाहते हैं। आप दुर्बल के भी अनुग्रह करने वाले पिता कहे जाते हैं। अति विद्वान आप मूर्ख को (भी)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुशिक्षित कर देते हैं (और सब मनुष्यों को) दिशाओं का ज्ञान कराते हैं ॥ १४ ॥

(१) जो उचित समय २ पर यज्ञ करता है ॥

(२) और विस्तीर्ण स्तुति करता है अर्थात् जो सर्वत्र उत्तम गुणों को ही देखता हुआ गद गद होकर स्तुति शील बन जाता है ॥

(३) उसके लिये अग्निदेव कामना करने योग्य उत्तम धनों को इच्छा करते हैं ॥

(४) योग्यतम की स्थिति (Survival of the fittest) के नियम से दुर्वलमनुष्य इस जगतमें स्वयं वा सन्तान द्वारा जीवित नहीं रह सकता। परन्तु अग्नि की शरण लेने से वह पिता की तरह रक्षा करके उस को इस नियम के पार लंघा देते हैं ॥

(५) मूर्ख पुरुष भो अग्नि की उपासनासे सुशिक्षित बन सकता है ॥

(६) दिशाओं के ज्ञान के बिना मनुष्य का कोई व्यवहार नहीं चल सकता। यह ज्ञान भी उस को सूर्य रूप म अग्नि द्वारा ही प्राप्त होता है ॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः। स्वादुक्षद्मा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योवसृतोस्योनक्त ञ्जीवयाजयजते-
सोपमादिवः ॥ १५ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ प्रयतऽदक्षिणम्	दत्तदक्षिणम्	जिसने दक्षिणा दी है उस को
नरम्	नरम्	नर को
१ वर्मऽइव	कवचमिव	कवच की न्याइ
स्यूतम्	स्यूतम्	सीए हुए को
परि	परि+	—
१ पासि	परि+पासि परि पालयसि	खूब रक्षा करता है
विश्वतः	सर्वतः	चारों ओर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ स्वादुऽक्षद्मा	स्वाद्वन्नः (क्षद्मइति अन्ननाम निघं० २।७)	स्वादु अन्न वाला
यः	यः	जो
वसतौ	गृहे	घर में
स्योनऽकृत्	सुखकारी	सुख देने वाला
२ जीवऽयाजम्	जीवयज्ञम्	जीव यज्ञ को
यजते	यजते	यजन करता है
सः	सः	वह
उपऽमा	उपमा	सदृश
२ दिवः	स्वर्गस्य	स्वर्ग के

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने त्वं दत्तदक्षिणं नरंस्यूतं कवचमिव सर्वतः परिपालयसि यस्स्वाद्वन्नः (सन्स्व) गृहे (सर्वेषाम्) सुखकारी (भूत्वा) जीवयज्ञं यजते सः (अस्मिँल्लोके) स्वर्गस्य उपमा (अस्ति) ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप दक्षिणा देने वाले मनुष्य को सीये हुए कवच की न्याईं चारों ओर से खूब रक्षा करते हैं, जो स्वादु अन्न वाला (अपने) घरमें (सबको) सुख देने वाला जीव यज्ञ करता है वह इस (लोक में) स्वर्ग के सदृश है ॥ १५ ॥

(१) जो देवताओं के लिये यज्ञ करके उस में उदारता पूर्वक दान करता है । उस को अग्नि देव आपत्तियों से ऐसे रक्षा करते हैं, जैसे अच्छी सिली हुई कवच युद्ध में शरीर की रक्षा करती है । जो यह समझ कर दान नहीं करता कि दान करने से धन कम होजायगा और मैं भूख से मरजाऊंगा, उस के लिये वेद भगवान् कहते हैं (देखो ऋ० १०।११७।१) "देवताओं ने केवल भूख को ही मृत्यु का साधन नहीं बनाया है । क्योंकि अघाये को भी मृत्यु अनेक रूप से प्राप्त होती हैं और यह भी हैं कि जो दान देता है उस का धन कम नहीं होता । और जो नहीं देता उस पर कोई दया करने वाला नहीं है " ॥

(२) जो अपने घर में स्वादु अन्न बनाकर सब को सुख देता हुआ जीव यज्ञ करता है । अर्थात् जीवों को भोजन देता है । वह इस लोक में स्वर्ग के तुल्य है। किन जीवों को भोजन और धन देकर पालन करना चाहिये इस के लिये देखो ऋ० १० । ११७ ॥

"आध्राय चकमानाय" (अन्नको) इच्छा करने वाला दुर्बल पुरुष ॥

"रफितायोपजग्मुषे" जो दारिद्र्य से पीड़ित हुआ २ पास आवे ॥

"सेवते पुरा" जिसने पहले सेवा की है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"अन्न कामाय चरते कृशाय" जो कृश हुआ २ अन्न मांगता फिरता है ॥

सख्ये सचाभुवे सचमानाय" जो पुराना साथी और मित्र है और शरण आया है । इत्यादि ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

इमामग्ने शरणिं मीमृषो न इमम-
ध्वानं यमगाम दूरात् । आपिः पिता
प्रमतिः सोम्यानां भृमिरस्यृषिकृन्म
र्त्यानाम् ॥ १६ ॥

इमाम्	इमाम्	इस को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ शरणिम	(आचरण)मार्गम्	(आचरण)मार्गको
मीमृषः	तितिक्षस्व (लोड र्थेलुङ्) (मृष् तितिक्षायाम्)	तू सहन कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्माकम्	हमारे
इमम्	इमम्	इस को
अध्वानम्	मार्गम्	मार्ग को
यम्	यम्	जिस को
अगाम	प्राप्तवन्तः	हम प्राप्त हुए हैं
दूरात्	दूरात्	दूर से
आपिः	बन्धुः	बन्धु
पिता	पिता	पिता
प्रमतिः	अनुग्रहकर्ता	अनुग्रह करने वाला
सोम्यानाम्	सोमार्हाणाम्	सोम के योग्यों का
भृमिः	भ्रामकः	भ्रमण कराने वाला
असि	असि	तू है
ऋषिकृत्	ऋषिकर्ता	ऋषि बनाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मर्त्यानाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों का

संस्कृतार्थः ।

हेअग्नेऽस्माकमिमम् (आचरण) मार्गं तितिक्षस्व यमिमं मार्गं वयं दूरात्प्राप्तवन्तः, (त्वम्) सोमार्हाणाम् (भक्तानाम्) बन्धुः पिताऽनुग्रहकर्ता (चासि, त्वम्) मनुष्याणांभ्रामक ऋषिकर्ता (च) असि ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप हमारे इस आचारण मार्ग को सहन करें जिस इस मार्ग को हम दूर से प्राप्त हुए हैं आप सोमके योग्य (भक्तों) के बन्धु पिता (और) अनुग्रह कर्ता हैं आप मनुष्यों के भ्रामक (और) ऋषि बनाने वाले हैं ॥ १६ ॥

विनयोग—इस मन्त्रसे अनाहिताग्नि ऋत्विज् यजमान का कर्म कराके अपनी गृह्य अग्नि में एक घृत की आहुति देता है (आ० गृ० सू० १।२३।२५)

(१) इस मंत्र में ऐसे आचार के लिये तितिक्षा (सहन) करने के लिये अग्निसे प्रार्थना प्रतीत होती है। जो चिरकालसे हमारे घर में चला आया है और जो आचार यद्यपि निन्द्य नहीं है परन्तु निर्दोष भी नहीं है। आजीविकार्थ प्रायः सभी आचरण इस गणना में आजाते हैं ॥

(२) अग्निदेव मनुष्यों के भ्रामक हैं अपने महान कार्यों के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यन्त्र में आरूढ की तरह सब प्राणियों को भ्रमाते हैं। उनकी प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर सब मनुष्य अपना २ काम करते हैं॥

(३) अग्नि देव ही मनुष्य को ऋषि बनाते हैं। वह जिस कुल में चाहें ऋषि उत्पन्न कर सकते हैं। कवष जिसको दासी पुत्र होने के कारण ऋषियों ने यज्ञ में से निकाल दिया था उस को अग्नि देवने ऋषि बनाया। अजीगर्त जिसने सौ गौओं के बदले में बेटे को अपने हाथ से बध करना स्वीकार कर लिया था उस के कुल में शुनः शेप को अग्नि ने ऋषि बनाया॥

अग्निर्देवता जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२॥

मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो य-

यातिवत्सदनेपूर्ववच्छुचे। अच्छ-

याह्यावहादैव्यंजन मासादयबर्हि

षियक्षिचप्रियम्॥ १७॥

मनुष्वत्	मनोरिव	जैसे मनु के
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
अङ्गिरस्वत्	अङ्गिरसइव	जैसे अङ्गिरा के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अङ्गिरः	हे अङ्गिरः	हे अङ्गिरा
ययातिऽवत्	ययातेरिव	जैसे ययाति के
सदने	यज्ञशालायाम् (आ० को०)	यज्ञशाला में
पूर्वऽवत्	पूर्ववत्	पूर्व की न्याईं
शुचे	हे शुचे	हे पवित्र
अच्छ	अच्छ +	–
याहि	अच्छ+याहि प्राप्नुहि (आ०को)	प्राप्त हूजिए
आ	आ +	–
वह	आ+वह-आनय	ला
दैव्यम्	दैव्यम्	देवसम्बन्धी को
जनम्	जनम्	जन को
आ	आ +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सादय	आ+सादय-उपवेशय	बिठाओ
बर्हिषि	बर्हिषि	कुशा पर
यक्षि	यक्षि	तू पूजन कर
च	च	और
प्रियम्	प्रियं यथा स्यात्तथा	प्यार से

संस्कृतार्थः ।

हेअग्ने हेअङ्गिरःहेशुचे(त्वमस्माकम्)यज्ञशालायां प्राप्नुहि यथा मनोरङ्गिरसो ययातेः (यज्ञ शालायाम) पूर्वम् (प्राप्नोः) दैव्यं जनमानय, बर्हिष्युपवेशय (उपवेशय) च प्रियं यथास्यात्तथा यक्षि ॥ १७॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि हे अङ्गिरा हे पवित्र आप (हमारी) यज्ञ शाला को प्राप्त हूजिये जैसे पूर्वकाल में मनु अङ्गिरा और ययातिकी (यज्ञ शालामें) प्राप्त हुए थे देवता लोगों को लाइये कुशा पर बिठाये (और) प्यार से (उन का) पूजन कीजिये ॥ १७ ॥

मनु अङ्गिरा और ययाति ये सब आर्यजातिके प्राचीनपुरुषाओं में से हैं । उर्वशी और पुरूरवा का पुत्र आयुः, आयुः का पुत्र नहुष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और नहुष का पुत्र ययाति राजा था, ययाति के पांच पुत्र यदु, तुर्वसु द्रुह्युः, अनुः और पुरुः थे, इन सब का नाम मंत्रों में आता है ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११॥

एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्ती-
वायत्ते चकृमा विदावा। उत प्रणेष्य-
भिवस्यो अस्मान्त्सं नः सृज सुम-
त्यावाजवत्या ॥१८॥

एतेन	एतेन	इस से
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ ब्रह्मणा	मन्त्ररूपस्तुत्या	मन्त्ररूप स्तुति से
१ वावृधस्व	अभिवृद्धो भव	बढ़
१ शक्ती	शक्त्या (तृतीयायाः पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्)	शक्ति से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वा	वा	अथवा
यत्	यत्	जो
ते	तुभ्यम्	तेरे लिये
चकृम	कृतवन्तः	हमने किया है
१ विद्मा	ज्ञानेन	ज्ञान से
वा	वा	अथवा
उत	अपिच	और
प्र	प्र +	–
नेषि	प्र + नेषि प्रापय	पहुंचा
अभि	अभिमुखम्	की ओर
वस्यः	वसुमत्तरत्वम्	अतिशय करके धनवत्ता को
अस्मान्	अस्मान्	हम को
सम्	सम् +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्मान्	हम को
सृज	सम् + सृज संयोजय	जोड़
२ सुऽमत्या	सुमत्या	सुमति से
२ वाजऽवत्या	बलवत्या	बलवाली से

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने अनया मंत्ररूपस्तुत्याऽभिवृद्धो भव यत् (वयम् शक्त्या वा ज्ञानेन वा तुभ्यं कृतवन्तः, अपि चास्मान्वसुमत्तरत्वं प्रापय बलवत्या सुमत्या (च) अस्मान् संयोजय ॥ १८ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप इस मन्त्र रूप स्तुति से बढ़िये जो शक्ति से वा ज्ञान से आप के लिये हमने की है और हम को अतिशय करके धनवत्ता को प्राप्त कराइये (तथा) हम को बल वाली सुमति से युक्त कीजिये ॥ १८ ॥

विनियोग-इस मन्त्र से साग्निक ऋत्विज् यजमान का कर्म कराके अपनी दक्षिणग्निमें घृत की एक आहुति देता है. (अ० गृ० सू० १)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२३।२४),साग्निचयन क्रतुओं में भी उपासंभरणीय इष्टिमें ब्रह्मण्वत् अग्नि देवता का यह मन्त्र पुरोनुवाक्या है (आ०श्रौ०सू०४।१।२३) ॥

(१) हमारी शक्तिऔर हमारा ज्ञान अल्प हैं। इन से जो कुछ हम स्तुति कर सकते हैं, वह अग्निदेव के योग्य नहीं है परन्तु हमारी श्रद्धा को जानकर हमारी टूटी फूटी स्तुति को ही अग्नि देव स्वीकार करके वृद्धि को प्राप्त हों। स्तुति से देवता वा मनुष्य का वृद्धि को प्राप्त होना एक नियमहै। (देखो पृ० २१९) ॥

(२) हम बलवाली सुमति (Enorgising and rightthought) से युक्त हों। जो मति हम को दुष्कर कर्म के लिये प्रेरण करे। और जिस का परिणाम सुख कारी हो। मनुष्य निरन्तर (सुमति युक्त) कर्म करने से ही इस लोक में सुख और पर लोक में स्वर्ग को प्राप्त कर सकता है ॥

॥ इत्येकत्रिंशं सूक्तम् ॥

ऋ०मं० १ सू० ३२ मं०१

इन्द्रो देवता आङ्गिरसो हिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः

११।११।११।११।

इन्द्रस्य॒ नु वी॒र्या॑णि॒ प्र वो॑चं॒ यानि॑ च॒कार॑ प्रथ॒मानि॑ व॒ज्री। अह॒न्नहि॒मन्व॒पस्त॑तर्द॒ प्र व॒क्षणा॑ अभिन॒त्पर्व॑तानाम् ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र के
नु	अतः परम् (आ० को०)	यहां से
१ वीर्याणि	पराक्रमयुक्तकर्माणि	पराक्रमों को
प्र	प्र+	--
वोचम्	प्र+वोचम् प्रब्रवीमि (लडर्थे लुङ्)	मैं वर्णन करता हूं
यानि	यानि	जिन का
चकार	चकार	किया है
प्रथमानि	पूर्वाणि	पहलों को
वज्री	वज्री	वज्रधारी ने
अहन्	हतवान्	मारा
१ अहिम्	मेघम् (निघं० १।१०)	मेघ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनु	पश्चात्	पीछे
२ अपः	जलानि	जलों को
२ ततर्द	विसृष्टवान् (आ० का०)	छुड़ाया
प्र	प्र +	–
१ वक्षणाः	नदीपथान् (आ० को०)	नदियों के रस्तों को
अभिनत्	प्र + अभिनत्	फाड़ के निकाला
१ पर्वतानाम्	पर्वतेभ्यः (पञ्चम्यर्थे षष्ठी)	पर्वतों में से

संस्कृतार्थः ।

वज्रीन्द्रः पूर्वाणि यानि पराक्रमयुक्तकर्माणि चकार (तानि) अतः परं प्रब्रवीमि, (स प्रथमम्) मेघं हतवान् पश्चाज्जलानि विसृष्टवान् (ततः) पर्वतेभ्यो नदीपथान्प्राभिनत् ॥ १ ॥

भावार्थः ।

वज्रधारी इन्द्र ने पूर्व में जिन पराक्रम युक्त कर्मों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को किया है(उनको)मैं यहांसे वर्णन करता हूं (प्रथम उन्होंने) मेघ का मारा फिर जलोंको छुडाया (फिर) पर्वतों से नदियों के रस्तों का फाडकर निकाला ॥१॥

विनियोग—यह सूक्त अग्निष्टोम के माध्यन्दिन सवन में निष्केवल्य शस्त्र में पढा जाता है और इसके आठवें मंत्र के आगे इन्द्र की निविद डाली जाती है (आ० श्रौ० सू० ५।१५।२२)

विषुवत् और महाव्रत के निष्केवल्य शस्त्र में भी यह सूक्त पढा जाता है (आ० औ० सू० उ० २।६।१२)

(१) इस सूक्त में हिरण्यस्तूप ऋषि पृथिवी के पूर्व इतिहास को जब जीव सृष्टि नहीं हुई थी परन्तु जिन घटनाओं से जीवों की उत्पत्ति की इस पृथिवी पर सम्भावना हुई वर्णन करते हैं। यह वह समय था जब वायु और जल वर्तमान रूप में इस पृथिवी पर न थे, पृथिवी की पपडी के सुकड़ने से पहाड़ और निम्न प्रदेश बन गए थे, अन्तरिक्ष में पृथिवी के चारों ओर अनेक रस उपरस क्षार और अम्ल की कई कोस मोटी वाष्प थी, जिस से पृथिवी पर महा घोर अन्धेरा छाया हुआ था और सूर्य की किरणों के पृथिवी तक पहुंचने के लिये कोई छिद्र न था,यही रस क्षार और अम्लका मेघ " प्रथमज " अहि वा वृत्रथा,इसी के बरस कर पत्थरों में मिलने से धूलि बनी है जो वृत्रका पर रूप है और जिसके सूक्ष्म कणों पर जलके सूक्ष्म बिन्दुओंके जमनेसे साधारण मेघ बनता है। इस समय देवताओंके लियेएकबहुत कठिनकर्म उपस्थित था प्रजाओंकी उत्पत्ति के लिये जल; वायु और सूर्यकी ज्योति की आवश्यकता थी और इन को वृत्ररो के हुए था । इस अवस्था में इन्द्र ने इस महान् कर्म का भार अकेले अपने ऊपर लेकर वृत्र से युद्ध आरम्भ किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह युद्ध बहुत काल तक रहा और अन्त में इन्द्र ने वृत्र को मार कर जल वायु और ज्योति रूपी गौओं को जीता इस युद्ध के महत्व का विचार हमारे चित्त में आना कठिन है इसी के प्रताप से

(२) पृथिवी पर इतना जल बरसा कि जिससे पृथिवी तल के १४,२०,००,००० वर्ग मील में इस समय भी कोसों गहरा जल समुद्र रूपमें पाया जाता है और जो सैकडों सहस्रों करोड वर्ष तकजीवोंकी उत्पत्ति और स्थिति के लिये पर्याप्त है।

(३) समुद्र का जल वृत्र की लोथ के गिरने से (अनेक रस उपरस और क्षारकी बाष्पके जमने और समुद्रके जलमें मिलने से) खारी होगया था इसलिये मीठे जल के लिये इन्द्र ने पर्वतों की छातियां फाडकर नदियों का मार्ग बनाया जिनमें सूर्य भगवान समुद्र के खारी जल को किरणों द्वारा भपके में खेंचकर और प्रजा के हित के लिये मीठा बनाकर बहाते रहते हैं॥ मंत्र के अन्तिम पाद का यह भी अर्थ हो सकता है कि(पर्वतानां) पर्वतों की(वक्षणाः, वक्षांसि) छातियों को (प्राभिनत्) फाडा।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष। वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अह॑न्	हतवान्	मारा
अहि॑म्	मेघम्	मेघ को
पर्व॑ते	पर्वते	पर्वत में
शि॒श्रि॒या॒णम्	आश्रितम्	टिके हुए को
त्वष्टा॑	त्वष्टा	त्वष्टा ने
अ॒स्मै॒	अस्मै	इस के लिये
वज्र॑म्	वज्रम्	वज्र को
स्व॒र्य॑म्	शब्दनीयम्	शब्द करने योग्य को
त॒त॒क्ष॒	तनूकृतवान्	पैनाया
वा॒श्रा॑ऽइ॑व	हंभारवोपेताइव	रांभती हुइयों की न्याईं
धे॒नवः॑	धेनवः	गौएं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्यन्दमानाः	प्रस्रवन्त्यः	बहते हुए
अञ्जः	ऋजुगत्या (तृतीया यालुक्)	सीधे
समुद्रम्	समुद्रम्	समुद्र को
अव	अव +	—
जग्मुः	अव+जग्मुः नीचैःप्राप्ताः	नीचे नीचे चले गए
आपः	आपः	जल

संस्कृतार्थः ।

त्वष्टाऽस्मै (इन्द्राय) शब्दनीयं वज्रं तनूकृतवान् (स तेन) पर्वत आश्रितं मेघं हतवान् (ततः) प्रस्रवन्त्य आपो हंभारवोपेता धेनव इव ऋजुगत्या समुद्रं नीचैः प्राप्ताः ॥२॥

भाषार्थः ।

त्वष्टा ने इस (इन्द्र) के लिये शब्द करने योग्य वज्र को पैनाया जिस से (उस ने) पर्वत में टिके हुए मेघ को मारा ऐसा करने से बहते हुए जल रांभती हुई गौओं की न्याईं सीधे समुद्र को नीचे२ चले गए॥२॥

साधारण वर्षा का मेघ पृथिवी से दो अढाई मील से अधिक ऊंचा नहीं होता, 'प्रथमज' मेघ भारी होने से और भी अधिक समीप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था इसलिये पर्वत में टिका हुआ भान होता था। साधारण मेघ के सूक्ष्मजल कणों को धूलि से पृथक् करके वर्षा के योग्य बिन्दुओं के बनाने में विद्युत कारण है, यही विद्युत इन्द्र का गर्जने वाला वज्र है, इसी अस्त्र से इन्द्र ने प्रथमज वृत्र को मार कर जलों को छुडाया और वह बरसकर समुद्ररूपमें पृथिवी पर स्थिर हुए।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः ११।११।११।११

वृषायमाणोऽवृणीतसोमं त्रिकद्रुके-
ष्वपिबत्सुतस्य। आसायकंमघवा-
दत्तवज्रमहन्नेनंप्रथमजामहीनाम् ३

वृषऽयमाणः	वृषइवाचरन्	बैल की न्याईं आचरण करते हुए ने
अवृणीत	वृतवान्	वरा
सोमम्	सोमम्	सोम को
त्रिऽकद्रुकेषु	(ज्योतिर्गौरायु र्नामसु) त्र्यहेषु	त्र्यहों में
अपिबत्	पीतवान्	पान किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुतस्य	अभिषुतम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	निष्पीडन किये हुए को
आ	आ+	–
सायकम्	बाण (रूपम्)	बाण (रूपी) को
मघऽवा	धनवान् (इन्द्रः)	धनवाले (इन्द्र) ने
अदत्त	आ+अदत्त गृही॰ तवान्	ग्रहण किया
वज्रम्	वज्रम्	वज्र को
अहन्	हतवान्	मारा
एनम्	एनम्	इस को
प्रथमऽजाम्	प्रथमोत्पन्नम्	पहिले उत्पन्न हुए को
अहीनाम्	मेघानाम् (मध्ये)	मेघोंके (मध्यमें)

संस्कृतार्थः।

वृषइवाचरन् (इन्द्रः) सोमं वृतवान् (वृत्वाच) त्र्यहेष्वभिषुतम् (सोमम्) पीतवान् (तदा) धनवान् (इन्द्रः) बाणरूपम् वज्रं गृहीतवान् (गृहीत्वा च) मेघानाम् (मध्ये) प्रथमोत्पन्नमेनं (अहिम्) हतवान् ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

बैल की न्याईं आचरण करते हुए (इन्द्र ने) सोम को वरा (और) त्र्यहों में निष्पीडन किये हुए (सोम) को पान किया (फिर) धन वाले (इन्द्र) ने बाण (रूपी) वज्र को ग्रहण किया (और) मेघों में सब से पहले उत्पन्न हुए इस (मेघ) को मारा ॥ ३ ॥

(१) ज्योतिष्टोम गोष्टोम और आयुष्टोम ये तीनों याग अग्निष्टोम की विकृति हैं और सत्र में एक २ दिन ये याग किये जाते हैं इन तीनों दिनों को मिलाकर त्र्यह वा त्रिकद्रुक कहते हैं द्वादशाह में तीन त्र्यह और गवामयनादि सत्रों में अनेक षडह (जो दो त्र्यहों को इस प्रकार मिलाने से बनते हैं ज्योतिः० गोः० आयुः० आयुः० गोः० ज्योतिः०) होते हैं।

देवताओं का निष्पीडन किया हुआ सोम चन्द्रमा है जिसको उन्होंने इस कथा से पूर्वकालमें पृथिवी से खेंचकर निकाला था और जिससे उत्पन्न हुए पृथिवी के क्षत भागको इन्द्र ने इस युद्धमें जलों से पूर्ण करके समुद्र बनाया। चन्द्रमा का विद्युत पर प्रभाव उस के नाक्षत्र भगण काल (२७.३२ दिन) और विद्युत वृद्धि के काल में सम्बन्ध देखे जाने से निरूपण किया गया है, इसीलिये ऋषि कहते हैं कि चन्द्रमा को इन्द्र ने बहुत त्र्यहों में पान किया, फिर विद्युत रूपी वज्र को धारण करके सब से पहिले उत्पन्न हुए इस वृत्र को मारा

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

यदि॒न्द्राह॑न्प्रथम॒जामही॑ना॒ मान्मा॒-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः । आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीत्नाशत्रुं न किलाविवित्से ॥ ४ ॥

यत्	यदा	जब
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
अहन्	हतवान्	मारा
प्रथमऽजाम्	प्रथमोत्पन्नम्	पहले उत्पन्न हुए को
अहीनाम्	मेघानां (मध्ये)	मेघों के (मध्य में)
आत्	अनन्तरम्	पीछे
मायिनाम्	मायोपेतानाम्	छल करने वालों की
अमिनाः	प्र + अमिनाः प्रकर्षेण नाशितवान् (मीञ् हिंसायाम्)	अत्यन्त नाश किया
प्र	प्र +	—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत	च	और
मायाः	मायाः	माया को
आत्	अनन्तरम्	पीछे
सूर्यम्	सूर्यम्	सूर्य को
जनयन्	प्रादुर्भावं कुर्वन्	प्रकट करता हुआ
द्याम्	आकाशम्	आकाश को
उषसम्	उषसम्	उषा को
तादीत्ना	तदानीम्	तब
शत्रुम्	शत्रुम्	शत्रु को
न	न	नहीं
किल	खलु	निश्चय करके
विवित्से	लब्धवान् विद्लृ-लाभे	पाया

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र यदा त्वं मेघानां(मध्ये)प्रथमोत्पन्नम्(मेघम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हतवान् अनन्तरं मायोपेतानां मायाः प्रकर्षेण नाशितवान् अनन्तरं सूर्यमाकाशमुषसम् (च) प्रकटयन् (अस्थात्) तदानीं (त्वम्) शत्रुं न लब्धवान् खलु ॥४॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र जब आप ने मेघोंके (मध्यमें) पहले उत्पन्न हुए (मेघ को) मारा और छल करने वालों की माया को अत्यन्त नाश किया, फिर (आप) सूर्य आकाश (और) उषा को प्रकट करते हुए (ठहरे) तब आप को कोई भी शत्रु नहीं मिला ॥ ४ ॥

जब इन्द्र ने प्रथम होनेवाले मेघको मारकर,नाना रूप से पृथिवी को आच्छादन करने वाले अन्य वृत्रों की माया को नष्ट किया और सूर्य,आकाश और उषा को पृथिवी के लिये प्रकट कर दिया, (अब तक पृथिवी पर से इन देवताओं के दर्शन नहीं होते थे,इन्द्र ने ही प्रथम वार इनको प्रकट करके पृथिवी के लिये उत्पन्न किया)तबइन्द्र के सामने कोई शत्रु नहीं आया ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः । ११।११।११।११।

अहन्वृत्रंवृत्रतरंव्यंस मिन्द्रोवज्रेणम-

हतावधेन । स्कन्धांसीवकुलिशेना-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवृक्णा ऽहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ।५

अहन्	हतवान्	मारा
वृत्रम्	मेघम् (निघं०१।१०)	मेघ को
वृत्रऽतरम्	आच्छादकतरम् (वृञ् आच्छादने)	बहुत आच्छादन करने वाले को
विऽअंसम्	विगतांसं यथा स्यात्तथा	काटी हुई भुजाओं की न्याईं
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
वज्रेण	वज्रेण	वज्र से
महता	महता	बड़े से
वधेन	वधेन	वध से
स्कन्धांसि ऽइव	(वृक्ष) स्कन्धांसीव	(वृक्ष के) तनों की न्याईं
कुलिशेन	कुठारेण	कहाड़े से
विऽवृक्णा	छिन्नानि (शेर्लोपः)	काटकर अलग किए हुओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहिः	मेघः	मेघ
शयते	शयितवान् (लुङर्थे लट्)	सोया
उपऽपृक्	सामीप्येन संपृक्तः	समीप मिला हुआ
पृथिव्याः	पृथिव्याः	पृथिवी के

संस्कृतार्थः ।

इन्द्र आच्छादकतरं मेघं वज्र–(सम्पादितेन) महता वधेन, कुठारेण विच्छिन्नानि(वृक्ष)स्कन्धांसीव, विगतांसं हतवान् (तदा सः) वृत्रः पृथिव्याः सामीप्येन संपृक्तः शयितवान् ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

इन्द्र ने बहुत आच्छादन करने वाले मेघ को वज्र (सम्पादित) महान वध से, कुल्हाडे से काटे हुए (बृक्ष) के तनों की न्याईं, भुजा काटकर मार (गिराया)। (तब वह) मेघ पृथिवी के साथ लगकर सोगया ॥ ५ ॥

जब इस घोर अन्धकार करनेवाले असाधारण मेघ को इन्द्रने मार कर(द्रवरूप में जमाकर)पृथिवी पर गिरा दिया तो वह ऐसे गिर पडा जैसे तना कटा हुआ वृक्ष गिरता है । अभी वृत्रके प्राण नहीं निकले थे क्योंकि पृथिवीके तप्त होनेके कारण वृत्र के द्रव रूप में से वाष्प निकल कर फिर पृथिवीके समीप अन्धकार छा गया था, इसी लिये ऋषि कहते हैं (देखो अगला मंत्र)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता त्रिष्टुपछन्दः । ११।११।११।११।

अयोद्धेवदुर्मद आहिजुह्वे महावीरंतु विबाधमृजीषम् । नातारीदस्यसमृतिंवधानां संरुजानाःपिपिषइन्द्रशत्रुः ॥ ६ ॥

अयोद्धाऽइव	योद्धृरहित इव	जिसके सामने योधा नहीं है उसकी न्याईं
दुःऽमदः	दुष्टमदोपेतः	दुष्टमद वाले ने
आ	आ+	--
हि	खलु	निश्चय करके
जुह्वे	आ+जुह्वे आहूतवान्	बुलाया
महाऽवीरम्	महावीरम्	बड़ेबीर को
तुविऽबाधम्	बहूनां बाधकम्	बहुतों के मारने वाले को
ऋजीषम्	वेगवन्तम् (ऋजगतौ)	वेगवाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	न	न
अतारीत्	अतारीत्	तरा
अस्य	अस्य	इसके
सम्ऽऋतिम्	सम्पातम्	बौछाड़ को
वधानाम्	प्रहाराणाम् (आ० कौ०)	प्रहारों के
सम्	सम्+	--
रुजानाः	नदीः (निघं०१।१३)	नदियों को
पिपिषे	सम्+पिपिषे सम्यक् पिष्टवान्	पीस डाला
इन्द्रऽशत्रुः	इन्द्रशत्रुः	इन्द्र के शत्रु ने

संस्कृतार्थः।

दुष्टमदोपेतः (मेघः) योद्धृरहित इव महावीरं बहूनां बाधकम् वेगवन्तम् (इन्द्रम्) आहूतवान् खलु (परन्तु) अस्य प्रहाराणां सम्पातं नातारीत् (तदा सः) इन्द्रशत्रुर्नदीः सम्यक् पिष्टवान् ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

दुष्ट मद वाले (मेघ) ने बडे बीर, बहुतों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वध करने वाले और वेग वाले (इन्द्र) को इस प्रकार बुलाया जैसे उस के सामने कोई शत्रु न हो, (परन्तु) उसके प्रहारों को वौछाड को नहीं सहसका (फिर इस) इन्द्र के शत्रु ने नदियों को पीस डाला ॥ ६ ॥

पृथिवी में पड़ा हुआ और वाष्प द्वारा धुन्ध को फैलाता हुआ दुर्मद वृत्र फिर युद्ध के लिये इन्द्र को बुलाने लगा, मानों उसके बुलाने से अब इन्द्र नहीं आएंगे परन्तु इन्द्र ने जल वर्षा रूपी वधों की बौछाड से उसको निर्जीव कर दिया और वह फिर ऊपर की ओर कुछ चेष्टा नहीं कर सका। तब वृत्र जलों के साथ बहकर नदियों में प्राप्त होकर अपने क्षार रस से नदियों के पथरीले मार्गों को पीस कर चूर्ण करने लगा (पूर्व में पृथिवी के ऊपर मिट्टी नहीं थी केवल पत्थर थे इनको वृत्रने ही चूर्ण करके मिट्टी बनाया यही मिट्टी रज रूप में वृत्र होकर अब भी आकाश के जलों को घेर कर मेघ बनाती है)।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

अपादहस्तोअपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधिसानौजघान । वृष्णोवध्रिः प्रतिमानंबुभूषन्पुरुत्रावत्रोअशयद्व्यस्तः ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपात्	पादरहितः	पाओं रहित
अहस्तः	हस्तरहितः	हाथ रहित
अपृतन्यत्	युद्धमैच्छत्	युद्ध की इच्छा की
इन्द्रम्	इन्द्रम् (उद्दिश्य)	इन्द्र से
आ	आ+	–
अस्य	अस्य	इस के
वज्रम्	वज्रम्	वज्र को
अधि	उपरि	ऊपर
सानौ	(सानुसदृशेप्रौढे) स्कन्धे	(पर्वतकेशृङ्ग सदृशबड़े)कन्धेपर
जघान	आ + जघान प्रहृतवान्	मारा
वृष्णः	वीर्यवतः	वीर्यवाले की
वध्रिः	नपुंसकः	नपुंसक
प्रतिऽमानम्	सादृश्यम्	सदृशता को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुभूषन्	प्राप्तुमिच्छन्	प्राप्त होने की इच्छा करता हुआ
पुरुत्रा	बहुषु(अवयवेषु)	बहुत(अंगों) में
वृत्रः	वृत्रः	वृत्र
अशयत्	शयितवान्	सोया
विऽअस्तः	विश्लिष्टः(आ०को०)	छिन्न भिन्न हुआ

संस्कृतार्थः ।

पादरहितो हस्तरहितः (वृत्रः) इन्द्रम् (उद्दिश्य) युद्धमैच्छत् (इन्द्रः) अस्य स्कन्धोपरि वज्रं प्रहृतवान् (तदा) नपुंसको वृत्रो वीर्यवतस्सादृश्यं प्राप्तुमिच्छन् बहुषु (अवयवेषु) विश्लिष्टः शयितवान् ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

पाओं रहित (और) हाथ रहित (वृत्र ने) इन्द्र से युद्ध की इच्छा की (इन्द्रने) इस के कन्धे पर वज्र मारा (तब) नपुंसक वृत्र वीर्यवान की बराबरी चाहता हुआ बहुत अंगों में छिन्न भिन्न हुआ सोया ॥ ७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्र की चेष्टाएं वीरता का आदर्श हैं, वीर पुरुष किसी अवस्था में भी अपने को पराजित नहीं समझता, और यही बात वृत्र में देखी जाती है। परन्तु इन्द्रके वीर्य मदसे उन्मत्त हुए ऋषि वृत्र जैसे वीर को भी नपुंसक बतलाते हैं।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः ।१११।१११।१११।

नदंनभिन्नममुयाशयानं मनोरुहाणाअतियन्त्यापः। याश्चिद्वृत्रो महिनापर्यतिष्ठ त्तासामहिः पत्सुतःशीर्बभूव॥८॥

नदम्	नदम्	नद की
न	इव	न्याईं
भिन्नम्	भिन्नम्	टूटे हुएको
अमुया	अमुष्याम् (सप्तम्यर्थेतृतीया)	इस में
शयानम्	शयानम्	सोते हुए को
मनः	मनः	मन को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुहाणाः	वर्धयन्त्यः	बढ़ाते हुए
अति	अति+	–
यन्ति	अति + यन्ति अतिक्रम्य गच्छन्ति	उल्लाङ्घ कर जाते हैं
आपः	आपः	जल
याः	याः+चित् या एव	जिन को भी
चित्	चित् +	--
वृत्रः	वृत्रः	वृत्र
महिना	महिम्ना	महिमा से
परिऽअतिष्ठत्	परिवृत्य स्थितवान	रोक कर स्थित था
तासाम्	तासाम	उन के
अहिः	वृत्रः	वृत्र
पत्सुतःऽशीः	पादस्याधः शयानः	पाओं के नीचे सोया हुआ
बभूव	बभूव	हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अस्युष्याम् (पृथिव्याम्) शयानम् (वृत्रम्) मनो वर्धयन्त्य आपो भिन्नं नदमिवातिक्रम्य गच्छन्ति, या एव (अपः) वृत्रो महिम्ना परिवृत्य स्थितवानासीत् (इदानीम्) तासां पादस्याधः शयानो बभूव ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

मन को बढ़ाते हुए जल इस (पृथिवी) में सोए हुए (वृत्र) को नद की न्याईं उल्लांघ कर जाते हैं, जिन को वृत्र (पहले अपनी) महिमा से रोक कर ठहरा हुआ था (अब) उनके पाओं के नीचे सोया ॥८॥

प्रथमजवृत्र पृथिवी पर गिरने से पत्थरोंके साथ मिलकर उन को रेत मिट्टी कल्लर इत्यादि रूप में परिवर्तन करता हुआ उन्हीं में समागया और जल जो किसी समयमें उसके वश में थे अब मन बढ़ा कर उसके ऊपर से चलने लगे जैसे वर्षा ऋतु में कहीं २ से कूलों को तोड कर नदी का जल मैदान पर चलता है ।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः।११।११।११।११।

नीचावया अभवद्वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार । उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्दानुः शये सहवत्सा न धेनुः ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीचाऽवयाः	नीचं ऊनं वयो यौवन यस्याःसा	कम यौवन वाली
अभवत्	अभवत्	हो गई
वृत्रऽपुत्रा	वृत्रः पुत्रोयस्याः सा (वृत्रमाता)	वृत्र की माता
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
अस्याः	अस्याः	इस के
अव	अव+	—
वधः	वधम् (द्वितीयार्थेप्रथमा)	वध को
जभार	अव+जभार अपहृतवान् (आ०को०)	निवृत्त किया
उत्ऽतरा	उपरि (स्थिता)	ऊपर (स्थित)
सूः	माता	माता
अधरः	अधः	नीचे स्थित
पुत्रः	पुत्रः	पुत्र
आसीत्	आसीत्	था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दानुः	दानवी	दानवी ने
शये	शयनं कृतवती	शयन किया
सहऽवत्सा	सह वत्सा	बछड़े के साथ
न	इव	न्याईं
धेनुः	धेनुः	गौ

संस्कृतार्थः ।

वृत्रमाता न्यूनयौवना ऽभवत् इन्द्रोऽस्यावधमपहृतवान्(तदा) माता उपरि पुत्रोऽध आसीत्,दानवी सहवत्साधेनुरिव शयनं कृतवती ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

वृत्रकी माता न्यून यौवन वाली हो गई, इन्द्र ने उस के वध को निवृत्त किया (उस समय) माता ऊपर (और) पुत्र नीचे था, दानवी ने बछडे के साथ (लेटी हुई) गौ की न्याईं शयन किया ॥ ९ ॥

दानवी वृत्र की माता पृथिवी है क्योंकि उसी ने इसको पूर्व काल में उत्पन्न किया था उसी के उदर में से अनेक रस, क्षार और जल के परमाणुओं ने वाष्प को अवस्था में निकल कर उसको घेर रखा था ।

जब वृत्र मारा गया तभी से पृथिवी की यौवनावस्था का ह्रास आरम्भ होगया अब पहले जैसी यौवन की गरमी नहीं रही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्र के पृथिवी के भीतर घुस जाने से माता ऊपर थी और बछड़ा नीचे। इस अवस्था में इन्द्र भी प्रहार से निवृत्त हुए अर्थात् विद्युत का प्रचण्ड वेग भी शान्त हुआ।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानांमध्येनिहितंशरीरम् । वृत्रस्य निण्यंविचरन्त्यापो दीर्घंतमआशय दिन्द्रशत्रुः ॥१०॥

अतिष्ठन्तीनाम्	अस्थावराणाम्	न ठहरने वालों के
अनिऽवेशनानाम्	निवेशनरहितानाम्	विश्राम न लेने वालों के
काष्ठानाम्	अपाम् (भा० की०)	जलों के
मध्ये	मध्ये	बीच में
निऽहितम्	निपतितम्	पड़े हुए को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरीरम्	शरीरम्	शरीर को
वृत्रस्य	वृत्रस्य	वृत्र के
निण्यम्	निर्णामम् (निरु०२।१६)	नाम रहित को
वि	वि +	--
चरन्ति	वि+चरन्ति विजानन्ति (निरु०२।१६)	जानते हैं
आपः	आपः	जल
दीर्घम्	दीर्घे (सप्तम्यर्थे द्वितीया)	दीर्घ में
तमः	तमसि (सप्तम्यर्थे द्वितीया)	अंधेरे में
आ	आ+	–
अशयत्	आ+अशयत्प्रगाढं शायितवान्	गहरी नींद में सोया
इन्द्रशत्रुः	इन्द्र शत्रुः	इन्द्र का शत्रु

संस्कृतार्थः ।

अस्थावराणां निवेशनरहितानां जलानां मध्ये निर्णामं निपतितं वृत्रस्य शरीरमापो विजानन्ति वृत्रो दीर्घे तमसि प्रगाढं शयितवान् ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भावार्थः।

स्थितिरहित और विश्रान न लेने वाले जलों के बीच में पडे हुए नाम रहित वृत्र के शरीर का जल जानते हैं, वृत्र दीर्घ अंधेरे में गहरी नींद में सोया ॥१०॥

प्रथमज वृत्र का शरीर बहुत तो समुद्र के जलों में मिल गया और उसको क्षार बनादिया शेष पृथिवी के नीचे घोर अन्धेरे में जलों के बीच में जा मिला, पृथिवी के बीच में रिस कर जाने से बहुत क्षार पृथिवी में ही रह गया, इस लिये कूओं के जल में क्षार कम देखा जाता है इसके अनन्तर प्रथमजवृत्र का नाम निशान मिट गया और अब क्षार जलों से ही उसका ज्ञान होता है।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठ न्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः। अपां बिलमपिहितं यदासी द्वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार ॥११॥

दासऽपत्नीः	दासो वृत्रोऽधिपतिर्यासाम् (दासो दस्यतेरुपक्षम् निरु० २।१७)	जिनका वृत्र स्वामी है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहिऽगोपाः	अहिर्वृत्रो गोपा रक्षको यासाम्	जो वृत्र से रक्षा की गई हैं
अतिष्ठन्	अतिष्ठन्	ठहरीं
निऽरुद्धाः	निरुद्धाः	रुकी हुईं
आपः	आपः	जल
पणिनाऽइव	वणिजेव(निरु०२।१७)	बनिए की न्याईं
गावः	गावः	गौएं
अपाम्	अपाम्	जलों का
बिलम्	बिलम्	बिल
अपिऽहितम्	निरुद्धम्	रुका हुआ
यत्	यत्	जो
आसीत्	आसीत्	था
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जघन्वान्	जघन्वान्(इन्द्रः)	मारने वाले (इन्द्र) ने
अप	अप+	—
तत्	तत्	उस को
ववार	अप+ववार अपवृत मकरात्	खोल दिया

संस्कृतार्थः ।

वृत्रस्वामिका वृत्रगुप्ता आपः वणिजा गाव इव निरुद्धा अतिष्ठन् यदपां बिलं निरुद्धमासीत् वृत्रं जघन्वान् (इन्द्रः) तत्(बिलम्)अपावृतमकरोत् ॥११॥

भाषार्थः ।

वृत्र के आधीन वृत्र से रक्षा किये हुए जल बनिए से गौएं की न्याई रुके हुए ठहरे, जो जलों का बिल रुका हुआ था बृत्र को मारने वाले (इन्द्र) ने उसको खोल दिया ॥ ११ ॥

वणिक का कर्म गौओं का पालन और उनकी वृद्धि करना है इस लिये वह बहुत गौओं को रोक कर रखता है इसी प्रकार जिन जल रूपी गौओं को बृत्र ने रोका हुआ था इन्द्र ने उनको छुडा दिया,यह उन्हीं की कृपा है कि जल रूपी धन जो प्राण निर्वाह के लिये अत्यावश्यक है अपरिमित की न्याईं इस पृथिवी पर देखा जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः । अजयो गा अजयः शूर सोम मवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् ॥१२॥

अश्व्यः	अश्वे भवः	घोड़े में होने वाला
वारः	वालः	बाल
अभवः	अभवः	तू हुआ
तत्	तदा	तब
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
सृके	वज्रे (निघं०२।२०।)	वज्र पर
यत्	यदा	जब
त्वा	त्वाम्	तुझ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिऽअहन्	प्रतिहतवान्	बदले में मारा
देवः	देवम् (द्वितीयार्थेप्रथमा)	देव को
एकः	एकम् (,, ,,)	अकेले को
अजयः	जितवान्	तूने जीता
गाः	गाः	गौओं को
अजयः	जितवान्	तूने जीता
शूर	हे शूर	हे शूर
सोमम्	सोमम्	सोम को
अव	अव+	--
असृजः	अव+असृजः	छोड़ा
सर्तवे	सर्त्तुम्	चलने के लिये
सप्त	सप्त	सातों को
सिन्धून्	समुद्रान्	समुद्रों को

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र यदा (वृत्रः) त्वामेकं देवं वज्रे प्रतिहतवान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तदा त्वमश्व्यो वालः (इव) अभवः हेशूर त्वं गा-जितवान्, सोमम् जितवान्, सप्त समुद्रान् (च) सर्तुमवासृजः ॥ १२ ॥

भाषार्थः।

हे इन्द्र जब(वृत्र)ने बदले में आप अकेले दव को वज्र पर प्रहार किया तब आप(उसके लिये) घोडे के बाल होगए हे शूर आप ने गौओं को जीता सोम को जीता और चलने के लिये सात समुद्रों को छोडा॥१२॥

जब इन्द्र ने विद्युत द्वारा वृत्र पर प्रहार करके उसको नीचे गिराया तो वह पृथिवी में घुसकर भूगर्भ के पिघले हुए धातु और पत्थरों में जाकर महा शब्द पूर्वक पृथिवी की पपडी को विदीर्ण करके उसमें से वाष्प धूम और पत्थरोंको ऊपर इन्द्रकी ओर फेंकने लगा परन्तु इन्द्र ने इन प्रहारों को, ऐसे निवारण कर दिया जैसे घोड़े के बाल मक्खी को कर देते हैं। इस युद्ध के अनन्तर सूर्य की किरणों और चन्द्रमा का पृथिवी पर प्रकाश हुआ इसी लिये कहा है कि इन्द्र ने गौओं (किरणों) को जीता और सोम (चन्द्रमा) को जीता, साथ ही जिन सात समुद्रों का जल वृत्र ने अन्तरिक्ष में रोका हुआ था उनको चलने के लिये छोड़ा और उन्होंने गिरकर सात समुद्र जल से पूर्ण किये ॥

आदि में पृथिवी के सात समुद्र कौन थे यह तो नहीं कह सकते परन्तु यह सम्भावना की जाती है कि जो मुख्य विभाग आज कल हैं वे आदि से ही चले आए हैं उनके विस्तार में अन्तर पड गया है परन्तु स्थान अधिकांश में वह ही हैं। वे जल विभाग आजकल ये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) उत्तर महा सागर (Arctic Ocean)
(२) दक्षिण महासागर (Antarctic Ocean)
(३) उत्तर प्रशांत महासागर (North Pacific Ocean)
(४) दक्षिण प्रशांत महासागर (South Pacific Ocean)
(५) उत्तर वरुण महासागर (North Atlantic Ocean)
(६) दक्षिण वरुण महासागर (South Atlantic Ocean)
(७) भारत महासागर (Indian Ocean)

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न याम् इहमकिरद्ध्रादुनिं च। इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये ॥१३॥

न	न	न
अस्मै	अस्मै	इसके लिये
विऽद्युत्	विद्युत्	बिजली
न	न	न
तन्यतुः	गर्जनम्	गर्जन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिसे॑ध	प्राप	पहुंची
न	न	न
याम्	याम्	जिस का
मिह॑म्	वृष्टिम् (मिह सेचने)	वर्षा को
अकि॑रत्	विक्षिप्तवान् (कॄ विक्षेपे)	फैंका
ह्रादु॑निम्	अशनिम्	वज्र को
च	च	और
इन्द्रः॑	इन्द्रः	इन्द्र ने
च	च	और
यत्	यदा	जब
युयुधाते॑	युयुधाते	युद्ध किया
अहि॑ः	वृत्रः	वृत्र ने
च	च	और
उत	अतिशयेन (पा०को०)	अतिशय करके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भ्रपरीभ्यः	भाविनीभ्यः (ऋ०१।११३।११)	आगेहोनेवालियों के लिये
मघऽवा	धनवान्	धन वाला
वि	वि+	–
जिग्ये	वि+जिग्ये विजितवान्	निपट जीता

संस्कृतार्थः।

अस्मै (इन्द्राय) वृत्रक्षिप्ता विद्युन्न प्राप गर्जनं न (प्राप) यां वृष्टिमशनिं च विक्षिप्तवान् (तेऽपि) न (प्रापतुः),यदेन्द्रश्चवृत्रश्च युयुधाते(तदा) भाविनीभ्यः (प्रजाभ्यः) धनवान् (इन्द्रो वृत्रम्) अतिशयेन विजितवान् ॥ १३ ॥

भाषार्थः।

इस इन्द्र को वृत्रसे छोड़ी हुई विद्युत् न पहुंची गर्जन न (पहुंची) जिस वृष्टि और वज्र को फैंका (वे भी) न पहुंचे,जब इन्द्र और वृत्र दोनों का परस्पर युद्ध हुआ तब इन्द्र ने आगे आने वाली (प्रजाओं) के लिये अत्यन्त विजय को प्राप्त किया ॥ १३॥

जब वृत्र ने स्थान २ पर पृथिवी को विदीर्ण कर के उसमें से जल बाष्प और पिघले हुए पत्थरों को फैंका,उस समय बहुत गर्जन और विद्युतका भी आविर्भाव हुआ,परन्तु यह सब इन्द्रतक न पहुंचे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थोडी दूर उठकर फिर पृथिवी परही गिर पडे, जैसे ज्वालामुखियों से फेंके हुए वाष्प और पत्थर फिर पृथिवी परही गिर जातेहैं, इसके अनन्तर इन्द्र ने आगे उत्पन्न होने वाली प्रजाओं के लिये पूरी विजय को प्राप्त किया। इस पृथिवी पर हमारे जन्मकी सम्भावना इन्द्र की इस विजय के कारण से ही हुई है।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुपछन्दः ।१११।१११।१११।११।

अहेर्यातारंकमपश्यइन्द्र हृदियत्ते-
जघ्नुषोभीरगच्छत्। नवचयन्नव-
तिंचस्रवन्तीः श्येनोनभीतोअतरो-
रजांसि ॥१४॥

अहेः	वृत्रस्य	वृत्र के
यातारम्	यातारम	चढ़ाई करने वाले को
कम्	कम्	किस को
अपश्यः	दृष्टवानसि	तूने देखा
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हृ॒दि	हृदये	हृदय में
यत्	यत्	जो
ते॒	तव	तुझ के
ज॒घ्नुष॑ः	हतवतः	मारने वाले के
भीः	भयम्	भय
अग॑च्छत्	प्राप्तम्	प्राप्त हुआ
नव॑	नव	नौ को
च॒	च	और
यत्	यस्मात्	जिस से
न॒व॒तिम्	नवतिम्	नव्वे को
च॒	च	और
स्रव॑न्तीः	सर्पतः (लिङ्गव्यत्ययः)	चलते हुओं को
श्ये॒नः	श्येनः	बाज़
न	इव	न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भीतः	भीतः	डरा हुआ
अतरः	अतरः	तू तरा है
१ रजांसि	लोकान् (निरु० ४।१९)	लोकों को

भावार्थः ।

हे इन्द्र (त्वम्) वृत्रस्य यातारं कं दृष्टवानसि, यत् हतवतस्तव हृदये भयं प्राप्तम् यत् (चत्वम्) भीतः श्येन इव नव च नवतिंच सर्वतो लोकानतरः ॥ १४ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र (आपने) वृत्र पर चढ़ाई करने वाले किस को देखा, जो मारते हुए आपके हृदय में भय उत्पन्न हुआ (और जिस लिये) आप डरे हुए बाज़ (पक्षी) की न्याईं निन्नानवें लोकों के पार उतरे ॥ १४ ॥

रजांसि का अर्थ यास्क मुनि ने लोक किया है और ऋग् ५। ४८। ३ से प्रतीत होता हैं कि सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले ऐसे सैकडों लोक हैं "शतंवा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो विच वर्तयन्नहा " अर्थात् जिस सूर्य रूपी इन्द्र) के आधीन अपने स्थान पर घूमकर दिनों को प्रवृत्त और निवृत्त करने वाले सैकडों लोक हैं, पाश्चात्य साएंस को अभी ७ प्रधान ग्रह, २० वा २१ उपग्रह और मंगल और बृहस्पति की कक्षा के बीच में ५०० से अधिक अल्पग्रह ज्ञात हुए हैं, जिन में से न्यूनातिन्यून ४ तो ऐसे हैं जो लोक कहलाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के योग्य हैं शेष बहुत छोटे हैं, बुध की कक्षा के विपर्यय से अनुमान किया जाता है कि सूर्य के और बुध के बीच में अनेक अल्पग्रह हों जो इस विपर्यय के कारण हैं परन्तु बहुत छोटे होने से और सूर्यके अत्यन्त समीप होने से दीख नहीं पडते, वरुणग्रह (Neptune) की कक्षा से परे अभी एक आठवां ग्रह ज्ञात हुआ है, उपग्रह नए २ ज्ञात होते जाते हैं, इसलिये आजकल भी हम मंत्र द्रष्टाके साथ यही कह सकते हैं कि सूर्य के आधीन संकडों लोक हैं जो अपने स्थान पर घूमकर दिनों को प्रवृत्त और निवृत्त करते हैं॥

"९९ रजांसि" से "बहुत लोकों" का अर्थ समझना चाहिये, जिन को तैरकर इन्द्र वृत्र को मारने के लिये पृथिवी पर आए, ऋषि पूछते हैं कि हे इन्द्र आपने इतना परिश्रम क्यों किया कि अपने लोक को छोडकर पृथिवी पर आए, वृत्र तो आपके वज्रों से किये हुए प्रहारों से मर चुका था, क्या आपको यह भय हुआ कि आपके शत्रु को कोई दूसरा न मार देवे यह भय आपका वृथा था क्योंकि वृत्र को मारने वाला आप से अन्य और कौन हो सकता है।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः।११।११।११।११।

इन्द्रो॑ यातोऽव॑सितस्य॒ राजा॒ शम॑स्य च शृ॒ङ्गिणो॒ वज्र॑बाहुः। सेदु॒ राजा॑ क्षयति चर्षणी॒नाम॒रान्न ने॒मिः परि॒ ता ब॑भूव॥१५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
यातः	जङ्गमस्य	चलने वाले का
अवऽसितस्य	स्थावरस्य	स्थिति शील का
राजा	राजा	राजा
१ शमस्य	शान्तस्य	शान्त का
च	च	और
१ शृङ्गिणः	शृङ्गोपेतस्य	सींगों वाले का
वज्रऽबाहुः	वज्रबाहुः	वज्र हाथ में लिये हुए
सः	सः	वह
इत्	एव	ही
उम्०	(पूरणः)	–
राजा	राजा	राजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षयति	ईष्टे (आ०को०)	ईशन करता है
चर्षणीनाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्योंका
अरान्	(चक्रस्य) अरान्	(पहियोंके)आरों को
न	इव	न्याईं
नेमिः	चक्रधारा	पहिये की धार
परि	परि +	--
ता	तानि	उनको
बभूव	परि+बभूव	घेरे हुए है

संस्कृतार्थः ।

वज्रबाहुरिन्द्रो जङ्गमस्य स्थावरस्य शान्तस्य शृङ्गिणश्च राजा अस्ति स एव राजा मनुष्याणामीष्टे (सः) तानि (पूर्वोक्तानि) अरान्नेमिरिव पर्यावृतवान् ॥ १५ ॥

भाषार्थः ।

वज्र हाथ में लिये हुए इन्द्र चलने वाले (और) स्थितिशील के शान्त (और) सींगों वाले के राजा हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वही राजा मनुष्यों पर ईशन करते हैं (वह) इन सब को घेरे हुए हैं जैसे पहिये की धार आरों को ॥१५॥

(१) शांत और सींगों वाले से तात्पर्य पालतू और जंगली पशुओं से होसकता है।

जिस इन्द्र ने पूर्व में ये सब महान् कर्म किए अब भी वह सब मनुष्य पशु और वृक्षादि जीवों के राजा होकर स्थित हैं, और जिस प्रकार रथ के पहिये के आरे उसकी परिधि पर आश्रित हैं उसी तरह ये सब जीव इन्द्र पर आश्रित हैं इन्द्र अपना सहारा हटा लेवें तो यह सब पहिये के आरों की न्याईं बिखर जावें, इसी लिये इन्द्र के कर्मों को सुनने और जानने के लिये हमको स्पृहा होनी चाहिये, इस पृथिवी के महा पुरुषों के जिन कर्मों के जानने की हम स्पृहा करते हैं वे कर्म इन्द्र के कर्मों के सामने तुच्छ हैं। फिर क्यों न हम सब मिलकर हिरण्यस्तूप ऋषि के साथ इन्द्र के वीर्यों को गावें॥

॥ इति द्वात्रिंशं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० ३३ मं० १

इन्द्रो देवता आङ्गिरसो हिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः

।१।१।१।१।१।१।१।१।

एतायामोपगव्यन्तइन्द्रमस्माकं सुप्रमतिंवावधाति । अनामृणः कुवि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दादस्यरायो गवांकेतंपरमावर्जतेनः॥१

आ	आ+	--
इत	आ+इत, आगच्छत	आओ
अयाम	गच्छाम	हम जावें
उप	प्रति	की ओर
गव्यन्तः	गाइच्छन्तः	गौओं की इच्छा करते हुए
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
अस्माकम्	अस्माकम्	हमारे
सु	सुष्टु	भली प्रकार
प्रऽमतिम्	अनुग्रह कर्तारम्	अनुग्रह करने वाले को
ववृधाति	वर्धयति	बढाता है
अनामृणः	अहिंस्यः (आ०को)	बाधा रहित
कुवित्	बहु (निघं० ३।१)	बहुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्	अवधारणार्थः (आ०को)	निश्चय करके
अस्य	इदम् (द्वितीयार्थेषष्ठी)	इसको
रायः	धनम् (,, ,,)	धनको
गवाम्	गवाम्	गौओं के
केतम्	अभिलाषम्	इच्छा को
परम्	उत्कृष्टम्	उत्कृष्ट को
आऽवर्जति	नम्री करोति (आ० को०)	नमन करता है
नः	अस्माकम्	हमारी

संस्कृतार्थः ।

आगच्छत गव्यन्तः(वयम्)अस्माकमनुग्रह कर्तारमिन्द्रं प्रति गच्छाम, अहिंस्यः (सः)इदं धनंभूरिवर्धयत्येव,गवाम् (विषये) अस्माकमुत्कृष्टमभिलाषम् (च) नम्री करोति ॥१॥

भाषार्थः ।

आओ गौओं की इच्छा करते हुए हम अपने अनुग्रह करने वाले इन्द्र के प्रति जावें, वाधा रहित (वह) इस धन को अवश्य बहुत बढावेंगे और गौओं के (विषय में) हमारी इच्छा को नमन करेंगे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग-इस सूक्त का गोसव और वीवध एकाहोंके निष्कल्य शस्त्र में पाठ है (आ० श्रौ० सू० उ० ३ । ८ । १२) यह याग पशु की कामना से किए जाते हैं ॥

धनादि पदार्थ की उत्कट इच्छा को जो इन्द्र की कामना में विघ्न करने वाली है नमन करने का यही उपाय है कि हम इन्द्र की सहायता लेकर उस धन को बहुत बढ़ावें ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः ।११।११।११।११।

उपेदहं धनदामप्रतीतं जुष्टांन-
श्येनोवसतिं पतामि। इन्द्रंनमस्यन्नु-
पमेभिरर्कैर्यः स्तोतृभ्यो हव्योअस्ति-
यामन् ॥ २ ॥

उप	उप+	
इत्	एव	निश्चय करके
अहम	अहम्	मैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धनऽदाम्	धनप्रदम्	धन देनेवाले को
अप्रतिऽइतम्	अप्रतिगतम्	जिसका कोई सामना न कर सके
जुष्टाम्	सेविताम्	सेवन किए हुए को
न	इव	न्याईं
श्येनः	श्येनः	बाज
वसतिम्	नीडम्	घोंसले को
पतामि	उप+पतामि	समीप गिरता हूं
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
नमस्यन्	पूजयन्	पूजन करता हुआ
उपऽमेभिः	उपमानार्हैः	उपमाके योग्यों से
अर्कैः	स्तोत्रैः	स्तोत्रों से
यः	यः	जो
स्तोतृभ्यः	स्तोतृभ्यः	स्तोताओंके लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हव्यः	आह्वातव्यः	बुलाने के योग्य
अस्ति	अस्ति	है
यामन्	युद्धे (सप्तम्या लुक्)	युद्ध में

संस्कार्थः ।

यः स्तोतृभ्यो युद्ध आह्वातव्योऽस्ति (तम्) धनप्रदमप्रतिगतमिन्द्रमुपमानार्हैस्स्तोत्रैः पूजयन्नहं सेवितं नीडं श्येन इवोपपतामि ॥२॥

भाषार्थः ।

जो युद्ध में स्तोताओं के लिये बुलाने योग्य है (उस)धन देने वाले इन्द्र की ओर, जिसका कोई सामना नहीं कर सकता, उपमा योग्यस्तोत्रों से पूजता हुआ, मैं निश्चय करके ऐसे गिरता हूं जैसे सेवन किए हुए घोंसले की ओर बाज़ गिरता है ॥२॥

जिस प्रकार श्येन (बाज़) सेवन किए हुए घोंसले के सुख को जानकर बड़ी उत्कण्ठा से उसकी ओर गिरता है, इसी प्रकार भक्त जिसने इन्द्र की शरण लेने के सुख को अनुभव किया हुआ है उत्तम स्तोत्रों से इन्द्र को पूजता हुआ बडी उत्कण्ठा से उन की ओर प्रवृत्त होता है ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

निसर्वसेनइषुधीँरसक्त समर्यो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गा॑अ॒जति॒यस्य॒व॒ष्टि॑। चो॒ष्कू॒यमा॑ण

इन्द्र॒भूरि॑वा॒मं मा॒पणि॒र्भू॑र॒स्मदधि॑प्र

वृद्ध ॥३॥

नि	नितराम्	निपट
सर्व॑ऽसेनः	कृत्स्नसेनायुक्तः	सब सेना से युक्तने
इ॒षु॒ऽधीन्	इषुऽधीन्	तूणीरों को
अ॒स॒क्त॒	संयोजितवान्	बांधा है
सम्	सम+	-
अ॒र्यः	स्वामी (अ०३।१।१०३)	स्वामी
गाः	गाः	गौओं को
अ॒ज॒ति॒	सम्+अजति (समजः पशूनां संघः)	इकट्ठा करता है
यस्य॑	यम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	जिसको
वष्टि॑	कामयते	प्यार करता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चोष्कूयमाणः	ददत् (निरु० ६।२२)	देता हुआ
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
भूरि	प्रभूतम्	बहुत को
वामम्	धनम् (आ०को)	धनको
मा	मा	मत
पणिः	व्यवहारी	व्यापारी
भूः	भूः	हो
अस्मत्	अस्मत्+अधि	हम में
अधि	अधि+	--
प्रऽवृद्ध	हे प्रवृद्ध	हे बहुत बढे हुए

संस्कृतार्थः।

कृत्स्नसेनायुक्तः (इन्द्रः) इषुधीन्नितरां संयोजितवान् (सः) स्वामी यं कामयते (तम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गो.संघं ददाति हे प्रवृद्ध इन्द्र प्रभूतं धनमुत्सृजन्न-स्मासु व्यवहारी मा भूः ॥३॥

भाषार्थः।

सब सेनाओं से युक्त (इन्द्र) ने खूब तूणीर कस लिये हैं (वह) स्वामी जिस को प्यार करते हैं (उसे) गौओं का चूना देते हैं, हे बहुत बढे हुए इन्द्र बहुत धन को देने वाले आप हमारे साथ व्यापारी न बनें ॥ ३ ॥

इन्द्रसदा तूणीर(तरकश) कसे युद्ध परायण रहते हैं,वह स्वामी जिस को प्यार करते हैं उस के घर में गौओं का चूना (झुंढ) इकट्ठा कर देते हैं। ऐसे बहुत धन को त्यागने वाले इन्द्र हमारे साथ व्यापारी का सा वर्ताव न करें अर्थात् ऐसा न करें कि जितनी हमारी भक्ति और पूजा है उतनाही दें। बरन जितने धनके हम अधिकारीहैं उससे बहुत अधिक दें ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।१११।१११।१११।१११।

वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेन एकश्चर-न्नुपशाकेभिरिन्द्र। धनोरधि विषु-णक्ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेति-मीयुः ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वधीः	हतवान्	मारा है
हि	खलु	निश्चय करके
१ दस्युम्	चोरम्	चोर को
धनिनम्	बहुधनोपेतम्	बहुत धन वालेको
घनेन	कठिनेन	कठिन से
एकः	एकः	अकेले
चरन्	गच्छन्	जाते हुए
२उपऽशा-केभिः	सहायकैस्सह	सहायता करते हुओं के साथ
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
३धनोः	धनुषः	धनुष के
अधि	उपरि	ऊपर
विषुणक्	सर्वतः	सब ओर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ते	ते	वे
वि	वि +	——
आयन्	वि + आयन् वि-विधमागच्छन्	अनेक प्रकार से आए
अयज्वानः	याग रहिताः	यज्ञ न करने वाले
सनकाः	प्राक्तनाः	पूर्व कालीन
प्रऽइतिम्	मृत्युम्	मृत्यु को
ईयुः	प्राप्ताः	प्राप्त हुए

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र सहायकैः (मरुद्भिः) सह गच्छन्नेकस्त्वं कठिनेन (वज्रेण) बहुधनोपेतं चोरम् (वृत्रम्) हतवान् खलु, ते (वृत्रानुचराः) सर्वतो (तव) धनुषउपरि विविध मागच्छन् (परन्तु) याग रहिताः प्राक्तनाः (ते) मृत्युं प्राप्ताः॥४॥

भाषार्थः।

हे इन्द्र सहायता करने वाले (मरुतों) के साथ जाते हुए अकेले आपने कठिन वज्र से बहुत धन वाले चोर (वृत्र) को मारा, वे (वृत्र के अनुचर) सब ओर से (आप के) धनुष के ऊपर अनेक प्रकार से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आए परन्तु याग रहित पूर्वकालीन वे मृत्यु को प्राप्त हुए ॥४॥

(१) वृत्र चोर इस लिये है कि उसने जल और सूर्य्य रश्मि रूप धन को चुराकर रखा हुआ था ॥

(२) यद्यपि इन्द्र के मरुत सहायक थे, परन्तु उन्होंने वृत्रको अकेले ही अपने विद्युतरूपी कठिन वज्र से मारा ॥

(३) वृत्रको मारे पीछे आकाश में इन्द्र धनुष प्रगट हुआ जैसे अब भी बर्षा के पीछे होता है, उस समय वृत्र के बचे हुए साथियों ने सब ओर से आकर इन्द्र धनुष को ढांप लिया, परन्तु ये पूर्वकालीन यज्ञ हीन लोग मृत्यु को प्राप्त हुए । वृत्रके अनुचर यज्ञ हीन इस लिये हैं कि देवताओं की तरह दूसरों के उपकार के लिये कर्म नहीं करते किन्तु अपने स्वार्थ के लिये जलादिधन को जोडकर रखते हैं, इसी लिये ये मारे गए । अमर होने का उपाय एक मात्र यज्ञ है अर्थात् अपने धन का (अथवा बुद्धि और बल का जो धनके रूपान्तर हैं) देव मनुष्य, तथा अन्य जीवों के लिये त्याग करना । जो कंजूसी से अपने स्वार्थ के लिये धन जोडता रहता है वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

परा॑चि॒च्छीर्षा॑ ववृ॒जुस्त इ॒न्द्राय॑ज्वानो॒ यज्व॑भि॒: स्पर्ध॑मानाः। प्र यद्दि॒वो ह॑रिवः स्थातरुग्र॒ निर॑व्र॒ताँ अ॑धमो॒ रोद॑स्योः ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परा	परा	पीछे
चित्	एव	ही
शीर्षा	शिरांसि	सिरों को
ववृजुः	गतवन्तः	चले गए
ते	ते	वे
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
अयज्वानः	याग रहिताः	यज्ञ रहित
यज्वऽभिः	यागानुष्ठातृभि-स्सह	यज्ञ करने वालों के साथ
स्पर्धमानाः	स्पर्धमानाः	होड करते हुए
प्र	प्रकर्षेण	निःश्शेष करके
यत्	यत्	जो
दिवः	दीप्यमानात्	दीप्यमान से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह॒रि॒ऽव॒:	हे अश्वयुक्त	हे घोड़ों वाले
स्था॒त॒:	स्थातः	डटे रहने वाले
उ॒ग्र॒	उग्र	भयानक
निः	निः +	–
अ॒व्र॒तान्	व्रतरहितान्	व्रतरहितों को
अ॒ध॒म॒:	निः +अधमः निस्सारितवानसि (धमतिर्गतिकर्मा निरु६।२)	निकाल दिया
रोद॑स्योः	द्यावापृथिव्योः	द्यावापृथिवी से

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र यागरहिता यागानुष्ठातृभिस्सहस्पर्धमानास्ते (वृत्राः) पराशिरस एव गतवन्तः हे अश्व युक्त (युद्धे) स्थात उग्र (इन्द्र) यत् दीप्यमानात् (आकाशात्) द्यावापृथिव्योः (सकाशाच्च) व्रतरहितान् (वृत्रान्) प्रकर्षेण निस्सारितवानसि ॥५॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र यज्ञ करने वालों से होड करने वाले याग रहित वे (वृत्र) सिर फेरकर भाग गए, हे घोड़ों वाले (युद्ध में) डटे रहने वाले भयानक (इन्द्र) जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दीप्यमान (आकाश) और द्यावापृथिवी से व्रतहीनों को आपने निःशेष करके निकाल दिया ॥५॥

जो यज्ञ रहित हैं वे यज्ञ करने वालों की होड कदापि नहीं कर सकते, जैसे यह नियम आकाश में देवता और असुरों के लिये है वैसे ही इस पृथिवी पर। जो केवल अपने लिये जीते हैं वे त्याग शील शत्रु को कदापि नहीं जीत सकते, शत्रु से अधिक त्याग शील होकर ही उस को जीतना सम्भव है ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः।११।११।११।११।

अयुयुत्सन्ननवद्यस्यसेनामयात-
यन्तक्षितयोनवग्वाः। वृषायुधोन-
वध्रयोनिरष्टाः प्रवद्भिरिन्द्राच्चित-
यन्त आयन् ॥६॥

अयुयुत्सन्	योद्धुमैच्छन्	युद्ध करने की इच्छा की
अनवद्यस्य	अनिन्दितस्य	निन्दा रहित की
सेनाम्	से नाम्	सेना को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अयातयन्त	प्रोत्साहितवन्तः	उत्साहित किया
क्षितयः	मनुष्याः (निघं०२।३)	मनुष्यों ने
नवऽग्वाः	नवभिर्मासैस्सत्रं साधयन्तः (सा०भा०ऋ० १।६२।४)	नौमास में सत्रस- माप्त करने वाले
वृषऽयुधः	शूरनरेणसह युद्धंकुर्वन्तः	नरवीर के साथ युद्ध करते हुए
न	इव	न्याईं
वध्रयः	नपुंसकाः	नपुंसक
निःऽअष्टाः	निरस्ताः	निपट परास्त हुए २
प्रवत्ऽभिः	प्रवणैः (मार्गैः)	ढुलान के मार्गों से
इन्द्रात्	इन्द्रात्	इन्द्र से
चितयन्तः	विचारयन्तः	विचार करते हुए
आयन्	गतवन्तः	चले गये

संस्कृतार्थः ।

(अयज्वानः) अनिन्दितस्य (इन्द्रस्य) सेनां योद्धु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैच्छन्, नवभिर्मासैस्सत्रं साधयन्तो मनुष्याः(तांसे-नाम्)प्रोत्साहितवन्तः(तदा) शूर नरेण सह युद्धं कुर्वन्तो नपुंसका इव, निरस्ताः (शत्रवः) विचारयन्तः प्रवणैः (मार्गैः) इन्द्रात् (दूरम्) गतवन्तः ॥६॥

भाषार्थः ।

(याग रहितों ने) निन्दा रहित (इन्द्र) की सेना से युद्ध करने की इच्छा की, (उस सेना को) नौ महीनों के सत्र करने वाले मनुष्यों ने उत्साह युक्त किया (तब) शूर नर के साथ युद्ध करने वाले नपुंसकों की न्याईं, निपट परास्त हुए २ (शत्रु लोग) विचार करते हुए ढलान (के मार्गों) से इन्द्र से (दूर) भाग गए ॥६॥

इस मंत्रमें ऋषि प्राचीन इतिहास को वर्णन करते हैं, निन्दा रहित इन्द्रकी सेना अर्थात् उनके उपासक आर्य्य लोगों से किसी याग रहित अनार्य जातिने युद्धकी इच्छा की, तब अङ्गिरा गोती नवग्वा लोगोंने (जो उत्तर मेरु के समीपवर्ती देशों में नौ महीने सूर्यका प्रकाश होने के कारण नौ महीने का सत्र करते थे और शेष तीन मास की लम्बी रात्रि में रात्रि सत्र वा अतिरात्र किया करते थे) इन्द्र की स्तुतिओं द्वारा आर्य जातिको युद्धके लिये उत्साहित किया, इसका यह फल हुआ कि शत्रु लोग इन्द्र से (क्योंकि इन्द्र के उपासकों से युद्ध वास्तव में इन्द्र के साथ ही युद्ध था) ऐसे भागे जैसे शूरवीर नर के साथ युद्ध करने वाले नपुंसक भागते हैं। ढलान के मार्गों से कहने का यह तात्पर्य्य है कि जैसे ढलान में मनुष्य शीघ्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भागता है वैसे भागे। और यह विचार करते हुए भागे कि निस्सन्देह हम याग रहित लोग यज्ञ शीलों के साथ बराबरी करने के योग्य नहीं हैं॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

त्वमेतान्रुदतोजक्षतश्चायोधयोरजसइन्द्रपारे। अवादहोदिव आदस्युमुच्चा प्रसुन्वतःस्तुवतःशंसमावः॥७॥

त्वम्	त्वम्	तू
एतान्	एतान्	इन को
१ रुदतः	रुदतः	रोते हुओं को
१ जक्षतः	हसतः	हंसते हुओं को
च	च	और
अयोधयः	युद्धेन मारितवान् (सा०भा०	युद्ध करके मारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रजसः	अन्तरिक्षस्य	अन्तरिक्ष के
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
पारे	परभागे	पर भाग में
अव	अव +	—
अदहः	अव+अदहः, दग्ध्वा ऽधःपातितवान्	जलाकर नीचे गिरा दिया
दिवः	द्युलोकात्	द्युलोक से
आ	मर्य्यादायाम्	से
दस्युम्	चोरम्	चोर को
उच्चा	उच्चैः	ऊंचे
प्र	प्र+	—
२ सुन्वतः	सोमाभिषवंकुर्वतः	सोमनिष्पीडन करते हुए की
२ स्तुवतः	स्तुवतः	स्तुति करते हुए की
२ शंसम्	स्तुतिम्	स्तुति को
२ प्रावः	प्र + आवः रक्षितवान्	रक्षा की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र त्वं रुदतोहसतश्चैतान् (वृत्रान्) अन्तरिक्षस्यपरभागे युद्धेन मारितवान् चोरम् (वृत्रंच) उच्चैर्द्युलोकाद्दग्ध्वाऽधःपातितवान सोमाभिषवं कुर्वतः स्तुवतः स्तुतिं (च) रक्षितवान् ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र आपने रोते हुए और हंसते हुए इन (वृत्रों को) अन्तरिक्ष के परभाग में युद्ध करके मारा, चोर वृत्र को ऊंचे करके द्युलोक से जलाकर नीचे गिराया और सोमको निष्पीडन करते हुए(और) स्तुति करते हुए की स्तुति की रक्षा की ॥७॥

(१) मेघों के रोने और हंसनेका हेतु जलरूपी धनों को त्यागना और धारण करना है । इन सब को और प्रधान मेघ वृत्रको इन्द्रने ऊपर आकाश में मार कर नीचे पृथिवी पर गिरादिया ॥

(२) बारंबार इन कर्मों का कथन इस लिये है कि इन्द्र के उपासकों के मनमें यह संस्कार दृढ हो जावे कि उन के शत्रुओं को सदाके लिये इन्द्रने नाश किया हुआ है। और उन के सोम पीडन करने और देवताओं की स्तुति करने में कदापि कोई शत्रु बाधा नहीं डाल सकता ॥

इन्द्रके शत्रु और स्तोता के शत्रुओं में कुछ भेद नहीं है जो वृत्रादि इन्द्रके शत्रु हैं वे स्तोता के शत्रु और जो मनुष्यादि स्तोता के शत्रु हैं वे इन्द्रके शत्रु हैं, इसी लिये एक ही सूक्त बरन एक ही मन्त्र में दोनों प्रसंग मिले जुले आ जाते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः १११११११११।

चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः। न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशो अदधात्सूर्येण ॥८॥

चक्राणासः	कुर्वाणाः	करते हुए
परिऽनहम्	आच्छादनम्	अच्छादन को
पृथिव्याः	भूमेः	पृथिवी के
हिरण्येन	सुवर्णेन	सुवर्ण से
मणिना	मणिना	मणि से
शुंभमानाः	शोभमानाः	शोभते हुए
न	न	नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्वानासः	प्रोत्साहमानाः	उत्साहित करते हुए
तितिरुः	तीर्णवन्तः(जेतुं शक्ताआसन्)	जीतने को समर्थ हुए
ते	ते	वे
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
परि	परि +	--
स्पशः	चारान् (शसस्सु रादेशः)	गुप्त चरों को
अदधात्	परि + अदधात् परिहितानकरोत्	घेरलिया
सूर्य्येण	सूर्य्येण	सूर्य से

संस्कृतार्थः ।

भूमेराच्छादनं कुर्वाणास्सुवर्णेन मणिना (च) शोभमानाः प्रोत्साहमानास्ते (वृत्राः) इन्द्रं जेतुं न शक्ता आसन्, (इन्द्रः) चाररूपान् (वृत्रान्) सूर्येण परिहितान करोत् ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

पृथिवीको ढकते हुए सुवर्ण और मणि से शोभते हुए (और) उत्साह करते हुए वे (वृत्र) इन्द्र के जीतने को समर्थ न हुए (इन्द्र ने) गुप्त चर (वृत्रों) को सूर्य द्वारा घेर लिया ॥८॥

मेघों को सूर्य्य की किरणें अपने रक्त पीत हरित नील इत्यादि रंगों द्वारा सुवर्ण और नानारंग की मणियों से भूषित करती हैं। वे मेघ इन्द्र को जीतने का उत्साह करते हुए पृथिवी के चारों ओर अन्तरिक्ष में छा गए परन्तु इन्द्र को नहीं जीतसके। इन वृत्रों में जो गुप्त चर थे अर्थात् जो रजके समूह पृथिवी के समीप होने से अभी वाष्प जमने के संचयास्पद (Condensation nuclei) नहीं बने थे परन्तु गुप्त रूप से जल रूपी गौओं को घेरने की ताक में लगे हुए थे, उनको इन्द्रने सूर्य की रश्मिओं से घेर लिया और उनका मनोरथ सफल न हुआ। क्योंकि पृथिवी के समीप कोहिरा वा धुंध (जो वास्तव में मेघ ही हैं) का उत्पन्न होना सूर्योदय से पूर्वके शीत में ही सम्भव है, सूर्यरश्मियां द्वारा शीतके कम होने पर उस की सम्भावना नहीं होती ॥

इन्द्रो देवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः।११।११।११।११॥

परि॒ यदि॑न्द्र॒ रोद॑सी उ॒भे अबु॑भोजी॒-

र्म॑हि॒ना वि॒श्वतः॑ सीम्। अम॑न्यमानाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभिमन्यमानैर्निब्रह्मभिरधमोदस्युमिन्द्र ॥९॥

परि	परि +	--
यत्	यत्	जो
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
१ रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	द्युलोक और पृथिवी को
उभे०	उभे	दोनों को
१ अबुभोजीः	परि+अबुभोजीः परितोभुक्तवान्	चारों ओर से भोगा
महिना	महिम्ना	महिमा से
विश्वतः	सर्वतः	सब ओर से
सीम्	परिगृह्य (निघं०४।२)	घेर कर
२ अमन्यमानान्	अमन्यमानान्	न मानने वालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	अभि-(अधमः) ध्मातवानसि	बहिष्कृत किया
२ मन्यमानैः	मन्यमानैः	मानने वालों से
निः	निः +	—
१ ब्रह्मऽभिः	मन्त्र रूप स्तुतिभिः	मन्त्र रूप स्तुतिओं से
अधमः	निः+अधमः,नि-स्सारितवानसि धमतिर्गतिकर्मा निघ०६।२	निकाल दिया
दस्युम्	दुष्टम् (शत्रुम्)	दुष्ट(शत्रु) को
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र यत्त्वमुभे द्यावापृथिव्यौ महिम्ना सर्वतः परिगृह्य परिताभुक्तवानसि (अतः) अमन्यमानान् मन्यमानैर्बहिष्कृतवानसि हे इन्द्र (त्वम्) दुष्टम् (शत्रुम्) मंत्ररूपस्तुतिभिः निस्सारितवानसि ॥९॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र आपने जो द्युलोक और पृथिवी दोनों को महिमा से चारों ओर घेर कर भोगा है इस से आपने न मानने वालों को मानने वालों के द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वहिष्कृत कियाहैं हे इन्द्र आपने दुष्ट (शत्रु) को मंत्र रूप स्तुतियों द्वारा निकाल दिया है॥९॥

(१) यह द्यावापृथिवी इन्द्रके अधिकार में हैं । इनमें वह जिस को चाहें रखें जिस को चाहें निकालें॥

(२) ऐसे इन्द्र न मानने वालों को अर्थात् श्रद्धा हीनों को श्रद्धा वानों से परास्त कराके द्यावा पृथिवी के बाहर निकाल देते हैं॥

(३) स्तुति से आत्मा का बल बढता है इस लिये स्तुति दुष्ट शत्रु को निकालने में सहायक है।।

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

नयेदिवःपृथिव्याअन्तमापुर्नमाया
भिर्धनदांपर्यभूवन्।युजंवज्रंवृषभश्च
क्रइन्द्रो निर्ज्योतिषातमसोगाअ-
दुक्षत् ॥१०॥

न	न	नहीं
ये	ये	जो
दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृथि॒व्याः	पृथिव्याः	पृथिवी के
अन्त॑म्	अन्तम्	अन्त को
आ॒पुः	प्राप्ताः	प्राप्त हुए
न	न	नहीं
मा॒याभि॑ः	मायाभिः	छलों से
ध॒न॒ऽदाम्	धनप्रदम्	धन के देने वाले को
प॒रि॒ऽअ॑भूवन्	पराजितवन्तः	पराजय किया
यु॒जम्	सहायकम्	सहायक को
वज्र॑म्	वज्रम्	वज्र को
वृ॒ष॒भः	सेचन समर्थः	नर ने
च॒क्रे॒	चक्रे	किया
इन्द्रः॑	इन्द्रः	इन्द्र ने
निः	निः+	....

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिषा	ज्योतिषा	प्रकाशद्वारा
तमसः	अन्धकारात्	अन्धकार से
गाः	गाः	गौओं को
अधुक्षत्	निः+अधुक्षत् नि-श्शेषेण दुग्धवान्	निश्शेष करके दोहा ।

संस्कृतार्थः ।

ये (वृत्राः) द्यावापृथिव्योरन्तं न प्राप्ताः मायाभिः (च) धनप्रदं न पराजितवन्तः (ताञ्जेतुम्) वृषभ इन्द्रो वज्रं सहायकं चक्रे (तस्य) ज्योतिषा (च) अन्धकारान्निश्शेषेण गा अधुक्षत् ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

जो (वृत्र) द्युलोक और पृथिवी के अन्त को न प्राप्त हुए (और) छलों से धन के देने वाले इन्द्र को न पराजय कर सके (उनको जीतने के लिये) नर इन्द्र ने वज्र को सहायक बनाया (और उस के) प्रकाश द्वारा अन्धकार से गौओं को निश्शेष कर के दोहा ॥१०॥

वृत्रोंकी सामर्थ्य इन्द्रकी तरह द्यावा पृथिवी के अन्त तक जानेकी नहीं है ये अन्तरिक्ष में थोड़ी दूरजा आ सकते हैं। ये धन के जोडने वाले कंजूस धन देने वाले उदार इन्द्रको अपने छलों से नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराजय करसकें। इनको जीतने के लिये इन्द्रने वज्र को सहायक बनाया और उसके प्रकाशसे अन्धेरे में छिपाई हुई किरण और जल रूपी गौओं को निकाल कर पृथिवी पर बखेर दिया, जैसे कंजूस के इकट्ठे किये हुए धनको दूसरा मनुष्य प्राप्त होकर बखेरताहै(उदारता पूर्वक खरचता है)

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्यावर्धत मध्य आ नाव्यानाम्। सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून् ॥११॥

अनु	अनुसारम्	अनुसार
१ स्वधाम्	स्वेच्छाम्(आ०को०)	अपनी इच्छा को
अक्षरन्	प्रवहन्	बहे
आपः	आपः	जलः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्य	अस्य	इस के
२ अवर्धत	आ+अवर्धत स-मन्तादवर्धत	चारों ओर बढ़ा
मध्ये	मध्ये	मध्यमें
आ	आ +	–
२ नाव्यानाम्	नावातार्याणाम्	नावों से लंघने योग्यों के
२ सध्रीचीनेन	सह गच्छता	साथजानेवाले ने
१ मनसा	मनसा	मनसे
तम्	तम्	उसको
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्रने
४ ओजिष्ठेन	अति बलवता	बड़े बलवाले से
४ हन्मना	हननसाधनेन	मारनेकेसाधन से
अहन्	हतवान्	मारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	अभिलक्ष्य	लक्ष्य रख कर
द्यून्	दिवसान्	दिनों को

संस्कृतार्थः ।

आपोऽस्य (वृत्रस्योपरि) स्वेच्छानुसारं प्रावहन् (तदावृत्रः) नावातार्याणाम् (जलानाम्) मध्ये समन्तादवर्धत, इन्द्रः सहगच्छता मनसा तम् (वृत्रम्) अतिबलवता हननसाधनेन (वज्रेण) दिवसानभिलक्ष्य हतवान् ॥११॥

भाषार्थः ।

जल इस (वृत्र के ऊपर) स्वेच्छानुसार बहने लगे तब वृत्र नावों से लंघने योग्य (जलों) के बीच में चारों ओर बढने लगा, इन्द्र ने (वृत्र के) साथ जाने वाले मन से उस को अति बल वाले मारने के साधन वज्र से कुछ दिनों में मार डाला ॥११॥

(१) जल वृत्रके अधिकार से छूटकर अपनी इच्छाके अनुसार वृत्रके ऊपर बहने लगे जो धूलिरूप से पृथिवी पर स्थित था, तब वृत्रभी उनके साथ मिल गया। जैसे श० ब्रा० १।१।३।५ में भी लिखा है " उसको इन्द्रने मारा, वह मर कर सडा हुआ चारों ओर से जलों में मिलकर बहने लगा क्योंकि समुद्र निश्चय करके चारों ओर है" फिर श०ब्रा० १।१।३।७ में लिखा है " जल इस लिये आगे जाने वाले कहे जाते हैं कि वे समुद्र को जाते हैं" इस लिये वृत्र भी जलों के साथ समुद्र की ओर चला॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) परन्तु यह एक नियम है कि नदियां स्थल से लाई हुई मिट्टी को समुद्र के समीप पहुंच कर त्याग कर देती हैं, इस लिये कहा है कि वृत्र "नाव्यानां" अर्थात् नाव (जहाज) चलने योग्य नदी मुखों को प्राप्त होकर वहां पर बढने लगा।

(३) ऐसा करने से वृत्र इन्द्र की दृष्टि से नहीं बच सका क्योंकि इन्द्र का मन वृत्रके साथ था, और उन्होंने ॥

(४) समुद्र के ज्वार भाटे रूपी बलवान हनन के साधन वज्र से वृत्र को किनारे से उखाड़कर थोडे काल में समुद्रके पेंदे में पहुंचा दिया। वृत्रके साथ युद्ध में इन्द्र का जलों को वज्र बनाना यजुर्वेद अ० १ मंत्र १३ में स्पष्ट लिखा है "युष्माऽइन्द्रोऽवृणीतवृत्रतूर्ये" श० ब्रा० १।१।३।८ में इस की व्याख्यायों लिखा है "तुम को इन्द्रने वृत्रके साथ युद्ध में बरा" क्योंकि इन्द्रने निश्चय करके इन (जलों) को वृत्रके साथ युद्ध करते हुए बरा और इनके द्वारा उसको मारा, इस लिये (अध्वर्यु प्रोक्षणी के जलों को) कहता है "युष्माऽइन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्य्यऽइति" ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

न्या॑वि॒ध्यदि॑लीबि॒शस्य॑ दृ॒ळ्हा वि शृ॒ङ्गिण॑मभिन॒च्छुष्ण॒मिन्द्रः॑। याव॒त्तरो॑ मघव॒न्याव॒दोजो॒ वज्रे॑ण॒ शत्रु॑मवधीः पृत॒न्युम्॥ १२॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नि +	—
अविध्यत्	नि+अविध्यत् नितरांविद्धवान्	अत्यन्तबींधदिया
[1]इलीबिश-स्य	इलायाभूमे र्वि-लेशायानस्य (निरु० ६।१८)	भूमि के बिलमें सोए हुए की
[1]दृळ्हा	दृंहितानि(दुर्गाणि)	दृढ़ (गढों) को
वि	वि +	—
[2]शृङ्गिणम्	शृङ्गिणम्	सींगों वाले को
अभिनत्	वि + अभिनत् विविधंभिन्नवान्	अनेक प्रकार से भेदन किया
[2]शुष्णम्	शोषकम्(वृत्रम्)	सुकाने वाले (वृत्र) को
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
[1]यावत्	यावत्	जितना
[1]तरः	वेगः	वेग
मघऽवन्	हे धनयुक्त	हे धनवाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[१]यावत्	यावत्	जितना
[२]ओज	बलम्	बल
वज्रेण	वज्रेण	वज्र से
शत्रुम्	शत्रुम्	शत्रु को
अवधीः	हतवानसि	मारा
पृतन्युम्	युद्धमिच्छन्तम्	युद्धकी इच्छा करत हुएको

संस्कृतार्थः ।

इन्द्रो भूमेर्विलेशयानस्य (वृत्रस्य) दृंहितानि (दुर्गाणि) नितरां विद्धवान्, शृङ्गिणं शोषकम् (वृत्रंच) विभिन्नवान् हे धनयुक्तेन्द्र यावान्वेगो यावद्बलम् (तवास्ति तावत्) त्वं युद्धमिच्छन्तं शत्रुं वज्रेण हतवानसि ॥१२॥

भाषार्थः ।

इन्द्र ने भूमि के बिल में सोए हुए (वृत्र) के दृढ (गढों) को नितान्त बींध दिया (और) सींगों वाले शोषक (वृत्र) को अनेक प्रकार से भेदन किया, हे धन युक्त इन्द्र जितना वेग और बल (आप का है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस से) आप ने युद्ध की इच्छा वाले शत्रु को बज्र से मारा ॥१२॥

(१) वृत्र केवल आकाश में ही जलों को रोक कर नहीं ठहरा किन्तु पृथिवी के बिलों (छिद्रों) में प्रवेश करके भीतर के जलों को दृढ दुर्गों द्वारा रोक कर सो गया, तब इन्द्रने पृथिवी के भीतर जल रूपी वज्र से उन दुर्गों को बींधकर स्थान स्थान पर प्रजाके हितके लिये निर्झर (Springs) रूप में जलोंको बाहर निकाला ॥

(२) वृत्र पृथिवी के ऊपर भी सीगों वाले पर्वत के रूपमें (निघंटु में अश्मा पर्वत अद्रि गिरि ये सब वृत्रके पर्य्याय लिखे हैं) स्थित होकर वर्षा के जलों को अपने शरीर में धारण करके पृथिवी को सुकाने लगा, तब इन्द्रने अनेक प्रकार से पर्वत रूपी वृत्र को भेदन करके (भीतर के जलों से छिद्रोंको बढाकर, बाहर से शिलाओं को फिसलाकर और विद्युत और वर्षा से पर्वत को फोड कर) जलों को बाहर निकाला, और उनको निर्झरों और स्रोतों के रूप में बहाकर वृत्र से सुकाई हुई पृथिवी को फिर जलार्द्र कर दिया ॥

(३) मेघों से जल छुडाने में जितना विद्युत बल लगता है, उसकी अपेक्षा पर्वतों के तोडने में बहुत अधिक लगता है। पर्वतों की चोटियों पर विद्युत कृत छिद्र तो बहुत देखन में आते हैं परन्तु कहीं कहीं बडे २ शिला भी तोडे हुए देखे गए हैं ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुपछन्दः ।१११।१११।१११।१११।

अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून्वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत् सं वज्रेणा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सृजद्वज्रमिन्द्रः प्रस्वांमतिमतिरच्छशदानः ॥१३॥

अभि	अभिलक्ष्य	लक्ष्यरखकर
[1]सिध्मः	साधकः(वज्रः)	साधक (वज्र)
अजिगात्	गतवान् (निघ० २।१४),	गया
अस्य	अस्य	इसका
शत्रून्	शत्रून्	शत्रुओं को
वि	वि +	---
तिग्मेन	तीक्ष्णेन	तीक्ष्ण से
[2]वृषभेण	वर्षतीति वृषभः तेन (वृष्-अभच्)	वृष्टि के जल से
पुरः	पुराणि	पुरों को
अभेत्	वि + अभेत् विविधं भिन्नवान्	अनेक प्रकार से भेदन किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्	सम् +	--
वज्रेण	वज्रेण सह	वज्र के साथ
असृजत्	सम् + असृजत् संयोजितवान्	जोड़ा
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
प्र	प्र +	....
स्वाम्	स्वकीयाम्	अपनी को
मतिम्	मनः (आ०को)	मन को
अतिरत्	प्र+अतिरत् वर्धितवान्	बढ़ाया
शाशदानः	अति शयेन शातयन्	अतिशय करके छेदन करते हुए ने

संस्कृतार्थः ।

अस्य (इन्द्रस्य) साधकः (वज्रः) शत्रूनभिलक्ष्य गतवान् (सः) तीक्ष्णेन वृष्टि जलेन (वृत्रस्य) पुराणि विविधं भिन्नवान्, इन्द्रो वज्रेण सह वृत्रं संयोजित-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वान्, अतिशयेन शातयन् (च) स्वकीयं मनोवर्धित-
वान् ॥१३॥

भाषार्थः ।

इस इन्द्रका साधक (वज्र) शत्रुओं को लक्ष्य रख कर गया (उस ने) तीक्ष्ण वृष्टि के जल से (वृत्र के) पुरों को अनेक प्रकार से भेदन किया इन्द्र ने वज्र के साथ वृत्र को जोड दिया (और) अतिशय करके छेदन करते हुए ने अपने मन को बढ़ाया॥१३॥

(१) इन्द्र के शत्रु बधरूप कार्य का साधक विद्युत रूपी वज्र है इसी से तीक्ष्ण वृष्टि रूप दूसरा वज्र बनता है ॥

(२) इस से इन्द्रने पर्वतों को विदीर्ण करके स्रोतों को निकाला और नदियों के मार्ग बनाए ॥

जब इन्द्र ये सब कर्म प्रजाके हित के लिये कर चुके तो उन का मन बहुत बढा अर्थात् वह बहुत हर्ष को प्राप्त हुए क्योंकि अब प्रजा की उत्पत्ति और पालन में जो रुकावटें थीं, वे सब दूर होगईं। सूर्य का प्रकाश पृथिवी पर पहुंचने लगा, समुद्र जल से पूर्ण होगए, स्थान स्थानपर मीठे जल के निर्झर स्रोत और नदियां बहने लगीं और आकाश की वायु स्वच्छ होगई। आजकल जो हम को ये सब सुख प्राप्त हैं, ये इन्द्र के सैंकडों सहस्रों वर्षतक युद्ध करने का फल हैं। बिनायुद्ध के सुख नहीं प्राप्त होसकता, चाहे वह युद्ध भोगने वाले ने स्वयं किया हो चाहे उसके पूर्वजों ने किया हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवतात्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११

आवः कुत्समिन्द्रयस्मिञ्चाक-
न्प्रावोयुध्यन्तंवृषभंदशद्युम्। प्रफ
च्युतोरेणुर्नक्षतद्यामुच्छ्वैत्रेयोनृषा-
ह्यायतस्थौ ॥१४॥

आवः	रक्षितवानसि	रक्षा की
१ कुत्सम्	कुत्सम्	कुत्स को
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
यस्मिन्	यस्मिन्	जिस में
चाकन्	अतिशयेनकाम-याञ्चक्रे	अति चाहना करते थे
प्र	प्र +	--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राव:	प्र+आवः प्रकर्षेण रक्षितवानसि	अच्छी प्रकार रक्षा की
युध्यन्तम्	युध्यन्तम्	युद्धकरते हुए को
वृषभम्	वृषभ-वद्बलिनम्	बैल जैसे बलवान को
२ दशऽद्युम्	दशद्युम्	दशद्यु को
शफऽच्युत:	खुरोत्थितः	खुरोंसे उठी हुई
रेणु:	पांसु	धूली
नक्षत	प्राप्तः (नक्ष्गतौ)	पहुंची
द्याम्	आकाशम्	आकाश को
उत्	उत् +	--
१ श्वैत्रेय:	श्वित्रायाः पुत्रः	श्वित्रा का पुत्र
नृऽसह्याय	नृणां सोढव्याय (कर्मणे)	पुरुषोंके सहने योग्य(कर्म)के लिये
तस्थौ	उत्+तस्थौ उत्थितवान्	उठ खड़ा हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र (त्वम्) कुत्सं रक्षितवानसि यस्मिन्नतिशयेन कामयाञ्चक्रे, युध्यन्तं वृषभ-(वहूलिनम्) दशद्युम् (च) प्रकर्षेण रक्षितवानसि (यस्मिन्युद्धे) (अश्वानाम्) खुरोत्थितःपांसुराकाशंप्राप्तः (अनन्तरम्) श्वित्रायाःपुत्रोनृणां सोढव्याय(कर्मणे)उत्थितः ॥१४॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र आपने कुत्स की रक्षा की जिस में आप अतीव चाहना करते थे (और) युद्ध करते हुए बैल (जैसे बलवान्) दशद्यु की अच्छी प्रकार रक्षा की (जिस युद्ध में घोड़ों के) खुरों से उठी हुई धूली आकाश को पहुंची (फिर) पुरुषों से सहने योग्य (कर्म) के लिये श्वित्रा का पुत्र उठ खडा हुआ ॥१४॥

(१) कुत्स ऋषि को इन्द्र बहुत चाहते थे क्योंकि वह उनके बडे भक्त थे, इन्द्रने इन की किसी युद्ध में रक्षा की थी ॥

(२) यहां पर ऋषि उस युद्ध का वर्णन करते हैं पहिले स्थल पर ऐसा घोर युद्ध हुआ कि घोडों के खुरों से उठी हुई धूलि आकाश तक पहुंची, इस युद्ध में इन्द्रने बलवान् दशद्युकी अत्यन्त रक्षा की ॥

(३) फिर श्वित्रा का पुत्र युद्ध के लिये उठखडा हुआ इस युद्ध का वर्णन अगले मन्त्र में है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११ । ११ । ११ । ११ ।

आवः शमंवृषभंतुग्र्यासु क्षेत्रजेषे-

मघवञ्छ्वित्र्यंगाम् । ज्योक्चिदत्रत-

स्थिवांसोअक्रञ्छत्रूयतामधरावेद-

नाकः ॥ १५ ॥

आवः	रक्षितवानसि	रक्षाकी
शमम्	शान्तम्	शान्तको
वृषभम्	वृषभ-(वद्धलिनम्)	बैल जैसे बलीको
तुग्र्यासु	अप्सु (निघं० १।१२)	जलों में
क्षेत्रऽजेषे	भूमिप्राप्त्यर्थम् (जेष् गतौ)	भूमिकी प्राप्ति के लिये
मघऽवन्	हे इन्द्र	हे इन्द्र
श्वित्र्यम्	श्वित्रायाःपुत्रम्	श्वित्रा के पुत्र को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गाम्	गतम्	गए हुए को
ज्योक्	चिरकालम्	चिरकाल
चित्	अपि	भी
अत्र	तत्र (आ०को०)	वहां पर
तस्थिऽवां-सः	अवस्थिताः-सन्तः	ठहरे (हुए)
अक्रन्	कृतवन्तः	किया
शत्रुऽयताम्	शत्रूनात्मन इच्छताम्	शत्रुता करने वालों के
अधरा	नीचानि	नीचे
वेदना	धनानि (आ०को०)	धनो को
अकः०	कृतवानसि	किया

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र (त्वम्) भूमिप्राप्त्यर्थमप्सुगतं शान्तं बलिनं श्वित्रायाः पुत्रं रक्षितवानसि तत्र (ते) चिरकालमप्यवस्थिताः (सन्तोयुद्धम्) कृतवन्तः (चरमे) शत्रूयतां धनानि नीचानि कृतवानसि ॥१५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे इन्द्र (आपने) भूमि की प्राप्ति के लिये जलों में गए हुए शान्त(और) बली श्वित्रा के पुत्र की रक्षा की,वहां (जलों)पर (वे) चिरकाल तक ठहरे हुए(युद्ध) करते रहे (अन्त में) शत्रुता करने वालों के धनों को आपने (जलों के) नीचे पहुंचा दिया ॥१५॥

श्वित्रा इस बीर की माता का नाम है, यह बडे बली और शान्त थे युद्ध में घबराते नहीं थे इन्होंने भूमि विजय के लिये जलों में अर्थात् समुद्र पर जाकर युद्ध किया, वहां पर चिर काल तक युद्ध रहा अन्त में इन्द्रने अपने आर्य उपासकों से शत्रुता करने वालों के सब धन समुद्र की तहमें पहुंचा दिये अर्थात् उनके बेडे डबो दिये और वे नाश को प्राप्त हुए ॥

॥ इति त्रयस्त्रिंशं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू०३४ मं०१

अश्विनौदेवतेआङ्गिरसो हिरण्यस्तूपऋषिः

जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२।

त्रिश्चिन्नो अद्याभवतंनवेदसाविभु-

र्वांयामउतरातिरश्विना। युवोर्हि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वां याम उत रातिरश्विना । युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः ॥१॥

त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
चित्	अपि	भी
नः	अस्माकम्	हमारे
अद्य	अद्य	आज
भवतम्	भवतम्	होवें
नवेदसा	हे मेधाविनौ (निघं०३।१५)	हे मेधावी
विऽभुः	विस्तीर्णः	विस्तीर्ण
वाम्	युवयोः	तुम दोनों का
यामः	मार्गः (अ०को०)	मार्ग
उत	अपि च	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रातिः	दानम्	दान
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्वि देवो
युवोः	युवयोः	आप का
हि	एव	निश्चय करके
२यन्त्रम्	अवलम्बः(आ०को०)	सहारा
२हिम्याऽइव	हिमर्ताविव	जैसे जाड़े में
२ वाससः	वस्त्रस्य	वस्त्र का
२ अभिऽआयंसेन्या	अभ्यागमनयोग्यौ (अभि-आ-यम्-औणादिकः सेन्यः प्रत्ययः)	पास आने योग्य
भवतम्	भवतम्	आप दोनों होवें
मनीषिऽभिः	मेधाविभिः (निघं० ३।१५)	मेधावीयों से

संस्कृतार्थः ।

हे मेधाविनावश्विनौ युवामद्यत्रिवारंचिदस्माकं भवतम्, युवयोर्मार्गो दानं च विस्तीर्णे (स्तः) युवयो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रेव हिमतौ वस्त्रस्येवावलम्बः (आस्त, युवम्) मेधावि-
भिरभ्यागमनयोग्यौ भवतम् ॥१॥

भाषार्थः ।

हे मेधावी अश्विदेवो आज आप तीन वार हमारे होवें, आपका मार्ग और दान विस्तीर्ण (हैं, हमें) आप का ही सहारा (है) जैसे जाड़े में वस्त्र का (होता है) आप मेधावियों करके पास आने योग्य होवें ॥१॥

विनियोग—यह सूक्त प्रातरनुवाक के आश्विन क्रतु में और आश्विन शस्त्र में भी पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० ४ । १५ । १)

(१) इस सूक्त में "त्रिः" शब्द का प्रायः "बारंबार" अर्थ प्रतीत होता है। अश्विदेव आज तीन वार हमारे हों अर्थात् बार म्बार हमारे हों ॥

(२) जैसे हेमन्त ऋतु में वस्त्र का सहारा होता है और वे सुहावने लगते हैं वैसे ही जीवनका सहारा होने से अश्विदेवता हमें प्रिय लगते हैं ॥

(३) ऐसे अश्विदेव हम मेधावियों करके पास आने योग्य हों। अर्थात् हम उनके पास जा सकें। मेधावी भी देवता की समीपता को देव कृपासे पासकते हैं अपनी योग्यता से नहीं ॥

अश्विनौदेवते जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२।

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोम-
स्य वेनामनु विश्व इद्विदुः । त्रयः स्कं-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भासः स्कम्भितास आरभे त्रिर्नक्तं

याथस्त्रिर्वश्विवना दिवा ॥२॥

१ त्रयः	त्रयः	तीन
१ पवयः	वज्र (सदृश चक्राणि)	वज्र (समानचक्र
मधुऽवाहने	मधुवाहने	मिठासके ढोने वाले में
रथे	रथे	रथ में
२ सोमस्य	चन्द्रमसः	चन्द्रमा की
२ वेनाम्	प्रियाम्	प्रिया को
अनु	अनुलक्ष्य	लक्ष्य रख कर
विश्वे	सर्वे (देवाः)	सब (देवता)
इत्	एव	ही
विदुः	जानन्ति	जानते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ त्रयः	त्रयः	तीन
१ स्कंभासः	स्तम्भाः	खंभे
स्कभितासः	स्थापिताः	लगाए हुए
आऽरभे	अवलम्बितुम्	सहारे के लिये
४ त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
४ नक्तम्	रात्रौ	रात्रि में
याथः	गच्छथः	तुम दोनोंजाते हो
४ त्रिः	त्रिवारम्	तीन वार
ऊं म०	हे	हे
अश्विना	अश्विनौ	अश्विदेवो
४ दिवा	दिवसे	दिन में

संस्कृतार्थः।

(युवयोः) मधुवाहने रथे त्रीणि वज्रसदृशचक्रा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

णि (सन्ति) (एनं रथं) सर्व एव (देवा:) चन्द्रमसो: प्रियामनुलक्ष्य (गच्छन्तम्) जानन्ति, (रथस्योपरि) अवलम्बनार्थं त्रय: स्तम्भास्स्थापिता: (सन्ति) हे अश्विनौ युवाम् (तादृशेन रथेन) त्रिवारं रात्रौ त्रिवारं दिवसे गच्छथ:॥२॥

भाषार्थः

मिठास को ढोने वाले (आप के) रथ में वज्र समान तीन पहिये (हैं) (इस रथ को) सब ही (देवता) चन्द्रमा की प्रिया को लक्ष्य रख कर (जाता हुआ) जानते हैं, (रथ के ऊपर) सहारे के लिये तीन खंभे लगाए हुए हैं, हे अश्विदेवो आप (उस रथ से) तीन वार रात्रि (और) तीन वार दिन में जाते हैं॥२॥

(१) अश्विदेवताओं के रथमें वज्र के सदृश दृढ तीन पहिये हैं। इन में से एक सुवर्णमय है जो क्षितिज के नीचे सूर्य रूप में चलता हैं, दूसरा रक्त माणिक्य का है जो क्षितिज के ऊपर समीप ही उषा रूपमें भ्रमण करता है, तीसरा अन्धेरे की कालस में लाली मिले हुए अर्थात् धूम्र वर्णका है जो उषासे ऊपर भ्रमण करता है। इसी के ऊपर मधुढोने वाला अश्वि देवताओं का रथ टिका हुआ है॥

(२) इस बात को सब देवता जानते हैं कि यह रथ सोम की प्रिया ज्योत्स्ना वा सूर्य्या को लक्ष्य रखकर जारहा है। सूर्यकी कन्या सूर्या (सूर्यके प्रकाश) के साथ चन्द्रमा के विवाह की कथा ऋ०मं-१० सू० ८५ में है। वहां पर अश्वि देवताओं को सूर्या के जन्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(बराती) रूप से वर्णन किया है। उस सूक्त के १६ वें मंत्र में इसी तीन पहियों वाले रथ का वर्णन है और जो " गुहाचक्रं " छिपा हुआ पहिया वहां कहा है वह क्षितिज के नीचे सूर्य रूपी पहिया है ॥

(इस सुन्दर कथा को ज्योतिर्विद् लौकिक रीतिसे यों वर्णन करते हैं। कि चन्द्रमा भी पृथिवी की न्याईं स्वतः प्रकाशित नहीं है और सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हो कर चमकता है) ॥

(३) दो वा चार पहियों के रथमें सहारे कि लिये चारखम्भे होते हैं परन्तु अश्वियों के तीन पहियों वाले रथमें तीन ही खम्भे हैं ॥

(४) इस रथमें अश्विदेव तीन वार अर्थात् बारम्बार आकाश में यात्रा करते हैं, जैसे ये देवता सूर्य उदय से पूर्व चलते हैं वैसे ही सूर्यास्त के पीछे कई दिनतक उत्तर मेरु के समीप इनका रथ चारों ओर क्षितिज से थोड़ा ऊपर फिर साथ २ भ्रमण करता हुआ दीखता है ॥

अश्विनौ देवते जगती छन्दः ।१२।१२।१२।१२।

समाने अहन्त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम् । त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम् ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स॒मा॒ने	समाने	समान में
अह॑न्	अह्नि	दिन में
त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
१ { अ॒व॒द्य॒ऽगो॑ ह॒ना॒	हे अवद्यस्यदोषस्य गूहितारौ	हे दोषके ढकने वाले
त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
अ॒द्य	अद्य	आज
य॒ज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
मधु॑ना	मधुना	मिठास से
मि॒मि॒क्ष॒तम्	सेक्तुमिच्छतम्	सिञ्चन करने की इच्छा करो
त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
वाज॑ऽवतीः	बलवतीः	बलवालों को
इष॑ः	अन्नानि	अन्नों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अ॒श्वि॒ना॒	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवो
यु॒वम्	युवाम्	तुम दोनों
दो॒षाः	रात्रीः (अत्यन्त संयोगे द्वितीया)	रात्रियों में
अ॒स्मभ्य॑म्	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
उ॒ष॑सः	दिवसान् (अत्यन्त संयोगे द्वितीया)	दिनों में
च॒	च	और
पि॒न्व॒त॒म्	प्रवहतम्	बहाओ

संस्कृतार्थः

हे दोषस्य गूहितारौ (युवां) समानेऽह्नि त्रिवारम्, अद्य त्रिवारं (अस्माकम्) यज्ञम् मधुना सेक्तुमिच्छतम्, त्रिवा रात्रिषु दिवसेषु च बलवन्त्यन्नान्यस्मभ्यं प्रवहतम् ॥३॥

भाषार्थः

हे दोष के ढकने वालो आप एक दिन में तीन वार (और) आज तीन वार (हमारे) यज्ञ को मिठास से सिञ्चन करने की इच्छा करो, और दिन रात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में तीन वार बल वाले अन्नों को हमारे लिये बहाओ ॥३॥

(१) अश्विदेव हमारे दोषों को ढकने वाले हैं। हमें भी दूसरों के दोष ढकने का शील रखने वाला होना चाहिये। ऐसे अश्विदेव एक दिन में तीन वार और आज भी तीन वार हमारे यज्ञमें आकर मिठास को बरसावें और तीन वार अर्थात् वारम्वार बल कारक अन्नोंको दिन रात हमारे लिये वहावें॥

अश्विनौ देवते जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२।

त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम्। त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम् ॥४॥

त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
वर्तिः	वर्ततेऽत्रेतिवर्ति गृहम् (द्वितीयैकवचनस्यसुरादेशः)	घर को
यातम्	प्राप्नुतम्	प्राप्त हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
१ अनुऽव्रते	अनुकूलम् (द्वितीयायाःशेरादेशः)	अनुकूल को
१ जने	जनम् (,, ,,)	जन को
३ त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
२ सुप्रऽअव्ये	सुरक्षणीयम्(,, ,,)	भली प्रकार रक्षा करने योग्यको
१ त्रेधाऽइव	यथात्रिभिःप्रकारै स्तथा	मानों तीन प्रकार से
शिक्षतम्	शिक्षेथाम् (व्यत्ययेनपरस्मैपदम्)	शिक्षित करो
त्रिः	त्रिवारम्	तीन वार
नान्द्यम्	नन्दनीयम् (पदार्थम्)	आनन्ददेनेवाले (पदार्थ) को
वहतम्	प्रापयतम्	प्राप्त करो
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युवम्	युवाम्	तुम दोनों
त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
पृक्षः	अन्नम् (निघं०२।७)	अन्न को
अस्मे	अस्मभ्यम् (चातुर्थ्याः शेरादेशः)	हमारे लिये
अक्षराऽइव	यथा न क्षरति तथा	जिस प्रकार कम न हो
पिन्वतम्	प्रवहतम्	बहाओ

संस्कृतार्थः

(हे अश्विनौ युवाम्) त्रिवारं (अस्मदीयम्) गृहं प्राप्नुतम् त्रिवारमनुकूलं जनम् (प्राप्नुतम्) सुरक्षणीयम् (जनम्) त्रिभिः प्रकारैर्यथास्यात्तथा त्रिः शिक्षेथाम् हे अश्विनौ युवां त्रिवारं नन्दनीयम् (पदार्थमस्मान्) प्रापयतं त्रिवारम् (अस्मदर्थम्) अक्षयमन्नं प्रवहतम् ॥४॥

भाषार्थः ।

(हे अश्विदेवो आप दोनों) तीन वार (हमारे) घर आवें तीन वार अनुकूल जन को (प्राप्त हों)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुरक्षा करने योग्य मनुष्य को तीन प्रकार से तीन वार शिक्षित करें हे अश्विदेवा आप तीन वार (हमको) सुख देने वाले पदार्थं को प्राप्त करावें (और) तीन वार क्षय रहित अन्न को हमारे लिये बहावें ॥४॥

(१) अनुकूल जन वा जाति वह है जो अश्वि देवताओं के नियम के अनुकूल चलती है अथवा ऋषि अपने आप को अनुकूल जन कहते हैं॥

(२) भली प्रकार से रक्षा करने के योग्य भी वही है जो देवताओं की इच्छा के अनुकूल चलता है। उस व्यक्ति वा जाति को अश्वि देवता

(३) वारम्वार शिक्षित करें और ऐसा शिक्षित करें जैसे कोई बहुत प्रकार से सुशिक्षित सुसभ्य जाति वा व्यक्ति हो॥

अश्विनौ देवते जगती छन्दः।१२।१२।१२।१२।

त्रिर्नो॑ र॒यिं व॑हतमश्विना यु॒वं त्रिर्दे॒वता॑ता॒ त्रिरु॒तावतं॒ धियः॑। त्रिः सौ॑भग॒त्वं त्रिरु॒त श्रवां॑सि नस्त्रि॒ष्ठं वां॒ सूरे॑ दुहि॒ता रु॑हद्रथम् ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
नः	अस्मान्	हम को
रयिम्	धनम्	धन को
वहतम्	प्रापयतम्	प्राप्त कराओ
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्वि देवो
युवम्	युवाम्	तुम दोनों
त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
देवऽताता	दैवेकर्मणि (स्वार्थेतातिल्सप्तम्या डादेशः)	दैव कर्म में
त्रिः	त्रिवारम्	तीन वार
उत	अपिच	और
अवतम्	रक्षतम्	रक्षा करो
धियः	चित्तचेष्टाः	चित्त की चेष्टा-ओं को
त्रिः	त्रिः	तीनवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौभगऽ-त्वम्	सौभाग्यम्	सौभाग्य को
त्रिः	त्रिः	तीनवार
उत	अपिच	और
श्रवांसि	यशांसि (धा०की)	यशों को
नः	अस्मभ्यम्	हम को
त्रिऽस्थम्	चक्रत्रयेऽव-स्थितम्	तीन पहियों पर ठहरे हुए में
वाम्	युवयोः	तुम्हारे
सूरे	सूर्य्यस्य (षष्ठ्याः ग्रेरादेशः)	सूर्य्य की
दुहिता	पुत्री	पुत्री
आ	आ +	–
रुहत्	आ+रुहत् आरू-ढवती	चढी
रथम्	रथम्	रथ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ युवामस्मान्धनंत्रिः प्रापयतं दैवे कर्म-णि (अस्मान्) त्रिः (प्रापयतम्) अपिच (अस्माकम्) चित्तचेष्टास्त्रीरक्षतम् अस्मान् सौभाग्यं त्रिः (प्रापयतम्) अपिच यशांसि त्रिः (प्रापयतम्) युवयोः चक्रत्रयेऽवस्थितं रथं सूर्यस्य दुहिताऽऽरूढवती ॥५॥

भाषार्थः

हे अश्विदेवो आप दोनों हमारे लिये धन को तीन वार प्राप्त कराओ दैव कर्म में (हम को) तीनवार (लगाओ) और (हमारे) चित्त की चेष्टाओंको तीन वार रक्षा करो, हम को सौभाग्य तीन वार (प्राप्त कराओ) और यश तीन वार (प्राप्त कराओ), आपके तीन पहियों पर ठहरे हुए रथ में सूर्य की पुत्री चढी ॥५॥

अश्विदेव हम को बारम्बार धन प्राप्त करावें। बारम्बार हम को देव सम्बन्धी कर्म में लगावें बारम्बार हमारे चित्त की चेष्ठाओं (Thoughts) की रक्षा करें बारम्बार हमको सौभाग्य और यश प्राप्त करावें। इन्हीं अश्विदेवों के रथमें सूर्य की पुत्री ज्योत्स्ना चढीथी जब ये चन्द्रमा के जनेती बनकर उसे व्याहने गए थे ॥

अश्विनौ देवते जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२।

त्रिर्नो॑ अश्विना दि॒व्यानि॑ भेष॒जा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः । ओ-

मानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म

वहतं शुभस्पती ॥६॥

१ त्रिः	त्रिवारम्	तीन वार
नः	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवो
दिव्यानि	दिव्यानि	दिव्यों को
भेषजा	भेषजानि	रोग शमन के उपायों को
त्रिः	त्रिवारम्	तीन वार
पार्थिवानि	पार्थिवानि	पृथिवीमें होने वालों को
त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
ऊम्०	हे	हे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दत्तम्	प्रयच्छतम्	दो
अत्ऽभ्यः	जलेभ्यः	जलों में से
ओमानम्	रक्षाम् (आ०को०)	रक्षा को
शंऽयोः	सुखम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	सुख को
ममकाय	मदीयाय	मेरे के लिये
२ सूनवे	पुत्राय	पुत्र के लिये
२ त्रिऽधातु	त्रिगुणम् (ऋ०१।१५४।४)	तीन गुने
शर्म	सुखम्	सुख को
वहतम्	प्रापयतम्	प्राप्त करो
शुभः	शोभनस्य	शोभन के
पती०	पालकौ	पालने वालो

संस्कृतार्थः

हे अश्विनावस्मभ्यं दिव्यानि भेषजानित्रिः प्रय-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च्छतं पार्थिवानि त्रिः (प्रयच्छतम्) जलेभ्यस्त्रिः (प्रयच्छतम्) मदीयाय पुत्राय रक्षां सुखम् (च प्रयच्छतम्) हे शोभनस्य पालकौ (सर्वानस्मान्) त्रिगुणं सुखं प्रापयतम् ॥६॥

भाषार्थः

हे अश्विदेवो हमें रोग शमन के दिव्य उपायों को तीन वार दो, पृथिवी में होने वाले (उपायों) को तीन वार (दो) जलों में से (रोग शमन के उपायोंको) तीन वार (दो) मेरे पुत्र को रक्षा और सुख (प्रदान करो) हे सुन्दर के पालने वाले (हम सब को) तीन गुने सुख को प्राप्त कराओ ॥६॥

(१) अश्विदेव हमें दिव्य और पार्थिव और जलोंसे होने वाले रोग शमनके उपायों को बारम्बार देवें दिव्य उपायों के लिये देखो अथर्ववेद।

(२) इस पदमें ऋषि अपने पुत्रके लिये रक्षा और सुख की प्रार्थना करते हैं। ऐसी प्रार्थना हम सबको करनी चाहिये ॥

(३) 'त्रिधातु' अनेक मंत्रों में त्रिगुण के अर्थ में आया है इसी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग कात्यायन मनि करते हैं (देखो का० श्रौ० सू० १।५८)॥

अश्विनौ देवते जगती छन्दः १२।१२।१२।१२।

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिधातुपृथिवीमस्वायतम् । तिस्रो-

नासत्यारथ्यापरावत आत्मेववातः

स्वसराणिगच्छतम् ॥ ७ ॥

त्रिः	त्रिवारम्	तीन वार
नः	अस्माकम्	हमारे
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विव देवो
यजता	यष्टव्यौ	पूजने योग्य
दिवेदिवे	प्रति दिनम्	प्रति दिन
परि	परि+	——
१ त्रिधातु	त्रिगुणम्	तिगुने
पृथिवीम्	पृथिवीम्	पृथिवी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अशायतम्	परि+अशायतम् परिवृत्य शयितवन्तौ (शीङ् स्वार्थण्यन्त:)	लपेटे देकर सोए हो
३ तिस्त्रः	तिस्त्रः (शालाः)	तीनों (शालाओं) को
२ नासत्या	असत्य रहितौ	झूठ से रहित
रथ्या	रथिनौ	रथी
३ पराऽवतः	दूरात् (निघं० ३।२६)	दूर से
४ आत्माऽइव	आत्मभूतइव	आत्म रूपकी न्याई
वातः	वायुः	वायु
स्वसराणि	शरीराणि (सा०भा०)	शरीरों को
गच्छतम्	प्राप्नुतम्	प्राप्त हो

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ (युवाम्) प्रतिदिनम् (अस्माभिः) त्रिर्यष्टव्यौ (भवतम् युवां) पृथिवीं त्रिगुणं परिवृत्य शयितवन्तौ हे असत्यरहितौ रथिनौ (युवामस्मत्-)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिस्रः(शालाः) दूरतः प्राप्नुतं यथात्मभूतो वायुः शरीराणि(प्राप्नोति) ॥७॥

भाषार्थः

हे अश्विदेवो आप प्रति दिन (हम से) तीन वार पूजने योग्य (हों) आप दोनों पृथिवी को तीन लपेटे देकर सोए हैं,हे झूठ से रहित रथी आप दोनों (हमारी) तीनों (शालाओं) को प्राप्त हों जैसे आत्मरूपी वायु शरीरों को (प्राप्त होती है) ॥७॥

(१) अश्विदेव अपने रथके सुवर्णमय रक्त वर्ण और धूम्र वर्ण पहियों से पृथिवी के तीन लपेटे देकर सोए हुए हैं। वे प्रतिदिन तीन वार हमारे पूज्य हों॥

(२) अश्विदेव झूठ से रहित हैं। (उनके उपासक आर्यों को भी झूठ से रहित होने का अभिमान था, और अब भी शीघ्र हो जाना चाहिये)॥

(३) वे रथी दूर आकाश से हमारी तीनों शालाओं को प्राप्त हों, तीनों शालाओं से आहवनीय शाला गार्हपत्य शाला और सभ्य शाला तात्पर्य्य होसकताहै। अथवा एक आहवनीय गार्हपत्य शाला दूसरी सभ्य और तीसरी आव सथ्य शाला भी हो सकता है॥

(४) अश्विदेव हमारी शालाओं को ऐसे प्राप्त हों जैसे शरीरों में आत्म भूत वायु अर्थात् प्राण। जैसे विना प्राण के शरीर सूने हैं वैसे बिना अश्विदेवों के हमारी शालाएं सूनी हैं

अश्विनौदेवतेनिचृज्जगती छन्दः१२।१२।१२।१२

त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रय॑ आ॒ह्वावा॑स्त्रे॒धा ह॒विष्कृ॒तम् ।

ति॒स्रः पृ॑थि॒वीरु॒परि॑ प्र॒वा दि॒वो नाकं॑

र॑क्षेथे द्यु॒भि॑र॒क्तुभि॒र्हि॑तम् ॥८॥

त्रिः	त्रिवारम्	तीनवार
अ॒श्वि॒ना॒	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवों
सिन्धु॑ऽभिः	स्यन्दनस्वभावै- र्जलैः	जलों से
१ स॒प्तमा॑- तृ॒ऽभिः	सप्तमातरो येषां तैः	सात माताओं वालों से
त्रयः॑	त्रयः	तीन
२ आ॒ऽह्वा॒वाः	आहावाः	होता की पुकार
त्रे॒धा	त्रिभिः प्रकारैः	तीन प्रकार से
१ ह॒विः	हविः	हवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृतम्	सम्पादितम्	की गई है
तिस्रः	तिस्रः	तीनों को
४ पृथिवीः	पृथिवीः	पृथिवियों को
उपरि	उपरि	ऊपर
प्रवा	गच्छन्तौ (प्रुङ् गतौ विभक्तेराकारः)	जाते हुए
दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक के
नाकम्	नभोमण्डलम् (आ०को०)	आकाशमंडल को
रक्षेथे०	रक्षेथे	रक्षा करते हो
द्युऽभिः	अहोभिः	दिनों से
अक्तुऽभिः	रात्रिभिः	रात्रियों से
हितम्	दृढम्	दृढ को

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ (अस्माभिः) सप्तमातृभिर्जलैस्त्रिः (सोमाभिषवः कृतः) त्रय आहावाः (आलापिताः)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिभिः प्रकारैर्हविस्सम्पादितम् (युवाम्) द्युलोकस्योपरि गच्छन्तौ तिस्रः पृथिवी दृढम् (च) नभोमण्डलम् अहर्निशं रक्षेथे ॥८॥

भाषार्थः

हे अश्विदेवो हमने सात माताओं वाले जलों से तीन वार (सोम निष्पीडन) किया है, तीनों आहाव (आलाप किए हैं) तीन प्रकार से हवि सिद्ध की है आप द्युलोकके ऊपर चलते हुए तीनों पृथिवियों और दृढ आकाश मण्डल को दिन रात रक्षा करते हैं ॥८॥

(१) जल सात माताओं वाले इस लिये हैं कि सात समुन्द्रों (देखोपृ०७७७) से उनकी उत्पत्ति होती है। जब समुन्द्रों के जलों को सूर्य भगवान अपनी रश्मियों से खैंचकर बादल बनाकर पृथिवी पर बरसाते हैं। तभी कूप सरोवर नदी और स्त्रोतों में जलों का आगमन होता है॥

हमने ऐसे जलोंसे प्रातः माध्यन्दिन और तृतीय सवन सम्बन्धी सोम निष्पीडन कर लिया है॥

(२) अध्वर्यु के प्रति होता की पुकार को आहाव कहते हैं। प्रातः सवन में 'शोंसावोम्' (हम दोनों मिल कर शस्त्र पाठ करें) माध्यन्दिन सवन में 'अध्वर्यो शोंसावोम्'और तृतीय सवनमें 'शोशों सावोम्' ये तीनों सवन के तीन आहाव हैं॥

हमने तीनों आहावों का आलाप कर लिया है॥

(३) तीन प्रकार की हवि अर्थात् प्रातः सवन में पुरोडाश का होम, माध्यन्दिन सवन में दक्षिणा होम और तृतीय सवन में चरुका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होम, ये हविभी हमने सिद्ध करके होम करदी हैं। आशय यह है कि जैसे अश्विदेव दिन रात अपने कर्म में तत्पर रहते हैं वैसे हम भी अपने कर्म में प्रमाद रहित होकर तत्पर हैं॥

(४) तीन पृथिवी अर्थात् पृथिवी स्थानी (देखो निघं० ५।३) जैसे हमारी पृथिवी, मंगल, बुध, इत्यादि ग्रह (Planets) दूसरी अन्तरिक्ष स्थानी (निघं० ५।५) जैसे चन्द्रमा और अन्य उपग्रह (Satellites) तीसरी द्युस्थानी (निघं० ५।६) जो सूर्य से अन्य तारों से धारण की हुई हैं॥

इन तीनों प्रकार की पृथिवियों को और इन के आधारभूत दृढ आकाश मण्डल को अश्विदेव परमात्मा की धारक और रक्षक शक्ति के प्रतिनिधि हुए २ दिन रात रक्षा करते हैं॥

अश्विनौदेवते त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११

क्व१त्रीचक्रात्रिवृतोरथस्य क्व१त्रयोवन्धुरोयेसनीळाः। कदायोगोवाजिनोरासभस्य येनयज्ञंनासत्योपयाथः॥९॥

क्व	कुत्र	कहां
त्री	त्रीणि (णिलोपः)	तीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च॒क्रा	चक्राणि (,,)	पहिये
त्रि॒ऽवृ॑तः	त्रिरावेष्टितस्य	तीन लपेटे वाले के
रथ॑स्य	रथस्य	रथ के
क्व॑	कुत्र	कहां
त्रय॑ः	त्रयः	तीन
व॒न्धुर॑ः	नीडबन्धनाधार भूताः(वचन वत्ययः)	पीढ़ी बांधने के (काष्ठ)
ये	ये	जो
स॒ऽनी॑ळाः	नीडेन आसनस्थानेन सहिताः	पीढ़ी के सहित
क॒दा	कदा	कब
योग॑ः	योगः	योग
वा॒जिन॑ः	बलवतः	बलवाले का
२ रास॑भस्य	गर्दभस्य	गधे का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

येन	येन	जिससे
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
नासत्या	हे असत्य रहितौ	हे झूठ से रहित
उपऽयाथः	प्राप्नुथः	प्राप्त होते हो

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ (युवयोः) त्रिरावेष्टितस्य रथस्य त्रीणि चक्राणि क्व (सन्ति) ये सनीडा आधारभूता स्त्रयः (काष्ट विशेषाः) (त) क्व (सन्ति) बल।तो गर्दभस्य (रथे) कदा योगः (सम्भवति) येन (रथेन युवाम्) यज्ञं प्राप्नुथः ॥९॥

भाषार्थः

हे अश्विदेवो(आप के)तीन लपेटे वाले रथके तीन पहिये कहां (हैं) जो पीढ़ी के सहित तीन बांधने के काष्ट (हैं वे) कहां (हैं) बलवाले गधे का (रथ में) कब योग (होगा) जिस रथ से आप यज्ञ को प्राप्त होते हैं ॥९॥

(१ इस मंत्र में ऋषि अश्विदेवताओं के आगमन के लिये व्याकुलता प्रगट करतेहैं। और पूछते हैं कि आपकातीन लपेटे वाला रथ (एक लपेटा क्षितिज के नीचे और दो ऊपर) कहां है? रथकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीन पीढी जिस पर बैठते हैं वे कहां हैं ? पीढी बांधनेके तीन बन्धुर (जिनके साथ पीढी बांधी जाती है) कहां हैं आप के रथ में बलवान् गर्दभ कब जुडेगा ? जिस को जोडकर आप यज्ञ में आते हैं ॥

(२) अश्विदेवताओं के रथमें कालस में लाली मिला हुआ धूम्र ज्योति रूप गधा जुडता है ॥

अश्विनौ देवते जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२।

आनासत्यागच्छतंहूयतेहवि र्मध्वः

पिबतंमधुपेभिरासभिः । यवोर्हिपूर्वं

सवितोषसोरथमृतायचित्रंघृतवन्त

मिष्यति ॥१०॥

आ	आ+	—
नासत्या	हे असत्यरहितौ	हे झूठसे रहित
गच्छतम्	आ+गच्छतम्	आओ
हूयते	हूयते	होम कीजाती है
हविः	हविः	हवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्वः	मधुराणि(हवींषि) (लिङ्गव्यत्ययः,यथा-देशः)	मीठे(हवियों)को
पिबतम्	पिबतम्	पीओ
मधुऽपेभिः	मधुपैः	मधु पीने वालों से
आसऽभिः	आस्यैः	मुखों से
युवोः	युवयोः	तुम दोनों के
हि	खलु	निश्चय करके
पूर्वम्	पूर्वम्	पहिले
१ सविता	सविता	सविता
उषसः	उषसः	उषा से
रथम्	रथम्	रथ को
ऋताय	यज्ञार्थम्	यज्ञ के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्रम्	विचित्रम्	विचित्रको
घृतऽवन्तम्	घृतोपेतम्	घृत युक्त को
इष्यति	प्रेरयति	प्रेरणा करता है

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ आगच्छतं हविर्हूयते (युवाम्) मधुपैरास्यैर्मधुराणि (हवींषि) पिबतं, सविता देवः उषसः पूर्वं युवयोर्घृतोपेतं विचित्रं रथं यज्ञार्थं प्रेरयति ॥१०॥

भाषार्थः

हे अश्विदेवो आओ हवि होम की जाती है, मधु पान करने वाले मुखों से मीठी हवियों को पान करो, सविता देव उषा से पहले आप दोनों के घृत युक्त विचित्र रथ को यज्ञ के लिये प्रेरण करते हैं ।१०।

(१) सविता शब्द परमात्मा की प्रेरक शक्तिको बोधन करता है। जिस प्रकार वह सूर्यरूप से इस पृथिवीके जीवोंकी सब चेष्टाओं को प्रेरण करते हैं वैसे ही उषा से पहिले अश्वियों के रथको हमारे यज्ञको ओर प्रेरण करते हैं। पहिले अश्वियों का प्रादुर्भाव होता है, फिर उषा का फिर द्युलोक की अग्नि अर्थात् सूर्य्य का। प्रातरनुवाक में ऋतुओं का यही क्रम है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विनौ देवते जगती छन्दः १२।१२।१२।१२।

आनासत्यात्रिभिरेकादशैरिह
देवेभिर्यातंमधुपेयमश्विना । प्रायु
स्तारिष्टंनीरपांसिमृक्षतं सेधतंद्वेषो
भवतंसचाभुवा ।११।

आ	आ+	–
नासत्या	असत्य रहितौ	हे झूठसे रहित
१ त्रिऽभिः	त्रिभिः	तीन
१एकादशैः	एकादशैः	ग्यारहों से
इह	इह	यहां
देवेभिः	देवैःस्सह	देवताओं केसाथ
यातम्	आ+यातं आगच्छतम्	आओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मधुऽपेयम्	मधुरपानम् (अभिलक्ष्य)	मधुरपान को (लक्ष्यरख कर)
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवो
प्र	प्र+	–
आयुः	आयुष्यम्	आयु को
तारिष्टम्	प्र+तारिष्टं प्रवर्धयतम् (लोडर्थे लुङ्)	अतिशय करके बढ़ाओ
निः	निः +	–
रपांसि	पापानि	पापों को
मृक्षतम्	निः+मृक्षतम्, निवारयतम् (मृक्षमङ्घाते)	निवारण करो
सेधतम्	प्रतिषेधयतम्	हटाओं
द्वेषः	शत्रून्	शत्रुओं को
भवतम्	भवतम्	हो
सचाऽभुवा	सहा वस्थितौ (सचेतिसहार्थे निपात॥)	साथ रहनेवाळे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

हे असत्य रहितौ (अश्विनौ युवां) त्रिभिरेकादशै देवैस्सह मधुरपानम् (अभिलक्ष्य) इहागच्छतम्, (अस्मत्-) आयुष्यं प्रवर्धयतं पापानि निवारयतं शत्रून्प्रतिषेधतं सहावस्थितौ (च) भवतम् ॥११॥

भाषार्थः

हे झूठ से रहित अश्विदेवो आप दोनों तेतीस देवताओं के साथ मधुर पान के लिये यहां आओ (हमारी) आयु को बढाओ पापों को निवारण करो, शत्रुओं को हटाओ और हमारे साथ रहने वाले बनो ॥११॥

(१) ऋ० १।१३९।११ में ११ द्युलोक में, ११ पृथिवी में और ११ अन्तरिक्ष में रहने वाले देवता वर्णन किए हैं। ये सब एक ही परमात्म शक्तिके नाना रूपसे प्रकाशक हैं। पृथिवी में रहने वाले देवता जैसे ॥

अग्निः, आपः, ओषधयः, पितुः, नद्यः, इत्यादि। अन्तरिक्षमें रहने वाले देवता जैसे

वायुः मरुतः, रुद्रः, पर्जन्यः, इन्द्रः, इत्यादि। द्युलोक में रहने वाले देवता जैसे।

अश्विनौ, उषाः, सविता, भगः, पूषा, विष्णुः, वरुणः, इत्यादि

इन सब देवताओं के साथ अश्विदेव आकर हमारे साथ वास करें और किसी समय भी हमारा परित्याग न करें ॥

हमारा चित्त दिन रात देवताओं के साथ रहने से ही हम देव तुल्य बन सकते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विनौ देवते त्रिष्टुप्छन्दः १२।१२।१२।१२।

आनो अश्विना त्रिवृता रथेनार्वाञ्चं रयिं वहतं सुवीरम्। शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ ॥१२॥

आ	आ+	-
नः	अस्माकम्	हमारे
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवो
त्रिवृता	त्रिरावेष्टितेन	तीन लपेटे वालेसे
रथेन	रथेन	रथ से
अर्वाञ्चम्	अभिमुखम्	सामने
रयिम्	धनम्	धन को
वहतम्	आ+वहतम्	लाओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽवीरम्	सुवीरैरुपेतम्	खूबवीरों से युक्तको
शृण्वन्ता	शृण्वन्तौ	सुनते हुए
वाम्	युवाम्	तुम दोनों को
अवसे	रक्षायै	रक्षा के लिए
जोहवीमि	आह्वयामि	मैं बुलाता हूं,
वृधे	वर्धनाय	वृद्धि के लिये
च	खलु (आ०को०)	निश्चय करके
नः	अस्माकम्	हमारे
भवतम्	भवतम्	हो
वाजऽसातौ	संग्रामे (निघं०२।१७)	युद्ध में

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ त्रिरावेष्टितेन रथेन सुवीरैरुपेतं धनम् (अस्मत्) अभिमुखं प्रापयतम् (अहम्) शृण्वन्तौ युवां रक्षणार्थमाह्वयामि, संग्रामे खल्वस्माकं वर्धनाय भवतम् ॥१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः

हे अश्विदेवो तीन लपेटे वाले रथ से, खूब वीरों से युक्त धन को हमारे सामने लाकर दो, मैं सुनने वाले आप दोनों को बुलाता हूं, आप निश्चय करके संग्राम में हमारी वृद्धि के लिये होवें ॥१२॥

(१) यह निश्चय रखना चाहिये कि देवता हमारी पुकार को सुनते हैं, और रक्षाके लिये बुलाने से अवश्य आते हैं। हम बुलाएंगे तो अश्विदेव अपने त्रिवृत रथ में हमारे लिये धन और खूब वीर पुत्रों को लेकर अवश्य आवेंगे और युद्धमें हमारी वृद्धि कराएंगे॥

॥ इति चतुस्त्रिंशं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० ३५ मं० १।

अग्न्यादयो लिङ्गोक्ता देवता हिरण्यस्तूप० ऋषिर्जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह्वयामि	ह्वयामि	मैं बुलाता हूं
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
प्रथमम्	आदौ	पहिले
स्वस्तये	कल्याणाय	कल्याण के लिये
ह्वयामि	ह्वयामि	मैं बुलाता हूं
मित्रावरुणौ	मित्रावरुणौ	मित्र और वरुण को
इह	अस्मिन्स्थाने	यहां पर
अवसे	रक्षणाय	रक्षा के लिये
ह्वयामि	ह्वयामि	मैं बुलाता हूं
१ रात्रीम्	रात्रीम्	रात्रि को
जगतः	जङ्गमस्यप्राणिजातस्य	चलनेवाले प्राणि समूह के
निऽवेशनीम्	विश्रामदाम्	विश्राम देने वाली को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह्वयामि	ह्वयामि	मैं बुलाता हूं
देवम्	देवम्	देव को
२ सवितारम्	सवितारम्	सविता को
ऊतये	रक्षणाय	रक्षा के लिये

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) अस्मिन्स्थाने मङ्गलायादावग्निं ह्वयामि मित्रा वरुणौ रक्षणार्थं ह्वयामि, जङ्गमस्य प्राणिजातस्य विश्रामदां रात्रिं ह्वयामि सवितारं देवम् (च) रक्षणार्थं ह्वयामि ॥१॥

भाषार्थः ।

मैं यहां पर मंगल के लिये पहिले अग्नि को बुलाता हूं मित्र और वरुण को रक्षा के लिये बुलाता हूं, चलने वाले प्राणि समूह के विश्राम देने वाली रात्रि को बुलाता हूं और सविता देव को रक्षा के लिये बुलाता हूं ॥१॥

विनियोग—अभिप्लवषडह के वैश्वदेव शस्त्र में सविता का निविद इस सूक्त में मिलाकर पढ़ा जाता है (आ०श्रौ०सू०उ०१।७।१)

(१) सब प्राणियों को विश्राम देकर कल्याण करने से रात्रि भी देवताओं की तरह हम से आवाहन और पूजन करने योग्य है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) सविता (षूप्रसवे से) परमात्मा की प्रेरक शक्ति का नाम है जिस क. एक रूप सूर्य्य है ॥

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

आकृष्णेनरजसावर्तमानो निवे-
शयन्नमृतंमर्त्यंच । हिरण्ययेन
सविताथेना देवोयातिभुवनानि-
पश्यन् ॥२॥

आ	आ+	—
१ कृष्णेन	कृष्णवर्णेन	काले से
१ रजसा	अन्धकारेण सह (आ०की०)	अन्धकार के साथ
१ वर्तमानः	आ+वर्तमानः भ्रमणं कुर्वन्	भ्रमण करता हुआ
१ निऽवेशयन्	स्थापयन्	स्थापन करता हुआ
१ अमृतम्	मरणरहितम् (देवादिकम्)	मरण रहित (देवादि) को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ मर्त्यम्	मर्त्यम् (मनुष्यादिकम्)	मरने वाले (मनुष्यादि) को
च	च	और
हिरण्ययेन	सुवर्णमयेन	सुवर्ण के बने हुए से
सविता	सविता	सविता
रथेन	रथेन	रथ से
आ	आ+	–
देवः	देवः	देव
२ याति	आ+याति	आता है
२ भुवनानि	प्राणिनः(भा०को)	प्राणियों को
२ पश्यन्	पश्यन्	देखता हुआ

संस्कृतार्थः ।

सविता (देवः) कृष्ण वर्णेनान्धकारेण सह भ्रमणं कुर्वन्नमृतं मर्त्यंच (स्वस्वकर्मणि) स्थापयन् (मनुष्यादीन्) प्राणिनः पश्यन् सुवर्णमयेन रथेन (अस्मत्समीपम्) आगच्छति ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

सविता (देव) काले अंधकार के साथ भ्रमण करते हुए मरण रहित को और मरने वाले को (अपने २ कर्म में) स्थापन करते हुए (मनुष्यादि) प्राणियों को देखते हुए सुवर्णके रथसे (हमारे पास) आते हैं॥२॥

(१) परमात्मा की प्रेरक शक्ति का एक आविर्भाव यह है कि प्रकाश और अन्धेरा रूप से पृथिवी के सब स्थानों में भ्रमण करते हुए देव मनुष्य पशु वृक्ष इत्यादि सब को अपने २ कर्म में नियुक्त करते हैं॥

(२) यह शक्ति सब लोकोंको प्रत्यक्ष होने के लिये, सूर्य्य रूपी रथ में चढ़ कर नित्य प्रति आकाश में चलती हुई प्रतीत होती है तात्पर्य्य यह है कि पृथिवी पर रहने वालों के लिये परमात्मा की प्रेरक शक्ति सूर्य्य है॥

सविता देवता भुरिक् त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।१२।११।

यातिदेवःप्रवतायात्युद्वता याति शुभ्राभ्यांयजतोहरिभ्याम्। आदे-वोयातिसवितापरावतो ऽपविश्वा-दुरिताबाधमानः॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

याति	गच्छति	जाता है
देवः	देवः	देव
१ प्रऽवता	प्रवणमार्गेण	उतराई के रस्ते से
याति	गच्छति	जाता है
१ उत्ऽवता	ऊर्ध्वमार्गेण	चढ़ाई के रस्ते से
याति	गच्छति	जाता है
१ शुभ्राभ्याम्	श्वेताभ्याम्	श्वेतों से
यजतः	यष्टव्यः	पूजने योग्य
१ हरिऽभ्याम्	अश्वाभ्याम्	दो घोड़ों से
आ	आ+	—
देवः	देवः	देव
याति	आ+याति आगच्छति	आता है
सविता	सविता	सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराऽवतः	दूरदेशात् (निघं० ३।२६)	दूर से
अप	अप +	–
विश्वा	सर्वाणि	सबों को
२ दुःऽइता	दुरितानि	दुष्टचरितों को
१ बाधमानः	अप+बाधमानः विनाशयन्	विनाश करता हुआ

संस्कृतार्थः ।

(सविता) देवः प्रवणमार्गेण गच्छति (तथा) ऊर्ध्वं मार्गेण गच्छति यष्टव्यः (सः) श्वेताभ्यामश्वाभ्यां गच्छति सविता देवः सर्वाणि दुरितानि विनाशयन् दूरदेशादागच्छति ॥३॥

भाषार्थः ।

(सविता) देव उतराईके मार्ग से चलते हैं(और) चढ़ाई के मार्ग से चलते हैं पूजने योग्य (वह) श्वेत घोड़ोंसे (युक्त रथ पर) चलते हैं सविता देव (हमारे) सब दुष्ट चरितोंको नाश करते हुए दूरसेआते हैं॥३॥

(१) सूर्य्यरूपी सविता देव प्रातः काल से मध्याह्न तक चढ़ाई के मार्ग से और मध्याह्न से सायंकाल तक उतराई के मार्ग से चलते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) सूर्य की रश्मि ही सविता के श्वेत घोड़े हैं (सब सूर्य्यों की रश्मि श्वेत नहीं हैं। जैसे स्वाती की लाल, ब्रह्महृदय की पीली और अभिजित् की नीली हैं)॥

(३) प्रत्येक सूर्य्योदय पर यह चिन्तन करना चाहिये कि सविता देव हमारे सब दुष्ट चरितों को नाश करने के लिये दूर से आए हैं अब यह हमें सुचरित की ओर प्रेरण करेंगे॥

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्। आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः ॥४॥

अभिऽवृतम्	आवृतम्	ढके हुए को
कृशनैः	सुवर्णैः (निघं०१।२)	सुवर्णों से
१ विश्वरूपम्	नानारूपम्	अनेक रूप वाले को
१ हिरण्यऽशम्यम्	सुवर्णमय्याः शम्या युग कीलका यस्य तम्	जूए की सुनहरी कील वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यजतः	यष्टव्यः	पूजने योग्य
बृहन्तम्	प्रौढम्	बड़े को
आ	आ+	–
अस्थात्	आ+अस्थात् आरूढवान्	सवार हुआ
रथम्	रथम्	रथ पर
सविता	सविता	सविता
चित्रभानुः	विविधरश्मियुक्तः	विचित्र किरणों वाला
२ कृष्णा	कृष्णवर्णेभ्यः (चतुर्थ्यर्थे द्वितीया)	काले रंग वालों के लिये
२ रजांसि	लोकेभ्यः (चतुर्थ्यर्थे द्वितीया)	लोकों के लिये
२ तविषीम्	बलम् (निघं०२।९)	बल को
दधानः	दधानः	धारण करता हुआ

संस्कृतार्थः ।

यष्टव्यो विविधरश्मि युक्तस्सविता कृष्ण,वर्णेभ्यो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोकेभ्यो बलं दधानः सुवर्णैरावृतं नानारूपं हिर ण्यकीलकं प्रौढं रथमारूढवान् ॥४॥

भाषार्थः ।

पूजने योग्य विचित्र किरणों वाले सविता काले रंग के लोकों के लिये बल को धारण करते हुए सुवर्ण से ढके हुए अनेक रूप वाले सोने की कील के बड़े रथ पर सवार हुए ॥४॥

(१) सविता का सुवर्ण से आच्छादित सुवर्ण की कील वाला नानारूप वाला बडा रथ सूर्यमण्डलहै जिसपर चढ़कर वह चलते हैं।

(२) काले रंग वाले लोक जैसे पृथिवी चन्द्रमा मंगल बुध शुक्र इत्यादि (चन्द्रमा और मंगल बुध, शुक्र आदि लोक पृथिवी की न्याईं काले रंग के हैं सूर्य के प्रकाश से श्वेत दीखते हैं) इन सब लोकों में सविता देव ही सूर्य के प्रकाश रूप से बल पहुंचाते हैं।

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११। ११। ११। ११।

वि जनाञ्छ्यावाः शितिपादो अख्यन्रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः। शश्वद्विशः सवितुर्दैव्यस्योपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि	वि +	--
जनान्	जनान्	मनुष्यों को
(१)श्यावाः	सवितुरश्वाः (निघं०१।१५।)	सविता के घोड़े
शितिऽ-पादः	शितयः श्वेताः पादा येषां ते (जसः सुरादेशः)	श्वेत पाओं वाले
(१)अख्यन्	वि+अख्यन् प्रकाशितवन्तः (आ०को०)	प्रकाशित किया
रथम्	रथम्	रथको
हिरण्ययऽ प्रउगम्	सुवर्णमयं प्रउगं युगबन्धनस्थानं यस्य तम्	सोनेके प्रउग (जूए बांधनेके स्थान) वाले को
वहन्तः	वहन्तः	वाहन करते हुओं ने
शश्वत्	सर्वदा	सदा
विशः	प्रजाः	प्रजा
सवितुः	सवितुः	सविताके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैव्यस्य	दिव्येषुभवो दैव्यस्तस्य	देवताओं में होने वाले के
(२) उपऽस्थे	अङ्के	गोद में
विश्वा	सर्वाणि	सब
भुवनानि	भुवनानि	लोक
(३) तस्थुः	तस्थुः	स्थित हुए

संस्कृतार्थः ।

श्वेतपादास्सवितुरश्वा हिरण्यप्रउगंरथं वहन्तो जनान्प्रकाशितवन्तः, प्रजाः सर्वाणि भुवनानि (च) दैव्यस्य सवितुरङ्के सर्वदा तस्थुः ॥५॥

भाषार्थः ।

श्वेत पाओं वाले सोने के युग बन्धन स्थान वाले रथ को वाहन करते हुए सविता के घोड़ों ने मनुष्यों को प्रकाशित किया है प्रजा (और) सबलोक देवताओं में होने वाले सविता की गोद में सदा ठहरे हुए हैं ॥५॥

(१) सविता के किरण रूपी श्वेत पाओं वाले घोड़ों ने जो सुवर्ण के युग बन्धनस्थान वाले सूर्य मण्डल रूपी रथ को खेंचते हैं मनुष्यों को प्रकाशित कर दिया है अर्थात् सूर्य का प्रकाश हमारे पास पहुंच गया है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) सब जीवादि प्रजा और पृथिव्यादि लोक सूर्य्यरूपी सविताकी गोदमें अर्थात् उनके सहारेपर ठहरे हुए हैं। सूर्यभगवान का सहारा छूटजावे, तो ये लोक इस निर्जन तमोवृत शीतमय आकाशमें न जाने कहां भ्रान्त हुए फिरें अथवा आपस में वा किसी अन्य ब्रह्माण्ड से टकरा कर नष्ट हो जावें॥

सविता देवता त्रिष्टुप् छन्दः ११।११।११।११

तिस्रोद्यावः सवितुर्द्वाउपस्थाँएका यमस्यभुवनेविराषाट्। आणिंनरथ्यममृताधितस्थुरिहब्रवीतयउतच्चिकेतत्॥६॥

(१) तिस्रः	तिस्रः	तीन
(१) द्यावः	द्यावः	आकाश
सवितुः	सवितुः	सविताके
(१) द्वौ	द्वौ	दो
(१) उपऽस्था	समीपस्थाने (सप्तम्याडाड)	समीप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२)एका	एक	एक
यमस्य	यमस्य	यम के
भुवने	लोके	लोकमें
(२)विराषाट्	वीरान्सहते सः	वीरों को सहारने वाला
(३)आणिम्	रथचक्रग्रस्थं कीलकम्	रथके पहियेके कील को
न	इव	न्याईं
(३)रथ्यम्	रथसम्बन्धिनम्	रथ सम्बन्धिको
(३)अमृता	मरण रहिताः (विलोपः)	अमर
अधि	अधि+	--
तस्थुः	अधि+तस्थुः	आश्रित हुए हैं
इह	इह	यहां
ब्रवीत	ब्रवीतु	कहे
यः	यः	जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊम्०	वितर्के	–
तत्	तत्	उस को
(४)चिकेतत्	विजानीयात्	जाने

संस्कृतार्थः ।

तिस्रो द्यावः (सन्ति) द्वे सवितुस्समीपस्थाने (वर्तेते) एकावीराणामाश्रय भूता यमस्य लोके (विद्यते) अमृता रथ संबन्धिनं चक्राग्रस्थं कीलक मिव (सवितारम्) अधितस्थुः, यस्तद्विजानीयात् (सः)इह ब्रवीतु ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

तीन आकाश (हैं) दो सविता के समीप (और) एक वीरों का आश्रय स्थान यम लोक में (है) मरण रहित (देवता) रथ सम्बन्धि पहिये के अग्रकील की न्याईं (सविता पर) आश्रित हैं, जो इस को जाने (वह) यहां कहे ॥६॥

(१) तीन आकाश ये होसकते हैं एक मध्याह्न का आकाश जो सूर्य से नीचे की ओर पृथिवी तक है। दूसरा वह आकाश जो सूर्य से ऊपर नक्षत्रों की ओर है॥

(२) तीसरा वह आकाश जो मध्य रात्रि के समय हमारे ऊपर दीखता है अर्थात् पृथिवी और नक्षत्रों के बीचमें होने वाला आकाश,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वही पितृयान अर्थात् यमलोक में जाने का मार्ग है जिस मार्ग से वीर पुरुष युद्ध में मर कर पितृ लोक को प्राप्त होते हैं ॥

(३) आणि वह कील है जो रथ के पहिये के आगे लगी हुई होती है और जो पहिये के घूमने से नहीं घूमती । सूर्य रूपी सविता देव भी इस कील की न्याई हैं उन के चारों ओर पहिये की न्याई पृथिव्यादि देवता घूमते हैं और वह इनको लिये हुए द्युलोक की यात्रा कर रहे हैं (इन की यात्रा का उद्देश अभी ज्ञात नहीं है यद्यपि अभिजित्की ओर गति का अनुमान किया जाता है)

(४) जो इस को जाने वह यहां कहे, अर्थात् जो इस बात को पूरी तरहसे जानता है वह हमें बतलावे ॥ वास्तव में मनुष्य तो पूरी तरह से सृष्टि रचना के रहस्यको जानने में असमर्थ है, क्योंकि अब भी सूर्यादि लोकों के विषय में हमारा ज्ञान तुच्छ है, और ज्यूं ज्यूं बढ़ता जाता है, त्यूं त्यूं उसकी अल्पताका निश्चय दृढ़ होता जाता है॥

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

विसुपर्णोअन्तरिक्षाण्यख्यद्गभी-
रवेपाअसुरःसुनीथः । क्वेदानीं-
सूर्यःकश्चिकेत कतमांद्यांरश्मिर-
स्याततान ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि	वि+	—
सुऽपर्णः	सुपक्षः	सुन्दरपक्ष वाले ने
१ अन्तरि-क्षाणि	अन्तरिक्षाणि	अन्तरिक्षों को
१ अख्यत्	वि+अख्यत् प्रकाशितवान् (भा०को)०	प्रकाशित किया
गभीरऽवेपाः	गम्भीरकम्पनः	गम्भीर कंप वाला
असुरः	प्राणवान्	प्राणों वाला
सुऽनीथः	प्रशस्यः (निघं० ३।८)	श्रेष्ट
क्व	क्व	कहां
इदानीम्	इदानीम्	अब
सूर्यः	सूर्यः	सूर्य
कः	कः	कौन
चिकेत	जानाति (लडर्थे लिट्)	जानता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ कतमाम्	कतमाम्	कौनसे को
२ द्याम्	द्याम्	आकाश को
रश्मिः	रश्मिः	किरण
अस्य	अस्य	इस की
आ	आ +	–
ततान	आ + ततान	व्याप्त हुई

संस्कृतार्थः ।

सुपक्षो गम्भीरकम्पनः प्राणवान्प्रशस्यः (सविता) अन्तरिक्षाणि प्रकाशितवान् सूर्य इदानीम् क (वर्तते) को जानाति अस्य रश्मिःकतमांद्यां व्याप्तवान् ॥७॥

भाषार्थः ।

सुन्दर पक्ष (और) गम्भीर कम्प वाले प्राणवान् श्रेष्ठ (सविता) ने अन्तरिक्षों को प्रकाशित किया है सूर्य अब कहां (है ?) कौन जानता है कि उस की किरणें किस आकाश में व्याप्त हैं ॥७॥

(१)रश्मिरूपी सुन्दर पक्षों वाले,सबके प्राणस्वरूप, गम्भीरकम्पन वाले,श्रेष्ठ सविता ने अन्तरिक्षोंको प्रकाशित करदिया है,यद्यपि सूर्य अभी नहीं दीखते । क्योंकि प्रकाश का आरम्भ तभी से हो जाता है कि जब सूर्य क्षितिज से१८ अंश नीचे होते हैं,(इस १८ अंश के पार जाने में उत्तर मेरु पर दो महीने लगते हैं ओर भूमध्य पर सायन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समयमें तीन घडी, बीचके देशों में ३घडी से दो महीने तक लगते हैं)

ऋषि का यह प्रश्न अनोखा प्रतीत होता कि "कौन जानता है किस आकाश में उसकी किरणें व्याप्त हैं" क्योंकि अब गणित द्वारा किसी समय और देश में सूर्य्य का ठीक स्थान निश्चित होसकता है, परन्तु गणित का ज्ञान साक्षात् ज्ञान नहीं है और गणित न पढ़े हुए हुए ऋषि ने जिस ज्ञान को साक्षात् किया है, उस से अब भी गणक लोग कोसों दूर हैं॥

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्रीधन्वयोजनासप्तसिन्धून्। हिरण्याक्षःसवितादेवआगाद्दधद्रत्ना दाशुषेवार्याणि ॥८॥

अष्टौ	अष्टौ	आठों
वि	वि+	–
अख्यत्	वि+अख्यत् प्रकाशितवान्	प्रकाशित किया
१ ककुभः	दिशः (निघं०१।६)	दिशाओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृथि॒व्याः	पृथिव्याः	पृथिवी की
त्री	त्रीन्	तीन को
२ धन्व	अन्तरिक्षाणि [निघं० १।३]	आकाशों को
२ योजना	योजयितॄन्	जोड़ने वालों को
स॒प्त	सप्त	सातों को
सिन्धू॑न्	समुद्रान्	समुद्रों को
हि॒र॒ण्य॒ऽ- अ॒क्षः	सुवर्णाक्षः	सुनहरी नेत्रों वाले ने
स॒वि॒ता	सविता	सविता ने
दे॒वः	देवः	देव ने
आ	समन्तात्	चारों ओर
अ॒गा॒त्	अगमत [इण्गतौ]	आगया है
दध॑त्	प्रयच्छन्	देता हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रत्ना	रत्नानि	रत्नों को
दाशुषे	हविर्दत्तवते भक्ताय	भक्त के ताईं
वार्याणि	वरणीयानि	वरने योग्यों को

संस्कृतार्थः ।

(सविता) पृथिव्या अष्टौदिशस्त्रीन्योजयितॄना काशान् सप्त समुद्रान् (च) प्रकाशितवान् सुवर्णाक्षः सविता देवो भक्ताय वरणीयानि रत्नानि प्रयच्छन्स-मन्तादगमत् ॥८॥

भाषार्थः ।

(सविताने) पृथिवी की आठ दिशाओंको, जोडने वाले तीन आकाशों को (और) सात समुद्रों को प्रकाशित कर दिया है, सुनहरी नेत्रों वाले सविता देव भक्तके ताईं वरने योग्य रत्नों को देते हुए चारों ओर से आगए हैं ॥८॥

(१) पृथिवी की आठ दिशाएं पूर्व, आग्नेय, दक्षिण इत्यादि।

(२) जोडने वाले तीन आकाश (देखो पृष्ठ ८८१) एक वह जो सूर्य और नक्षत्रों को जोडता है, दूसरा जो सूर्य और पृथिवी को जोडता है तीसरा वह जो पृथिवी और नक्षत्रों को जोडता है, यह रात्रि का आकाश केवल पृथिवी की छाया के परिमाण तक (जो पृथिवी से ८,५७,००० मील तक जाती है)अन्धकारमें रहता है इस से आगे सूर्य्य के प्रकाश से प्रकाशित रहता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) सात समुद्रों के लिये (देखो पृ० ६७७)

सात विभाग होने पर भी सातों समुद्र मिलकर एक ही हैं इस लिये सप्तसिन्धून् से यहां पर समुद्र का वह भाग समझना चाहिये जो सूर्य के प्रकाश से एक साथ प्रकाशित होता है, पृथिवी की गुलाई के कारण कुछ भाग अंधेरे में रहता है ॥

(४) जब २ सूर्य रूपमें सविता देव उदय हों, तब२ यह चिन्तन करना चाहिये कि यह हमारे लिये कामना करने योग्य रत्न और धन ले कर आए हैं ॥

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः।१२।१२।१२।१२।

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते। अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥९॥

हिरण्य ऽपाणिः	सुवर्णहस्तः	सोने के हाथों वाला
सविता	सविता	सविता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विऽचर्षणिः	द्रष्टा [निघं० ३।११]	देखने वाला
२ उभे०	उभे	दोनों को
२ द्यावापृथिवी०	द्यावापृथिवी	द्यावापृथिवी को
२ अन्तः	मध्ये	मध्य में
२ ईयते	गच्छति	चलता है
अप	अप+	–
२ अमीवाम्	रोगादिबाधाम्	रोगादि बाधा को
१ बाधते	अप+बाधते निराकरोति	दूर करता है
१ वेति	प्रेरयति [अन्तर्भावितण्यर्थः]	प्रेरणा करता है
४ सूर्यं	सूर्यम्	सूर्य को
१ अभि	अभि +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ कृष्णेन	कृष्णवर्णेन	काले से
४ रजसा	अन्धकारेण [ग्रा० को०]	अन्धकार से
४ द्याम्	आकाशम्	आकाश को
४ ऋणोति	अभि+ऋणोति सर्वतोव्याप्नोति	चारों ओर छा देता है

संस्कृतार्थः ।

सुवर्णहस्तो द्रष्टा सविताउभयोर्द्यावापृथिव्योर्मध्ये गच्छति रोगादिबाधां निरा करोति सूर्यप्रेरयति (अपिच) कृष्णेनान्धकारेण आकाशं सर्वतो व्याप्नोति ॥९॥

भाषार्थः ।

सोने के हाथों वाले देखने वाले सविता द्युलोक और पृथिवी दोनों के मध्य में चलते हैं रोगादिबाधा को दूर करते हैं सूर्य को प्रेरण करते हैं (और) काले अंधकार से आकाश को चारों ओर से छा देते हैं ॥९॥

(१) हिरण्य पाणि के लिये देखो पृ० ४२७ (२)

(२) सूर्यको देखकर यह चिन्तन करना चाहिये कि सविता देव सबको देखते हुए आकाश और पृथिवी के बीच में चल रहे हैं, हमें किसी का भय नहीं है क्योंकि सविता का सोने का हाथ हमारे सिर पर है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) सूर्य का प्रकाश रोग नाशक है इस लिये प्रकाश रहित स्थान में नहीं रहना चाहिये।

(४) सविता देव सूर्य और अन्धकार दोनों के प्रेरक होने से बारी २ दोनों से आकाश को आच्छादित करते हैं।

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्। अपसेधन्रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः ॥१०॥

हिरण्यऽहस्तः	सुवर्णहस्तः	सोनेके हाथों वाला
असुरः	प्राणवान्	प्राणवान्
सुऽनीथः	प्रशस्यः (निघं०३।८)	श्रेष्ठ
सुऽमृळीकः	अति कृपालुः	अति कृपालु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वऽवान्	धनवान्	धन वाला
यातु	यातु+अर्वाङ् अभिमुखमागच्छतु	सामने आवे
अर्वाङ्	+अर्वाङ्	
अपऽसेधन्	निराकुर्वन्	निवारण करता हुआ
रक्षसः	राक्षसान् (रक्षयितव्यमस्मात् निरु० ४।१८)	राक्षसों को
१ यातुऽधानान्	यातुधानान्	यातुधानों को
२ अस्थात्	स्थितवान्	ठहरे हैं
देवः	देवः	देव
प्रतिऽदोषम्	प्रतिरात्रि [निघ०१।७]	प्रतिरात्रि
२ गृणानः	शब्दायमानः	पुकारता हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

सुवर्णहस्तः प्राणवान्प्राशस्त्योऽतिकृपालुर्धनवान् (सविताऽस्मत्) अभिमुखमागच्छतु (सः) देवः प्रतिरात्रि शब्दायमानः सन् राक्षसान्यातुधानान् (च) निराकुर्वन् (अस्मत्समीपम्) स्थितवान् ॥१०॥

भाषार्थः।

सोने के हाथों वाले प्राणवान् श्रेष्ठ अतिकृपालु धनवान् (सविता हमारे) सामने आवें (वह) देव प्रति रात्रि ललकार कर राक्षस (और) यातुधानों को निवारण करते हुए (हमारे पास) ठहरे हैं॥१०॥

(१) यातुधान भी अन्धेरे को प्यार करने वाले "अत्रिणः" की न्याईं कोई राक्षस जाति है (देखो पृ० ४१६)

(२) रात्रि में राक्षस और यातुधान इत्यादि हानिकारक जीव मनुष्यों को भय और रोगादि बाधा करने में उद्यत रहते हैं सविता देव उनको ललकारते हुए और हटाकर नाश करते हुए हमारे पास ठहरे हैं, ऐसा निश्चय करना चाहिये।

यद्यपि सूर्य भगवान रात्रि में नहीं रहते परन्तु सविता देव जो प्रकाश और अन्धकार दोनों के प्रेरक हैं हमारे निश्चय से हमारे पास ठैर सकते हैं॥

सविता देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११

येतेपन्थाःसवितःपूर्व्यासोऽरेण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वः सुकृता अन्तरिक्षे । तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥११॥

ये	ये	जो
ते	तव	तेरे
पन्थाः	मार्गाः (जसः सुः)	मार्ग
सवितः०	हे सवितः	हे सविता,
पूर्व्यासः	पूर्वकालीनाः	पुराने
अरेणवः	धूलिराहताः	धूलि से रहित,
सुऽकृताः	सुष्ठु सम्पादिताः	सुन्दर बने हुए
अन्तरिक्षे	आकाशे	आकाश में
तेभिः	तैः	उनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्मान्	हम को
अद्य	अद्य	आज
पथिभिः	मार्गैः	मार्गों से
सुऽगेभिः	सुष्ठुगन्तुं शक्यैः	सुगम (मार्गों) से
रक्ष	रक्ष	रक्षा कर
च	(पूरणः)	–
नः	अस्मान्	हमको
अधि	अधि+	–
च	च	और
१ ब्रूहि	अधि+ब्रूहिअनुकूलंब्रूहि(आ०को)	अनुकूलक हो
देव	हे देव	हे देव

संस्कृतार्थः ।

हे सवितः ये तव मार्गाः पूर्वकालीनाधूलिरहिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आकाशे सुष्ठु सम्पादितास्तैस्सुगमैर्मार्गैः (आगत्य)
अद्यास्मान् रक्ष हे देव (अस्मत्) अनुकूलं च ब्रूहि॥११॥

भाषार्थः।

हे सविता जो आपके पुराने धूलि रहित मार्ग आकाश में सुन्दर बने हुए हैं उन सुगम मार्गों से (आकर) आज हमारी रक्षा करो और हे देव हमारे अनुकूल कहो ॥११॥

(१) हमारे अनुकूल कहो अर्थात हमें आशीर्वाद दो अथवा देवताओं से हमारे अनुकूल कहो (सिफारिश करो) जिस से वे हमारे दोषों को जानते हुए भी हमसे घृणा न करें ॥

इति पञ्चत्रिंशं शूक्तम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०३६ मं०१ ॥

अग्निर्देवता घोरपुत्रः कण्वऋषिर्निचृद्बृहतीच्छन्दः
८।७।१२।८।

प्र वो॑ यह्वं पु॑रूणां वि॒शां दे॑वय॒तीना॑म्।
अ॒ग्निं सू॒क्तेभि॒र्वचो॑भिरीमहे॒ यं सी॒मि
द॒न्य ईळ॑ते ॥ १ ॥

प्र	प्र +	--
वः	युष्माकम्	तुह्मारे
यह्वम्	महान्तम् (निघं०३।३)	महान् को
पुरूणाम्	बहूनाम्	बहुतों के
विशाम्	जनानाम्	लोगों के
देवऽयती-नाम्	देवकामानाम्	देवताओं की कामाना करने वालों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अ॒ग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
सु॒ऽउ॒क्तिभिः॑	सुष्ठुउक्तैः (सूक्तरूपैः)	सुन्दर उच्चरित (सूक्तरूपों) से
वचः॑ऽभिः	वाक्यैः	वाक्यों से
ई॒म॒हे॒	प्र+ईमहे प्रकर्षेण याचामहे (निघं०३।१९)	हम अतिशय करके प्रार्थना करते हैं
यम	यम्	जिस को
सी॒म	(पूरणः)	–
इ॒त	आप	भी
अ॒न्ये	अन्ये	और
ई॒ळते	स्तुवान्त	स्तुति करते हैं

संस्कृतार्थः।

(हे आर्य्य गण, वयम्) देवकामानां बहूनां युष्मज्जनानाम् (अर्थम्) महान्तमग्निं सूक्तरूपैर्वाक्यैः प्रकर्षेण याचामहे यमन्ये (जनाः) अपि स्तुवन्ति॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे (आर्य्यगण) देवताओं की कामना करने वाले बहुत तुम लोगों के लिये हम महान् अग्नि (देव) को सूक्तरूप वाक्यों से अतिशय करके प्रार्थना करते हैं जिनको और (जातियां) भी स्तुति करती हैं ॥१॥

विनियोग—प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतु में यह सूक्त पढ़ा जाता है (आ० श्रौ० सू ४ । १३।७)॥

(१) जिस अग्नि को नामान्तर से अन्य जातियां भी स्तुति करती हैं उसी को हम वेद के सूक्तों द्वारा देव भक्त आर्य लोगों के लिये अतिशय करके प्रार्थना करते हैं वह देव हमारी प्रार्थना को सुन कर शीघ्र इस जाति का उद्धार करें ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८।

जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं हविष्मन्तो विधेम ते । स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य ॥२॥

जनासः	जनाः	मनुष्यों ने
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
दधिरे	धृतवन्तः	धारण किया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहःऽवृधम्	बलस्यवर्धयिता-रम् (अन्तर्भावितण्यर्थाद्वृधेःक्विप्)	बलके बढ़ाने वाले को
हविष्मन्तः	हविर्युक्ताः	हवि से युक्त
विधेम	परिचरेम (निघं० ३।५)	हम सेवा करें
ते	त्वाम्। (द्वितीयार्थे षष्ठी)	तुझ को
सः	सः	वह
त्वम्	त्वम्	तू
नः	अस्माकम्	हमारी
अद्य	अद्य	आज
सुऽमनाः	सुमनस्कः	प्रसन्न
इह	इह	यहां
अविता	रक्षिता	रक्षा करने वाला
भव	भव	हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाजेषु	संग्रामेषु	संग्रामों में
सन्त्य	हे दानशील (षणदाने क्तिच्भवार्थे यत्)	हे दानशील

संस्कृतार्थः ।

जना बलस्य वर्धयितारमग्निं धृतवन्तः,हविर्युक्ताः (वयम्) त्वांपरिचरेम हे दानशील स त्वं सुमनस्कः (सन्) अद्येह संग्रामेषु अस्माकं रक्षिता भव ॥२॥

भाषार्थः ।

मनुष्यों ने बल के बढ़ाने वाले अग्निको धारण किया है, हविसे युक्त हम आपकी सेवा करें हे दान शील आप प्रसन्न (होकर) आज यहां संग्रामों में हमारी रक्षा करने वाले हों ॥ २ ॥

अग्नि को मनुष्य इस लिये स्थापन करते हैं कि वह बल के बढाने वाले हैं हम आर्यजन हवि से उन का पूजन करें जिस से अभीष्ट के देने वाले वह हम से प्रसन्न होकर जीवन के नित्य होने वाले संग्रामों में हमारी रक्षा और सहायता करके हमें सदा विजय प्राप्त करावें ॥

अग्निर्देवता बृहतीछन्दः ८।८।१२।८।

प्रत्वादूतंवृणीमहे होतारंविश्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदसम्। महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो

दिवि स्पृशन्ति भानवः ॥३॥

प्र	प्र+	–
त्वा	त्वाम्	तुझ को
दूतम्	दूतम्	दूत को
१ वृणीमहे	प्र+वृणीमहे प्रकर्षेण वरणं कुर्मः	हम अतिशय करके बरते हैं
होतारम्	होतारम्	होता को
१ विश्ववऽवेदसम्	विश्वं वेदो धनं यस्य तम्, वेद इति धननाम (निघं० २। १०)	सम्पूर्ण धन वाले को
महः	महतः	महान् की
ते	तव	तुझ की
सतः	साधोः	भले की
वि	वि+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ चरन्ति	वि+चरन्ति, विविधं गच्छन्ति	अनेक रूप से विचरती हैं
२ अर्चयः	दीप्तयः	दीप्तियां
२ दिवि	द्युलोके	द्युलोक में
३ स्पृशन्ति	स्पृशन्ति	स्पर्श करती हैं
३ भानवः	रश्मयः	किरणें

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) सर्वधनोपेतं (देवानाम्) दूतं होतारम् (च) त्वां प्रकर्षेण वरणं कुर्मः महतः साधोः (च) तव दीप्तयो विविधं गच्छन्ति रश्मयः (च) द्युलोके स्पृशन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हम सम्पूर्णधनवाले (देवताओंके) दूत और होता आपको अतिशय करके वरते हैं महान् (और) साधु आपकी दीप्तियां अनेक रूपसे जाती हैं (और) करणें द्युलोक में स्पर्श करती हैं ॥ ३ ॥

(१) सम्पूर्ण धन के स्वामी अग्नि को अतिशय करके बरने से ही हम फिर धनवान् बन सकते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) महान् और साधु चरित वाले अग्नि देव को दीप्तियां उष्णता (Heat) प्रकाश (Light) विद्युत (Electricity) इत्यादि अनेक रूप में विचरती हैं जिस रूप में अग्नि की सेवा की जाय उसी में धन मिलता है ॥

(३) सूर्य्य की किरणें जो द्युलोक में स्पर्श करती हैं सूर्यस्थ अग्नि की ही ज्वालाओं से निकलती हैं ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८।

देवासस्त्वावरुणोमित्रोअर्यमा स-
न्दूतंप्रत्नमिन्धते । विश्वंसोअ-
ग्नेजयतित्वयाधनं यस्तेददाशमर्-
त्यः ॥ ४ ॥

देवासः	देवाः	देवता
त्वा	त्वाम्	तुझको
वरुणः	वरुणः	वरुण
मित्रः	मित्रः	मित्र
अर्यमा	अर्यमा	अर्यमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्	सम्+	–
दूतम्	दूतम्	दूत को
प्रत्नम्	पुरातनम्	प्राचीनको
१ इन्धते	सम्+इन्धते सम्यक्दीपयन्ति	प्रदीप्त करते हैं
विश्वम्	सर्वम्	सब को
सः	सः	वह
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
जयति	जयति	जीतता है
त्वया	त्वया	तुझ द्वारा
धनम्	धनम्	धनको
यः	यः	जिसने
ते	तुभ्यम्	तेरे ताईं
२ ददाश	दत्तवान्	दिया है
मर्त्यः	मर्त्यः	मनुष्य ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हेअग्ने वरुणोमित्रोऽर्यमा देवाः पुरातनं दूतं त्वां सम्यग्दीपयन्ति योमर्त्यस्तुभ्यम् (हविः) दत्तवान् सत्वया (सहायभूतेन) सर्वं धनं जयति॥ ४॥

भाषार्थः।

हे अग्नि प्राचीन दूत आपको वरुण मित्र और अर्यमा देवता प्रदीप्त करते हैं,जिस मनुष्यने आपके ताईं(हवि) दी है वह आपके द्वारा सब धनको जीतता है॥ ४॥

(१) जिस प्रकार हम प्रतिदिन अग्नि को प्रदीप्त करते हैं इसी प्रकार दिन के आकाश रूपी मित्र देवता सूर्य रूप में अग्नि को प्रदीप्त करते हैं, रात्रि के आकाश रूप वरुण देवता नक्षत्र रूप में अग्नि को प्रदीप्त करते हैं और सन्ध्याओं के आकाश रूपी अर्यमा देव उषा रूप में अग्नि को प्रदीप्त करते हैं॥

(२) जिस ने अग्नि में हवि दी है उसने धन जीतने को अपने लिये एक बलवान सहायक मित्र बना लिया है और उस का पुरुषार्थ निष्फल नहीं जाता॥

अग्निर्देवता बृहती छन्दः ८।८।१२।८।

मन्द्रोहोतागृहपतिरग्नेदूतोवि-
शामसि। त्वेविश्वासङ्गतानिव्रता
ध्रुवा यानिदेवाअकृण्वत॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्द्रः	मनोज्ञः (आ० को०)	मनोहर
होता	होता	होता
गृहऽपतिः	गृहस्यस्वामी	घर का मालिक
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ दूतः	दूतः	दूत
१ विशाम्	प्रजानाम्	प्रजाओं का
असि	असि	तू है
त्वे०	त्वयि	तुझ में
विश्वा	सर्वाणि	सब
२ { समऽगता नि	सङ्गतानि	मिले हैं
२ व्रता	कर्माणि (निघं२।१)	कर्म
२ ध्रुवा	स्थिराणि	स्थिर
यानि	यानि	जिनको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवाः	देवाः	देवताओं ने
अक्रण्वत	कृतवन्तः	किया है

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने त्वं मनोज्ञो होता प्रजानां गृहपतिः दूतः(च) असि,यानि स्थिराणि कर्माणि देवाः कृतवन्तः(तानि) सर्वाणि त्वयि सङ्गतानि ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

हे अग्नि आप मनोहर होता प्रजाओं के गृहपति (और) दूत हैं जिन स्थिर कर्मों को देवताओंने किया है, वे सब आप में मिले हैं ॥ ५ ॥

(१) मनुष्य की स्तुति और पूजा देवताओं को पहुंचाने वाले होने से अग्नि देवता मनुष्यके दूत हैं और उसके घरके मालिक हैं।

(२) जिन स्थिर कर्मों को देवताओं ने किया है जैसे दिन रात्रि का क्रम से होना,ऋतुओं का परिवर्तन,समुद्र और वायु का पृथिवी और अन्तरिक्ष में स्थिर होना, अन्न, वृक्ष, पशु मनुष्य इत्यादि प्रजाओं का उत्पन्न होना इत्यादि कर्म पूर्व काल में मातरिश्वा के ताईं अग्नि के प्रगट होने से ही हुए हैं (देखो पृ० ६९७ ६९८) विना अग्नि के इन कर्मों में से किसीके भी होने की सम्भावना नहीं थी ॥

अग्निर्देवता सतोबृहतीछन्दः १२ । ८ । १२ । ८ ।

त्वेदग्ने सुभगे यविष्ठ्य विश्व-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माहूयतेहविः। सत्वंनोअद्यसुमना
उतापरं यच्चिद्देवान्त्सुवीर्या॥ ६॥

त्वे०	त्वयि	तुझमें
इत्	एव	ही
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
सुभगे	सौभाग्ययुक्ते	सौभाग्य युक्तमें
यविष्ठ्य	हे युवतम	हे अत्यन्त जवान
विश्वम्	सर्वम्	सब
आ	अभिविधौ	ही
हूयते	हूयते	हवन कीजाती है
हविः	हविः	हवि
सः	सः	वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
नः	अस्मदर्थम्	हमारे लिये
अद्य	अद्य	आज
सुऽमनाः	सुमनस्कः(सन्)	प्रसन्न होकर
उत	अपिच	और
अपरम्	उत्तरस्मिन्-(काले)	उत्तर (काल) में
यक्षि	यज	पूजनकर
देवान्	देवान्	देवताओं को
सुऽवीर्या	सुवीर्य्यान्	खूब पराक्रम वालों को

संस्कृतार्थः ।

हे युवतमाग्ने सौभाग्ययुक्तेत्वय्येवसर्वमपिहविर्हूयते सत्वमस्मदर्थंसुमनस्कःसन्नद्यापिचोत्तरस्मिन्-काले सुवीर्यान्देवान्यज ॥ ६ ॥

भाषार्थः

हे अत्यन्त जवान अग्नि सौभाग्ययुक्त आपमें ही सम्पूर्ण हवि हवन की जाती हैं, वह आप हमारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिये प्रसन्न होकर आज और उत्तर काल में भी खूबपराक्रम वाले देवताओं का पूजन करें ॥ ६ ॥

यज्ञ में प्रत्येक देवता के लिये पृथक् २ हवि तय्यार की जाती है परन्तु वे सब अग्नि में ही होमी जाती हैं क्योंकि हम देवताओं को न तो समीप ला सकते हैं और न उन को हवि खिलाने का उपाय जानते हैं इस लिये अग्नि देव ही हमारी हविसे देवताओं का हमारे लिये पूजन करें ॥

अग्निर्देवता बृहती छन्दः ८।८।१२।८।

तंघेमित्थानमस्विन उपस्वरा-
जमासते। होत्राभिरग्निंमनुषःस-
मिन्धते तितिर्वांसोअतिस्रिधः॥७॥

१ तम्	तम्	उसको
घ	एव	ही
ईम्	एनम्	इसको
१ इत्था	सत्यम्(निघं०३।१०)	सच मुच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमस्विनः	नमस्कार शीलाः	नमस्कार शील
१ उप	उप+	–
स्वऽराजम्	स्वतोदीप्यमानम्	स्वयं दीप्य मानको
१ आसते	उप+आसते	उपासना करते हैं
२ होत्राभिः	स्तुतिभिः (आ०को)	स्तुतियोंके साथ
अग्निम्	अग्निम्	अग्निको
मनुषः	मनुष्याः	मनुष्य
सम्	सम्+	–
इन्धते	सम्+इन्धते सम्यग्दीपयन्ति	प्रदीप्त करते हैं
२ तितिर्वांसः	अति+तितिर्वां सोऽतिशयेन तीर्णवन्तः	अतिशय करके तरे हुए
अति	अति+	–
स्रिधः	शत्रून्	शत्रुओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

नमस्कार शीलाः (पुरुषाः) स्वतोदीप्यमानं तमेनं (अग्निम्) नूनमुपासते शत्रूनतिशयेनतीर्णवन्तो मनुष्याः स्तुति भिरग्निंसम्यग्दीपयन्ति ॥७॥

भाषार्थः।

नमस्कार शील पुरुष सचमुच उस इसी स्वयं दीप्यमान अग्नि की उपासना करते हैं, शत्रुओं को अतिशय करके तरे हुए मनुष्य स्तुतिओं के साथ अग्नि को प्रदीप्त करते हैं॥ ७ ॥

यह मन्त्र सोम याग की प्रवर्ग्य इष्टिके अभिष्टवमें पढ़ा जाता है (आ० श्रौ० सू० ४।७।४)

(१) चाहे कोई आस्तिक पुरुष किसी नाम से परमात्मा की उपासना करे वह सचमुच इसी स्वयं दीप्यमान अग्नि की उपासना है क्योंकि यह साक्षात् उस परमात्मा का रूप है ॥

(२) पौर्णमासादि यज्ञों में सामिधेनी मंत्रों से (जिन में अग्नि की स्तुति है) अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है ॥

(३) इसप्रकार यज्ञ करनेवाले शत्रुके वशमें कदापि नहीं पडे ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८।

घ्नन्तो॑ वृ॒त्रम॑तर॒न्रोद॑सी अ॒प उ॒रु क्षया॑य चक्रिरे। भुव॒त्कण्वे॒ वृषा॑ द्यु॒म्न्याहु॑तः॒ क्रन्द॒दश्वो॒ गवि॑ष्टिषु॥ ८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घ्नन्तः	प्रहरन्तः	प्रहार करते हुए
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
अतरन्	तीर्णाः	तरे (जीते)
रोदसी	द्यावापृथिव्यौ	द्युलोक और पृथिवी को
अपः	अन्तरिक्षम् (निघं० १।३)	अन्तरिक्ष को
१ उरु	विस्तारयुक्तम्	विस्तार युक्त
१ क्षयाय	निवासाय	निवास के लिये
१ चक्रिरे	कृतवन्तः	किया
२ भुवत्	भवेत्	होवे
कण्वे	कण्वे	कण्व में
वृषा	(कामानाम्)वर्षिता	(कामनाकी वर्षा) करने वाला
द्युम्नी	धनवान्	धन वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आऽहुतः	आहुतः	बुलाया हुआ
२ क्रन्दत्	ह्रेषं कुर्वन् (नुमभावः)	हिनहिनाता हुआ
२ अपूवः	अश्वः	घोड़ा
गोऽइष्टिषु	गवामिच्छायेषु (संग्रामेषु)	संग्रामों में

संस्कृतार्थः ।

प्रहरन्तः (देवा) वृत्रं तीर्णा द्यावापृथिव्यावन्तरिक्षम् (च) निवासाय विस्तारयुक्तं कृतवन्तः (कामानाम्) वर्षिता धनवान् (अग्निः) आहुतः (सन्) गोविषयेच्छायुक्तेषु (संग्रामेषु) (मयि) कण्वे ह्रेषं कुर्वन्नश्वो भवेत् ॥८॥

भाषार्थः ।

प्रहार करते हुए (देवताओंने) वृत्र को जीता (और) द्युलोक पृथिवी और अन्तरिक्ष को निवास के लिये विस्तार युक्त किया, (कामनाओंकी) वर्षा करने वाले धनवान् (अग्निदेव) बुलाने पर गौओं की इच्छा युक्त (संग्रामों) में (मुझ) कण्व के लिए हिन हिनाने वाले अश्व बनें ॥८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) सूक्त ३२ और ३३ में वर्णन हो चुका है कि किस तरह इन्द्र ने वृत्र को मार कर आकाश और पृथिवी को जो वृत्र से आच्छादित होने के कारण मिले हुए थे अलग २ करके प्रजा के निवास के योग्य बनाया इसी इतिहास को ऋषि यहां पर निर्देश करके कहते हैं ॥

(२) जिस प्रकार उस समय देवताओं ने सब प्रजा को वृत्र रूपी शत्रु के पार लंघाया था वैसे ही अग्निदेव हिनहिनाते हुए घोडे के सदृश मुझ कण्व को गौओं की इच्छा युक्त संग्रामों के पार लंघावें ॥

अग्निर्देवता बृहती छन्दः । ८।८।१२।८।

संसीदस्वमहाँअसि शोचस्वदेव वीतमः । विधूममग्नेअरुषंमियेध्य सजप्रशस्तदर्शतम् ॥९॥

सम्	सम् +	...
सीदस्व	सम् + सीदस्व सम्यगुपविश	अच्छीप्रकार बैठ
महान्	महान्	महान्
असि	असि	तू है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शोचस्व	दीप्यस्व	दीप्त हो
देवऽवीतमः	अतिशयेन देवानां आपयिता (अन्तर्भावितण्यर्थः)	अतिशय करके देवताओं के लाने वाला
वि	वि +	
धूमम्	धूमम्	धूम को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
अरुषम्	ईषद्रक्तम् (आ०को०)	ललाई वाले को
मियेध्य	हे मेध्य (मकारात्परइयागमः)	हे पवित्र
सृज	वि+सृज, विमुञ्च	छोड़ो
प्रऽशस्त	हे प्रशस्त	हे श्रेष्ठ
दर्शतम्	दर्शनीयम्	सुन्दर को

संस्कृतार्थः

(हे अग्न आगच्छ) सम्यगुपविश (त्वम्) महानसि, अतिशयेन देवानां प्रापयिता (त्वम्) दीप्यस्व, हे मेध्य प्रशस्ताग्ने ईषद्रक्तं दर्शनीयं धूमं विमुञ्च ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः

(हे अग्नि आओ) अच्छी प्रकार बैठो (आप) महान् हैं, अतिशय करके देवताओं के लाने वाले आप प्रदीप्त हों, हे पवित्र (और) श्रेष्ठ अग्नि ललाई वाले सुन्दर धूम को छोड़ो ॥ ९ ॥

विनि० प्रवर्ग्य इष्टि में महावीर को खर में स्थापन करते समय यह मन्त्र पढा जाता है (आ० श्रौ०सू० ४ । ६ । ३)

और अग्नि चयन में उखा बनाने के मृत्पिण्ड को पुष्कर पर्ण (कमल के पत्ते) पर रख कर यह मन्त्र पढा जाता है (यजु०११ । ३७) ॥

पहले ब खूधूम युक्त हो कर अग्नि प्रदीप्त होती है, इस लिये अग्नि का धूम भी उपासक को प्रिय है ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२ । ८ । १२ । ८ ।

यंत्वादेवासोमनवेदधुरिह यजि-
ष्ठंहव्यवाहन । यंकण्वोमेध्याति-
थिर्धनस्पृतं यंवृषायमुपस्तुतः ॥१०॥

यम्	यम्	जिसको
त्वा	त्वाम्	तुझको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवासः	देवाः	देवताओं ने
मनवे	मनवे	मनुके लिये
दधुः	धृतवन्तः	धारण किया है
इह	अस्मिन् (लोके)	इस (लोक) में
यजिष्ठम्	यष्टृतमम् (तृचोलोपः)	अतिशयकरके पूजन वाले को
हव्यऽवाहन	हे हव्यवाहन	हे हविके पहुंचाने वाले
यम्	यम्	जिसको
कण्वः	कण्वः	कण्वने
मेध्यऽअतिथिः	मेध्यातिथिः	मेध्यातिथिने
धनऽस्पृतम्	धनैरस्मान् स्पृणोति प्रीणयतीति तम्	धनों से हमको तृप्तकरने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यम्	यम्	जिस को
वृषा	वृषा	वृषाने
यम्	यम्	जिसको
उपऽस्तुतः	उपस्तुतः	उपस्तुत ने

संस्कृतार्थः

हे हव्यवाहन (अग्ने) यष्टृतमं यं त्वां देवाऽस्मिन् (लोके) मनवे धृतवन्तः,धनैः प्रीणयितारं (यं त्वाम्) कण्वो मेध्यातिथिः (च धृतवन्तौ) यं वृषा (धृतवान्) यमुपस्तुतः (च धृतवान्) ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

हे हविके पहुंचाने वाले (अग्नि) अतिशय करके पूजने वाले जिस आप को देवताओंने इस (लोक) में मनु के लिये धारण किया है धनों से तृप्त करने वाले जिस आपको कण्व और मेध्यातिथिने (धारण किया है) जिसजो वृषाने और जिस को उपस्तुतने (धारण किया है) ॥ १० ॥

मनु, कण्व, मेध्यातिथि, वृषा, उपस्तुत ये सब हमारे प्राचीन पुरुषाओं में से हैं जिन्होंने देवपूजन के लिये अग्नि को स्थापन किया था उसी अग्नि को हम भी स्थापन करके उन महर्षियों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साथ सम्बन्ध को उत्पादन करें, जिस से हम भी उनके से गुणों को धारण करने वाले हों ॥

वृषा वा पाथ्यो वृषा के अग्नि को प्रदीप्त करने की कथा ऋ० ६।१६।१५ में भी है ॥

अग्निर्देवता बृहतीछन्दः ८।८।१२।८।

यमग्निंमेध्यातिथिः कण्वईधऋत-
ताद्धि। तस्यप्रेषोदीदियुस्तमिमा
ऋचस्तमग्निंवर्धयामसि ॥११॥

यम्	यम्	जिस को
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
मेध्यऽअतिथिः	मेध्यातिथिः	मेध्यातिथि ने
कण्वः	कण्वः	कण्व ने
ईधे	प्रदीप्तवान्	प्रदीप्त किया
१ ऋतात्	ऋतात्+अधि यज्ञनिमित्तम् (ऋ० १०।७३।५)	यज्ञ के निमित्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधि	+अधि	–
तस्य	तस्य	उस के
प्र	प्र	–
२ इषः	बलानि(आ०को)	बल
२ दीदियुः	प्र+दीदियुः प्रकर्षेणारोचयन्	अत्यन्त चमके
तम्	तम्	उसको
इमाः	इमाः	ये
ऋचः	ऋचः	ऋचाएं
तम्	तम्	उस को
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को,
वर्धयामसि	वर्धयामः	हम बढाते हैं

संस्कृतार्थः।

यमग्निं मेध्यातिथिः कण्वः (च) यज्ञनिमित्तं दीप्तवान् तस्य बलानि प्रकर्षेणारोचयन् तमिमा ऋचः तमग्निम् (वयम्) वर्धयामः ॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

जिस अग्निको मेध्यातिथि और कण्व ने यज्ञ के लिये प्रदीप्त किया उसके बल अत्यन्त चमके, उसको ऋचाएं उसी अग्नि को हम बढ़ाते हैं ॥ ११ ॥

(१) "ऋत" सृष्टि नियम और यज्ञ का भी नाम है, वास्तव में दोनों एक ही हैं हम जो यज्ञ करते हैं वह उन कर्मों का अनुकरण करते हैं जो देवताओं ने सृष्टि रचना के निमित्त वा प्रजा के हित के लिये पूर्व में किये और अब भी करते हैं ॥

(२) अग्नि के बल अत्यन्त चमके, जब से मातरिश्वा को अग्नि प्रकट होकर सृष्टि का परिणाम आरम्भ हुआ तब से आज पर्यंत सब सृष्टि अग्नि के ही बलों की लीला है उसी अग्नि को वेद की ऋचाएं उसी को हम स्तुति और पूजा द्वारा बढ़ाते हैं ॥

अग्निर्देवता वृहती छन्दः ८।८।१२।८।

रायस्पूर्धि स्वधावोस्ति हि तेग्ने देवेष्वाप्यम्। त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महाँ असि ॥१२॥

रायः	धनानि	धनों को
पूर्धि	पूरय (निघ०४।२)	भरो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वधाऽवः	हे अन्नवन्	हे अन्नवान
अस्ति	अस्ति	है
हि	यतः	क्योंकि
ते	ते	तेरी
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
देवेषु	देवेषु	देवताओं में
आप्यम्	उपगमः	पहुंच
त्वम्	त्वम्	तू
वाजस्य	बलस्य	बल का
श्रुत्यस्य	श्रवणीयस्य	सुनने योग्य का
राजसि	ईश्वरोऽसि	राजा है
सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हम को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृळ	अनुकम्पस्व (आ.को)	कृपा करो
महान्	महान्	महान्
असि	असि	तू है

संस्कृतार्थः

हे अन्नवन्नग्ने (अस्मभ्यम्) धनानि पूरय (यतः) ते देवेषूपगमोऽस्ति त्वं श्रवणीयस्य बलस्येश्वरोऽसि सः (त्वम्) अस्मान् (प्रति) अनुकम्पस्व (त्वम्) महानसि ॥ १२ ॥

भाषार्थः

हे अन्नवान् अग्नि (हमें) धनों से भरो, क्योंकि आप की देवताओं में पहुंच है, आप सुनने योग्य बलके राजा हैं ऐसे (आप) हम पर कृपा करें आप महान् हैं ॥ १२ ॥

अग्नि की देवताओं में पहुंच होने से वह हमारे लिये यथेष्ट धन लाकर हमें धन से भर सकते हैं, जो बल कर्म सुनने के योग्य हैं वे सब अग्नि के अधिकार में हैं इस लिये वह हमें यथेष्ट बल भी दे सकते हैं। अग्नि देव महान् हैं इस लिये वह अपने उपासकों की सन्तान (हम) पर अवश्य कृपा करेंगे ॥

यूपो देवता बृहती छन्दः ८।८।१२।८।

ऊर्ध्वऊषुणऊतये तिष्ठादेवो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नसविता। ऊर्ध्वोवाजस्यसनिता
यदञ्जिभि र्वाघद्भिर्विह्वयामहे॥१३॥

ऊर्ध्वः	उन्नतः	ऊंचा
ऊम्०	हे (यूप)	हे (यूप)
सु	सुष्ठु	भलीप्रकार
नः	अस्माकम्	हमारी
ऊतये	रक्षायै	रक्षा के लिये
तिष्ठ	तिष्ठ	खड़ा हो
देवः	देवः	देव
न	इव	न्याईं
सविता	सविता	सविता
ऊर्ध्वः	उन्नतः (सन्)	ऊंचा (हुआ २)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाजस्य	बलस्य	बल का
सनिता	दाता	दाता
यत्	यस्मात्	जिस से
अञ्जिऽभिः	अञ्जद्भिः	चुपड़ने वालोंके साथ
वाघत्ऽभिः	ऋत्विग्भिस्सह	ऋत्विजों के साथ
विऽह्वयामहे	विशेषेणाऽऽह्वयामः	हम विशेष करके बुलाते हैं

संस्कृतार्थः।

हे (यूप) अस्माकं रक्षायै सविता देव इवोन्नतः (सन्) सुष्ठु तिष्ठ, उन्नतः (सन्) बलस्य दाता (भव) (वयम्) अञ्जद्भिर्ऋत्विग्भिस्सह (त्वाम्) विशेषेणाऽऽह्वयामः॥ १३॥

भाषार्थः।

हे (यूप) आप हमारी रक्षाके लिये सविता देवता की न्याईं भलीप्रकार ऊंचे खड़े हों, ऊंचे (हुए२ आप) बलके देने वाले हों, (हम) चुपड़ने वाले ऋत्विजों के साथ (आपको) विशेष करके बुलाते हैं॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग—यह और अगला मंत्र पशुइष्टि में यूप खड़ा करते समय पढे जाते हैं, (आ० श्रौ० सू० ३ । १ । ९) और प्रवर्ग्य इष्टि के अभिष्टवन में भी इनका पाठ है (आ० श्रौ० सू० ४ । ७ । ४) ।

अग्नि चयन में कृष्णाजिन और पुष्कर पर्ण में लपेटे हुए उखा बनाने के मृत्पिण्ड को इस मंत्र से उठाकर पूर्वकी ओर धारण किया जाता है (यजु० ११ । ४२) ॥

जब यज्ञमें यूप को खड़ा करते हैं तब उसे घृत से चुपड़ते हैं । यूप का खड़ा होना मानो सविता का हमारी रक्षा के लिये खड़ा होना है । यूप का देवता बनना और देवता की तरह हमारे आवाहन को सुनकर हमारी कामनाओं को पूर्ण करना इस में हमारी अपनी आत्मशक्ति हा कारण है इस शक्ति को प्रगट होने के लिये वाह्य गोचर वस्तु की आवश्यकता है और वह यूप जैसी साधारण वस्तु भी बन सकती है ॥

यूपो देवता सतो बृहती छन्दः । १२ । ८ । १२ । ८ ।

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो निकेतुना वि-
श्वं समत्रिणं दह । कृधी न ऊर्ध्वाञ्चर
थाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ॥१४॥

ऊर्ध्वः	उन्नतः (सन्)	ऊंचा (हुआ २)
नः	अस्मान्	हमको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ पाहि	नि + पाहि नितरां पाहि	निपट रक्षाकर
१ अंहसः	पापात्	पाप से
नि	नि+	–
१ केतुना	प्रज्ञया (निघं०३।८)	बुद्धि द्वारा
२ विश्वम्	सर्वम्	सब को
सम्	सम् +	–
२ अत्रिणम्	अत्तारम्	भक्षण करने वाले को
२ दह	सम्+दह सम्यग् भस्मी कुरु	अत्यंत भस्म कर
कृधि	कुरु	कर
नः	अस्मान्	हम को
३ ऊर्ध्वान्	उन्नतान्	ऊंचों को
३ चरथाय	गमनाय(चर + अथ)	गमन के लिये
३ जीवसे	जीवनाय	जीवन के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ विदाः	निवेदय	निवेदन करो
४ देवेषु	देवेषु	देवताओं में
नः	अस्माकम्	हमारी
४ दुवः	परिचर्याम्	पूजा को

संस्कृतार्थः।

(हे यूप) उन्नतः (सन्) अस्मान्प्रज्ञया पापान्नितरां पाहि सर्वम् (मनुष्याणाम्) अत्तारं सम्यग्भस्मीकुरु अस्मान्गमनाय जीवनाय (च) उन्नतान्कुरु अस्माकं परिचर्य्यां देवेषु निवेदय ॥ १४ ॥

भाषार्थः।

(हे यूप) ऊंचा (हुआ २) बुद्धि द्वारा हमारी पाप से निपट रक्षाकर सब (मनुष्योंके) भक्षण करने वालों को अत्यन्त भस्मकर हमको गमन (और) जीवन के लिये उन्नत कर (और) हमारी पूजाको देवताओं में निवेदन कर ॥ १४ ॥

(१) यूप खड़ा होकर हमें पाप से अत्यन्त बचावे, बुद्धि द्वारा अर्थात् हमारी बुद्धि को ऐसा प्रेरण करे जिस से हम पाप से वचें ॥

(२) अत्रि के लिये देखो पृ० ४१६-४१७ इन सब प्राणघातक जीवों को खड़ा किया हुआ यूप जलाकर नाश करे ॥

(३) जिसप्रकार यूप स्वयं खड़ाहै वैसेही हमको भी चलने और जीवन के लिये सदा खड़ा रक्खे हम कभी ढीले होकर वैठ न जावें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परन्तु जीने के लिये सदा उन्नत रहें, और विजय के लिये चलने को सदा उन्नत रहें ॥

(४) यूप खड़ा होने से आकाश तक पहुंचता है इस लिये वह हमारी पूजा को देवताओं में निवेदन कर सकता है ॥

अग्निर्देवता बृहती छन्दः ८।८।१२।८।

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेर-राव्णः । पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥१५॥

पाहि	पाहि	रक्षा कर
नः	अस्मान्	हमको
अग्ने	हेअग्ने	हे अग्नि
रक्षसः	राक्षसात्	राक्षस से
पाहि	पाहि	रक्षा कर
धूर्तेः	शाठ्यात्	धूर्तता से
१ अराव्णः	अदातुः (रा+व-निप्)	न देने वाले की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाहि	पाहि	रक्षा कर
रिषतः	हिंसकात् (रिष्-हिंसायाम्)	हिंसक से
उत	उत+	
वा	उत+वा अपिवा	और भी
२ जिघांसतः	हन्तुमिच्छतः	मारनेकी इच्छा वाले से
बृहद्भानो०	हे बृहत्प्रकाश युक्त	हे बड़े प्रकाश वाले
यविष्ठ्य	हे युवतम	हेनिपट जवान

संस्कृतार्थः ।

हेअग्नेऽस्मान्राक्षसात्पाहि अदातुःशाठ्यात्पाहि हेबृहत्प्रकाशयुक्त युवतम (अग्ने) हिंसकादपिवा हन्तुमिच्छतः (अस्मान्) पाहि ॥ १५ ॥

भाषार्थः।

हे अग्नि (आप) हमारी राक्षस से रक्षा करें न देने वालेकी धूर्तता से रक्षाकरें हे बडे प्रकाश वाले निपट जवान (अग्नि) हिंसक से और मारने की इच्छा वाले से भी आप हमारी रक्षाकरें ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) अराव्णा वह है जो देव पितर मनुष्य पशु इत्यादि किसी को देने की इच्छा नहीं करता, परन्तु सदा लेने की ही इच्छा रखता है, ऐसे स्वार्थी नीच न देने वाले अनार्य्य जन के धूर्त पन से अग्नि हमें बचावें ॥

(२) मारने की इच्छा करने वाले से भी अग्नि हमारी रक्षा करें क्योंकि वह सब के मन को जानते हैं और अदृष्ट भय से भी हमें बचा सकते हैं ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८।

घनेवविष्वग्विजह्यराव्णस्तपुर्जम्भयोअस्मध्रुक्। योमर्त्यःशिशीते अत्यक्तुभि र्मानःसरिपुरीशत ॥१६॥

२ घनाऽइव	दृढेन(लगुडेन)इव (तृतीयाया डादेशः)	जैसे कठिन (सोटे से)
विष्वक्	सर्वतः (आ०को)	चारों ओर
वि	वि+	–
जहि	वि+जहि विशेषेणमारय	खूब मार
२ अराव्णः	अदातॄन्	न देने वालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ तपुःऽजम्भ	संतापकृत् दंष्ट्रा यस्य तत्सम्बुद्धौ	हे संतापकारी दाढ़ों से युक्त
यः	यः	जो
अस्मऽध्रुक्	अस्मद्द्रोहकारी	हमारे साथ द्रोह करने वाला
यः	यः	जो
मर्त्यः	मर्त्यः	मनुष्य
२ शिशीते	अति+तनूकरोति	खूब पैनाता है
अति	अति+	–
३ अक्तुऽभिः	रात्रिषु (सप्तम्यर्थे तृतीया)	रात्रियों में
मा	मा	मत
नः	अस्मान्	हम को
सः	सः	वह
रिपुः	रिपुः	शत्रु
ईशत	प्रभवतु (शबोलुगभावः	ईशन करे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हेतपुर्जम्भ (अग्ने) अदातॄन् दृढेन (लगुडेन) इव सर्वतो मारय योऽस्मद्द्रोहकारी यः (वा) मर्त्यो रात्रिषु (शस्त्राणि) अतितनूकरोति स रिपु रस्मान्न प्रभवतु ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

हे संतापकारी दाढों से युक्त (अग्नि) न देने वालों को चारों ओर से मारो, जैसे दृढ (सोटे) से (मारते हैं),जो हमारे साथ द्रोह करता है (अथवा) जो मनुष्य रात्रियों में (शस्त्र) पैनाता है वह शत्रु हम पर ईशन न करे ॥ १६ ॥

(१) अग्नि देव न देने वाले अनार्य जन के प्रति संताप देने वाले दाढों से युक्त हैं ॥

(२) वह उनको ऐसे मारें जैसे कोई दृढ सोटे से चारों ओर से किसी शत्रु को मारता है ॥

(३) जो रात्रियों में छिपकर हम पर प्रहार करने के लिये शस्त्र पैनाता है वा जो हम से द्रोह करता है ॥

(४) वह शत्रु हम पर ईशन न करे अर्थात् हम उसके आधीन न होवें ॥

अग्निर्देवता वृहतीछन्दः ८ । ८ । १२ । ८ ।

अग्निर्वव्रे सुवीर्यमग्निः कण्वाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौभगम् । अग्निःप्रावन्मित्रोतमे-
ध्यातिथिमग्निः साताउपस्तुतम्
॥ १७॥

अग्निः	अग्निः	अग्निने
वव्रे	इष्टवान्	इच्छाकी
१ सुऽवीर्यम्	सुवीर्यम्	बडे वीर्यको
अग्निः	अग्निः	अग्निने
१ कण्वाय	कण्वाय	कण्व के लिये
१ सौभगम्	सौभाग्यम्	सौभाग्यको
अग्निः	अग्निः	अग्निने
प्र	प्र+	–
आवत्	प्र+आवत् प्रकर्षेण रक्षितवान्	पूर्णरीति से रक्षा की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मि॒त्रा	मित्राणि(शेर्लोपः)	मित्रों को
उ॒त	अपिच	और
२ मेध्य॑ऽअ-तिथिम्	मेध्यातिथिम्	मेध्यातिथिको
अ॒ग्निः	अग्निः	अग्नि
३ सा॒तौ	प्राप्तिनिमित्ते (सति)	प्राप्तिके निमित्त पर
२ उ॒प॒ऽस्तु-त॒म्	उपस्तुतम्	उपस्तुत को

संस्कृतार्थः

अग्निः कण्वाय सुवीर्यमिष्टवान् अग्निः सौभाग्यम् (इष्टवान्)अग्निः(अस्माकम्) मित्राणिप्रकर्षेण रक्षितवान् अपिच मेध्यातिथिं (रक्षितवान्) अग्निः प्राप्तिनिमित्ते सत्युपस्तुतम् (रक्षितवान्) ॥१७॥

भाषार्थः

अग्निने कण्व के लिये बडे वीर्य्य की इच्छा का अग्निने सौभाग्य की (इच्छा की) अग्निने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(हमारे) मित्रों की पूर्णरीति से रक्षाकी और मेध्या-तिथि की (रक्षाकी) अग्निने प्राप्ति के निमित्त होने पर उपस्तुत की (रक्षाकी) ॥ १७ ॥

(१) ऋषि कहते हैं कि अग्नि देव ने मुझ कण्व के लिये सौभाग्य और बडे वीर्य की इच्छा की है, इसी लिये मैं सौभाग्यवान् और वीर्यवान् हूं ॥

२) मेध्यातिथि और उपस्तुत दूसरे ऋषि हैं जिनकी अग्नि ने पूर्ण रीति से रक्षा की थी ॥

(३) प्राप्तिका निमित्त संग्राम हैं जहां विजय के साथ बहुत धन की भी प्राप्ति होती है ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८।

अ॒ग्निना॑तु॒र्वशं॒यदुं॑परा॒वत॑ उ॒ग्रादे॑वं हवामहे । अ॒ग्निर्न॑य॒न्नव॑वास्त्वंबृ॒हद्र॑थं तु॒र्वीतिं॒दस्य॑वे॒सहः॑ ॥ १८ ॥

अ॒ग्निना॑	अग्निना सह	अग्नि के साथ
तु॒र्वश॑म्	तुर्वशम्	तुर्वश को
यदु॑म्	यदुम्	यदु को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परा॒ऽवत॑:	दूरात्	दूर देश से
उ॒ग्रऽदे॑वम्	उग्रदेवम्	उग्रदेव को
ह॒वा॒म॒हे॒	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
अ॒ग्निः	अग्निः	अग्नि
न॒य॒त्	(आ) नयेत् (लिङर्थेलेट्शपोलुक्)	लावे
नव॑ऽवा- स्त्वम्	नववास्त्वम्	नववास्त्व को
बृ॒हत्र॑थम्	वृहद्रथम्	बृहद्रथको
तु॒र्वीतिम्	तुर्वीतिम्	तुर्वीतिको
द॒स्यवे॑	दस्यवे	दुष्ट(शत्रु)के लिये
सहः॑	अभिभवित्ता	दबाने वाला

संस्कृतार्थः

(वयम्) अग्निना सह तुर्वशं यदुमुग्रदेवम् (च) दूरादाह्वयामः दस्यवेऽभिभवशीलोऽग्निर्नववास्त्वं बृह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्रथं तुर्वीतिम् (च अस्मत्सहायार्थम्)आनयेत् ॥१८॥

भाषार्थः ।

हम अग्नि के साथ तुर्वश यदु (और) उग्रदेव को दूरसे बुलाते हैं, दुष्ट(शत्रु)के दबाने वाले अग्नि नववास्त्व बृहद्रथ (और) तुर्वीति को (हमारी सहायता के लिये)लावें ॥ १८ ॥

जिस जाति में पूर्व काल में कोई योधा वीर नहीं हुए हैं, उस का उठना बहुत कठिन है, परन्तु जो जाति लोक विख्यात अपने प्राचीन वीरों को भूला देती है वह उठने के योग्य नहीं है। आर्य्योंके प्राचीन वीर तुर्वश, यदु, उग्रदेव, बृहद्रथ और तुर्वीति का नाम भी कितनेही आर्य्य सन्तान आज कल नहीं जानते हैं। इनकी सत्य कथा अन्वेषण करने से अब भी पुराणों से बहुत कुछ मिलसकती है॥

अग्निर्देवता बृहती छन्दः ८। ८। १२। ८।

नित्वामग्नेमनुर्दधे ज्योतिर्जना-
यशश्वते। दीदेथकण्वऋतजात उक्षि-
तोयंनमस्यन्तिकृष्टयः ॥ १९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नि+	–
त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
मनुः	मनुः	मनु ने
दधे	नि+दधे स्थापितवान्	स्थापन किया है
ज्योतिः	ज्योतिस्स्वरूपम्	ज्योतिस्वरूप को
जनाय	जनाय	मनुष्य जाति के लिये
शश्वते	पुनः पुनर्भवाय	पुनः २ होने वाले के लिये
दीदेथ	दीप्तवानसि (दीदतिर्दीप्तिकर्मा)	प्रदीप्त हुआ है
कण्वे	कण्वाय (चतुर्थ्यर्थे सप्तमी)	कण्व के लिये
{१ ऋतऽजातः	ऋतेन निमित्त भूतेन जातः	ऋत के लिये उत्पन्न हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्षितः	सिञ्चितः (सन्)	सींचा (हुआ)
यम्	यम्	जिस को
नमस्यन्ति	नमस्कुर्वन्ति	नमस्कारकरते हैं
कृष्टयः	मनुष्याः (निघं०२।३)	मनुष्य

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ज्योतिस्स्वरूपं त्वां पुनःपुनर्भवाय जनाय मनुस्स्थापितवान् (त्वम्) ऋतजातः (घृतेन) सिञ्चितः (सन्) कण्वाय दीप्तवानसि यं (त्वाम्) मनुष्या नमस्कुर्वन्ति ॥ १९ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ज्योति स्वरूप आप को पुनःपुनः होने वाले मनुष्यजाति के लिये मनुने स्थापन किया, ऋत के लिये उत्पन्न (घृतसे) सींचे हुए आप कण्वके लिये प्रदीप्त हुए हैं, जिस आप को मनुष्य नमस्कार करते हैं ॥ १९ ॥

(१) काष्ट में छिपी हुई अग्नि को जब आगे आने वाली प्रजाओं के लिये मनु ने प्रकट किया, तभी से मनुष्य की उन्नति का आरम्भ हुआ है, सुपरिचित होने से अब हमको अग्नि के उपकार प्रतीत नहीं होते, परन्तु विचारा जावे तो प्रतीत होगा कि बिना अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के हमारा जीवन पशुओं की अपेक्षा तनिक भी उच्च नहीं हो सकता ॥

(२) "ऋत जात" जो ऋत अर्थात् यज्ञ के निमित्त उत्पन्न हुए हैं, अग्नि के लौकिक उपकार को तो सब ही जानते हैं परन्तु उसके आध्यात्मिक उपकार को ऋषि ही जानते थे, जो उसको स्थापन करके मनुष्य से प्राप्त होने योग्य उच्च से उच्च पदवी को पहुंचे थे ॥

अग्निर्देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८।

त्वेषासो॑ अ॒ग्नेरम॑वन्तो अ॒र्चयो॑ भी॒मासो॒ न प्रती॑तये। र॒क्ष॒स्विनः॒ सद॒मि॒द्या॑तु॒माव॑तो॒ विश्वं॒ सम॒त्रिणं॑ दह ॥२०॥

त्वे॒षासः॑	दीप्ताः (त्विष् दीप्तौ अच्)	प्रकाशित
अ॒ग्नेः	अग्नेः	अग्नि की
अम॑वन्तः	बलवन्तः	बलयुक्त
अ॒र्चयः॑	ज्वालाः	ज्वालाएं
भी॒मासः॑	भयङ्कराः	भयङ्कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	न	नहीं
प्रतिऽइतये	प्रति गमनाय	सामने जाने के लिये
रक्षस्विनः	राक्षसान्	राक्षसों को
सदम्	सर्वदा	सदा
इत्	एव	ही
यातुऽमावतः	यातुधानान्	यातुधानों को
विश्वम्	सर्वम्	सब को
सम	सम् +	–
अत्रिणम्	अत्तारम् (अदेस्त्रिनिः)	भक्षण करने वाले को
दह	सम्+दह सम्यग्दह	खूब जलाओ

संस्कृतार्थः ।

दीप्ता बलवन्तो भयङ्करा अग्नेर्ज्वालाः प्रतिगमनाय नैव (सम्भवन्ति) (हेअग्ने) राक्षसान् यातु-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धानान्(च) सर्वदैव (भस्मीकुरु) सर्वम् (मनुष्याणाम्) अत्तारं सम्यग्दह ॥२०॥

भाषार्थः।

प्रकाशित बलयुक्त और भयङ्कर अग्नि की ज्वालाएं सामने जाने को शक्य नहीं हैं (हेअग्नि) राक्षस (और) यातुधानों को सदा ही (भस्मकरो) (मनुष्यों के) भक्षण करने वाले सब को खूब जलाओ ॥२०॥

अग्निकी ज्वालाएं देवशत्रुओं के लिये भयङ्कर और सामना करने योग्य नहीं हैं इन ज्वालाओं में से वायु आदि; देवता ही जीते निकल सकते हैं, राक्षस, यातुधान और अत्रि सब भस्म होजाते हैं। अत्रि के लिये देखो पृष्ठ ४१६, राक्षस और यातुधान भी ऐसे ही घातक जीव और पाप की शक्तियों के नाम हैं ॥

इति षट्त्रिंशं सूक्तम्।

ऋ० मं०१ सू० ३७ मं०१

मरुतो देवता घोरपुत्रः कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः।८।८।८

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम्। कण्वा अभि प्र गायत ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रीळं	क्रीडाशीलं	क्रीडा करने वाले को
१ वः	युष्माकम्	तुम्हारे
शर्धः	गणम् (आ०को०)	गण को
मारुतम्	मरुत्सम्बन्धिनम्	मरुतों के
२ अनर्वाणम्	हिंसा रहितम् (अर्वहिंसायां कनिन्)	हिंसा रहित को
रथेऽशुभम्	रथेशोभमानम्	रथमें शोभायमान को
कण्वाः	हे कण्वगोत्रोत्पन्नाः	हे कण्वगोत्रवालो
अभि	अभि (लक्ष्य)	लक्ष्य करके
प्र	प्र०	—
गायत	प्र+गायत प्रकर्षेण गायत	खूब गायन करो

संस्कृतार्थः ।

हे कण्वगोत्रोत्पन्नाः क्रीडाशीलं हिंसारहितं रथेशोभमानं युष्माकं मरुद्गणमभिलक्ष्य प्रकर्षेण गायत ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे कण्व गोत्र वालो क्रीडा करने वाले हिंसा रहित रथ में शोभायमान अपने मरुद्गण को लक्ष्य करके खूब गायन करो ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त सत्र के व्यूढ सम्बन्धी द्वितीय छन्दोम में अग्नि मारुत शस्त्रमें डालकर पढ़ाजाताहै (आ०श्रो०सू०उ०२।१०।३) पहला मन्त्र साकमेध इष्टि में "क्रीडी मरुत" देवताओं का अनुवाक्या है (आ० श्रौ० सू० २। १८। १६)

(१) "वः !" कहने का यह तात्पर्य है कि मरुद्गण तुम कण्व गोतियों के अपने बन्धु वर्ग में से हैं और

(२) तुम्हारे प्रति हिंसा रहित और मित्र भाव रखने वाले हैं।

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः। अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥

ये	ये	जो
२ पृषतीभिः	बिन्दुयुक्तमृगीभिः (वाहनभूताभिः) (निघं०१।१५)	बिन्दु युक्त मृगियों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ ऋष्टिऽभिः	आयुधैः	शस्त्रोंके साथ
साकम्	युगपत् (आ०को)	एक साथ
३ वाशीभिः	युद्धनादैः (आ०को)	युद्ध की ललकारों के साथ
२ अञ्जिऽभिः	आभूषणैः	आभूषणों के साथ
अजायन्त	अजायन्त	उत्पन्न हुए
१ स्वऽभानवः	स्वकीयदीप्तियुक्ताः	स्वयंप्रकाशवाले

संस्कृतार्थः।

ये स्वकीय दीप्तियुक्ताः (वाहन भूताभिः) बिन्दु युक्तमृगीभिः आयुधैर्युद्धनादैराभूषणैः (च) सह युगपदजायन्त ॥२॥

भाषार्थः।

जो स्वयं प्रकाश वाले (वाहन भूत) बिन्दुयुक्त मृगियों, शस्त्रों, युद्ध की ललकारों (और) आभूषणों के सहित एक साथ उत्पन्न हुए हैं ॥२॥

(१) मरुद्गण विद्युत रूपी शस्त्र और आभूषणों से चमकते हुए स्वयं प्रकाश मान हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) बिन्दुवाली मृगियां वे शीघ्र गामी पवन हैं जिन पर मेघ की बून्दें पड़नी आरम्भ होगई हैं और जिनपर मरुत देवता सवार होकर आते हैं।

(३) बादल की गरज और वायु का शब्द इन की युद्ध की ललकारें हैं।

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

इ॒हेव॑ शृ॒ण्व ए॑षां॒ कशा॒ हस्ते॑षु॒ यद्व॑दा॒न् । नि॒याम॑ञ्चि॒त्रमृ॑ञ्जते ॥३॥

इ॒हऽइ॑व	यथेह तथा	मानों यहां ही (हो)
शृ॒ण्वे	शृणोमि	मैं सुनता हूं
ए॒षा॒म्	एषाम्	इन के
कशाः॑	कशाः	चाबुक
हस्ते॑षु	हस्तेषु	हाथों में
यत्	यत्	जो
वदा॑न्	वदन्ति ध्वनिं कुर्वन्ति (लेटयाडागमः)	शब्द करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नितराम्	अत्यन्त
यामन्	प्रयाणे (सप्तम्या लुक्)	यात्रा में
चित्रम्	अद्भुतरूपम्	अद्भुत रूपको
ऋञ्जते	प्राप्नुवन्ति (भ्रा०को०	प्राप्त करते हैं

संस्कृतार्थः।

यदेषां हस्तेषु (स्थिताः)कशा ध्वनिं कुर्वन्ति (तम्) यथेह (वर्तते) तथा शृणोमि (तेमरुतः) प्रयाणेऽद्भुत रूपं प्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

जो इन के हाथों में (स्थित) चाबुक ध्वनि करते हैं (वह)ऐसे सुन पड़ती है जैसे यहां (समीप) ही हो, वे मरुत यात्रा में अद्भुत रूप को प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

प्र वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय

शुष्मिणे देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र+	---
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
शर्धाय	गणाय (आ० को)	गण के लिये
घृष्वये	संघर्षकाय (घृष् संघर्षे)	रगडने वाले के लिये
त्वेषऽद्युम्नाय	दीप्यमान यशसे (त्विष् दीप्तौ द्युम्न मिति यशोनाम) (निरु०५।५)	दीप्यमान यश वाले के लिये
शुष्मिणे	बलवते	बलवाले के लिये
देवत्तम्	देवैर्दत्तम् (वर्णलोपः)	देवताओंसे दिये हुए को
ब्रह्म	मंत्ररू प स्तुतिम्	मंत्र रूप स्तति को
गायत	प्र+गायत	खूब गाओ

संस्कृतार्थः ।

हे कण्वा युष्माकं बलवते दीप्यमान यशसे (शत्रूणाम्) संघर्षकाय मरुद्गणाय देवैर्दत्तांमंत्ररूपां स्तुतिं प्रकर्षेण गायत ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

(हे कण्वो) अपने बलवान् दीप्यमान यश वाले (और शत्रुओं)को रगड़ने वाले मरुद्गण के लिए देवताओं की दी हुई मंत्ररूप स्तुति को खूब गाओ ॥४॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

प्रशंसा गोष्वघ्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम्। जम्भे रसस्य वावृधे ॥५॥

प्र	प्र+	--
शंस	प्र+शंस स्तुहि	स्तुति कर
१ गोषु	गोषु	गौओं में
१ अघ्न्यम्	बलीवर्दम्	बैल को
क्रीळम्	क्रीडा शीलम्	क्रीडा करने वाले को
यत्	यत्	जो
शर्धः	गणः	गण
मरुतम्	मरुत्सम्बन्धो	मरुत्सम्बन्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ जम्भे	दंष्ट्रायाम्	जबडे में
२ रसस्य	रसस्य	रसके
२ ववृधे	वृद्धोऽभूत्	बढा है

संस्कृतार्थः ।

गोषु बलीवर्दः क्रीडाशीलो यो मारुतोगणः (अस्ति) तं स्तुहि (तद्गणः वृष्टिरूप–)रसस्यदंष्ट्रायां वृद्धोऽभूत् ॥५॥

भाषार्थः

गौओं में बैल (और) क्रीड़ा करने वाला जो मरुद्गण है उसकी स्तुति करो वह (वृष्टिरूप) रस के जबड़े में वृद्धि को प्राप्त हुआ है ॥५॥

(१) बादलरूपी गौओं को प्रेरण करने से मरुद्गण को बैल की उपमा दी गई है ।

(२) जब वृष्टि का रस पृथिवी पर गिरता है तो मरुद्गण को भक्षण करना चाहता है—(वर्षा होने पर प्रायः आंधी शान्त होजाती है) परन्तु मरुद्गण उस के जबडे में भी वृद्धिको प्राप्त हुआ है । (जैसे कभी २ देखा है—कि वृष्टि भी खूब होती है और वायु का वेग भी बढता जाताहै) उस समय ऐसा प्रतीत होता है—जैसे अगले मन्त्रों में वर्णन किया गया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ६।६।६॥

कोवो वर्षिष्ठआनरो दिवश्चग्म

श्चधूतयः। यत्सीमन्तंनधूनुथ ॥६॥

कः	कः	कौन
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
वर्षिष्ठः	बृद्धतमः	सब से बडा
आ	अभिविधौ	में से
नरः	हे नरः	हे नरा
दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक के
च	(पूरणः)	--
ग्मः	भूलोकस्य	भूलोक क
च	च	और
धूतयः	कम्पन कारिणः	कंपाने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यत्	जो
सीम्	(पूरणः)	--
अन्तम्	अन्तम्	आंचल का
न	इव	न्याईं
धूनुथ	धूनुथ	हिलाते हो

संस्कृतार्थः ।

द्युलोकस्य भूलोकस्य च कम्पनकारिणः हे नरः युष्माकं मध्ये वृद्धतमः (कोऽस्ति) यत् (वस्त्रस्य) अन्तमिव (द्यावा पृथिव्यौ) धूनुथ ॥६॥

भावार्थः ।

द्युलोक और भूलोकके कम्पाने वाले हे नरो आप में सब से बड़ा (कौन है) जो (आप वस्त्र) के आंचल की न्याईं (उन द्यावा पृथिवी को) हिलाते हो ॥६॥

मरुतोदेवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नि +	--
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
यामाय	गमनाय	गमन के लिये
मानुषः	मनुष्य	मनुष्यने
दध्रे	नि+दध्रे नीचैर्धृ· तवान्	नीचे थांभा है
उग्राय	प्रचण्डाय	प्रचण्ड के लिये
मन्यवे	क्रोधाय	क्रोध के लिए
जिहीत	विचलति (लडर्थे लिङ्)	चलाय मान होता है
पर्वतः	बहु पर्व युक्तः	बहुत जोडों से युक्त
गिरिः	गिरिः	पर्वत

संस्कृतार्थः।

(हे मरुतः) युष्माकं गमनाय प्रचण्डाय (च) क्रोधाय मनुष्यो (आत्मानम्) नीचैर्धृतवान् बहु पर्व युक्तो गिरिः (च) विचलति ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

(हे मरुद्गण) आप के गमन और प्रचण्ड क्रोध के सामने मनुष्य ने (अपने को) नीचे थांभा है (और) बहुत जोड़ों से युक्त पर्वत भी चलायमान होजाता है ॥७॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँइव विश्पतिः। भिया यामेषु रेजते ॥ ८ ॥

येषाम्	येषाम्	जिन के
अज्मेषु	प्रयाणेषु (अज् गतौ)	गमन होने पर
पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी
जुजुर्वान्ऽइव	वृद्धइव (जॄ वयो हानौ कसु)	बुढ्ढे की न्याई
विश्पतिः	राजा	राजा
भिया	भयात्	भय से
यामेषु	मार्गेषु	रस्तों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रेजते	कम्पते	काम्पती ह

संस्कृतार्थः ।

येषाम् (मरुताम्)प्रयाणेषु पृथिवी मार्गेषु वृद्धराजेव भयात् कम्पते ॥ ८॥

भावार्थः ।

जिन (मरुतों) के गमन होने पर पृथिवी मार्गों में भय से इस प्रकार कांपती है जैसे बुड्ढा राजा ॥८॥

मरुतो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ७।८।८॥

स्थिरंहिजानमेषां वयोमातुर्निरे-
तवे । यत्सीमनुद्विताशवः ॥ ९ ॥

१ स्थिरम्	स्थिरम्	स्थिर
हि	खलु	निश्चय करके
१ जानम्	जन्म	जन्म
एषाम्	एषाम्	इनका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ वयः	बलम्	बल
२ मातुः	मातुः	माता से
२ निःऽएतवे	निर्गन्तुम्	निकलने के लिये
यत्	यत्	जो
सीम्	(पूरणः)	--
अनु	अनु+	--
१ द्विता	अनु+द्विता द्विगुणाद्द्विगुणं (अनुवीप्सायाम्)	दुगने से दुगना
१ शवः	बलम्	बल

संस्कृतार्थः

येषां जन्म स्थिरं खलु मातुर्निर्गन्तुं बलम् (च) विद्यते यद्बलम् द्विगुणाद्द्विगुणम् ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

इनका जन्म निश्चय करके स्थिर है (और) माता से उत्पन्न होने के लिए बल है जो बल दुगने से दुगना (है) ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) सूर्य्य की किरणों द्वारा पृथिवी के जल और स्थल के नाना विभागों के न्यूनाधिक तप्त होने से मरुतों की उत्पत्ति होती है इस लिये इन का जन्म स्थिर अर्थात् निश्चित है।

(२) अन्तरिक्षरूपी माता से उत्पन्न होने को इन में पहले ही से बल विद्यमान है—ये मनुष्यों की न्याईं नहीं हैं कि बडे होने से बल हो और जन्म के समय कुछ बल न हो।

(३) जितने बल की इन को अपेक्षा है—उस से द्विगुण से द्विगुण इन में विद्यमान है।

मरुतोदेवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मे-
ष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥१०॥

उत्	प्रश्ने	क्या
ऊम्०	वितर्के	स्यात्
त्ये	ते	उन्होंने
सूनवः	पुत्राः	पुत्रों ने
१ गिरः	गायकाः	गाने वालोंने
काष्ठाः	सीमाः	सीमाओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अज्मे॑षु	प्रयाणेषु	यात्राओं में
अ॒त्न॒त॒	विस्तारितवन्तः	बढाया है
वा॒श्राः	हंभारवोपेतागाः	रांभने वाली गौओं को
अ॒भि॒ऽज्ञु	अभिगत जानु यथा स्यात् तथा	गोडों को आगे करके
या॑तवे	गन्तुम्	चलने के लिये

संस्कृतार्थः।

किं ते (अन्तरिक्षस्य) पुत्राः गायकाः (मरुतः) हम्भारवोपेतानां गवां जान्वभिमुखं गन्तुं प्रयाणेषु सीमा विस्तारितवन्तः ॥१०॥

भाषार्थः।

क्या उन अन्तरिक्ष के पुत्र गानेवाले (मरुतोंने) रांभने वाली गौओं के गोडे २ पानी में चलने के लिये (अपनी) यात्राओं में सीमा को बढ़ादिया है ॥१०॥

मरुतों ने अपनी यात्रा की सीमा को बढाकर दूर दूर से बादल रूपी गौओं को ला कर इतनी वृष्टि की है—कि गौओं को गोडे गोडे जल में चलना पड़ा है—इसी को देखकर ऋषि प्रश्न करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) मरुत गाने वाले इसलिये हैं। कि अपने साएं साएं शब्द से परमात्मा की स्तुति गायन करते हैं॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

त्यंचिद्घादीर्घंपृथुं मिहोनपातममृ
ध्रम्। प्रच्यावयन्तियामभिः। ११।

त्यम्	त्यम्+चित्	उस किसी को
चित्	+चित्	--
घ	खलु	निश्चय करके
दीर्घम्	दीर्घम्	लम्बे को
पृथुम्	पृथुम्	चौडे को
मिहः	सेचकस्य(मेघस्य)	सिंचन करने वाल (मेघ के)
नपातम्	पुत्रम् (भा०को०)	पुत्र को
अमृध्रम	अप्रतिबद्धम् (भा०को)	न रोके जाने वाले का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र +	——
च्यवयन्ति	प्र+च्यवयन्ति प्रणुदन्ति	हांक लेजाते हैं
यामऽभिः	प्रयाणैः	यात्राओं के साथ

संस्कृतार्थः।

(मरुतः)कमपि तं दीर्घं पृथुमप्रतिबद्धं मेघस्य पुत्रं (स्व) प्रयाणैः प्रणुदन्ति खलु ॥ ११ ॥

भाषार्थः।

(मरुद्गण)निश्चय करके उस किसी लम्बे चौडे न रोके जाने वाले मेघ के पुत्र को अपनी यात्राओं के साथ हांक कर ले जाते हैं ॥११॥

जब मरुत यात्रा करते हैं तो रस्ते में कैसाभी लम्बा चौडा किसीसे न रोके जाने वाला कोई मेघका पुत्र अर्थात् बादल हो-उसे अपने रस्ते में हांक कर लेजाते हैं।

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ॥ ८।८।८ ॥

मरुतोयद्ववोबलं जनाँअचुच्य

वीतन। गिरीँरचुच्यवीतन ।१२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
यत्	यत्	जो
ह	खलु	सच मुच
वः	युष्माकम्	तुम्हारा
बलम्	बलम्	बल
जनान्	जनान्	मनुष्यों को
अचुच्यवीतन	पातितवन्तः (च्युङ्गतौ)	गिराया है
गिरीन्	पर्वतान्	पर्वतों को
अचुच्यवीतन	पातितवन्तः	गिराया है

संस्कृतार्थः।

हे मरुतो यत्खलु युष्माकं बलम् (अस्ति) (तेन) मनुष्यान् पातितवन्तः पर्वतान् (च) पातितवन्तः।१२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे मरुतो सचमुच जो आपका बल है(उससे)आपने मनुष्योंको गिराया है,और पर्वतोंको गिरायाहै॥१२॥

मरुतो देवता विराड्गायत्री छन्दः ७।८।७॥

यद्धयान्तिमरुतः संहब्रुवतेऽध्व न्ना। शृणोति कश्चिदेषाम् ॥१३॥

यत्	यदा	जब
ह	खलु	सच मुच
यान्ति	गच्छन्ति	चलते हैं
मरुतः	मरुतः	मरुत
सम्	सम्+	--
ह	एव	अवश्य
ब्रुवते	सम+ब्रुवते सम्भूय ब्रुवते	मिलकर बातें करते हैं
अध्वन्	अध्वनि(सप्तम्यालुक्)	मार्ग में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	पूरणः	--
शृणोति	शृणोति	सुनता है
कः	कः + चित्	कोई भी
चित्	चित्+	--
एषाम्	एनान् (द्वितियार्थे षष्टी)	इन को

संस्कृतार्थः ।

यदा मरुतो गच्छन्ति खलु (तदा) मार्गे सम्भूय ब्रुवत एव (किम्) एनान् कश्चिच्छृणोति ॥१३॥

भाषार्थः ।

सच मुच जब मरुत चलते हैं (तब) रस्ते में मिलकर अवश्य बातें करते हैं (क्या) इनको कोई सुनता है ? ॥१३॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८ ॥

प्रयात शीभमाशुभिः सन्तिकण्वेषु

वोदुवः । तत्रोषुमादयाध्वै ।१४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र+	--
यात	प्र+यात	यात्रा करो
शीभम्	शीघ्रम (निघं०२।१५)	शीघ्र
आशुऽभिः	वेगवद्भिः(वाहनैः)	वेगवाले (वाहनों) से
सन्ति	सन्ति	हैं
कण्वेषु	कण्वेषु	कण्वोंमें
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
१ दुवः	परिचारकाः	सेवक
तत्रो०	तेषु	उनमें
सु	सुष्ठु	भली प्रकार
मादयाध्वै	मादयध्वम्	मोद करो

संस्कृतार्थः

(हे मरुतः) वेगवाद्भः (वाहनैः) शीघ्रं प्रयात कण्वेषु युष्माकं परिचारकास्सन्ति तेषु शुष्ठु मादयध्वम् ।१४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(हे मरुतो) वेगवाले (वाहनों) से शीघ्र यात्रा करो कण्वों में आपके सेवक विद्यमान हैं उनमें भली प्रकार मोद करो ॥१४॥

(१) दुवः यहां परिचर्य्या अर्थ में होता तो "अस्ति" क्रिया होती, "सन्ति" क्रिया के होने से दुवः शब्द को "दूः" का प्रथमा में बहु वचन मान कर "पूजा करने वाले" ऐसा अर्थ कर सकते हैं, ऋ० ७।४।६ में "अदुवः" न पूजा करने वालों के अर्थ में आया है (Max Müller)

मरुतो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ।८।७।८॥

अस्ति॒ हि ष्मा॒ मदा॑य वः॒ स्मसि॑ ष्मा व॒यमे॑षाम् । विश्वं॑ चि॒दायु॑र्जी॒वसे॑ ॥१५॥

अस्ति॑	विद्यते	विद्यमान है
हि	खलु	निश्चय करके
स्म॒	(पूरणः)	--
मदा॑य	मदाय	हर्ष के लिये
वः॒	युष्माकम्	तुम्हारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मसि	विद्यामहे	विद्यमान हैं
स्म	(पूरणः)	--
वयम्	वयम्	हम
एषाम्	एषाम्	इन के
१ विश्वम्	विश्वम्+चित्	सारी जितनी
१ चित्	+चित्	--
१ आयुः	आयुः	आयु
१ जीवसे	जीवितुम्	जीने को

संस्कृतार्थः।

(हे मरुतः) युष्माकं मदाय (हविः) विद्यते खलु सर्वंचिदायुर्जीवितुंवयमेषाम् (परिचारकाश्च) विद्यामहे ॥१५॥

भाषार्थः

(हे मरुतो) आप के हर्ष के लिये (हवि) तैयार है सारा जितनी आयु (है उतनी) जीने को हम उनके (सेवक) विद्यमान हैं ॥१५॥

(१) जो देवताओं की सेवा से नहीं थकता उस के दीर्घ जीवन में कोई संदेह नहीं है॥ इति सप्तत्रिंशं सूक्त ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०३८ मं० १।

मरुतो देवता घोरपुत्रः कण्वऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

कद्धनूनंकधप्रियः पितापुत्रंनह-
स्तयोः। दधिध्वेवृक्तबर्हिषः॥१॥

कत्	कदा	कब
ह	खलु।	सच मुच
नूनम्	इदानीम् (षा०को०)	अब
१ कधऽप्रियः	हे कथा प्रियाः	हे कथा के प्यारो
२ पिता	पिता	पिता,
१ पुत्रम्	पुत्रम्	पुत्रको
न	इव	न्याईं
२ हस्तयोः	हस्तयोः	हाथों में
दधिध्वे	धारयथ (भविष्य इयें लिट्)	धारण करोगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृक्ताऽब र्हिषः	वृक्तं आस्तृतं बर्हिर्येभ्यःतत्स-म्बुद्धौ	जिनके लिये कुशा बिछाई है

संस्कृतार्थः।

हे कथाप्रिया वृक्तवर्हिषः (मरुतो यूयम्) इदानीं कदा खलु (अस्मान्) पितापुत्र मिव हस्तयोर्धारयथ॥१॥

भाषार्थः।

हे कथा के प्यारो, जिन के लिये कुशा बिछाई गई है (ऐसे आप) सच मुच कब (हमको) हाथों में धारण करोगे जैसे पिता पुत्र को करता है ॥ १ ॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

क्वनूनंकद्वोअर्थं गन्तादिवोनपृथि-व्याः। क्ववोगावोनरण्यन्ति॥२॥

क्व	कुत्र	कहां
नूनम्	इदानीम्	अब
कत्	किम्	क्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वः	युष्माकम्	तुम्हारा
अर्थम्	प्रयोजनम्	प्रयोजन
गन्त	गच्छथ	जाते हो
दिवः	द्युलोक मार्गात्	द्युलोक के रस्ते से
न	न	नहीं
पृथिव्याः	पृथिव्याः	पृथिवी से
क्व	कुत्र	कहां
वः	युष्माकम्	तुम्हारी
गावः	गावः	गौएं
न	न	नहीं
रण्यन्ति	शब्दयन्ति (रणशब्दे व्यत्ययेनश्यन)	रांभती हैं

संस्कृतार्थः।

(हेमरुतो यूयम्) इदानीं कुत्र (वर्तध्वे) युष्माकं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किं प्रयोजनम् (विद्यते यत्) द्युलोक मार्गात् गच्छथ, पृथिव्या न (गच्छथ), युष्माकं गावो कुत्र न शब्दयन्ति ? ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(हे मरुतो) आप अब कहां (हो) आपका क्या काम है जो आकाश मार्ग से जाते हो, पृथिवी से नहीं (जाते), आपकी गौएं कहां नहीं रांभतीं ? ॥२॥

ऋषि पूछते हैं—हे मरुतो आप कहां हैं—जो हमारे पास पृथिवी पर नहीं दीख पड़ते-ऐसा आपका क्या काम है-जो आकाश मार्ग से जाते हैं पृथिवी के मार्ग से नहीं—यदि आकाश मार्ग से अपनी बादल रूपी गौओं को संभालने जाते हैं तो क्या यहां आपकी रांभने वाली गौएं नहीं हैं ? रांभने वाली गौओं से स्तुति करने वाले मनुष्य तात्पर्य है।

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

क्ववः सुम्नानव्यांसि मरुतः क्वसुविता । क्वो३विश्वानिसौभगा ।३।

क्व	क्व	कहां
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
सुम्ना	हित बुद्धयः (धा०को०) (शेर्लोपः)	कृपाएं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नव्यांसि	नवतराणि	नवीन से नवीन
मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
क्व	क्व	कहां
सुविता	सुष्ठु इतानि (उवङादेशः) शेर्लोपश्च)	शुभ घटनाएं
क्वो३	क्व	कहां
विश्वानि	सर्वाणि	सब
सौभगा	सौभगानि	सौभाग्य

संस्कृतार्थः ।

हे मरुतो युष्माकं नवतरा हितबुद्धयः क्व (सन्ति) सुवृत्तानि क्व (सन्ति) सर्वाणि सौभगानि (च) क्व (सन्ति)॥३॥

भाषार्थः ।

हे मरुतो आप की नवीन से नवीन कृपाएं कहां ? (हैं) शुभ घटनाएं कहां ? (हैं और) सब सौभाग्य कहां ? (हैं) ॥३॥

ऋषि पूछते हैं,कि हे मरुतो आप हमें छोडकर आज कलकिन लोगों पर नई नई कृपाएं शुभ घटनाएं और सौभाग्य बरसारहेहैं ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ८।७।८॥

यद्यूयंपृश्निमातरो मर्तासः स्यातन। स्तोतावोअमृतः स्यात् ॥ ४ ॥

यत्	यदि	जो
यूयम्	यूयम्	तुम
पृश्निऽमातरः	पृश्निर्माता येषां तत्सम्बुद्धौ	हे आकाश के पुत्रो
मर्तासः	मरणधर्माणः	मरण धर्मी
स्यातन	भवेत	होते
स्तोता	स्तोता	स्तुति करनेवाला
वः	युष्माकम्	तुम्हारी
अमृतः	अमरः	अमर
स्यात्	स्यात्	होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे पृश्निमातरः (मरुतः) यदि यूयं मरणधर्माणो भवेत युष्माकं स्तोता (च) अमरस्स्यात् ॥४॥

भाषार्थः ।

हे आकाश के पुत्रो जो आप मरण धर्मी होते और आप की स्तुति करने वाला (मैं) अमर होता ॥४॥

इस मंत्र का अगले के साथ सम्बन्ध है ॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ॥ ८।८।८।

मावो॑मृगोनयव॑से जरि॒ताभू॒दजो॑ष्यः।

पथा॒य॒मस्य॑गा॒दुप ॥५॥

मा	न	नहीं
व॒ः	युष्माकम्	तुम्हारी
मृग॒ः	मृगः	मृग
न	इव	न्याईं
यव॑से	शस्ये	घास में
ज॒रि॒ता	स्तोता (निघं० ३।१६।)	स्तुति करने वाला
भू॒त्	अभवत्	होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अजोष्यः	असेवनीयः	न सेवने योग्य
पथा	मार्गेण	मार्ग से
यमस्य	यमस्य	यम के
गात्	उप + गात्	जाता
उप	उप +	–

संस्कृतार्थः ।

(तदा) युष्माकं स्तोता शस्ये मृग इवाऽसेवनीयो नाभवत् यमस्य मार्गेण च नोपगच्छत् ॥५॥

भाषार्थः ।

(तो) आप की स्तुति करने वाला घास में मृग की न्याईं न सेवने योग्य न होता (और) यम के मार्ग से न जाता ॥५॥

मरुतो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ।७।८।८

मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा वधीत् ।
पदीष्ट तृष्णया सह ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मो०	मा	मत
सु	सर्वथा (सा०भा)	सर्वथा
नः	अस्मान्	हमको
पराऽपरा	या पराचाऽपराच सा	एकके पीछे दूसरी
निःऽऋतिः	पाप देवता	पाप की शक्ति
दुःऽहना	हन्तुं दुःशका (कर्म्मणिखल्)	दुःख से हटने योग्य
वधीत्	घातयेत् (लिङर्थेलुङ्)	घात करे
पदीष्ट	नश्येत् (भा० को)	नाश को प्राप्त हो
तृष्णाया	तृष्णया	तृष्णा से
सह	सह	साथ

संस्कृतार्थः ।

पराऽपरा हन्तुं दुःशका पाप देवता माऽस्मान्स-र्वथा घातयेत् (किंतु) तृष्णया सह नश्येत् ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

एक के पीछे दूसरी आने वाली दुःख से हटने वाली पाप की शक्ति हम को सर्वथा घात न करे (किन्तु) तृष्णा के साथ नाश को प्राप्त हो ॥६॥

ऋषि कहते हैं कि हे मरुतो यदि मैं आपकी न्याईं अमर अर्थात् देवता होता, और आप मेरे उपासक मनुष्य होते। तो मैं आप की यह गति कदापि न होने देता जो इस समय आपके स्तोता की हो रही है। वह यह कि चारों और घास में रहकर भी हरिण की न्याईं मैं असेवनीय (जिस को घास में आने का अधिकार नहीं है) समझा जाता हूं, अर्थात् पृथिवी में चारों ओर धन होने पर भी मैं दरिद्री हूं। और यम के रस्ते अर्थात् मृत्यु की ओर जारहा हूं॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः । ८।८।८।

सत्यंत्वेषाअमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः। मिहंकृण्वन्त्यवाताम् ७

सत्यम्	सत्यम्	सच मुच
त्वेषाः	दीप्ताः	दीप्ति वाले
अमऽवन्तः	बलवन्तः	बल वाले
धन्वन्	मरुदेशे (सप्तम्यालुक्)	निर्जल देश में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्	अपि	भी
आ	(अभिविधौ)	–
१ रुद्रियासः	रुद्रस्यपुत्राः (तस्येदमित्यर्थेघः)	रुद्र के पुत्र
मिहम्	वृष्टिम्	वर्षा को
कृणवन्ति	कृण्वन्ति	करते हैं
२ अवाताम्	वायुरहिताम्	वायु रहित को

संस्कृतार्थः ।

सत्यमेव दीप्ता बलवन्तो रुद्रपुत्राः (मरुतः) मरुदेशेऽपि वायु रहितां वृष्टिं साकल्येन कुर्वन्ति॥७॥

भाषार्थः ।

सच मुच दीप्ति वाले बलवान रुद्र के पुत्र (मरुत) निर्जल देश में भी वायु रहित वर्षा को सर्वत्र करते हैं ॥७॥

(१) आकाश का भयानक रूप रुद्र है जिस से मरुत उत्पन्न होते हैं ॥

(२) वायु रहित वृष्टि से तात्पर्य्य मूसल धार वर्षा है जब वायु मेंहको उडाती नहीं और वह सीधा बरस कर पृथिवी में धस जाता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

वाश्रेवविद्युन्मिमाति वत्संनमाता

सिषक्ति । यदेषांवृष्टिरसर्जि ॥८॥

वाश्राऽइव	हंभारवोपेता (धेनुः) इव (वाश्र शब्दे)	रांभतीहुई (धेनु) की न्याईं
विऽद्युत्	विद्युत्	बिजली
मिमाति	शब्दं करोति (माङ् माने शब्द च, व्यत्ययेन परस्मैपदम्)	शब्द करती है
वत्सम्	वत्सम्	बछड़े को
न	इव	न्याईं
माता	माता	माता
सिसक्ति	सेवते (निघ० ३।२१)	सेवन करती है
यत्	यदा	जब
एषाम्	एषाम्	इनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृष्टिः	वृष्टिः	वर्षा
असर्जि	सृज्यते (लङर्थेलुङ्)	छोड़ी जाती है

संस्कृतार्थः ।

हंभारवोपेता (धेनुः) इव विद्युच्छब्दं करोति यदैषाम् (सबन्धेन) वृष्टिस्सृज्यते (तां विद्युत्) माता वत्समिव सेवते ॥८॥

भाषार्थः ।

रांभने वाली गौ की न्याईं बिजली शब्द करती है जब इनके सम्बन्ध से बृष्टि होती है (उसको) बिजली सेवन करती है जैसे माता बछडे को ॥ ८॥

बृष्टि को बछडे और विद्युत् को उसकी माता से उपमा दीगई है। बछडे के लिए विद्युत् दूर से रांभती हुई आती है और जब मरुत बृष्टि रूपी बछडे को छोड देते हैं तब बिजली की गरज बन्द होजाती हैं। क्योंकि अब उसको बछड़ा प्राप्त होगया और वह चुप होकर उसको सेवन करती है॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

दिवा चित्तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनो दवाहेन । यत्पृथिवीं व्युन्दन्ति ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिवा	दिवसे	दिनमें
चित्	अपि	भी
तमः	अन्धकारम्	अन्धकार को
कृण्वन्ति	कुर्वन्ति	करते हैं
पर्जन्येन	मेघेन	बादल से
उदऽवाहेन	उदकवाहिना	जल को ढोने वाले से
यत्	यदा	जब
पृथिवीम्	पृथिवीम्	पृथिवी को
विऽउन्दन्ति	अतीवक्लेदयन्ति	अत्यन्त तर करते हैं

संस्कृतार्थः ।

(मरुतः) दिवसेऽपि उदक वाहिना मेघेनान्धकारं कुर्वन्ति यदा पृथिवीमतीव क्लेदयन्ति ॥९॥

भाषार्थः ।

(मरुत्) दिन में भी जल ढोने वाले बादल द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्धकार कर देते हैं जब पृथिवी को अत्यन्त तर करते हैं ॥ ९ ॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः८।८।८ ॥

अध॑ स्व॒नान्म॒रुतां॒ विश्व॒मा सद्म॒ पार्थि॑वम्। अरे॑जन्त॒ प्र मानु॑षाः ॥१०॥

अध॑	अनन्तरम्	अनन्तर
स्व॒नात्	स्वनात्	शब्द से
म॒रुता॑म्	मरुताम्	मरुतों के
विश्व॑म्	सर्वम्	सब
आ	समन्तात्	चारों ओर
सद्म॑	गृहम् (निघं० ३।४)	घर
पार्थि॑वम्	पृथिवीसम्बन्धि	पृथिवीसम्बन्धि
अरे॑जन्त	प्र+अरेजन्त	अत्यन्त कांपे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र +	--
मानुषाः	मनुष्याः	मनुष्य

संस्कृतार्थः ।

मरुतां स्वनानन्तरं सर्वं पार्थिवं गृहं समन्तात् (अरेजत) मनुष्याः (च) प्रकर्षेणाऽरेजन्त ॥१०॥

भाषार्थः ।

मरुतों के शब्द के अनन्तर सब पृथिवी के घर चारों ओर (काम्पे और) मनुष्य अत्यन्त काम्पे ॥१०॥

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८ ॥

मरुतोवीळुपाणिभिश्चित्रारोधस्वतीरनु । यातेमखिद्रयामभिः ॥११॥

मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
१ वीळुपाणिभिः	बलवच्छफयुक्तैः (वीळुइति बलनाम) (निघं०२।९)	बलवान खुरों वालों से
चित्राः	उज्ज्वलाः	उज्ज्वल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोधस्वतीः	कूलयुक्ताः (नदीः)	किनारे वाली (नदीयों को)
अनु	अनु (लक्ष्य)	लक्ष्य रखकर
यात	गच्छत	जाओ
ईम्	(पूरणः)	–
अखिद्रयामऽभिः	अच्छिन्नंगमनं येषां तैः	अटूट गति वालों से

संस्कृतार्थः ।

हे मरुतः (यूयम्) बलवच्छफयुक्तैरच्छिन्न गमनैः (अश्वैः) उज्ज्वलाः कूलयुक्ताः (नदीः) अनुलक्ष्य गच्छत ॥११॥

भावार्थः ।

हे (मरुतो) आप बलवान् खुरवाले और अटूटगति वाले (घोड़ों) द्वारा किनारे वाली उज्वल (नदियों) की ओर जाओ ॥११॥

(१) पाणि शब्द ऋ०२ । ३१ । २,८ । ५ । ३५ । और ८ । ७ । २७ । में घोड़े क खुरके अर्थ में आया है । किनारें तक जल से भरीहुई उज्ज्वल नदियां भी बहुत वर्षा के होने से ही दिखाई देते हैं । इनका चिन्तन भी वृष्टि लाने में सहायक है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम्। सुसंस्कृता अभीशवः ॥१२॥

स्थिराः	स्थिराः	स्थिर
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
सन्तु	सन्तु	हों
नेमयः	चक्रधाराः	पहिये की हाल
रथाः	रथाः	रथ
अश्वासः	अश्वाः	घोड़े
एषाम्	एषाम्	इन के
सुऽसंस्कृताः	सुनिर्मिताः	अच्छा बनी हुई
अभीशवः	रश्मयः	रासें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ॥

हे (मरुतः) एषां युष्माकं चक्रधारा रथा अश्वाः (च) स्थिरास्सन्तु रश्मयः सुनिर्मिताः (सन्तु) ॥१२॥

भाषार्थः ।

(हे मरुतो) इन आप की पहियेकी हाल रथ (और) घोड़े स्थिर हों रासें अच्छी बनी हुई हों॥ १२ ॥

यह प्रार्थना इसलिए है। कि वर्षा के निमित्त मरुतों के आने में रस्ते में कोई विघ्न वा रुकावट न हों॥

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

अच्छावदातनागिरा जरायैब्रह्मण स्पतिम्। अग्निं मित्रंनदर्शतम्॥१३॥

अच्छ	अभिलक्ष्य	लक्ष रखकर
वद	ब्रूहि	बोलो
तना	निरन्तरम्	निरन्तर
गिरा	वाण्या	वाणी से
जरायै	स्तुत्यर्थम्	स्तुति के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मणः	वेदस्य	वेद के
पतिम्	पालकम्	रक्षा करनेवाले को
१ अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
मित्रम्	मित्रम्	मित्र को
न	इव	न्याईं
दर्शतम्	दर्शनीयम्	दर्शनीय को

संस्कृतार्थः।

मित्रमिव दर्शनीयं वेदस्य पालकमग्निमभिलक्ष्य स्तुत्यर्थं वाण्या निरन्तरं वद ॥ १३ ॥

भाषार्थः।

मित्र की न्याईं दर्शनीय वेद के रक्षा करने वाले अग्नि को लक्ष्य करके स्तुति के लिये वाणी से निरन्तर बोलो ॥ १३ ॥

(१) मरुत्सखा होने से (देखो ऋ० ८ । ९२ । १४) इस मंत्र में अग्नि की स्तुति है ॥

(२) तना अव्यय है । और मैक्स म्यूलर ने इसका अर्थ निरन्तर किया है । परन्तु बहुत मन्त्रों में निरन्तर अर्थ संगत नहीं होता । "अपि" अधिक संगत होता है (देखो ऋ० १ । ३ । ४, १ । २६ । ६, और ३ । २७ । ९) ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता गायत्री छन्दः॥ ८।८।८॥

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्यइव

ततनः। गाय गायत्रमुक्थ्यम्। १४।

मिमीहि	निर्मितं कुरु	रच
श्लोकम्	श्लोकम्	श्लोकको
आस्ये	मुखे	मुख में
पर्जन्यःइव	मेघइव	बादलकी न्याईं
ततनः	विस्तृतोभव	फैल
गाय	गाय	गाओ
गायत्रम्	सूक्तम्	सूक्तको
उक्थ्यम्	शस्त्रयोग्यम्	शस्त्रके योग्यको

संस्कृतार्थः

मुखे श्लोकं निर्मितं कुरु मेघ इव विस्तृततो भव शस्त्रयोग्यं सूक्तम् (च) गाय ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

मुख में श्लोक रचो मेघ की न्याईं विस्तृत हो (और) शस्त्र के योग्य सूक्त को गाओ ॥ १४ ॥

मरुतो देवता गायत्रीं छन्दः ।८।८।८॥

वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युम् अर्किणम् । अस्मे वृद्धा असन्निह ॥१५॥

वन्दस्व	नमस्कुरु	नमस्कार कर
मारुतम्	मारुतम्+गणम्	मरुद्गणको
गणम्	+गणम्	--
त्वेषम्	दीप्तम्	दीप्तिवाले को
पनस्युम्	स्तुतियोग्यम्	स्तुति के योग्य को
१ अर्किणम्	स्तोतारम्(ऋ०१।७१)	स्तुतिगानेवालेको
अस्मे०	अस्मासु (सप्तम्या प्रेरादेशः)	हम में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धाः	महान्तः (ऋ० ३।३२।७)	महान्
असन्	भवन्तु (असभुविसपोलुगभाव इतीलो(:प	हों
इह	अत्र	यहांपर

संस्कृतार्थः ।

दीप्तं स्तुतियोग्यं स्तोतारं मारुतं गणं नमस्कुरु (ते) माहन्तोऽस्मास्वत्र भवन्तु ॥ १५ ॥

भाषार्थः

दीप्ति वाले स्तुति करने के योग्य (और) स्तुति गाने वाले मरुद्गण को नमस्कार करो (वे) महान् यहां पर हम में हों ॥ १५ ॥

(१) मरुद्गण पवन के साएं साएं शब्द से परमात्मा की स्तुति गायन करते हैं ॥

इत्यष्टत्रिंशं सक्तम्

—o—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ३९ मं०१।

मरुतोदेवता घोरपुत्रः कण्वऋषिर्बृहतीछन्दः ८।८।१२।८।

प्रयदित्थापरावतः शोचिर्नमान

मस्यथ। कस्यक्रत्वामरुतःकस्यव-

र्पसा कंयाथकंहधूतयः ॥१॥

प्र	प्र+	–
यत्	यत्	जो
इत्था	इत्थम्	इस प्रकार
पराऽवतः	दूरात् (निघं०३।२६)	दूर से
शोचिः	प्रकाशम्	प्रकाश को
न	इव	न्याईं
मानम्	मान-(सूत्रम्)	नाप (कीडोरी)को
अस्यथ	प्र+अस्यथ प्रक्षिपथ	फैंकते हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कस्य	कस्य	किस के
क्रत्वा	यज्ञेन	यज्ञ से
मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
कस्य	कस्य	किस
वर्पसा	स्तोत्रेण	स्तोत्र से
कम्	कम्	किस को
याथ	गच्छथ	जाते हो
कम्	कम्	किस को
ह	खलु	सच मुच
धूतयः	हे कंपनकारिणः	हे कंपाने वालो

संस्कृतार्थः ।

हे कम्पनकारिणोमरुतोयदित्थंमान-(सूत्रम्) प्रकाशमिव दूरात्प्रक्षिपथ (तत्) कस्य यज्ञेन कस्य स्तोत्रेण (कुरुथ) कम्(यजमानम्) कं खलु गच्छथ ॥१॥

भाषार्थः ।

हे कंपाने वाले मरुतो जो आप इस प्रकार नाप (की डोरी) को प्रकाश की न्याईं दूर से फेंकते हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(वह) किस के यज्ञ से किस के स्तोत्र से (करते हो) किस (यजमान) के पास, सच मुच आप किस के पास जाते हो ॥ १ ॥

जैसे सूर्य दूर से प्रकाश की किरणों को फैंकते हैं । इसी प्रकार मरुत यह जांचने के लिये कि यजमान का देश कितनी दूर है विद्युत रूपी नापकी डोरी को फैंकते हैं ॥

ऋषि पूछते हैं, वह कौन यजमान है जिसके यज्ञ और स्तोत्र से प्रसन्न होकर आप वृष्टि को लेकर उसके देशकी ओर जा रहे हैं।

मरुतो देवताः सतोबृहती छन्दः ।१२।८।१२।८।

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे । युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः ॥२॥

स्थिरा	स्थिराणि (शेर्लोपः)	स्थिर
वः	युष्माकम्	तुम्हारे
सन्तु	सन्तु	हों
आयुधा	आयुधानि, (शेर्लोपः)	शस्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराऽनुदे	अपनोदनाय	दूर करने के लिये
वीळु	दृढानि (विभक्तेर्लुक्)	दृढ
उत	अपिच	और
प्रतिऽस्कभे	प्रतिबन्धाय	रोकने के लिये
युष्माकम्	युष्माकम्	तुम्हारे
अस्तु	अस्तु	हो
तविषी	बलम्	बल
पनीयसी	अतिशयेन स्तोतव्यम्	अतिशय करके स्तुति के योग्य
मा	मा	मत
मर्त्यस्य	मर्त्यस्य	मनुष्य का
मायिनः	छद्मकारिणः	कपट करनेवाले का

संस्कृतार्थः ।

(हे मरुतः) युष्माकमायुधानि (शत्रूणाम्) अपनोदनाय स्थिराणि सन्त अपि च प्रतिबन्धाय दृढानि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(भवन्तु) युष्माकं बलमतिशयेन स्तोतव्यमस्तु छद्मकारिणोमर्त्यस्य मा (अस्तु) ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(हे मरुतो) आपके शस्त्र (शत्रुओं के) दूर करने के लिये स्थिर और रोकने के लिये दृढ हों आप का बल अतिशय करके स्तुति के योग्य हो कपट करने वाले मनुष्य का मत (हो) ॥२॥

मरुतो देवता विराड्बृहती छन्दः ८।८।११।७।

परा ह यत्स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु । वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम् ॥ ३ ॥

परा	परा+	–
ह	(पूरणः)	–
यत्	यदा	जब
स्थिरम्	स्थिरम्	स्थिर को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हथ	परा+हथ भग्नं कुरुथ	तोड़ कर गिराते हो
नरः	हे नरः	हे नरो
वर्तयथ	परिभ्रामयथ	चारों ओर घुमाते हो
गुरु	गुरु (पाषाणादिकम्)	भारी (पत्थर आदि) को
वि	वि+	–
याथन	वि+याथन वियुज्यमध्ये गच्छथ (यातेर्लडर्थेलोट् तस्य थनादेशः)	अलग करके मध्य में जाते हो
वनिनः	वृक्षान्	वृक्षों को
पृथिव्याः	पृथिव्याः	पृथिवी के
वि	वि (युज्य)	अलग करके
आशाः	अवकाशान् (आ०को)	छिद्रों को
पर्वतानाम्	पर्वतानाम्	पर्वतों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे नरः ! यदा स्थिरम् (वृक्षादिकम) ! भग्नं कुरुथ गुरु (पाषाणादिकम्) परिभ्रामयथ पृथिव्याः (सम्बन्धिनः) वृक्षान् वियुज्य मध्ये गच्छथ(तथा) पर्वताना मवकाशान् वियुज्य (गच्छथ) ।३।

भाषार्थः ।

हे नरो जब आप स्थिर (वृक्षादि) को तोड़ कर गिराते हो भारी (पत्थर आदि) को चारों ओर घुमाते हो पृथिवी के वृक्षों को अलग करके बीच में निकल जाते हो और पर्वतों के छिद्रों को अलग करके (निकल जाते हो) ॥ ३ ॥

इस मन्त्र का अगले के साथ सम्बन्ध है।

मरुतो देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८॥

नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः । युष्माकमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नू चिदाधृषे ।४।

नहि	न	नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वः	युष्माकम्	तुम्हारा
शत्रुः	शत्रुः	शत्रु
विविदे	बभूव	हुआ
अधि	अधि+	--
द्यवि	अधि+द्यवि द्युलोके	द्युलोक में
न	न	न
भूम्याम	भूम्याम्	पृथिवी पर
रिशादसः	हे शत्रु भक्षकाः	हे शत्रुओंकेभक्षण करने वाले
युष्माकम्	युष्माकम्	तुम्हारा
अस्तु	अस्तु	हो
तविषी	बलम्	बल
तना	निरन्तरम् (ऋ०१।३८।१३)	सदा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युजा	युज्यमाना	मिला हुआ
रुद्रासः	हे रुद्राः	हे रुद्रो
नु	इदानीम् (श्रा०को)	अब
चित्	अपि	भी
आऽधृषे	सर्वतो धर्षणाय	चारों ओर धर्षणा के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे शत्रुभक्षकाः (मरुतस्तदा) युष्माकं शत्रुर्द्युलोके न बभूव भूम्याम् (अपि) न (बभूव), हेरुद्रा इदानीमपि सर्वतो धर्षणाय युष्माकं बलं सर्वदा युक्तमस्तु ॥४॥

भाषार्थः

हे शत्रुओं के भक्षक (मरुतो तब) आप का शत्रु द्युलोक में नहीं हुआ (और) न भूमि में, हे रुद्रो अब भी चारों ओर (शत्रुओं की) धर्षणा के लिये आप का बल सदा मिला हुआहो ॥ ४ ॥

शत्रुओं की चारों ओर से धर्षणा के लिए मरुद् गण का बल सदा, मिला, हुआ हो, संकीर्ण न हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता बृहती छन्दः ८।८।१२।८।।

प्र वेपयन्ति पर्वतान्वि विञ्चन्ति वनस्पतीन् । प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा ।५।

प्र	प्र+	--
वेपयन्ति	प्र+वेपयन्ति प्रकर्षेण कम्पयन्ति	अत्यन्त कंपाते हैं
पर्वतान्	पर्वतान्	पर्वतों को
वि	वि+	--
विञ्चन्ति	वि+विञ्चन्ति वियोजयन्ति	पृथक् करते हैं
वनस्पतीन्	वनस्पतीन्	बृक्षों को
प्रो०	प्रो+	--
आरत	प्रो+आरत अग्र आगच्छत(लोडर्थे लुङ)	आगे आओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
दुर्मदाःऽइव	मदोन्मत्ता इव!	मद से उन्मत्तों की न्याईं
देवासः	हे देवाः	हे देवताओ
सर्वया	सर्वथा	सब से
विशा	प्रजया सह	प्रजा के साथ

संस्कृतार्थः।

(मरुतः) पर्वतान्प्रकर्षेण कम्पयन्ति वनस्पतीन्वियोजयन्ति हे मरुतोदेवा मदोन्मत्ता इव सर्वथा प्रजया सह अग्र आगच्छत ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

(मरुत) पर्वतों को अत्यन्त कंपाते हैं, और वृक्षों को पृथक् करते हैं,हे मरुत देवो मद से उन्मत्तों जैसे आप सब प्रजा के साथ आगे आओ ॥ ५ ॥

पर्वतों को कम्पाने और वृक्षों को चीर कर अलग करने में बल का उन्माद ही कारण होसक्ता है, ऐसे दुर्मदों की न्याईं बलोन्मत्त मरुत हमारे आगे आवें । जिस से हमारे देश में वर्षा हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता निचृत्सतोबृहती छन्दः ।१२।८।११।८ ॥

उपोरथेषुपृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति-

रोहितः । आवोयामायपृथिवीचि

दश्रोदबीभयन्तमानुषाः ॥६॥

उपो०	उपो +	--
रथेषु	रथेषु	रथों में
पृषतीः	विन्दुयुक्ता मृगीः	विन्दुयुक्तमृगियों को
अयुग्ध्वम्	उपो+अयुग्ध्वम् सामीप्येन योजितवन्तः	समीप में जोड़ा है
प्रष्टिः	प्रमुखे युज्यमानः (ऋ०।८।७।२८)	आगे जुड़ा हुआ
वहति	वहति	लेजाता है
रोहितः	लोहितवर्णोमृगः	लाल रंगका मृग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ वः	आ + युष्माकम्	-- आपके
यामाय	गमनाय	गमन के लिये
पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी ने
चित्	अपि	भी
अश्रोत्	आ+अश्रोत् प्रतीक्षां चक्रे (आ०की)	प्रतीक्षा की
अबीभयन्त	भीतिमुत्पादितवन्तः	भय को उत्पन्न किया
मानुषाः	मनुष्याः	मनुष्यों ने

संस्कृतार्थः ।

(हे मरुतो यूयम्) रथेषु विन्दुयुक्ताःमृगीः सामीप्येन योजितवन्तः, लोहितवर्णोमृगः (च) प्रमुखे युज्यमानो वहति युष्माकं गमनाय पृथिव्यपि प्रतीक्षां चक्रे मनुष्याः (च) भीतिमुत्पादितवन्तः ॥६॥

भाषार्थः ।

(हे मरुतो) आप ने रथों में विन्दुयुक्त मृगियों को समीप में जोडा है (और) लालरंग का मृग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आगे जुडा हुआ (रथ को) लेजाता है आपके गमन के लिए पृथिवीने भी प्रतीक्षा की(और)मनुष्योंने भय को उत्पन्न किया ॥६॥

मरुतों के रथमें आगे लाल आंधी के रूप में लालरंग का मृग और पीछे (समीप में) मेंह की बूदों से युक्त आंधियों के रूप में चितकबरीं मृगियां जुड़ती हैं ।

मरुतो देवता बृहती छन्दः ।८।८।१२।८॥

आवो॑म॒क्षू त॑ना॒य कं॒ रुद्रा॒ अवो॑ वृणीमहे ।
गन्ता॑ नू॒नं नो॒ऽव॑सा॒ यथा॑ पु॒रेत्था कण्वा॑य बि॒भ्युषे॑ ॥७॥

आ	सर्वतः	सब ओर से
वः	युष्मदीयम्	तुम्हारे
मक्षु	शीघ्रम्	शीघ्र
तनाय	प्रजायै (आ०को)	सन्तान के लिये
कम्	(पूरणः)	--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्राः	हे रुद्राः	हे रुद्रो
अवः	रक्षणम्	रक्षा को
वृणीमहे	प्रार्थयामः	हम प्रार्थना करते हैं
गन्त	आ+गन्त आगच्छत	आओ
नूनम्	क्षिप्रम्	शी
नः	अस्माकम्	हमारे
अवसा	रक्षण (निमित्तेन)	रक्षा निमित्त से
यथा	यथा	जैसे
पुरा	पूर्वस्मिन्काले	पूर्वकाल में
इत्था	अनेन प्रकारेण	इसी प्रकार से
कण्वाय	कण्वाय	कण्व के लिये
बिभ्युषे	भीतियुक्ताय (ञिभी भये)	भय से युक्त के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे रुद्राः (वयम्) प्रजायै शीघ्रं युष्मदीयं रक्षणं सर्वतः प्रार्थयामः पुराऽस्माकं रक्षणेन (यूयम्) यथा (प्राप्नुवन्तः)तथा बिभ्युषे कण्वाय क्षिप्रमागच्छत।७।

भाषार्थः

हे रुद्रो हम सन्तानके निमित्त शीघ्र आपकी रक्षाके लिये सब ओर से प्रार्थना करते हैं जिस प्रकार आप पूर्वकाल में हमारी रक्षा के लिये (प्राप्त हुए थे) उसी प्रकार भययुक्त कण्व के लिये शीघ्र आवें ।।७।।

पूर्व काल में हमारी रक्षा के लिए प्राप्त हुए थे। अर्थात् जैसे हमारे पूर्वजों की रक्षा के लिए आते थे। उसी प्रकार डरे हुए मुझ कण्व की रक्षा के लिये आओ ।।

मरुतोदेवता: सतोबृहतीछन्दः १२।८।१२।८

युष्मेषितोमरुतोमर्त्येषित आयो नोअभ्वईषते । वितंयुयोतशवसा व्योजसा वियुष्माकाभिरूतिभिः।८।

युष्माऽइ-षितः	युष्माभिःप्रेषितः (सुपोलुक् आत्वं)	आप से भेजा हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
मर्त्यऽइषितः	मनुष्येण प्रेषितः	मनुष्य से भेजा हुआ
आ	आभिमुख्येन	सामने से
यः	यः	जो
नः	अस्मान	हम को
अभ्वः	शत्रुः (आ-भू-पृषोदरादि वत्)	शत्रु
ईषति	आ+ईषते प्राप्नोति	प्राप्त होता है
वि	वि+	—
तम्	तम्	उसको
युयोत	वि+युयोत वियुक्तं कुरुत (यु-लोटि तबादेशः)	अलग करो
शवसा	बलेन	बल से
वि	वि+	--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओजसा	तेजसा	तेज से
वि	त्रि+	-
युष्माकाभिः	युष्मत्सम्बन्धिनीभिः	तुम्हारीओं से
ऊतिऽभिः	रक्षाभिः	रक्षाओं से

संस्कृतार्थः।

हे मरुतो यः (कश्चित्) शत्रुर्युष्माभिः प्रेषितो मनुष्येण प्रेषितः(वा) अस्मान्प्रत्याभिमुख्येन प्राप्नोति तम्(शत्रुम्) बलेन वियुक्तं कुरुत तेजसा वियुक्तं कुरुत युष्मत्सम्बन्धिनीभिरूतिभिर्वियुक्तंकुरुत ॥८॥

भाषार्थः।

हे मरुतो जो कोई शत्रु आपसे भेजा हुआ अथवा मनुष्य से भेजा हुआ हमारे सन्मुख प्राप्त होता है उस (शत्रु) को बल से अलग करो तेज से पृथक् करो अपनी रक्षाओं से वियुक्त करो ॥ ८ ॥

मरुतोदेवता बृहतीछन्दः ८।८।१२।८।

असामिहिप्रयज्यवः कण्वंदद्प्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चेतसः। असामिभिर्मरुत आनऊ-
तिभिर्गन्तावृष्टिंनविद्युतः ॥६॥

असामि	अखिलम्	सब कुछ
हि	खलु	सच मुच
प्रऽयज्यवः	प्रकर्षेणयष्टव्याः (यज्-कर्म्मणियुप्रत्ययः)	अत्यन्त पूजनीय
कण्वम्	कण्वम्	कण्व का
दद	दत्तवन्तः (डुदाञ् लोटो लङादेशः)	दिया है
प्रचेतसः	प्रकृष्ट ज्ञानयुक्ताः	बहुत ज्ञान वाले
असामिऽभिः	सम्पूर्णैः	सपूर्णों से
मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
आ	आ+	-
नः	अस्मान् प्रति	हमारे प्रति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊतिभिः	रक्षणैः	रक्षाओं से
गन्त	आ+गन्त आगच्छत	आओ
वृष्टिम्	वर्षम्	वर्षा को
न	यथा	जैसे
विद्युतः	विद्युतः	बिजलियां

संस्कृतार्थः ।

प्रकर्षेण यष्टव्याः प्रकृष्टज्ञानयुक्ता हे मरुतः (यूयम्) कण्वमखिलं दत्तवन्तः सम्पूर्णाभिरूतिभिरस्मान् (अपि) विद्युतोवृष्टिमिवागच्छत ॥९॥

भाषार्थः ।

हे अत्यन्त पूजनीय बहुत ज्ञान वाले मरुतो सचमुच आपने कण्व को सब कुछ दिया है सम्पूर्ण रक्षाओं से हमारे प्रात आओ जैसे बिजलियां वर्षा के प्रति (आती हैं) ॥९॥

मरुतो देवता निचृत्सतोबृहती छन्दः।१२।७।१२।८॥

असाम्योजोबिभृथासुदानवोऽ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामिधूतयः शवः। ऋषिद्विषे मरुतः

परिमन्यव इषुंनसृजतद्विषम् ।१०।

असामि	अखिलिम	सम्पूर्ण
ओजः	तेजः	तेज को
बिभृथ	धारयथ	धारण करते हो
सुऽदानवः	हे कल्याण दानाः (निरु०६।२३)	हे कल्याण के देने वाले
असामि	सम्पूर्णम्	सम्पूर्ण
धूतयः	हेकम्पन कारिणः	हेकम्पाने वालो
शवः	बलम्	बल को
ऋषिऽद्विषे	ऋषीणां शत्रवे	ऋषियों के शत्रु के ताईं
मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
परिमन्यवे	कोप युक्ताय	क्रोध युक्तके ताईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इषुम्	बाणम्	बाण को
न	यथा	जैसे
सृजत	विमुञ्चत	त्याग करो
द्विषम्	शत्रुम्	शत्रु को

संस्कृतार्थः।

हे कल्याणदानाः (यूयम्) अखिलं तेजो धारयथ हे कम्पन कारिणः (यूयम्) सम्पूर्णं बलं (धारयथ) हे मरुतः कोपयुक्ताय ऋषिद्विषे बाणमिव शत्रुं सृजत।१०।

भाषार्थः।

हे कल्याण के देने वालो आप सम्पूर्ण तेज को धारण करते हो, हे कम्पाने वालो आप पूरे बल को (धारण करते हो) हे मरुतो ऋषियों के द्वेष करने वाले क्रोध युक्त (शत्रु) के लिए बाण के सदृश शत्रु को छोडो॥१०॥

॥ इत्येकोन चत्वारिंशं सूक्तम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०४० मं०१

ब्रह्मणस्पतिर्देवताकण्वऋषिर्बृहतीच्छन्दः ८।८।१२।८॥

उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्त-
स्त्वेमहे । उपप्रयन्तु मरुतः सुदा-
नव इन्द्रप्राशूर्भवासचा ।१।

उत्	उत्+	–
तिष्ठ	उत्+तिष्ठ	उठो
ब्रह्मणः	ब्रह्मणः+पते हे ब्रह्मणस्पते	हे ब्रह्मणस्पति
पते	+पते	––
देवऽयन्तः	देवान्कामयमानाः	देवताओं की कामना वाले
त्वा	त्वाम्	तुझ को
ईमहे	याचामहे	हमप्रर्थनाकरतेहैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उप	समीपे	समीप
प्र	प्रकर्षेण	प्रकर्ष करके
यन्तु	गच्छन्तु	प्राप्त होवें
मरुतः	मरुतः	मरुत
सुदानवः	कल्याण दानाः	कल्याण के देने वाले
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
प्राशूः	क्षिप्रम् (निघं०२।१५)	शीघ्र
भव	भव	हो
सचा	सह	साथ

संस्कृतार्थः।

हे ब्रह्मणस्पते! उत्तिष्ठ देवान्कामयमानाः (वयम्) त्वां याचामहे, कल्याणदाना मरुतः (अस्मत्-) समीपे प्राप्नुवन्तु हे इन्द्र क्षिप्रं (अस्माभिः) सह भव।१।

भाषार्थः।

हे ब्रह्मणस्पति उठो देवताओं की कामना करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले हम आप से प्रार्थना करते हैं कल्याण के देने वाले मरुत (हमारे) समीप प्राप्त हों हे इन्द्र आप शीघ्र हमारे साथ हों ।१।

विनियोग—इस मन्त्रका बृहती छन्द है और अगले का सतो बृहती—ये दोनों मिलकर एक प्रगाथ हुए । यह प्रगाथ सत्र के २४ वें दिनमें प्राकृत ब्राह्मणस्पत्य प्रगाथ से पूर्व में पढा जाता है (देखो आ०श्रौ० सू०उ०१।३।१) ॥

और पहला मंत्र सोमयागकी प्रवर्ग्य इष्टि में भी पढा जाता है (आ० श्रौ०सू० ४।७।४) ॥

ब्रह्मणस्पति—यह मंत्ररूप स्तुति वा देव पूजा के रक्षक देवता अग्नि के ही रूपान्तर हैं ॥

ब्रह्मणस्पतिर्देवता सतोबृहतीच्छन्दः १२।८।१२।८

त्वामिद्धि स॑हसस्पुत्र मर्त्य॑ उपब्रू॒ते धने॑ हि॒ते । सु॒वीर्यं॑ मरुत॒ आ स्वश्व्यं॒ दधी॑त॒ यो व॑ आच॒के ॥ २ ॥

त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
इत्	एव	ही
हि	खलु	सच मुच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ सहसः	बलस्य	बल के
१ पुत्र	हे पुत्र	पुत्र
मर्त्यः	मनुष्यः	मनुष्य
उपब्रूते	स्तौति	स्तुति करता है
२ धने	धने	धन के
२ हिते	उपस्थिते	उपस्थित होने पर
सुऽवीर्यम्	शोभनवीर्ययुक्तम्	सुन्दर वीर्य्य से युक्त को
मरुतः	हे मरुतः	हे मरुतो
आ	आ+	
सुऽअश्व्यम्	शोभनाश्वयुक्तम् (छ प्रत्ययः)	सुन्दर घोड़ों से युक्त को
दधीत	धारयेत्	धारण करे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
वः	युष्मान्	आप को
आऽचके	कामयन्ति (वर्तमाने लिट्)	कामना करता है

संस्कृतार्थः।

हे बलस्य पुत्र! मर्त्यः धने उपस्थिते त्वामेव-खलु स्तौति हे मरुतः यो मर्त्यो युष्मान्कामयति(सः) शोभनाश्वयुक्तं सुवीर्य्यम् (च धनम्) धारयेत्।२।

भाषार्थः।

हे बल के पुत्र मनुष्य धनके उपस्थित होने पर निश्चय करके आपकी ही स्तुति करता है, हे मरुतो जो मनुष्य आपकी कामना करता है वह सुन्दर घोडों से युक्त (और) सुन्दर पराक्रम से युक्त (धन) को धारण करे।२।

(१) बलका पुत्र कहने से ब्रह्मणस्पति अग्नि का ही नामान्तर सिद्ध होता है।

(२) धनके उपस्थित होने पर अर्थात् युद्ध में जहां शत्रुका धन उपस्थित होता है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मणस्पतिर्देवता बृहतीच्छन्दः ८।८।१२।८॥

प्रैतुब्रह्मणस्पतिः प्रदेव्येतुसूनृता।

अच्छावीरंनर्यंपङ्क्तिराधसं देवाय-

ज्ञंनयन्तुनः ॥ ३ ॥

प्र	प्र+	--
एतु	प्र+एतु-प्राप्नोतु	प्राप्तहोवे
ब्रह्मणः	ब्रह्मणः+पति	ब्रह्मणस्पति
पतिः	+पतिः	--
प्र	प्र+	-
देवी	देवी	देवी
एतु	प्र+एतु प्राप्नोतु	प्राप्तहोवे
सूनृता	प्रियसत्यरूपावाक्	प्रियसत्यरूपबाणी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अच्छ	प्रति	प्रति
२ वीरम्	वीरम्	वीरको
२ नर्यम्	मनुष्येभ्योहितम् (यत् प्र०)	मनुष्योंकेतांई हितकारी को
१ पङ्क्तिराधसम्	हविष्पङ्क्तिभिस्समृद्धम्	पांचप्रकारकीहविसे सम्पन्न को
देवाः	देवाः	देवता
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञको
नयन्तु	आनयन्त	लावैं
नः	अस्माकम्	हमारे

संस्कृतार्थः।

ब्रह्मणस्पतिः (अस्मान्) प्राप्नोतु सूनृतादेवी (अस्मान्)प्राप्नोतु देवा अस्माकं हविष्पङ्क्तिभिस्समृद्धं यज्ञं प्रति नर्यंवीरमानयन्तु ।३।

भाषार्थः।

ब्रह्मणस्पति (हमको) प्राप्त हों प्रिय सत्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूपवादेग्वी हमको प्राप्त हो देवता हमारे पांच प्रकार की हवि से सम्पन्न यज्ञ की ओर मनुष्यों के हित-कारी बीर को लावें।३।

विनियोग—सत्रके चोबीसवें दिन में यह प्रगाथ (अर्थात् यह और अगला मंत्र) "उत्तिष्ठब्रह्मणस्ते" इस प्रगाथ से पूर्वमें पढा जाता है (आ०श्रौ०सू उ०१। ३। १)॥

यह मंत्र सोम यागकी प्रवर्ग्य इष्टि में शाला के प्रति महावीर को लेजाते समय पीछे २ होता चलता हुआ पढता है (आ०श्रौ० सू० ४।७।४)॥

यह मंत्र सोमयाग के अग्निषोमीय प्रणयन में भी पढा जाता है (आ०श्रौ०सू ४।१०।३)॥

(१) पांच प्रकार की हवि अर्थात् पुरोडाश (रोटी) धान (भुने हुए जौ) करम्भ (जौके सत्तू दही में मिलाए हुए) दही और पयस्या (दूध को फाडकर उसका स्थूल भाग) देखो श०ब्रा० ४।२।४।२२)॥

(२) मनुष्यों का हितकारी बीर इन्द्र हैं॥

ब्रह्मणस्पतिर्देवता सतोबृहतीच्छन्दः १२।८।१२।८।

योवाघतेददातिसूनरंवसुसधत्ते

अक्षितिश्रवः । तस्माइळांसुवीरा

मायजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
आघते	ऋत्विजे	ऋत्विज के ताईं
ददाति	ददाति	देता है
सूनरम्	उत्तमम् (खल्-प्र०)	उत्तम को
वसु	धनम् निघं।२।१०।	धनको
सः	सः।	वह
धत्ते	धारयति	धारण करता ह
अक्षिति	क्षयरहितम्	क्षयरहित को
श्रवः	यशः (असुन्-प्र०)	कीर्ति को
तस्मै	तस्मै	उसके लिये
इळाम्	इळाम्	इडा को
सुऽवीराम	शोभनवीरोपताम	सुन्दर वीरा से युक्त को
आ	आ+	–
यजामहे	आ+यजामहे	हम यज्ञ में प्रयोग करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽप्रतूर्त्तिम्	सुअति प्रतूर्त्तिः- शत्रुहिंसनं यस्यास्ताम् तुर्वीहिंसायां-भावे-क्तिन्	खूब शत्रुओं के मारने वाली को
अनेहसम्	हिंसितुमनर्हाम् (नहन्यते-इति-अनेहाः हन्-धातोरेहादेशोऽसु न्प्रत्ययश्च)	न हिंसा करने योग्य को

संस्कृतार्थः ।

य ऋत्विजे उत्तमं धनं ददाति सः (यजमानः) क्षयरहितांकीर्तिं धारयति तस्मै, शोभनवीरोपेताम् (शत्रूणाम्) अतिहिंसाकारिणीं हिंसितुमनर्हामिळां यज्ञे प्रयुञ्ज्मः ।४।

भाषार्थः ।

जो ऋत्विक् के तांई उत्तम धन को देता है वह (यजमान)अक्षयकीर्तिको धारण करता है उसके लिये हम सुन्दर वीरों से युक्त (शत्रुओं को) खूब हिंसा करने वाली, किसी से हिंसा न किए जाने वाली इडा को यज्ञ में प्रयोग करते हैं ।४।

(१) यज्ञ में स्विष्टकृत आहुति के पश्चात् और अनुयाजों से पूर्व हविशेष में से यजमान और ऋत्विजों के लिए भाग काट कर इडा अर्थात् आशीः (आशीर्वाद) का आह्वान किया जाता है (देखो श०ब्रा० १।८।१।९)॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषि का कथन है कि हम उत्तम दानी यजमान के लिये यज्ञ में ऐसी आशीर्वाद का आवाहन करते हैं जो उसके शत्रुओं की अत्यन्त नाश करने वाली और स्वयं नाश रहित है ॥

ब्रह्मणस्पतिर्देवता बृहती च्छन्दः ८।८।१२।८॥

प्रनूनंब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रंवदत्यु-
क्थ्यम्। यस्मिन्निन्द्रोवरुणोमित्रो
अर्यमा देवाओकांसिचक्रिरे ।५।

प्र	प्र+	–
नूनम्	नूनम्	ही
ब्रह्मणः	ब्रह्मणः + पतिः	ब्रह्मणस्पति
पतिः	+ पतिः	–
मन्त्रम्	मन्त्रम्	मन्त्र को
वदति	प्र + वदति	प्रकर्ष से बोलता है
उक्थ्यम्	शस्त्रयोग्यम् (अर्हार्थेयः प्रत्ययः)	शस्त्रके योग्यको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यस्मिन्	यस्मिन्	जिसमें
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
वरुणः	वरुणः	वरुण
मित्रः	मित्रः	मित्र
अर्यमा	अर्यमा	अर्यमा
देवाः	देवाः	देवताओं ने
ओकांसि	स्थानानि	स्थानों को
चक्रिरे	चक्रिरे	किया है

संस्कृतार्थः ।

ब्रह्मणस्पतिः (देवः) शस्त्रयोग्यं मन्त्रं नूनं प्रवदति यस्मिन् (मन्त्रे) इन्द्रो वरुणो मित्रोऽर्यमादेवाः स्थानानि चक्रिरे ।५।

भाषार्थः ।

ब्रह्मणस्पति देव ही शस्त्रयोग्य मंत्र को ऊंचे शब्द से बोलते हैं जिस (मंत्र) में इन्द्र वरुण मित्र अर्यमा देवताओं ने वास किया है ।५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग—यह प्रगाथ (अर्थात् यह और अगला मंत्र) अग्निष्टोम के मरुत्वतीय शस्त्र में इन्द्रनिवह प्रगाथ के अनन्तर पढ़ा जाता है (अ० श्रौ० सू० ५।१४।६)

जब होता यज्ञ में ऊंचे स्वर से मंत्र को पढ़ता है, उस समय ब्रह्मणस्पति ही होता के मुख द्वारा बोलते हैं, जिस मंत्र में इन्द्र वरुण मित्र अर्य्यमा आदि देवताओं ने वास किया है। मंत्र ही इन देवताओं के गुण बतलाता है, मंत्र ही इनको यज्ञ में लाता है, मंत्र ही इनका निवास स्थान है, ऐसे मंत्र को बोलने की शक्ति ब्रह्मणस्पति देवता से अन्य मरण धर्मा होता में कैसे होसकती है।

ब्रह्मणस्पति देवता सतोबृहती छन्दः १२।८।१२।८

तमिद्वोचेमा विदथेषु शंभुवं मन्त्रं देवा अनेहसम्। इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो अश्नवत्॥६॥

तम्	तम्	तिसको
इत्	एव	ही
वोचेम	ब्रवाम ब्रूज्-आशी-लिङि छान्दसोऽङ्	हम बोलें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विदथेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
१ शम्ऽभुवम्	सुखस्यभावयितारम्	सुख के करने वाले को
मन्त्रम्	मन्त्रम्	मन्त्र को
देवाः	हे देवाः	हे देवताओ
२ अनेहसम्	बाधारहितम्	बाधा रहितको
इमाम्	इमाम्	इसको
च	चेत् (आ०को)	जो
वाचम्	वाचम्	वाणीको
प्रतिऽहर्यथ	कामयध्वे (हर्यगतिकामयोः)	प्यार करते हो
३ नरः	हेनरः	हे नरो
विश्वा	सर्वा	सम्पूर्ण
इत्	अपि	ही
वामा	वननीया (वाक्)	सुन्दर (वाणी)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वः	युष्मान्	आप को
अश्नवत्	प्राप्नुयात् (आ०को) (अशूङ्-व्याप्तौ) (व्यत्ययेनपरस्मैपदं)	प्राप्त हो

संस्कृतार्थः ।

हे देवास्तमेव सुखस्य भावयितारं बाधारहितं मन्त्रं यज्ञेषु ब्रवाम, हे नरः इमाम् (मन्त्ररूपाम्) वाचं कामयध्वे चेत् (तर्हि) सर्वापि वननीया वाग् युष्मान् प्राप्नुयात् ।६।

भाषार्थः ।

हे देवताओ सुखके करने वाले बाधा रहित उसी मंत्रको हम यज्ञों में बोलें, हे नरो यदि इस (मंत्र रूप) वाणीको आप प्यार करते हो तो हमारी सम्पूर्ण सुन्दर बाणी आप को प्राप्त हो ।६।

(१) मंत्र सुख सम्पादन करने वाला है, क्यों कि मंत्र में प्रायः कल्याण और सुखका ही मनन और पाठ होता है।

(२) मंत्र बाधारहित है, कोई शत्रु मंत्र को चरितार्थ होने से नहीं रोक सक्ता ।

(३) नरो अर्थात् हे वीर (देवताओ) यदि आप हमारे मुख से उच्चारण किए हुए मंत्र को प्यार करते हो तो हमारी सारी बाणी आप के अर्पण है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मणस्पतिर्देवता बृहतीच्छन्दः ।८।८।१२।८॥

कोदेवयन्तमश्नवज्जनंकोवृक्तबर्हिषम् । प्रप्रदाश्वान्पस्त्याभिरस्थितान्तर्वावत्क्षयंदधे ॥७॥

कः	कः	कौन
देवऽयन्तम्	देवान्कामयमानम्	देवताओंकी कामना वाले को
अश्नवत्	ईष्टे (आ० कौ०)	आधीन कर सक्ता है
जनम्	जनम्	जन को
कः	कः	कौन
वृक्तऽबर्हिषम्	वृक्तानि आस्तृतानि बर्हीषि येन तम्	बिछाई हैं कुशा जिसने ऐसे को
प्रऽप्र	अग्रेऽग्रे	आगे आगे
दाश्वान्	हविर्दत्तवान्	हवि देने वाला
पस्त्याभिः	मनुष्यैः सह	मनुष्यों के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्थित	तिष्ठात (लडर्थेलुङ्)	ठहरता है
अन्तःऽवावत्	अन्तर्वाति गच्छतीत्यन्तर्वाः, पुत्रपश्वादयः, तेऽस्मिन्सन्तीत्यन्तरवावत् तत् (अस्त्यर्थेमतुप्मस्यवः)	पशु पुत्रादि से युक्त को
क्षयम्	निवासस्थानम्	घर को
दधे	धारयति (लडर्थे लिट्)	धारणकरता है

संस्कृतार्थः ।

को देवान्कामयमानमीष्टे आस्तृतदर्भं जनं कः (ईष्टे) हविर्दत्तवान् (यजमानः प्रजा भृत्यादि) मनुष्यैस्सह अग्रेऽग्रे तिष्ठति पशुपुत्रादि युक्तंगृहम् (च) धारयति ॥७॥

भाषार्थः ।

कौन देवताओं की कामना करने वाले को आधीन कर सकता है कुशा बिछाने वाले जन को कौन (वश में कर सकता है) हवि के देने वाला (यजमान) (प्रजा और भृत्यादि) मनुष्यों के साथ (सब से) आगे आगे ठहरता है (और) पशु पुत्रादि युक्त घरको धारण करता है ।७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मणस्पतिर्देवता निचृत्सतोबृहतीच्छन्दः१२।८।१२।७॥

उपक्षत्रंपृञ्चीतहन्तिराजभिर्भ

येचित्सुक्षितिंदधे। नास्यवर्तानत

रुतामहाधने नार्भेअस्तिवज्रिणः॥८॥

उप	उप+	..
क्षत्रम्	बलम्	बल को
पृञ्चीत	उप + पृञ्चीत वर्धयति (लडर्थे लिङ्)	बढ़ाता है
हन्ति	मारयति	मारता है
१ राजऽभिः	राजाभिः (सह)	राजाओं के साथ
भये	भये	भय में
चित्	अपि	भी
सुऽक्षितिम्	सुनिवासम्	सुखनिवासस्थान को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दधे	धारयति (लडर्थे लिट्)	धारता है
न	न	नहीं
अस्य	अस्य	इसका
वर्ता	आच्छादकः	ढकने अर्थात् दबाने वाला
न	न	नहीं
तरुता	उल्लङ्घन कर्त्ता (तॄप्लवनसंतरणयोः)	उलंघन करने वाला
महाधने	प्रभूतधन निमित्ते युद्धे	बहुत धन प्राप्त होनेवाले युद्ध में
न	न	नहीं
अर्भे	स्वल्पे(युद्धे) (ऋ-गतौ भन् प्रत्ययः)	स्वल्प (युद्ध) में
अस्ति	अस्ति	है
वज्रिणः	वज्रायुधवतः	वज्र धारण करने वाले का

संस्कृतार्थः ।

(स यजमानःस्व-) बलं वर्द्धयति राजभिस्सह (शत्रून्) मारयति भयेऽपिसुनिवासंधारयति, वज्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युधवतः (अस्ययजमानस्य) महाधननिमित्ते (युद्धे) आच्छादको नास्ति उल्लङ्घनकर्ता (च) नास्ति स्वल्पे युद्धेऽपिनास्ति ।८।

भाषार्थः ।

(वह यजमान अपने) बल को बढाता है राजाओं के साथ (शत्रुओं को) मारता है, भय में भी सुख देने वाले स्थान को धारण करता है, बज्रधारी (उस यजमान) का बहुत धन के प्राप्त होने वाले युद्ध में कोई दबाने वाला नहीं है और उल्लङ्घन कर्ता भी नहीं है, स्वल्प (युद्ध) में भी कोई (ऐसा करने वाला) नहीं है ।८।

(१) राजभिः अर्थात वरुण मित्र और अर्य्यमा देवताओं की सहायता से ॥

॥ इति चत्वारिंशंसूक्तम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू० ४१ मं०१

वरुणमित्रार्यमणो देवताघोरपुत्रः कण्वऋषिर्गायत्री
छन्दः ।८।८।८।

यंरक्षन्तिप्रचेतसोवरुणोमित्रोअर्यमा ।
नूचित्सदभ्यतेजनः ॥१॥

यम्	यम्	जिसको
रक्षन्ति	रक्षन्ति	रक्षा करते हैं
प्रऽचेतसः	प्रकृष्ट ज्ञानयुक्ताः	उत्तम ज्ञान युक्त
वरुणः	वरुणः	वरुण
मित्रः	मित्रः	मित्र
अर्यमा	अर्यमा	अर्यमा
नु	नु+चित्, प्रश्ने	क्या
चित्	+चित्	–
सः	सः	वह
दभ्यते	हिंस्यते	माराजासकता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनः	जनः	मनुष्य

संस्कृतार्थः ।

प्रकृष्टज्ञानयुक्ता वरुणो मित्रोऽर्यमा (देवाः) यं रक्षन्ति किं स मनुष्यो हिंस्यते ॥१॥

भाषार्थः ।

प्रकृष्टज्ञान से युक्त वरुण मित्र (और) अर्यमा देवता जिसकी रक्षा करते हैं क्या वह मनुष्य मारा जा सक्ता है ? ॥१॥

वरुणमित्रार्यमणोदेवतानिचृद्गायत्रीच्छन्दः८।७।८।

यंबाहुतेवपिप्रति पान्तिमर्त्यंरिषः।

अरिष्टःसर्वएधते ॥२॥

यम्	यम्	जिसको
बाहुताऽइव	बाहुना यथा	जैसे बाहु से
पिप्रति	परयन्ति (पृपालन पूरणयोः)	पूरण करते हैं
पान्ति	रक्षन्ति	रक्षा करते हैं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मर्त्यम्	मनुष्यम्	मनुष्य को
रिषः	हिंसकात् (रिष्-हिंसायां-क्विप्)	शत्रू से
अरिष्टः	अहिंसितः (सन्)	न पीड़ित हुआ २
सर्वः	सर्वतः	सब ओर से
एधते	वर्धते	बढता है

संस्कृतार्थः ।

यं (वरुणादि देवाः)बाहुना यथा स्यात्तथा (धनैः) पूरयन्ति यम् (च) हिंसकाद्रक्षन्ति (सः) अहिंसितः (सन्) सर्वतो वर्धते ।२।

भाषार्थः ।

जिसको (वरुणादि देवता) धनों से (इस प्रकार) पूर्ण करते हैं जैसे बाहुसे और जिसकी शत्रु से रक्षा करते हैं वह किसी से न पीडित हुआ२ सब ओर से बढता है ॥२॥

वरुणमित्रार्यमणोदेवता निचृद्गायत्रीच्छन्दः।८।७।८

विद्रुर्गाविद्विषःपुरोघ्नन्ति राजान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एषाम् । नयन्तिदुरितातिरः ॥३॥

वि	वि + घ्नन्ति	दूर करके नाश करते हैं
दुःऽगा	गन्तुंदुःशक्यानि (कष्टानि)	कष्टों को
वि	वि + घ्नन्ति	दूर करके मारतेहैं
द्विषः	शत्रून्	शत्रुओं को
पुरः	पुरस्तात्	पहले
घ्नन्ति	+ घ्नन्ति	–
राजानः	राजानः	राजा
एषाम्	एषाम्	इनके
नयन्ति	नयन्ति	लेजाते हैं
दुःऽइता	दुरितानि, दुःखानि	दुःखों के
तिरः	पारम्	पार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

राजानः (वरुणादयः) एषाम् (यजमानानाम्) कष्टानि पुरस्ताद् (एव) विनाशयन्ति शत्रून् (च) दूरम् (नीत्वा) घ्नन्ति (तथा) (एतान्) दुःखानां पारं नयन्ति ॥३॥

भाषार्थः ।

राजा (वरुणादि) इन (भक्तों) के कष्टों को दूर (करके) पहले (ही) नाश कर देते हैं (इनके) शत्रुओं को दूर (करके) मारते हैं और (इनको) दुःखों के पार लंघा देते हैं ॥३॥

आदित्या देवता गायत्रीच्छन्दः ८।८।८।

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते। नात्रावखादो अस्ति वः ॥४॥

सुगः	सुखेनगन्तुंशक्यः	सुगम
पन्थाः	मार्गः	मार्ग
अनृक्षरः	कण्टक रहितः (यास्कः)	कांटों से रहित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदित्यासः	हे आदित्याः	हे आदित्यो
ऋतम्	ऋतम्	ऋत को
यते	गच्छते	जाते हुए के लिये
न	न	–
अत्र	अत्र	यहां
अवऽखादः	दुष्टभक्ष्यम (खाद्-भक्षणे-भावे घञ्)	दुष्ट भोजन
अस्ति	अस्ति	है
वः	युष्मदर्थम्	आपके लिए

संस्कृतार्थः ।

हे आदित्या ऋतं गच्छते (पुरुषाय) सुगमः कण्टकरहितः (च) मार्गः (अस्ति) अत्र युष्मदर्थं दुष्ट (हविरूपम्) भक्ष्यं नास्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे आदित्यो ऋत पर चलने वाले के लिये सुगम और कांटों से रहित मार्ग है। यहां आप के लिए दुष्ट (हवि रूप) भोजन नहीं है ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋत के अर्थ के लिए देखो (पृष्ठ ७१)। जो देवताओं के नियमानुकूल चलता है उसका रस्ता सुगम और निष्कंटक है। जैसे दुष्ट हवि से देवता अप्रसन्न होते हैं, ऐसा कोई कारण यहां अर्थात् ऋत पर चलने वाले में नहीं है।

आदित्या देवतागायत्रीच्छन्दः ।८।८।८।

यंयज्ञंनयथानर आदित्याऋजुना

पथा। प्रवःसधीतयेनशत् ॥५॥

यम्	यम्	जिस को
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
नयथ	प्रेरयथ	प्रेरणा करते हो
नरः	हे नरः	हे नरो
आदित्याः	आदित्याः	आदित्यो
ऋजुना	सरलेन	सरल से
पथा	मार्गेण	मार्ग से
प्र	प्र +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वः	युष्माकम्	आप के
सः	सः	वह
धीतये	ध्यानाय	ध्यान के लिये
नशत्	प्र + नशत् (नश-गतौलेटिरूपं) (प्राप्नुयात्)	प्राप्त होवे

संस्कृतार्थः ।

हे आदित्या हे नरः यं यज्ञं सरलेन मार्गेण प्रेरयथ सः (यज्ञः) युष्माकं ध्यानाय प्राप्नोतु ॥ ५ ॥

भावार्थः ।

हे आदित्यो हे नरो जिस यज्ञ को आप सरल मार्ग से प्रेरण करते हो वह (यज्ञ) आपके ध्यान के लिए प्राप्त हो ॥ ५ ॥

आप के ध्यान के लिए प्राप्त हो अर्थात् आप उस यज्ञ पर ध्यान देवें, जो कुटिल मार्ग से यज्ञ करता है उसके यज्ञ पर देवता ध्यान नहीं देते।

आदित्या देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना । अच्छा गच्छत्यस्तृतः ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
रत्नम्	रमणीयम्	रमण योग्य को
मर्त्यः	मनुष्यः	मनुष्य
वसु	धनम्	धनको
विश्वम्	सर्वम्	सम्पूर्ण को
तोकम्	अपत्यम्	सन्तान को
उत	अपिच	और
त्मना	आत्मना (आलोपः)	आत्मा से
अच्छ	अच्छ +	–
गच्छति	अच्छ + गच्छति प्राप्नोति	प्राप्त होता है
अस्तृतः	अपराजितः (सन्) (स्तृन्-आच्छादने कर्मणि क्तः)	न जीता जाकर

संस्कृतार्थः ।

(हे आदित्याः) स मनुष्योऽपराजितः (सन्) रमणीयं सर्वं धनं(स्वेन) आत्मना अपत्यञ्च प्राप्नोति ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(हे आदित्यो) वह मनुष्य किसी से न जीता जाकर रमणीय सम्पूर्ण धन को (और अपने) आत्मा से सन्तान को प्राप्त करता है ॥६॥

वरुणमित्रार्यम्णो देवता गायत्रीच्छन्दः।८।८।८॥

कथा राधाम सखायः स्तोमं मित्रस्यार्यम्णः। महि प्सरो वरुणस्य ॥७॥

कथा	केनप्रकारेण (किम्शब्दात् थाप्रत्ययः)	किस प्रकार से
राधाम	साध्याम:(राध-संसिद्धौविकरणस्य लुक्)	बनावें
सखायः	सखायः	हे मित्रो
स्तोमम्	स्तोत्रम् (ष्टुञ्-स्तुतौ आवेशन)	स्तोत्र को
मित्रस्य	मित्रस्य	मित्र का
अर्यम्णः	अर्यम्णः	अर्यमाका
महि	महत् (मह पूजायां इन् प्र०)	बड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुभः	भक्ष्यम् (दभ-भक्षणे-डरप्र०)	भोजन को
वरुणस्य	वरुणस्य	वरुण के

संस्कृतार्थः।

हे सखायः मित्रस्यार्यम्णस्स्तोत्रं केनप्रकारेण साधयामः वरुणस्य महत् (हविरूपम्) भक्ष्यम् (केन प्रकारेण साधयामः) ॥ ७ ॥

भाषार्थः।

हे मित्रो मित्र और अर्यमा के स्तोत्र को हम कैसे बनावें, वरुण के महान् (हवि रूप) भोजन को (कैसे सिद्ध करें) ॥ ७ ॥

इन देवताओंका महत्व अल्प शक्ति वाले मनुष्य के लिये इतना बड़ाहै कि वह न उनके महत्व के अनुकूल स्तुति करसकता है और न हवि सिद्ध करसकता है।

वरुणमित्रार्यम्णोदेवता गायत्रीच्छन्दः ८।८।८।

मावोघ्नन्तंमाशपन्तं प्रतिवोचेदेवयन्तम्। सुम्नैरिद्वआविवासे ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(हे आदित्यो) वह मनुष्य किसी से न जीता जाकर रमणीय सम्पूर्ण धन को (और अपने) आत्मा से सन्तान को प्राप्त करता है ॥६॥

वरुणमित्रार्यम्णो देवता गायत्रीच्छन्दः।८।८।८॥

कथाराधामसखायः स्तोमंमित्र-

स्यार्यम्णः। महिप्सरोवरुणास्य ।७।

कथा	केनप्रकारेण (किमुशब्दात् थाप्रत्ययः)	किस प्रकार से
राधाम	साध्याम:(राध-संसिद्धौविकरणस्य लुक्)	बनावें
सखायः	सखायः	हे मित्रो
स्तोमम्	स्तोत्रम्(ष्टुञ्-स्तुतौ भावेमन्)	स्तोत्र को
मित्रस्य	मित्रस्य	मित्र का
अर्यम्णः	अर्यम्णः	अर्यमाका
महि	महत् (मह पूजायां इन् प्र०)	बड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षः	भक्ष्यम् (दक्षा·भक्षणे-डरप्र०)	भोजन को
वरुणस्य	वरुणस्य	वरुण के

संस्कृतार्थः ।

हे सखायः मित्रस्यार्यम्णस्स्तोत्रं केनप्रकारेण साधयामः वरुणस्य महत् (हविरूपम्) भक्ष्यम् (केन प्रकारेण साधयामः) ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे मित्रो मित्र और अर्यमा के स्तोत्र कों हम कैसे बनावें, वरुण के महान् (हवि रूप) भोजन को (कैसे सिद्ध करें) ॥ ७ ॥

इन देवताओंका महत्व अल्प शक्ति वाले मनुष्य के लिये इतना बड़ाहै कि वह न उनके महत्व के अनुकूल स्तुति करसकता है और न हवि सिद्ध करसकता है ।

वरुणमित्रार्यम्णोदेवता गायत्रीच्छन्दः ८।८।८।

मावोऽनन्तंमाशपन्तं प्रतिवोचेदेवयन्तम् । सुम्नैरिद्वआविवासे ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मा	न	नहीं
वः	युष्मभ्यम्	आप के ताईं
घ्नन्तम्	हन्तारम्	मारने वाले को
मा	न	नहीं
शपन्तम्	शप्तारम्	शाप देने वाले को
प्रति	प्रति +	–
वोचे	प्रति+वोचे (ब्रूञ्·लुङ्·लडर्थे)	कहता हूं
देवऽयन्तम्	देवान्कामयमानम्	देवभक्त को
सुम्नैः	सूक्तैः	भजनों से
इत्	एव	ही
वः	युष्मान्	आप को
आ	आ+	–
विवासे	आ+विवासे परिचरामि (निघं० ३।५)	सेवा करता हूं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(हे देवाः)युष्मभ्यं हन्तारं शपन्तम् देवभक्तम्(वा) न निवेदयामि (किन्तु)सूक्तै रेव युष्मान्परिचरामि।८

भाषार्थः ।

(हे देवो) मैं मारने वाले को शाप देने वाले को (अथवा) भक्त को आप से निवेदन नहीं करता । मैं तो केवल भजनों द्वारा आप की सेवा करता हूं ॥८॥

ऋषि कहते हैं मेरा काम यह नहीं है, कि मैं देवताओं के आगे यह निवेदन करूं अमुक मनुष्य घातक वा शाप देने वाला अर्थात् बुरा है और अमुक देवभक्त अर्थात् अच्छा है, मैं तो केवल मंत्र समूह रूपी भजनों द्वारा उनकी सेवा करता हूं ।

वरुण मित्रार्यमणोदेवता निचृद्गायत्रीच्छन्दः ८।७।८

चतुरश्चिद्ददमानाद्बिभीयादानि

धातोः। नदुरुक्तायस्पृहयेत् ॥९॥

चतुरः	चतुस्संख्याकान्	चार को
चित्	एव	ही
ददमानात्	धारयतः (दद--धारणार्थः)	रखते हुए से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिभीयात्	बिभीयात्	डरे
आ	आ+	–
निऽधातोः	आ+निधातोः (नि-धा-तुन्) निपातपर्यन्तम्	डालने पर्यन्त
न	न	नहीं
दुःऽउक्ताय	दुष्टवाक्याय	दुष्ट वाक्य के लिए
स्पृहयेत्	स्पृहयेत्	इच्छा करे

संस्कृतार्थः ।

चतुर एव (कपर्दकान्) निपातपर्यन्तं (हस्ते) धारयतो बिभीयात् दुष्ट वाक्याय स्पृहां न कुर्यात् ॥९॥

भाषार्थः ।

चारों पासे गिरने तक जिस के हाथ में हैं उस से डरे, दुष्ट वचन की इच्छा न करे ॥ ९ ॥

वरुणादि देवता के हाथ में हमारी भवितव्यता है, जो हमारे कर्म के अनुकूल होती है,इसलिये दुष्ट वचन कहना आदि पाप कर्म से डरे, निन्दित कर्म करने से अवश्य हमारे विरुद्ध पासे पड़ेंगे ॥९॥

इत्येक चत्वारिंशं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu